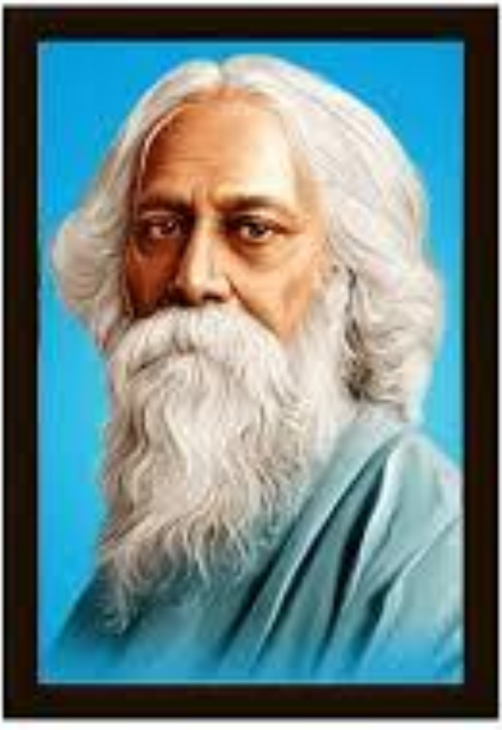
नाव दुर्घटना

रबीन्द्रनाथ टैगोर





नाव-दुर्घटना

नाव-दुर्घटना

रवीन्द्रनाथ टैगोर

सन्मार्ग प्रकाशन - दिल्ली

संस्करण : सितम्बर १९६१
प्रकाशक : सन्मार्ग प्रकाशन
१६ यू० बी० बैंगलो रोड, दिल्ली

मूल्य : चार रुपये
आवरण शिल्पी : पाल बन्धु
मुद्रक : शुक्ला प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा
हरिहर प्रेस, दिल्ली।

एक

कानून-परीक्षा में रमेश के पास होने के विषय में किसी को कोई सन्देह नहीं था विश्वविद्यालय की सरस्वती हमेशा अपने कमल की पंखड़ियों को फैला रमेश को सर्वप्रथम स्थान देती आई हैं। वह हमेशा स्कालरशिप भी लेता रहा है।

परीक्षा पास करके अब उसका अपने घर जाने का विचार है। किन्तु अभी तक उसमें अपना सामान सजाने का कोई उत्साह दिखाई न दिया; उसके पिता ने शीघ्र घर चले आने के लिए पत्र लिखा है। रमेश ने जवाब में लिखा कि परीक्षा-परिणाम निकलते ही वह घर आ जाएगा।

अन्नदाबाबू का लड़का योगेन्द्र रमेश का सहपाठी है। साथ के मकान में ही वह रहता है। अन्नदाबाबू ब्राह्मण हैं। उनकी कन्या हेमनलिनी ने इस बार एफ० ए० की परीक्षा दी है। रमेश अन्नदाबाबू के घर चाय पीने अथवा योंही प्राय: जाया करता था।

हेमनलिनी स्नान के बाद बाल सुखाती हुई छत पर बैठकर पाठ कण्ठस्थ किया करती थी। रमेश भी उसी समय अपने निवास-स्थान की निर्जन छत की मुंडेर के एक किनारे किताब लेकर बैठ जाता था। पढ़ाई के लिये ऐसा स्थान अनुकूल है सही; किन्तु जरा विचार कर देखने से ही समझने में कठिनाई नहीं होती, कि बाधायें भी कम नहीं होतीं।

अब तक विवाह के बारे में किसी तरफ से कोई प्रस्ताव नही हुआ। अन्नदाबाबू की ओर से प्रस्ताव न होने का एक कारण था। एक लड़का बैरिस्टर होने के लिए विलायत गया है; मन-ही-मन उसकी तरफ अन्नदाबाबू का ध्यान है।

उस दिन चाय के टेबिल पर एक बहस छिड़ गई। अक्षय अधिक पढ़ा-लिखा न था; किन्तु इसी वजह से उस बेचारे के चाय पीने या अन्य श्रेणी के

शौक, पास होने वाले छात्रों से कुछ कम न थे। इसलिए हेमनलिनी के चाय के टेबिल पर कभी-कभी वह भी दिखाई दे जाता था। उसने बहस छेड़ी, कि पुरुषों की बुद्धि तलवार जैसी तीक्ष्ण है; अधिक धार न रखी जाने पर भी जरा-सा दाब देने पर भी अनेक काम कर सकती है; औरतों की बुद्धि कलम तराश छुरी जैसी है; कितनी ही शान क्यों न धरी जाय उससे कोई बड़ा काम लिया नहीं जा सकता। हेमनलिनी अक्षय की इस बहस की चुपचाप उपेक्षा करने को तैयार थी। किन्तु स्त्री-बुद्धि को असफल साबित करने के पक्ष में उसका भाई योगेन्द्र भी युक्तियाँ भिड़ाने लगा। तब रमेश अधिक बर्दाश्त कर न सका। वह उत्तेजित होकर स्त्री जाति का गुण बखान करने लगा।

इस तरह रमेश जब नारी-भक्ति के लहराते हुए उत्साह में और दिनों से दो प्याले अधिक चाय पी गया, उस समय बैरा ने उसके हाथ में एक चिट्ठी दी। चिट्ठी की बाहरी ओर उसके पिता के हाथ से उसका नाम लिखा था। चिट्ठी पढ़ते ही बहस को अधूरी ही छोड़ रमेश घबराकर उठ खड़ा हुआ। सब ने पूछा—"क्या बात है।" रमेश ने कहा—"घर से पिता जी आये हैं।" हेमनलिनी ने योगेन्द्र से कहा—"भैया, रमेश बाबू के पिता को यहाँ ही क्यों नहीं बुला लेते; यहाँ चाय आदि सब तैयार है।"

रमेश शीघ्रता से बोल बैठा—"नहीं, आज रहने दो, मैं जाता हूँ।"

अक्षय मन-ही-मन खुश होकर बोल बैठा—"शायद यहाँ पीने में उन्हें कुछ आपत्ति हो सकती है।"

रमेश के घर आने पर उसके पिता ब्रजमोहन बाबू ने रमेश से कहा, "कल सबेरे की गाड़ी से ही तुम्हें घर चलना होगा।"

रमेश सिर सहलाते हुये पूछा, "क्या कोई विशेष काम है?"

ब्रजमोहन ने कहा, "ऐसा कोई जरूरी नहीं।"

तब इतना आग्रह क्यों, यह जानने के लिए, रमेश अपने पिता के मुंह को देखता रहा; किन्तु उन्होंने उसके कौतूहल को दूर करने की कोई आव-
. . ा समझी।

. . ा समय जब ब्रजमोहन बाबू कलकत्ते के अपने मित्रों से मिलने के

लिए बाहर निकले, तब रमेश उनके लिए एक पत्र लिखने बैठा। "श्रीचरण-कमलों में प्रणाम" लिखने के उपरान्त वह आगे कुछ न लिख सका। रमेश मन-ही-मन कहने लगा, "मैं हेमनलिनी के बारे में जिसे बिना बचन दिये सत्य से आबद्ध हो चुका हूँ, अब उसे पिता जी से छिपाना किसी तरह भी उचित नहीं।" उसने कई पत्र कई प्रकार से लिखे किन्तु सबको फाड़कर फेंक दिया।

दूसरे दिन सवेरे की गाड़ी से रमेश को रवाना होना पड़ा। ब्रजमोहन-बाबू की सावधानी से गाड़ी छूट जाने का कोई अवसर दिखाई न दिया।

घर जाने पर रमेश को पता लगा कि उसके विवाह के लिये लड़की और दिन स्थिर हो चुका है। लड़की के पिता ब्रजमोहन के बालमित्र ईशान जब वकालत करते थे, उस समय ब्रजमोहन की हालत ठीक नहीं थी—ईशान की सहायता से ही उन्होंने उन्नति प्राप्त की थी। वही ईशान जब कुसमय मर गये तो पता चला कि उनके पास कुछ भी जमा नहीं था, कर्ज था। विधवा-स्त्री एक बालिका कन्या के सहित दरिद्रता में पड़ी थी। वही कन्या आज विवाह के योग्य हुई है। ब्रजमोहन ने उसी के साथ रमेश का विवाह ठहराया है। रमेश के मित्रों में किसी-किसी ने आपत्ति करके कहा था, सुनते हैं, कि लड़की वैसी अच्छी नहीं है। ब्रजमोहन ने कहा, "यह सब बातें मैं अच्छी नहीं समझता—मनुष्य फूल या तितली तो है नहीं, जिसके लिये देखने में अच्छी होने का विचार सबसे पहले उठाया जाय। लड़की की माँ जैसी सती-साध्वी है, यदि वैसी ही लड़की भी हो तो रमेश को उसे अपना सौभाग्य समझना चाहिये।"

विवाह की चर्चा से रमेश का मुँह सूख गया। वह उदास होकर इधर-उधर घूमने लगा। छुटकारा पाने के लिए अनेक प्रकार के उपाय सोच कर भी उसे कोई उपाय सम्भव न जान पड़ा। अन्त में बड़े दुःख से संकोच दूर करके उसने पिता से कहा, "पिताजी, यह विवाह मेरे लिये असाध्य है। मैं दूसरी जगह वचन दे चुका हूँ।"

ब्रजमोहन—"यह क्या कहते हो! पानपत्र तक तो हो चुका है? अब..."

रमेश—"नहीं ठीक तरह से पानपत्र नहीं हुआ किन्तु—"

ब्रजमोहन, "कन्या की ओर से सब बातचीत पक्की हो चुकी है ?"

रमेश, "नहीं, जिसे बातचीत कहते हैं, वह नहीं हुई।"

ब्रजमोहन—जब बातचीत नहीं हुई, तब जैसे इतने दिन चुप थे, वैसे ही और कई दिन चुप रहना ठीक है।

रमेश ने कुछ देर चुप रहने के बाद कहा, "और किसी कन्या को पत्नी के रूप में ग्रहण करना मेरे लिए अन्याय होगा।"

ब्रजमोहन, "न करने से तुम्हारे लिए और भी अन्याय होगा।"

रमेश और कुछ कह न सका। उसके विवाह के लिए जो दिन स्थिर किया गया था, उसके बाद एक वर्ष तक दूसरी कोई लगन थी ही नहीं—वह सोचता था, किसी तरह यह दिन बीत जाय तो उसके लिये एक वर्ष की अवधि बढ़ जावेगी।

नदी की राह से वधू के घर जाने का मार्ग है—छोटी-बड़ी दो-तीन नदियों को पार करने में तीन-चार दिन लगते हैं ब्रजमोहन ने दो-एक सप्ताह पहले ही एक शुभ दिन में उस तरफ की यात्रा प्रारम्भ की। हवा अनुकूल थी। शीमुल घाट पहुँचने में तीन दिन भी नही लगे। विवाह में अब भी चार दिन शेष हैं।

ब्रजमोहन बाबू की इच्छा थी, कि दो-चार दिन पहले ही पहुँचे। शीमुल घाट में उनकी समधिन निर्धन अवस्था में रहती थी। ब्रजमोहन बाबू की इच्छा बहुत दिनों से थी कि इनके परिवार को वे अपने गाँव में ले जायें जिससे उन्हें आराम से रखकर अपने मित्र का ऋण चुका सकें। किन्तु किसी तरह का सम्बंध न होने के कारण उन्होने एकाएक इस प्रस्ताव को रखना उचित न समझा। इस बार विवाह के अवसर पर उन्होंने अपनी समधिन को यहाँ से गृहस्थी उठाने पर राजी कर लिया है। संसार में समधिन की केवल एक कन्या है, उनके पास रहकर वह माता-विहीन दामाद की माता के पद पर अधिकार कर सकेंगी इस पर वे आपत्ति न कर सकीं। उन्होंने कहा, "कोई जो जी चाहे कहे, जहाँ मेरी कन्या और दामाद रहेंगे, वहीं मैं भी रहूँगी।"

विवाह से कई दिन पहले आकर ब्रजमोहन बाबू अपनी समधिन की गृहस्थी उठा ले जाने की व्यवस्था करने लगे उनकी इच्छा थी, कि विवाह के

बाद सब लोग एक साथ ही यात्रा करेंगे। इसीलिए वे अपने घर से सम्बन्धी स्त्री-पुरुषों के साथ आये थे।

विवाह के समय रमेश ने ठीक प्रकार से मन्त्र का उच्चारण नहीं किया, शुभ दृष्टि के समय उसने आँखें मूंद लीं, फूलशय्या की हँसी-मजाक को वह चुप-चाप सिर झुकाकर सहन कर गया, रात को शय्या पर मुँह फेरकर सोया, सवेरे बिस्तर से उठकर बाहर चला गया।

विवाह की रस्में पूरी होने पर औरतें एक नाव में, बूढ़े एक नाव में, तथा वह और उसके साथियों ने एक अलग नाव से यात्रा की। एक दूसरी नाव पर रौशनचौकी का दल समय-समय पर जैसे-तैसे राग अलापने लगा।

सारे दिन असहनीय गर्मी रही। आकाश में बादल नहीं फिर भी आकाश बदरंग हो रहा था—किनारे के वृक्षों के पीले पत्ते हिलते तक न थे। मल्लाह पसीने से तर थे। शाम को अन्धेरा होने से पहले ही मल्लाहों ने कहा, "बाबू, अब नाव घाट लगाता हूँ। आगे बहुत दूर तक नाव बाँधने की जगह नहीं है।" ब्रजमोहन बाबू राह में देर नहीं होने देना चाहते थे। उन्होंने कहा, "यहाँ बाँधना ठीक न होगा। आज पहली रात चाँदनी रहेगी, आज बालूहाटा में पहुँच कर नाव बाँधो। तुम लोगों को इनाम बहुत-सा मिलेगा।"

नाव गाँव छोड़कर आगे बढ़ी। एक ओर रेती का मैदान था, दूसरी ओर टूटे-फूटे कगारे। आकाश में चाँद निकला; किन्तु वह शराबी की आँखों की तरह गदला दिखाई दे रहा था। ऐसे समय आकाश में बिना मेघ के न जाने कहाँ से गर्जन की आवाज सुनाई दी। पीछे आकाश की ओर देखने से दिखाई दिया कि टूटी-फूटी डाल और पत्तों के साथ पतवार और धूल बालू को आकाश में उड़ाती हुई प्रचण्ड वायु बड़े वेग से चली आ रही है 'बाँधो-बाँधो, सम्भालो-सम्भालो, करते-करते क्षणभर में क्या-से-क्या हो गया, कोई कह नहीं सकता। एक बवण्डर सँकरी राह से बड़े वेग के साथ सब उखाड़ता और चौपट करता हुआ कई नावों को कहाँ-से-कहाँ ले गया; इसका कोई पता नहीं चला।

दो

तूफान समाप्त हो गया है। बहुत दूर तक फैली हुई रेतीली भूमि को निर्मल चाँदनी विधवा के सफेद वस्त्र की तरह ढके हुए हैं। नदी में नाव नहीं, लहरें नहीं, रोग की तकलीफों के बाद जैसे मृत्यु निर्विकार शान्ति देती है, वैसी ही शान्ति जल स्थल में विराजमान है।

रमेश ने होश में आने पर देखा वह नदी के किनारे पड़ा है। क्या हुआ इसके समझने में उसे कुछ समय लगा, इसके बाद सब घटनाएँ उसके मन में जाग उठीं। यह पता लगाने को वह उठा बैठा कि उसके पिता और अन्यान्य जाति-भाइयों की क्या दशा हुई। चारों ओर उसने निगाह फेरकर देखा, कहीं किसी का कोई नाम-निशान भी नहीं था। तब वह नदी के किनारे-किनारे ढूँढ़ता हुआ चल पड़ा।

पद्मा की दो शाखाओं के बीच किसी चीज का आभास हुआ। रमेश जब एक शाखा के किनारे से घूमकर दूसरी शाखा के किनारे पहुँचा तब उसे कुछ दिखाई दिया। बढ़कर रमेश ने पास पहुँचकर देखा कि लाल चुनरी पहने नववधू मुर्दे की तरह चित्त पड़ी हुई है।

रमेश जानता था कि पानी में डूबे आदमी की श्वास-क्रिया को किस प्रकार लौटाया जाता है। बहुत देर तक रमेश बालिका के दोनों हाथों को एक बार उसके सिर की ओर ले जाता फिर उसके पेट तक ले आता रहा। धीरे-धीरे बहू की साँस चली और उसने आखें खोल दीं। तब बहुत थकावट जान पड़ने पर रमेश कुछ देर चुपचाप बैठा रहा। उसके श्वास में इतनी भी हिम्मत नहीं थी, कि वह उस बालिका से कुछ पूछे।

बालिका अभी तक अच्छी तरह होश में नहीं आई थी। एक बार आँख खोलने के बाद फिर उसकी आँखें मुंद गईं। रमेश ने परीक्षा कर देखा, कि उसकी श्वास-क्रिया में अब कोई बाधा नहीं है। तब इस जन-हीन जल-स्थल की सीमा में जीवन-मृत्यु के मध्य में उस पीली चाँदनी की रोशनी में रमेश बालिका के चेहरे की तरफ बहुत देर तक देखता रहा।

कौन कहता है, कि सुशीला देखने में अच्छी नहीं है। यह मुंदी आँखों का सुकुमार छोटा-सा मुखड़ा—इतने बड़े आकाश के बीच फैली हुई चाँदनी में केवल यह सुन्दर कोमल मुखड़ा देखने योग्य वस्तु की तरह गौरव से खिला हुआ है।

रमेश और सब बातें भूलकर सोचने लगा—"अच्छा ही हुआ, कि इसे मैं विवाह-मण्डप के कलरव में भीड़-भाड़ के बीच देख न सका। इसे मैं उस तरह कभी देख न सकता। इसमे साँस का संचार करके मैंने विवाह के मन्त्र-पाठ से बढ़कर इसे अपना लिया है। मन्त्र का उच्चारण करके मैं इसे निश्चित प्राप्य के स्वरूप में पाता, किन्तु यहाँ मैंने इसे अनुकूल विधाता के प्रसाद के रूप में प्राप्त किया है।"

होश में आने पर बधू ने बैठकर अपने शिथिल वस्त्र को खिसकाकर माथे से घूँघट खींच लिया। रमेश ने पूछा, "तुम्हारी नाव के और सब लोग कहाँ गये; कुछ जानती हो ?"

उसने चुपचाप सिर हिला दिया। रमेश ने उससे पूछा, "तुम यहाँ थोड़ी देर बैठ सकोगी ; मैं जरा चारों ओर घूमकर कुछ पता लगा आऊँ ?"

बालिका ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। किन्तु मानो उसका सारा शरीर संकुचित हो उठा—यहाँ मुझे अकेली छोड़कर मत जाओ।

इसे रमेश समझ गया। उसने एक बार खड़े होकर चारों ओर देखा—सफेद रेत में कहीं कोई निशान तक नहीं। उसने अपने लोगों को खूब जोर लगाकर ऊँची आवाज में पुकारा ; किन्तु कहीं किसी का कोई उत्तर नहीं मिला।

रमेश वृथा चेष्टा छोड़कर बैठ गया। उसने देखा—बहू मुँह पर दोनों हाथ रख रुलाई रोकने की चेष्टा कर रही है। उसकी छाती फूल-फूल उठती है। रमेश धीरज के कोई शब्द न कह बालिका के पास बैठ धीरे-धीरे उसके माथे और पीठ पर हाथ फेरने लगा। अब उसकी रुलाई रोके न रुकी—वह बिना कुछ बोले सिसक उठी। रमेश की भी दोनों आँखों से आँसू की धारा बह पड़ी।

हृदय के शान्त होने पर जब रोना बन्द हुआ, उस समय चन्द्रमा अस्त हो गया था। अन्धकार के बीच यह निर्जन भूमि अद्भुत स्वप्न के समान जान पड़ने लगी। बालू के मैदान की शुभ्रता प्रेत लोक के समान मलिन हो गई थी। तारों की क्षीण रोशनी में नदी अजगर साँप के जैसे चिकने काले चमड़े की तरह झिलमिला रही थी।

तब रमेश ने बालिका के भय से शीतल कोमल छोटे-छोटे हाथों को अपने हाथ में लेकर उसे और भी अपनी ओर खींच लिया। भयभीत बालिका ने कोई बाधा न दी। उस समय वह मनुष्य के सामीप्य का अनुभव करने के लिए व्याकुल थी। अटल अन्धकार के बीच साँस से हिलती हुई रमेश की छाती का आश्रय पाकर उसे कुछ आराम जान पड़ा। उस समय उसके लज्जा करने का समय नहीं था। रमेश की दोनों भुजाओं के बीच उसने बड़े आग्रह के साथ अपना स्थान बना लिया।

सवेरे का शुक्र तारा अस्त हो चला, पूर्व की ओर से नील नदी की रेखा पर पहले आकाश जब पीलेपन से लाल-लाल हो उठा, तब दिखाई दिया कि निद्रा-विह्वल रमेश बालू पर पड़ा सो रहा है और उसकी छाती से सटी हुई अपने हाथ के ऊपर शिर रखे हुए नववधू गहरी नींद में निमग्न है। अन्त में सवेरे की मीठी धूप के कारण दोनों की आँखें खुल गईं और दोनों कुछ देर तक चारों ओर देखते रहे; इसके बाद एकाएक याद आई, कि यह अपना घर नहीं है; याद आई कि हम लोग बहकर यहाँ चले आये हैं।

सवेरे के समय मछुओं की नाव के सफेद-सफेद पाल नदी में छा पड़े। रमेश ने उन्हीं लोगों को आवाज दे मछुओं की सहायता से एक बड़ी पन-सुइया किराये पर ली और खोये हुये आत्मीयों की खोज के लिये पुलिस नियुक्त कर बधू को साथ ले घर की ओर प्रस्थान किया।

गाँव के घाट पर नाव पहुँचते ही रमेश को खबर लगी कि पुलिस ने उसके पिता, सास और कई सम्बन्धियों की लाशें नदी से निकाली हैं। किसी को भी यह आशा न रही, कि मल्लाहों के अतिरिक्त और भी कोई बचा है।

घर में रमेश की बूढ़ी दीदी थीं, वह बहू के साथ रमेश को आया देख

जोर-जोर से रोने लगीं। पड़ोस के जो लोग बारात में गये थे, उनके भी घर में रोना मच गया। न शंख बजा और न शुभ ध्वनि हुई, किसी ने भी बहू का परछन न किया, किसी ने उसकी तरफ देखा तक नहीं।

रमेश ने ठीक किया था, कि श्राद्धादि होने के बाद ही बहू को लेकर कहीं और चला जायगा—किन्तु पैत्रिक सम्पत्ति की व्यवस्था किये बिना उसे कहीं हटने की भी फुरसत नहीं थी। परिवार की शोकातुर स्त्रियाँ तीर्थवास के लिये उसे घेरे हुए थीं ; उनका भी कोई प्रबन्ध करना आवश्यक है।

इन सब काम-काजों से फुरसत के समय रमेश प्रेम-चर्चा से भी विरक्त नहीं था। यद्यपि पहले जैसा सुना गया था, बहू वैसे बिलकुल ही बालिका न थी। गाँव की औरतें उसकी अधिक उम्र पर धिक्कारा करती थीं ; तथापि उससे कैसे प्रेम बढ़ाया जा सकता है, इसके लिये बी० ए० पास इस लड़के को अपनी किताबों में कोई उपाय सुझाई नहीं दिया। फिर भी किताबों की पढ़ाई की अभिज्ञता से समझ में कुछ न आने पर भी आश्चर्य की बात यह थी कि उसका उच्च शिक्षित मन भीतर-ही-भीतर एक अनूप रस से परिपूर्ण हो वह छोटी-सी लड़की के आगे झुक पड़ा था। उसने कल्पना द्वारा इस बालिका को अपने भविष्य की गृह-लक्ष्मी के रूप में सुशोभित कर रखा था। इससे उसकी स्त्री होकर भी वह बालिका बहू, युवती प्रेमिनी और सन्तानों की प्रतिभावती माता के रूप में उसके ध्यान-नेत्रों के सामने विचित्र भाव से विकसित हो उठी थी। जैसे चित्रकार अपने भावी चित्र की ओर, कवि अपनी भावी कविता की सुन्दर रूप में कल्पना कर हृदय के भीतर बड़े आदर के साथ पोषित करता है, वैसे ही रमेश ने इस छोटी-सी बालिका को लक्ष्य-मात्र बनाकर अपनी भावी प्रेयसी को—कल्याणी की महिमामयी मूर्ति रूप में अपने हृदय में स्थापित कर लिया।

तीन

इस प्रकार लगभग तीन महीने बीत गये। सम्पत्ति की व्यवस्था भी पूरी हुई। वृद्धाएँ तीर्थवास के लिये तैयार हो गईं। पड़ोसियों के घर से दो-तीन सहेलियाँ भी नई बहू से परिचय बढ़ाने के लिये आने-जाने लगीं। रमेश के साथ बालिका के प्रेम की पहली गाँठ धीरे-धीरे पक्की होने लगी।

अब संध्या समय निर्जन छत पर खुले आकाश के नीचे दोनों चटाई बिछाकर बैठने लगे हैं। रमेश पीछे से आकर एकाएक बालिका की आँखें मूँद लेते और उसके सिर को खींचकर छाती से लगा लेते; बहू जब रात अधिक न होने पर भी खा-पीकर सो रहती, तब रमेश तरह-तरह के खुराफातों से उसे जगाकर उसकी तरह-तरह की बातें सुनता।

एक दिन संध्या समय रमेश ने बालिका के सिर के जूड़े को हिलाकर कहा, "सुशीला, आज तुमने अच्छी तरह से चोटी नहीं संवारी।"

बालिका ने कहा—"भला, तुम लोग मुझे सुशीला कहकर क्यों पुकारते हो?"

रमेश इस प्रश्न का मतलब न समझ सकने के कारण चुपचाप उसके मुँह की ओर देखता रह गया।

बहू ने कहा—"क्या मेरा नाम बदल जाने पर ही मेरी इज्जत होगी? मैं तो बचपन से ही अभागी हूँ—शायद मरने पर ही मेरा यह अभाग्य दूर होगा।"

यह सुनते ही रमेश की छाती धड़क उठी, उसका मुँह पीला पड़ गया। उसके मन में यह संशय एकाएक जाग उठा—मानो कैसा प्रमाद छा गया। रमेश ने पूछा, "बचपन से ही तुम अभागी कैसे हुईं?"

बहू ने कहा—मेरे जन्म से पहले ही मेरे पिता की मृत्यु हो गई; मुझे जन्म देकर छः महीने बाद ही मेरी माँ मर गई। मैं मामा के घर बड़े कष्ट से रही। एकाएक सुनाई दिया, कि न जाने कहाँ से आकर तुमने मुझे पसन्द कर लिया है—दो दिनों में ही विवाह हो गया; इसके बाद देखो कितनी

विपदायें आकर खड़ी हुई हैं ?"

रमेश निश्चल होकर तकिये पर सिर रख लेट गया। आकाश में चाँदनी काली दिखाई देने लगी। रमेश को और कुछ पूछने में भय जान पड़ने लगा। जो कुछ मालूम हुआ, उसे ही वे स्वप्न समझ अपने से दूर ही हटाये रखना चाहते थे। होश में आये हुये मूर्छित की गहरी साँस की तरह गर्मी के मौसम की दक्षिणी हवा चलने लगी। चन्द्रमा की चाँदनी में निद्राहीन कोयल कूक रही थी—समीप ही नदी के घाट में बँधी नावों से मल्लाहों के गाने आकाश में फैल रहे थे। बहुत देर तक कोई बात न उठने पर बहू ने धीरे-धीरे रमेश को हिला कर कहा, "क्या आप सो गये ?"

रमेश ने कहा—"नहीं तो।"

इसके बाद भी रमेश बहुत देर तक चुप रहे। बहू न जाने कब धीरे से सो गई। रमेश उठ बैठा और उसके मुँह की ओर देखने लगा। विधाता ने इसके मस्तक में जो गुप्त लेख लिख दिया आज तक उसका एक निशान भी उसके चेहरे पर दिखाई न दिया। ऐसे सौन्दर्य के अन्दर ऐसा भीषण परिणाम कैसे छिपकर निवास कर रहा है !

रमेश समझ गया कि यह बालिका उसकी विवाहिता पत्नि नहीं है ; किन्तु यह मालूम करना सहज नहीं ; कि तब यह किसकी स्त्री है। रमेश ने सवेरे पूछा, "विवाह के समय जब तुमने मुझे पहले-पहल देखा, तब तुम्हारे मन में क्या आया ?"

बालिका, "मैंने तुम्हें देखा ही नहीं, मैं आँखें नीचे किये थी।"

रमेश, "तुमने मेरा नाम भी नहीं सुना ?"

बालिका—"जिस दिन सुना, कि विवाह होगा, उसके दूसरे ही दिन विवाह हो गया—मैंने तुम्हारा नाम सुना ही नहीं। मामी ने मुझे चटपट बिदा कर दिया।"

रमेश—"अच्छा, तुमने लिखना-पढ़ना भी तो सीखा है; खूब सफाई के साथ लिखो तो सही।"

रमेश ने उसके हाथ में कागज और पैन्सिल दे दी। उसने कहा, "शायद

अब मैं लिख न सकूँगी। मेरा नाम लिखने में बहुत सहज है।" यह कहकर उसने बड़े-बड़े अक्षरों में अपना नाम लिखा—श्रीमती कमलादेवी।

रमेश, "अच्छा, मामा का नाम लिखो।"

कमला ने लिखा—श्रीयुक्त तारिणीचरण चट्टोपध्याय।

साथ ही उसने पूछा, "लिखने में कोई भूल तो नहीं हुई है?"

रमेश ने कहा, "नहीं। अच्छा अपने गाँव का नाम लिखो तो सही।"

उसने लिखा—धोबी पोखर।

इस तरह अनेक उपायों से बहुत ही सावधानी के साथ रमेश ने इस बालिका के जीवन-वृत्तांत को जो कुछ आविष्कार किया, उससे कोई विशेष सुविधा नहीं हुई।

इसके बाद रमेश अपने कर्त्तव्य के बारे में विचार करने बैठा। सम्भव है कि इसका पति डूबकर मर गया हो। यदि किसी तरह इसकी ससुराल का पता लगाया जाय और वहाँ इसे भेजा जाय, तो सन्देह है, कि वे लोग इसे ग्रहण न करेंगे; मामा के घर भेजने से भी इसके हक में उचित न होगा। इतने दिन तक बहू के रूप में पराये घर निवास करने पर आज यदि सच्चा हाल प्रकट किया जाय, तो समाज में इसकी क्या हालत होगी—इसका ठिकाना कहाँ लगेगा। यदि कहीं इसका पति जीवित ही हो, तो क्या इसे ग्रहण करने की इच्छा या साहस करेगा। इस समय इस लड़की को जहाँ ढकेला जाय, वहाँ ही यह अतुल समुद्र में जा पड़ेगी।

इसे अपनी स्त्री के अतिरिक्त और किसी रूप में रमेश अपने यहाँ रख भी नहीं सकता; और कहीं इसके रहने की जगह नहीं। किन्तु ऐसा ही समझ कर इसे अपनी स्त्री के नाम से ग्रहण करना भी उचित नहीं। रमेश ने भविष्य के पट पर अनेक रंग की स्नेहसिक्त कूचियों से गृहलक्ष्मी के रूप में जो मूर्ति अंकित की थी; उसे फिर शीघ्रता से मिटाना पड़ा।

रमेश अब अपने गाँव में न रह सका। यह सोचकर, कि कलकत्ते में लोगों की भीड़ के भीतर छिपकर रहने से कोई उपाय किया जा सकता है, रमेश कमला को लेकर कलकत्ते आया। पहले जहाँ रहता था, उससे बहुत दूरी पर उसने अपना मकान लिया।

कलकत्ता देखने के लिये कमला के आग्रह की सीमा न थी। पहले दिन मकान में प्रवेश करते ही वह खिड़की में जा बैठी—वहाँ से जनता के अविराम प्रवाह में उसके मन में नये-नये कौतूहल होने लगे। घर में एक नौकरानी थी, उसके लिये कलकत्ता बहुत पुराना था वह बालिका के विस्मय को निरर्थक मूर्खता समझ चिढ़कर बोल उठी, "माँ जी, मुँह पसारकर क्या देख रही हो? बहुत दिन चढ़ा, स्नान न करोगी।"

नौकरानी दिन भर काम करके रात को चली जाती है। रात दिन रहने वाली कोई मिली नहीं। रमेश सोचने लगा, "अब तो मैं कमला को एक ही शय्या पर रख नहीं सकता---फिर अपरिचित स्थान में यह बालिका अकेली कैसे रात काटेगी।"

रात को भोजन के बाद नौकरानी चली गई। रमेश ने कमला से, उसका बिस्तर दिखाते हुये कहा—"तुम सो जाओ; मैं इस किताब के पढ़ने के बाद सोऊँगा।"

इस तरह रमेश ने एक किताब लेकर पढ़ने का बहाना किया। थकी हुई कमला को नींद आते देर न लगी।

वह रात ऐसी ही बीती। दूसरी रात को भी रमेश ने किसी बहाने कमला को अकेली ही बिछौने पर सुला दिया। उस रात बड़ी गर्मी थी। सोने वाली कोठरी के सामने एक खुली छोटी-सी छत थी। वहीं एक दरी बिछाकर रमेश लेट रहा और अनेक चिन्ताएँ करते-करते हाथ का पंखा झलते-झलते अधिक रात बीते सो गया।

रात में दो-तीन बजे के समय अर्द्धनिद्रावस्था में रमेश को अनुभव हुआ, कि वह अकेला नहीं सोया है और उसके लिये धीरे-धीरे हाथ का पंखा चल रहा है। रमेश ने नींद की झोंक में अपने पास सोई हुई को अपनी ओर खींच लिया और बिड़बिड़ाकर कहा—"सुशीला, तुम जाओ; मुझे पंखा न झलो।" अन्धकार से डरी हुई कमला रमेश की बाहों में सिमट छाती से लगकर आराम से सो रही।

सवेरे रमेश जागने पर चौंक उठा। उसने देखा, कि सोई हुई कमला का

दाहिना हाथ उसके गले में लिपटा है—वह निःसंकोच रमेश पर अपने विश्वस्त अधिकार का विस्तार कर उसकी छाती से सटी हुई है। निद्रित बालिका के चेहरे की ओर देख रमेश की आँखों में आंसू भर आये। वह संशयहीन कोमल हाथों की लपेट को कैसे अलग करे। उसे यह भी याद आई, कि रात को बालिका उसके पास लेटकर धीरे-धीरे पंखा झलने लगी थी, ठण्डी साँस भरकर धीरे-धीरे बालिका के बाहु-बन्धन से निकलकर रमेश धीरे से उठ गया।

बहुत देर बिचारकर रमश ने स्थिर किया कि कमला को बालिका-विद्यालय की बोर्डिंग में रखना ठीक है। ऐसा होने से कुछ दिन के लिये इस चिन्ता से उसको छुटकारा मिलेगा।

रमेश ने कमला से पूछा, "कमला, तुम पढ़ना चाहती हो ?"

कमला रमेश के मुँह की ओर देखती रह गई ; मतलब यह कि "तुम कहते क्या हो ?"

रमेश ने लिखने-पढने से उपकार और आनन्द के बारे में बहुतेरी बातें कह डाली; जिसकी कोई आवश्यकता न थी।

कमला ने कहा, "मुझे लिखना-पढ़ना सिखाओ।"

रमेश ने कहा, "तब तुम्हें स्कूल जाना पड़ेगा।"

कमला ने विस्मय के साथ कहा, "स्कूल ! तनी बड़ी होकर मैं स्कूल जाऊँ ?"

कमला की उम्र की मर्यादा के अभिमान पर रमेश ने मुस्कराकर कहा, "तुम से भी बड़ी लड़कियाँ स्कूल जाती हैं।"

इसके बाद कमला ने कुछ न कहा। एक दिन गाड़ी की सवारी से वह रमेश के साथ स्कूल गई। बहुत बड़ा मकान—कमला से बड़ी और छोटी कितनी ही लड़कियाँ थीं, जिनका अन्दाज नहीं। विद्यालय की मास्टरानी के हाथ कमला को सौंप जब रमेश चलने लगे, तब कमला भी उनके साथ चलने को तैयार हो गई। रमेश ने कहा, "तुम कहाँ चलोगी ? तुम्हें यहीं रहना पड़ेगा।"

कमला ने डरी हुई आवाज में कहा, "तुम यहाँ न रहोगे ?"

रमेश, "मैं यहाँ नहीं रह सकता।"

कमला ने रमेश का हाथ पकड़कर कहा, "तब मैं भी यहाँ न रहूँगी; मुझे ले चलो।"

रमेश ने हाथ छुड़ाकर कहा, "छिः, कमला!"

इस धिक्कार से कमला चुपचाप खड़ी रह गई। उसका चेहरा एकबारगी उतर गया। रमेश दुःखित मन से शीघ्र बाहर निकल गया, किन्तु बालिका का वह स्तम्भित, असहाय, भयभीत चेहरा उसके हृदय में अंकित हो गया।

चार

रमेश निश्चय कर चुका था, कि अब वह अलीपुर में वकालत आरम्भ कर देगा। किन्तु उसका मन टूट गया था। इस समय उसमें मन को स्थिर कर काम-काज में आने वाली विघ्न-बाधाओं को दूर करने की शक्ति नहीं थी। वह कुछ दिन गंगा के पुल और गोलदीघी के किनारे बेकार घूमने-फिरने लगा। एक बार मन में आया, कि कुछ दिन के लिये पश्चिम भ्रमण कर आये, इसी समय अन्नदा बाबू के पास से एक चिट्ठी आई।

अन्नदा बाबू ने लिखा है—

"गजट में देखा, कि तुम पास हो गये—किन्तु यह समाचार तुम्हारी ओर से न पाकर मैं दुःखी हुआ। बहुत दिनों से तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिला। तुम कैसे हो और कब कलकत्ते आओगे; इसकी खबर देकर मुझे निश्चिन्त करें।

यहाँ यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि अन्नदा बाबू जिस विलायत गये लड़के के ऊपर निगाह रखे थे, वह बैरिस्टर होकर लौट आया और एक धनी की कन्या के साथ उसके विवाह की तैयारियाँ हो रही हैं।

रमेश किसी तरह भी यह तै न कर सका, कि इस बीच में जो घटनाएँ हो गई हैं, उनके बाद हेमनलिनी के साथ पहले की तरह मिलना-जुलना उचित

है या नहीं। इस समय कमला के साथ उसका जो सम्बन्ध है, उस बात को वह किसी के आगे खोलना उचित नहीं समझता। निरपराधिनी कमला को वह संसार के आगे बदनाम नहीं करना चाहता। फिर भी, यदि वह हेमनलिनी से सब बातें साफ-साफ नहीं कह देता, तो उस पर वह अपना पहले का अधिकार कैसे प्राप्त कर सकता है।

किन्तु अन्नदा बाबू के पत्र का जवाब न देना किसी तरह भी उचित नहीं। उसने लिखा—'अनेक कारणवश आपसे मुलाकात नहीं कर सका हूँ; क्षमा कीजियेगा।" उस पत्र में उसने अपना नया पता नहीं लिखा।

इस चिट्ठी को रमेश ने डाक में छोड़ दिया। इसके दूसरे दिन वकालती पोशाक पहन वह अलीपुर की अदालत में हाजिरी देने गया।

एक दिन वह अदालत से लौटने के समय कुछ दूर पैदल चलने के बाद एक गाड़ीवान् से किराये की बातचीत करने लगा। इसी समय उसे व्यग्रता के साथ किसी की पहचानी हुई आवाज सुनाई दी—"पिता जी, वह देखिये रमेश बाबू।"

"गाड़ीवान, ठहरो-ठहरो।"

गाड़ी रमेश की बगल में आकर ठहर गई। उस दिन अलीपुर के चिड़िया-खाने के एक निमन्त्रण में शामिल हो अन्नदा बाबू अपनी कन्या के साथ मकान लौट रहे थे। इसी समय एकाएक मुलाकात हो गई।

गाड़ी में हेमनलिनी का वह स्निग्ध और गम्भीर मुखड़ा, विशेष रूप से पहनी वही साड़ी, उसके बाल गुथने की निराली परिपाटी, उसके हाथ का चिकना कड़ा और डैमकट छीला हुई सोने की दो दो चूड़ियाँ देखकर रमेश की छाती से एक लहर उठ उसके गले तक लहरा उठी।

अन्नदा बाबू ने कहा—"कहो जी, रमेश, बड़े भाग्य से राह में मुलाकात हो गई। आजकल तो तुमने चिट्ठी लिखना भी बन्द कर दिया है; लिखते भी हो, तो उसमें पता नहीं लिखते। इस समय कहाँ जा रहे हो? क्या कोई विशेष काम है?"

रमेश ने कहा—"नहीं; कचहरी से लौट रहा हूँ।"

रमेश ने कोई जवाब न दे सिर्फ हँस दिया। अक्षय ने कहा, "आपके पिताजी जिस शीघ्रता से आपको पकड़ ले गये, उससे मैं समझ रहा था, कि वे इस बार आपका विवाह किये बिना न छोड़ेंगे—बचके निकल आये हो न ?"

हेमनलिनी ने अक्षय की ओर नाराजगी के साथ देखा।

अन्नदा बाबू ने कहा—"अक्षय ! रमेश के पिता की मृत्यु हो गई।"

रमेश उदास मुँह नीचे किये बैठा रहा। उसके घाव पर नमक छिड़कने के खयाल से हेमनलिनी मन-ही-मन अक्षय पर बहुत नाराज हुई। वह शीघ्रता के साथ रमेश से बोल बैठी, "रमेश बाबू, आपने हम लोगो का नया अल्बम् नहीं देखा।" कहती हुई वह अल्बम् लाकर रमेश के टेबिल के एक किनारे रख तसवीरो की आलोचना करने लगी; वह इसी समय धीरे से पूछ बैठी, "रमेश बाबू, शायद आप अपने नये घर मे अकेले ही रहते है ?"

"रमेश ने कहा, "हाँ।"

हेमनलिनी—हम लोगों के बगल वाले मकान मे आप आने मे देर न करे।

रमेश ने कहा, "अच्छा, मै इस सोमवार को निश्चय आ जाऊँगा।"

हेमनलिनी, "मै चाहती हूँ कि बी० ए० की फिलासफी के बारे मे आपसे पूछ लिया करूँ।"

इस पर रमेश ने बड़ा उत्साह प्रकट किया।

दूसरे ही दिन रमेश पहले वाले मकान में चला आया।

अभी तक हेमनलिनी के साथ जो कुछ मनोमालिन्य था, वह अब न रहा। रमेश मानो बिलकुल घर का आदमी हो गया। हँसी-मजाक निमन्त्रण—आमंत्रण की धूम मच गई।

कई बार अध्ययन करने से पहले हेमनलिनी का चेहरा उदास रहता था। जान पडता था कि मानो जरा जोरो की हवा लगने से ही कोमल शरीर हिल-कर टूट पड़ेगा। उस समय वह बोलती भी कम थी और उसके साथ बातें करने में भी डर लगता था, कहीं मामूली बात से भी नाराज न हो जाये।

इधर कुछ दिनों में ही उसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन हो गया है। उसके कपोलों पर लावण्य की आभा दिखाई दी है। उसकी आँखें इस समय बात-बात

में हास्य-छटा से नाच उठती हैं। पहले वह वेष-भूषा में मन लगाना चापल्य और अन्याय समझती थी। अब किसी से बिना बहस न जाने क्यों उसका मन पलट रहा है।

कर्त्तव्य के बोझ से दबे रहने के कारण रमेश में भी कुछ कम गम्भीरता नहीं थी। विचार शक्ति की प्रबलता से उसका शरीर और मन शुद्ध हो गया था। वह भी आजकल न जाने कैसे हलका हो गया है। आजकल हर समय हँसी-मजाक का ठीक जवाब न दे सकने पर ठहाका लगाकर हँस देता है। उसके सिर पर अभी तक कंघी नहीं फिर सकी, किन्तु उसका दुपट्टा अब पहले की तरह मैला नहीं रहता। उसके शरीर और मन में इस समय एक प्रबल शक्ति का आविर्भाव हो रहा है।

पाँच

काव्य में प्रेमियों के लिये जिन वस्तुओं की व्यवस्था है, उन सबका कलकत्ता शहर में अभाव है। कहाँ फूले हुए अशोक और मौलश्री की वह कतारें, कहाँ विकसित माधवी का वह प्रछन्न लतामंडप, कहाँ आम के रस से रसीली कोयल की कू-कू ? फिर भी इस सूखे और कठोर सौन्दर्यहीन आधुनिक नगर में प्रेम का जादू धक्का खाकर निकल नहीं जाता। इस गाड़ी-घोड़े की भीड़ में, लोहे की सीकड़ों में बँधी ट्राम की राह में वह चिर किशोर प्राचीन देवता अपने धनुष के छिपे निशाने से, लाल पगड़ी वाले पहरेदारों के सामने कितनी रात बीते या कितने दिन चढ़े कितनी ही बार कितने ही स्थानों से वार किया करते हैं, इसका कोई अन्दाज नहीं।

यह कोई नहीं कह सकता कि रमेश और हेमनलिनी चमड़े की दूकान के सामने मोदी की दूकान की बगल में किराये के मकान में रहने के कारण प्रणय-विकास के सम्बन्ध में कुंज की कुटियों में विहार करने वालों से कुछ कम थे।

हेमनलिनी की पाली हुई बिल्ली को कृष्णसार-मृग छौना न होने पर भी रमेश पूर्ण स्नेह के साथ उसकी गरदन को सहलाता था, वह बिल्ली भी धनुष की तरह पीठ फुला आलस्य छोड़ शरीर चाट-चाटकर अपनी शोभा बढ़ाने लगी।

हेमनलिनी परीक्षा में व्यस्त रहने के कारण सिलाई की शिक्षा में विशेष ध्यान नहीं दे सकी। कुछ दिन से वह सिलाई में दक्ष एक सहेली से मन लगाकर सिलाई सीख रही थी। रमेश सिलाई के काम को अनावश्यक समझता था। साहित्य और दर्शन में हेमनलिनी के साथ उसकी खूब बहस चलती थी; किन्तु सिलाई-कटाई के विषय में रमेश को दूर ही रहना पड़ता था। इससे वह प्रायः तंग होकर ही कह बैठता था, "आजकल आपको सिलाई के काम में इतनी दिलचस्पी क्यों है? जिनके पास समय काटने का कोई उपाय नहीं, उन्हीं के लिए यह काम अच्छा है।" हेमनलिनी इसका कोई उत्तर न देकर मुस्कराकर सुई में रेशम पिरोने लगती थी। अक्षय तीव्र स्वर में बोल बैठता, "जिन कार्यों की संसार में आवश्यकता है, वह सब रमेश बाबू की दृष्टि में तुच्छ हैं। महाशय, चाहे कोई कितना बड़ा तत्वज्ञानी और कवि क्यों न हो, तुच्छ कामों के त्याग से उसका काम एक दिन भी नहीं चल सकता।" रमेश उत्तेजित हो इसके विरुद्ध तर्क करने के लिए डटकर बैठ जाता; तब हेमनलिनी बीच में बाधा देकर बोल उठती, "रमेश बाबू, आप सब बातों का जवाब देने के लिए इतने व्यस्त क्यों रहते हैं? इससे संसार में बेकार का झगड़ा होता है, जिसका कोई अन्त नहीं।" यह कहती हुई वह सर नीचा कर सावधानी से सुई चलाने लगती।

रमेश ने एक दिन सवेरे अपने पढ़ने के कमरे में बैठते ही देखा कि टेबिल के ऊपर रेशम की डोरी से फूल कढ़ा और मखमली कोने से मढ़ा एक ब्लाटिंग-पैड सजाकर रखा हुआ है। उसके एक कोने में 'र' अक्षर कढ़ा था और दूसरे कोने पर सुनहरे जरी के तार से एक कमल अंकित था। इसका अर्थ समझने में रमेश को क्षण-मात्र की भी देर न लगी। उसकी छाती खिल उठी। अब उसकी अन्तरात्मा ने बिना तर्क और प्रतिवाद के स्वीकार कर लिया, सिलाई का काम तुच्छ नहीं है ब्लाटिंग पैड को हृदय से लगाकर वह अक्षय से

भी हार मानने को राजी हो गया। उस ब्लाटिंग पैड पर उसी समय एक पत्र रख उसमे लिखा, 'यदि मै कवि होता, कविता लिखकर उसका बदला चुकाता, किन्तु मै काव्य की प्रतिभा से वंचित हूँ। ईश्वर ने मुझे देने की क्षमता नहीं दी लेकिन लेने की क्षमता भी तो कुछ है ; आशातीत उपहार को मैंने कैसे ग्रहण किया उसे अन्तर्यामी के अतिरिक्त कोई नही जान सकता। प्रदान आँखों से दिखाई देता है किन्तु आदान मन के भीतर छिपा रहता है।"'चिरऋणी !"

यह पत्र हेमनलिनी के हाथ आ गया। इसके बाद इस बारे में दोनो में कोई बातचीत नही हुई।

वर्षाऋतु आरम्भ हो गई। बरसात का मौसम कम-से-कम शहरी मनुष्य-समाज के लिये उतना सुखकर नही—वह वन-प्रान्त के लिये ही विशेष उपयोगी है ; शहर के मकान वाले अपनी खिडकियों को बन्द रख, राह चलते अपने छाते को खोल, ट्राम गाडी के अपने पर्दे गिरा वर्षा को रोकने की चेष्टा में पसीने-पसीने हो उठते है। नदी, पर्वत और वन-प्रान्त वर्षा को सादर मित्र समझकर स्वागत करते है। इसलिये वर्षा का यथार्थ आदर होता है, यहाँ सावन में देवलोक और भूलोक के आनन्द समागम के बीच किसी प्रकार का विरोध नही। किन्तु प्रेम का प्रवाह मनुष्य को वन-पर्वत के साथ एक श्रेणीयुक्त कर देता है। लगातार वर्षा से अन्नदा बाबू का चूल्हा दूना विकल हो उठा ; किन्तु रमेश और हेमनलिनी के मन की स्फूर्ति में कुछ भी बाधा न पड़ी। मेघ की छाया, वज्र की तड़प और वर्षा के कल-कल शब्द ने इन दोनों के मन को और भी समीप ला दिया। बरसात के बहाने रमेश के कचहरी जाने मे प्राय. रोज ही बाधा पड़ने लगी। किसी दिन सवेरे ऐसी घोर वृष्टि होती है, जिससे हेमनलिनी घबड़ाकर बोल उठती, "रमेश बाबू, इस वृष्टि में आप घर कैसे जायेंगे।" रमेश बड़े संकोच के साथ उत्तर देता, किसी प्रकार निकल ही जाऊँगा।" हेमनलिनी कहती, "भागने से सर्दी लग जायेगी। यहाँ भोजन करके ही जाइये न ?" सर्दी हो जाने का खयाल रमश को नही था ; उसके मित्रों ने सहज मे ही उन्हें कभी सर्दी होते देखा भी नहीं, किन्तु बरसात के समय उसे हेमनलिनी की सेवा के अधीन होना पड़ता था, दो कदम चलकर उसे घर जाना

भी दुःसाहस जान पड़ता था। किसी दिन बादलों में विशेष लक्षण दिखाई देते ही हेमनलिनी के घर रमेश के लिये खिचड़ी और शाम को पकौड़ियों का निमन्त्रण मिल जाता था। प्रायः देखने मे आया है, कि इन लोगों को अचानक सर्दी लग जाने की आशंका जितनी अधिक थी, उतनी रसोई बनाने की नहीं।

इसी प्रकार समय बीतने लगा। रमेश ने सका विचार नही किया कि इस प्रकार विस्मृति हो जाने से हृदय के आवेश का परिणाम क्या होगा। किन्तु अन्नदा बाबू समझते थे और उनके समाज के और भी चार आदमी इसकी आलोचना करते थे। रमेश में जितना पाण्डित्य था, उतना कर्त्तव्य-ज्ञान नहीं था; उस पर वर्तमान मुग्धता की अवस्था में उसकी सांसारिक बुद्धि और भी मलिन हो गयी थी। अन्नदा बाबू नित्य ही विशेष आशा से उसके मुँह की ओर देखते थे, किन्तु उन्हें उधर से कोई उत्तर न मिलता।

अक्षय का गला विशेष अच्छा नहीं था; किन्तु जब वह स्वयं वायलिन बजाकर गाता था, तब अच्छे गायकों के अतिरिक्त साधारण श्रोता किसी प्रकार की आपत्ति नही करते थे, यहाँ तक कि और गाने का अनुरोध करते थे। अन्नदा बाबू को संगीत का शौक नही था। यदि कोई अक्षय से गाने का अनुरोध करता, तो वे बोल बैठते, "यही तो तुम लोगों में दोष है। बेचारा गाना जानता है, इसलिये उस पर यों अत्याचार नहीं करना चाहिये।"

अक्षय नम्रता से कहता, "नहीं-नहीं, अन्नदा बाबू, इसके लिये चिन्ता न करें; इसमें अत्याचार की क्या बात है।"

अनुरोध करने वालों की ओर से जवाब मिलता, "तब फिर गाना अवश्य होने दिया जाय।"

एक दिन शाम को खूब घनघोर घटा छायी थी। प्रायः अन्धेरा हो चला, फिर भी, वर्षा नहीं रुकी। अक्षय पानी की वजह से बैठा रहा। हेमनलिनी ने कहा, "अक्षय बाबू, कोई गाना सुनाइये।"

यह कहकर हेमनलिनी हार्मोनियम पर स्वर देने लगी।

अक्षय ने वायलिन मिलाकर गाना शुरू किया—

"वायु बहे पुरबैया, नींद नहीं बिन सैंया।"

गाने के सब शब्दों का अर्थ समझने में नहीं आता है—किन्तु उसके शब्द-शब्द का अर्थ समझने की जरूरत भी नहीं। जब मन में विरह-वेदना का सचार होता है, तब उसका जरा-सा आभास मिलना ही बहुत है। बादलों से बूँदें झर रही हैं, मोर बोल रहे हैं और एक के लिये दूसरे की व्याकुलता का अन्त नहीं।

स्वर की भाषा में अक्षय अपने मन की छिपी हुई बात के कहने का प्रयत्न कर रहा था किन्तु यह भाषा और भी दो व्यक्तियों के काम आ रही थी। दो आदमियों का हृदय उस स्वर लहरी का आश्रय ले एक-दूसरे पर घात-प्रतिघात कर रहा था। ससार में कुछ भी अकिंचित रह नहीं गया। सब मनोहर हो गया। संसार में अब तक जिस मनुष्य ने जितना प्रेम किया है, वह सभी मानो दो हृदयों में विभक्त हो अनिर्वचनीय सुख-दुःख की आकाँक्षा और व्याकुलता से कम्पित हो गये।

उस दिन मेघ में जैसा जमाव था, उसी प्रकार गाना भी जमा हुआ था। हेमनलिनी सिफारिश करने लगी, "अक्षय बाबू, गाना समाप्त न होने दीजिये, एक और राग छेड़िये।"

उत्साह और आवेग से अक्षय का गाना निरन्तर चलने लगा। गाने का स्वर जम गया, उसमें कहीं से कोई अन्तर न पड़ा मानो रह-रहकर बिजली चमकने लगी। वेदना से भरा हृदय मानो उसमें लिप्त हो जाएगा।

रात को काफी देर से अक्षय अपने घर गया। रमेश चुपचाप हेमनलिनी के मुँह की ओर देखने लगा। हेमनलिनीने भी उसके मुँह की ओर देखा। दोनों की दृष्टि में गाने की छाया छा रही थी।

वर्षा कुछ क्षण के लिए रुक गई थी, रमेश घर चला गया। फिर रिमझिम पानी बरसने लगा। रमेश को उस रात नींद नहीं आई। हेमनलिनी भी बहुत देर तक चुपचाप बैठी अन्धेरे में पानी बरसने की आवाज सुन रही थी। उसके मन का तार-तार बज रहा था—

"वायु बहे पुरवैया, नींद नहीं बिनु सैंया।"

दूसरे दिन सवेरे रमेश ठण्डी साँस ले सोचने लगा, "अगर मैं गाना गा सकता, तो उसके बदले में अपनी अनेक विद्याओं को दान कर देता।"

अन्नदा बाबू—तब चलो, हमारे यहाँ चाय तो पी लो।"

रमेश का हृदय भर आया था, अब इंकार करने की जगह नहीं थी। वह उनकी गाड़ी में बैठ गया। बड़ी चेष्टा से लज्जा दूर कर हेमनलिनी ने पूछा, "आप अच्छी तरह से तो हैं?"

हेमनलिनी ने प्रश्न का उत्तर न मिलने पर फिर कहा, "आपने अपने पास होने का समाचार भी हमें नहीं दिया?"

रमेश के पास इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं था। उसने कहा—मैंने गजट पढ़ा था, कि आप भी पास हो गई हैं?"

हेमनलिनी ने हँसकर कहा, "यही बहुत है कि आप हम लोगों की याद तो रखते हैं!"

अन्नदा बाबू ने पूछा, "आपने अब मकान कहाँ लिया है?"

रमेश ने कहा, "दर्जीपाड़ा में।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "क्यों, कोलूटोला वाला तुम्हारा मकान बुरा तो नहीं था।"

रमेश, "हाँ, उसी मकान में लौटने का विचार है।"

दूसरी ओर से फिर कोई प्रश्न न हुआ। हेमनलिनी गाड़ी के बाहर सड़क की ओर देखने लगी। किन्तु रमेश से रहा न गया, वह आप-ही-आप बोल बैठा, "मेरी एक सम्बन्धी हेदुआ के पास रहती हैं; उनकी देख-रेख रखने के लिये ही दर्जीपाड़ा में रहता हूँ।"

रमेश सरासर झूठ नहीं बोला; किन्तु सुनने में बात बहुत असंगत जान पड़ी। कभी-कभी सम्बन्धी की खबर लेने के लिये क्या कोलूटोला से हेदुआ बहुत दूर है? हेमनलिनी की दोनों आँखें गाड़ी से बाहर सड़क की ओर ही लगी रहीं। अभागे रमेश को कुछ न सूझा कि इसके बाद क्या कहे। वह एकबारगी पूछ बैठा, "योगेन्द्र का क्या हाल है?"

अन्नदा बाबू ने कहा, "वह कानून की परीक्षा में फेल हो गया, पश्चिम की ओर हवा खाने गया है।"

गाड़ी के ठीक स्थान पर पहुँचने पर परिचित मकान और उसकी सजा-

वट ने रमेश के ऊपर मन्त्र-जाल डाल दिया। रमेश की छाती से एक गहरी साँस निकली।

रमेश बिना कुछ बोले-चाले चाय पीने लगा। एकाएक अन्नदा बाबू पूछ बैठे, "इस बार तो तुम बहुत दिन तक देश में रुके रहे; क्या कोई काम था ?"

रमेश ने कहा, "पिताजी की मृत्यु हो गई।"

अन्नदा बाबू, "एँ, यह क्या कहते हो ! यह कैसी बात ! कैसे मृत्यु हुई ?"

"रमेश ने कहा, वे पद्मानदी से नाव की सवारी पर घर लौट रहे थे; एकाएक तूफान से नाव डूबने पर उनकी मृत्यु हुई।"

जैसे तेज हवा चलने से अकस्मात् बादल फट जाते हैं और आसमान साफ हो जाता है, वैसे ही इस शोक-समाचार से रमेश और हेमनलिनी के बीच की ग्लानि क्षण भर में दूर हो गई। हेम ने पछतावे के साथ मन-ही-मन कहा, "मैंने समझने में भूल की थी—वे पितृ-वियोग के शोक और कुछ झमेलों से घबरा उठे होंगे। शायद अब भी इसी से उदास हो रहे हैं। उन पर संसार का कौन-सा संकट पड़ा था, उनके मन पर क्या बीत रही थी, इनकी कोई जानकारी न होने से हम लोगों ने उन्हें दोषी मान लिया था।"

हेमनलिनी इस पितृ-विहीन का अधिक आदर करने लगी। रमेश को भोजन की इच्छा नहीं थी, किन्तु हेमनलिनी ने बहुत जिद कर उसे खिलाया। उसने कहा, "आप बहुत कमजोर हो गये हैं, शरीर की लापरवाही न करें।" फिर उसने अन्नदा बाबू से कहा, "पिताजी, रमेश बाबू आज रात को भी यहाँ ही भोजन करेंगे।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "अच्छी बात है।"

इसी समय अक्षय आ पहुँचा। अन्नदा बाबू के चाय के टेबिल पर कुछ दिन तक अक्षय ने आधिपत्य किया था। आज एकाएक रमेश को देख वह चौंक पड़ा। किन्तु अपने को सम्भाल उसने हँसकर कहा, "यह क्या, ये तो रमेश बाबू हैं, मैं पूछता हूँ, कि क्या हम लोगों को बिलकुल ही भूल गये ?"

रमेश को यह आशा नहीं थी कि किसी उपाय से वह भी गाना गा सकेगा। उसने निश्चय किया ; कि वह वायलिन बजाना सीखेगा। इससे पहले एक दिन उसने एकान्त पाकर अन्नदाबाबू के घर का वायलिन उठाकर छड़ी से रगड़ दिया छड़ी की एक ही रगड़ से सरस्वती ऐसा आर्त्तनाद कर उठीं, कि उसने वायलिन से छेड़-छाड करना बहुत बड़ी निष्ठुरता समझ उस आशा को छोड़ दिया। आज वह एक छोटा-सा हारमोनियम खरीद लाया। कोठरी के भीतर से सांकल चढ़ाकर वह बहुत ही सावधानी से उस पर उँगली चलाकर यह समझ गया कि चाहे जो हो, इस यन्त्र में बेहाला से अधिक सहिष्णुता है।

दूसरे दिन अन्नदाबाबू के घर पहुँचते ही हेमनलिनी ने रमेश से कहा, "आपके घर से कल हारमोनियम की आवाज आ रही थी।" रमेश ने समझा था कि दरवाजा बन्द कर देने से किसी को खबर न होगी। किन्तु कान ऐसे हैं, जो रमेश की कोठरी के बन्द शब्द की खबर लेते हैं। रमेश को कुछ लज्जित हो मंजूर करना पड़ा, कि वह एक हारमोनियम खरीद लाया है और उसकी इच्छा है, कि बजाना सीखे।

हेमनलिनी ने कहा, 'घर में दरवाजा बन्द कर क्यों इतना प्रयत्न करते हैं ? उससे तो अच्छा है, कि आप हमारे यहाँ अभ्यास करें, जहाँ तक मुझे आता है, मैं भी सहायता करूँगी।"

रमेश ने कहा, "किन्तु मैं बिलकुल अनजान हूँ, मुझे सिखाने में आपको बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा।"

हेमनलिनी ने कहा, "मुझे जो कुछ आता है, उससे मैं अनजान को भी सिखा सकती हूँ।"

रमेश ने अपना जो परिचय दिया था बिलकुल सही था। ऐसे शिक्षक की बैरागी सहायता मिलने पर भी स्वर की विद्या ने रमेश के माथे में घुसने की कोई राह न पाई तथा तैराक जैसे पानी में पड़ पागल की तरह हाथ-पैर फटकारता है, रमेश भी संगीत के घुटने भर पानी में वैसा ही व्यवहार करने लगा। कोई ठिकाना नहीं कि उसकी उँगली कब कहाँ जाकर पड़ती है। क्षण-क्षण में बेसुरा स्वर बजने लगा, किन्तु रमेश के कान में वह बेसुरा नहीं जँचता था। सुरे और

बेसुरे में उसे कोई अरुचि न जान पड़ी ; वह निश्चिन्त मन से सर्वत्र राग-रागिनी को उल्लंघन करने लगा । हेमनलिनी बीच में बोल बैठती, "यह क्या करते हैं, भूल हो रही है ।" किन्तु इसी समय शीघ्रता के साथ दूसरी भूल पहले की भूल को छिपा लेती थी । गम्भीर स्वभाव का परिश्रमी रमेश सहज ही छोड़ने वाला नहीं था । सड़क पीटने वाला इंजिन जैसे मन्दगति से चलता है, वह जरा भी नहीं देखता, कि उसके नीचे क्या पिस रहा है ; अभागे स्वर और हारमोनियम के पर्दों पर रमेश की उंगलियाँ वैसी अन्धता के साथ बार-बार आने-जाने लगीं ।

रमेश की इस मूर्खता पर हेमनलिनी हँस रही थी और रमेश भी हँस रहे थे । रमेश के भूल करने की असाधारण शक्ति से हेमनलिनी को बहुत प्रसन्नता हो रही थी । भूल से, बेसुरेपन से आनन्द प्राप्त होना प्रेम की ही शक्ति का काम है । बच्चा जब चलना आरम्भ करता है, तब बार-बार भूल से इधर-उधर पैर फेंकता है ; किन्तु माता का स्नेह उतने से ही उछल पड़ता है । बजाने के सम्बन्ध में रमेश जिस विचित्रता के साथ अपनी भूल प्रकट करता है, हेमनलिनी के लिए उतना ही कौतुक हो उठता है ।

रमेश बीच-बीच में बोल बैठता, "अच्छा, आप इतनी हँसती क्यों हैं ? जब आप पहले-पहल बजाना सीखती थीं, तब क्या आप से भूल नहीं होती थी ?"

हेमनलिनी ने कहा, "भूल तो निश्चय होती थी, किन्तु सच कहती हूँ, रमेश बाबू, आपके साथ मेरी तुलना नहीं हो सकती ।"

अन्नदाबाबू संगीत की भलाई-बुराई के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं समझते थे । वे बीच-बीच में गम्भीर भाव से कान खड़े कर बोल बैठते, "ठीक है, रमेश का हाथ धीरे-धीरे सुधर रहा है ।"

हेमनलिनी कहती, "हाथ को बेसुरे की आदत हो रही है ।"

अन्नदा, "नहीं ! नहीं, पहले जैसा सुना था, उससे अब कुछ-कुछ अभ्यास हो चला है । मुझे तो ऐसा जान पड़ता है, कि रमेश यदि लगा रहेगा, तो उसका हाथ वैसा बुरा न होगा । गाने-बजाने में और कुछ नहीं, खूब अभ्यास

करना चाहिये। सरगम का अभ्यास हो जाने पर सब आप ही सहज हो जाता है।

६:

हर साल पूजा के दिनों में रियायती टिकट आरम्भ होने पर हेमनलिनी को साथ ले अन्नदाबाबू जबलपुर में अपने बहनोई के यहाँ घूमने-फिरने चले जाते हैं।

अब पूजा की छुट्टी में अधिक देर नहीं हैं। अन्नदाबाबू अपनी यात्रा की तैयारी में लगे हैं।

इनका विच्छेद समीप देख आजकल रमेश ने खूब मेहनत के साथ हारमोनियम सीखना आरम्भ किया है। एक दिन बात-ही-बात में हेमनलिनी ने कहा, "रमेश बाबू, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि कम-से-कम कुछ दिन आपको वायु-परिवर्तन की आवश्यकता है। क्यों पिताजी ?" अन्नदाबाबू ने सोचा, कि बात तो ठीक है, क्योंकि इस बीच रमेश के ऊपर शोक और दुःख का बहुत प्रभाव पड़ा है। उन्होने कहा, "कुछ दिन के लिये घूम-फिर आना ही अच्छा है, समझे रमेश, चाहे पश्चिम हो या और किसी देश में, मैंने देखा है, कि इससे कुछ दिन के लिए कुछ लाभ अवश्य होता है। पहले तो कुछ दिन भूख खूब बढ़ती है, फिर पेट भारी हो जाता है, छाती जलने लगती है; जो खाया जाता है, वह पचता भी नहीं।

हेमनलिनी, "रमेश बाबू, आपने नर्मदा का झरना देखा है ?"

रमेश, "नहीं मैंने नहीं देखा।"

हेमनलिनी, "यह आपको देखना चाहिये, क्यों पिताजी ?"

अन्नदा बाबू, हाँ, ठीक तो है, रमेश हम लोगों के साथ ही क्यों न चले चलें। हवा-खोरी भी होगी और संगमरमर का पहाड़ भी देखने में आयेगा।

जलवायु बदलना और संगमरमर का पहाड़ देखना, यह दोनों ही रमेश के लिये इस समय बहुत आवश्यक हैं। इसलिये रमेश भी तैयार हो गया।

रमेश की आत्मा मानो हवा में उड़ी जा रही थी। अशान्त मन के आवेग को रोकने के लिये वह अपने घर का दर्वाजा बन्द कर हार्मोनियम लेकर बैठ गया। आज उसे इधर-उधर का कुछ ज्ञान न रहा—बाजे के सुरों पर पागल की तरह उसकी उँगलियाँ ताल बेताल हो नाचने लगीं। हेमनलिनी के दूर जाने की सम्भावना से कई दिन से उसका हृदय बहुत भारी था, आज उसने प्रसन्नता के आवेग में संगीत विद्या के सम्बन्ध में न्याय-अन्याय के सभी बन्धनों को तोड़ दिया।

इसी समय द्वार पर धक्का लगते हुए आवाज आई, "आह, सब चौपट; ठहरिये, ठहरिये रमेश बाबू यह आप क्या कर रहे हैं!"

रमेश ने लज्जित लाल मुख किये हुए दर्वाजा खोल दिया। अक्षय ने कोठरी में प्रवेश कर कहा, "रमेश बाबू आप छिपे-छपे यह कैसा काण्ड कर रहे है; क्या यह आपकी दीवानी अदालत की किसी कानूनी धारा में नहीं आता?"

रमेश हँसने लगा; बोला, "मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ।"

अक्षय ने कहा—"रमेश बाबू, यदि आप कुछ बुरा न मानें, तो आपके साथ मैं एक बात की आलोचना करना चाहता हूँ।"

रमेश उत्कण्ठा के साथ आलोच्य-विषय की प्रतीक्षा करने लगा।

अक्षय आप इतने दिन में क्या समझे क्योंकि हेमनलिनी की भलाई-बुराई के प्रति मैं लापरवाह नहीं हूँ।

रमेश कुछ उत्तर न दे चुपचाप सुनता रहा।

अक्षय, उसके सम्बन्ध में आपका क्या विचार है, यह पूछने का अधिकार मुझे है; क्योंकि मैं अन्नदा बाबू का शुभचिन्तक हूँ।

इन बातों का ढंग रमेश बाबू को अच्छा न लगा। किन्तु कड़ा जवाब देने का अभ्यास और क्षमता रमेश में नहीं थी। उसने मीठे स्वर से कहा, "आपके मन में इस आशंका के होने का कोई कारण भी है, कि उनके सम्बन्ध में मेरा

कुविचार है ?"

अक्षय, देखिये, आप हिन्दू-परिवार के हैं; आपके पिता हिन्दू थे। मैं सब जानता हूँ; आपके पिता ब्राह्मण के घर विवाह करने की आशंका से वे आपका विवाह करने के लिए आपको देश ले गये थे।

यह समाचार अक्षय जानने का एक कारण था। क्योंकि अक्षय ने ही रमेश के पिता के मन में यह आशंका उत्पन्न कर दी थी। रमेश क्षण भर के लिये भी अक्षय के मुंह की तरफ न देख सका।

अक्षय ने कहा, "अचानक आपके पिताजी की मृत्यु हो जाने से क्या आप अपने को स्वाधीन समझते हैं ? उनकी इच्छा थी······।"

रमेश अब सहन न कर सका; उसने कहा, "देखिये अक्षय बाबू दूसरे के सम्बन्ध में यदि आपको मुझे उपदेश देने का अधिकार हो, तो दे सकते हैं; मैं सुन लूंगा। किन्तु मेरे पिता के साथ मेरा जो सम्बन्ध है, उसमें आप कुछ न कहिये।"

अक्षय ने कहा, "अच्छा ठीक है, इन बातों को छोड़िये। किन्तु हेमनलिनी से विवाह करने के विचार और उसकी अवस्था के बारे में आप जानते हैं या नहीं; यह तो बताइये।"

रमेश चोट-पर-चोट खाता हुआ क्रमशः उत्तेजित हो रहा था, उसने कहा, "देखिये अक्षय बाबू, आप अन्नदाबाबू के मित्र हो सकते हैं, किन्तु मेरे साथ आपकी इतनी मित्रता नहीं है। दया करके आप यह सब प्रसंग छोड़ दीजिए।"

'मेरे छोड़ देने से यदि सबके मुंह बन्द हो जायँ, और आप जैसे इस समय भविष्य न सोच करके आराम से दिन बिता रहे हैं, वैसे ही बराबर बिता सकते, तब तो कोई बात ही न थी। किन्तु समाज आप जैसे निश्चिन्त स्वभाव के लिये सुख का स्थान नहीं है। यद्यपि आप लोग उच्च पुरुष हैं। संसार की बातों का उतना ख्याल नहीं करते, फिर भी प्रयत्न करने से इतना तो समझ सकेंगे, कि जिस भले आदमी की कन्या के साथ ऐसा व्यवहार कर रहे हैं, उससे समाज के आगे जवाबदेही से आप अपने को बचा न सकेंगे। आप जिन लोगों की इज्जत करते हैं, उन लोगों को लोक समाज में अश्रद्धाभाजन बनाने

का यही एक उपाय है।"

रमेश, "आपके उपदेशों को मैं कृतज्ञता के साथ ग्रहण करता हूँ। मेरा जो कर्त्तव्य है ; उसे मैं शीघ्र ही ठीक कर लूंगा और उसका पालन करूँगा; इसके सम्बन्ध में आप निश्चिन्त रहें—अब इसके बारे में अधिक बहस करने की आवश्यकता नहीं है।

अक्षय, "मुझे आपने बहुत बचाया रमेशबाबू, इतने से ही मैं निश्चिन्त हो गया। आपके साथ आलोचना करने का मुझे शौक नहीं है। आपकी संगीत-शिक्षा में बाधा दे मैं अपराधी हुआ हूँ—क्षमा कीजियेगा। आप फिर बजाना शुरू करें, मैं जा रहा हूँ।

रमेश मस्तक के नीचे दोनों हाथ रख बिस्तर पर चित हो लेट गया। बहुत देर तक इसी प्रकार पड़ा रहा। अचानक घड़ी में टन-टनकर पाँच बजते ही वह तेजी से उठ बैठा। भगवान ही जाने, कि उसने क्या विचार स्थिर किया, किन्तु शीघ्र ही पड़ोसी के घर जाकर दो प्याला चाय पीना चहिए, इसके बारे में उसे कोई संकोच न रहा। हेमनलिनी ने चौंककर पूछा, "रमेशबाबू, क्या आपकी तबियत खराब है? रमेश ने कहा, "वैसी कोई बात नहीं।"

अन्नदाबाबू ने कहा, "और कुछ नहीं हाजमे में कुछ गड़बड़ी हुई है, गर्मी अधिक है। मैं जो गोली खाया करता हूँ, उसमें से एक गोली खायें तो ठीक हो जायगा।"

हेमनलिनी ने हँसकर कहा, "पिता जी, तुम अपने साथियों को वह गोली खिला चुके हो, किन्तु उससे तो उन्हें कोई आराम नहीं दिखाई दिया।"

अन्नदा, लेकिन कोई खराबी तो नहीं हुई। मैंने खुद परीक्षा करके देखा है कि अब तक मैंने जितने प्रकार की गोलियाँ खाईं, उनमें यह सबसे स्वास्थ्य-प्रद है।

हेमनलिनी—पिता जी, जब तुम कोई नई गोली खाते हो, तब कुछ दिन तक उसकी बहुत तारीफ करते हो।

अन्नदा, "तुम लोगों को तो कुछ विश्वास ही नहीं होता—अच्छा अक्षय से पूछो, मेरी दवा से उसको फायदा होता है या नहीं।"

उस प्रत्यक्ष गवाह के भय से हेमनलिनी को चुप हो जाना पड़ा।

किन्तु गवाह स्वयं आकर हाजिर हो गया। आते ही उसने अन्नदाबाबू से कहा, "अन्नदाबाबू, आप अपनी वह गोली मुझे दें। उससे बहुत फायदा हुआ है। आज शरीर बहुत हलका-सा जान पड़ता है।"

अन्नदाबाबू ने बड़े गर्व से अपनी लड़की के मुँह की ओर देखा।

गोली खिलाने के बाद अन्नदाबाबू ने अक्षय को शीघ्र छोड़ना नहीं चाहा। अक्षय भी जाने के लिए विशेष उत्सुकता न दिखा बार-बार रमेश के चेहरे के प्रति कटाक्षपात करने लगा।

घूमने के लिए जाने का समय नजदीक आ गया है—मन-ही-मन उसी के विचार में आज हेमनलिनी का मन बहुत प्रसन्न था। उसने सोच रखा था, कि आज रमेश बाबू के आने पर वह छुट्टी बिताने के सम्बन्ध में उससे परामर्श करेगी। वहाँ एकान्त में कौन-कौन-सी पुस्तकें पढ़कर समाप्त करनी चाहिए; यह तय कर लेना चाहिए। तय हुआ था, कि आज रमेश जरा शीघ्र ही आयेगा; क्योंकि चाय के समय अक्षय या कोई अन्य आ ही जाता है; तब सलाह में सुविधा नहीं हो सकती।

किन्तु आज रमेश और दिनों से भी देर में आया। उसके चेहरे का भाव भी चिन्तयुक्त है। इसमें हेमनलिनी के उत्साह को ठेस लगी। समय देखकर उसने रमेश से धीरे-धीरे पूछा, "आज आप बहुत देर से आये?"

रमेश किसी और खयाल में चुप ही रहा; कहा, "हाँ, आज देर हो गयी।"

हेमनलिनी ने आज शीघ्रता से चोटी कर ली थी। सिर गूँथने और कपड़े बदलने के बाद वह कई बार घड़ी की तरफ देखती रह गई—कभी-कभी मन में आता था कि कहीं घड़ी गलत तो नहीं है, अभी शायद अधिक देर नहीं हुई। जब धीरज रखना असाध्य हो गया, तो उसने खिड़की के पास बैठकर सिलाई का काम हाथ में ले मन को शान्त करने की चेष्टा की। इसके बाद वह गम्भीर मुँह लेकर आया—किस कारण देर हुई, इसका रमेश के पास कोई उत्तर न था—जैसे आज जरा जल्दी आने की कोई बात ही नहीं हुई थी!

हेमनलिनी ने किसी तरह चाय पीना समाप्त किया। कमरे में किनारे पर तिपाई के ऊपर कुछ किताबें थीं ; हेमनलिनी जान-बूझ रमेश का ध्यान आकर्षित करने के लिए उन किताबों को उठाकर कमरे से बाहर जाने को तैयार हुई। तो एकाएक रमेश को याद आया, उसने शीघ्रता से उसके पास जाकर कहा, "इन्हें कहाँ ले जाती हो ? आज जरा किताबें छाँट लेनी चाहिये।"

यह कहकर हेमनलिनी शीघ्रता से अपने कमरे में चली गई।

रमेश और भी विकल हो उठा। अक्षय ने मन-ही-मन हँसकर कहा, "रमेशबाबू, जान पड़ता है कि आज आपका शरीर इतना स्वस्थ नहीं है।" रमेश ने इसके उत्तर में कुछ बड़बड़ाकर कहा, जो किसी की समझ में नहीं आया। शरीर के नाम से उत्साहित हो अन्नदाबाबू ने कहा, "मैंने तो रमेश को देखते ही यह बात कही थी।"

अक्षय ने कहा, "शरीर की ओर ध्यान रखना शायद रमेश जैसे लोग तुच्छ समझते हैं। खाना हजम न होने पर उसके लिये चेष्टा करना गँवारूपन समझते हैं।"

रमेश चुपचाप बैठा मन-ही-मन विकल हो रहा था।

अक्षय ने कहा, 'रमेश बाबू, मेरी सलाह मानिये—अन्नदाबाबू की दवा खाकर आज जरा सवेरे ही सो रहिये।"

रमेश ने कहा, "अन्नदाबाबू से आज मुझे कुछ विशेष बात करनी है, इसी से बैठा हुआ हूँ।"

अक्षय ने कुरसी से उठते हुए कहा, "देखिए तो सही, यह बात पहले कहनी चाहिए थी। रमेश बाबू सब बातें मन में रखते हैं; आखिर जब समय बीत जाता है, तब घबरा उठते हैं।"

अक्षय के चले जाने पर रमेश नीचे की ओर निगाह रखकर कहने लगा, "अन्नदाबाबू, आपने मुझे सम्बन्धी की तरह अपने घर में आने-जाने का अधिकार दिया है, इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ; जिसे मैं जुबान से अदा नहीं कर सकता।"

अन्नदाबाबू ने कहा, "विचित्र बात है। तुम हमारे योगेन्द्र के मित्र हो,

तुम्हें घर का लड़का न समझूँ तो और क्या समझूँ ?"

अब आगे क्या कहना चाहिए, यह रमेश की समझ में न आया। अन्नदा-बाबू ने रमेश का रास्ता साफ कर देने के खयाल से कहा, "रमेश, तुम्हारे जैसे लड़के को अपना बना सकने में मेरा भी कम सौभाग्य नहीं।"

इस पर भी रमेश कुछ न बोल सका।

अन्नदाबाबू ने कहा, "देखो न, आपके सम्बन्ध में समाज के लोग बहुतेरी बातें कहते हैं। कहते हैं, कि हेमनलिनी विवाह के योग्य हो गई है, इस समय उसका साथी चुनने के लिए बहुत सावधानी की आवश्यकता है। मैं उन लोगों को उत्तर देता हूँ, कि मैं रमेश पर बहुत विश्वास रखता हूँ वह मेरे साथ कभी अनुचित व्यवहार नहीं करेगा।"

रमेश, "अन्नदाबाबू, मुझे तो आप अच्छी तरह जानते हैं; यदि आप मुझे अपने मन में योग्यपात्र समझते हैं, तो······।"

अन्नदा, "यह कहने की आवश्यकता ही नहीं। हम लोगों ने तो एक प्रकार से सब ठीक कर रखा है तुम्हारे यहाँ जो दुर्घटना हो गई, इससे दिन स्थिर नहीं कर सका। किन्तु बेटा, अब देर करना उचित नहीं समाज में इसके बारे में तरह-तरह की बातें उठ रही हैं—उसे जहाँ तक हो सके, दबा देना ही उचित है।

रमेश, "आप जैसी आज्ञा देंगे, वैसा ही होगा। सबसे पहले आपको लड़की की सलाह लेना उचित होगा।"

अन्नदा, "यह तो है ही। किन्तु वह सब जान चुकी है। फिर भी, कल सवेरे सब बातें पक्की कर लूँगा।

रमेश, "आपके सोने में अब देर हो रही है, अब आज्ञा दीजिये।"

अन्नदा, "जरा ठहरो मैं चाहता हूँ, कि मेरे जबलपुर जाने से पहले ही तुम लोगों का विवाह हो जाय तो अच्छा है।"

रमेश, "इसमें अब कौन-सी देर है।"

अन्नदा, "नहीं, अब भी दस दिन की देर है। आगामी रविवार को यदि तुम लोगों का विवाह हो जाय, तो इसके बाद भी यात्रा की तैयारी के लिए

दो-तीन दिन का समय मिल जायगा। समझे रमेश, मैं इतनी शीघ्रता न करता किन्तु इस शरीर का क्या भरोसा।"

सात

विद्यालय की छुट्टियाँ समीप हैं। छुट्टियों में भी कमला को विद्यालय में ही रखने के लिए रमेश ने पहिले ही मास्टरानी से सब ठीक कर रखा है।

सवेरे उठ मैदान के एकान्त में रमेश ने टहलते-टहलते स्थिर किया, कि विवाह के बाद वह कमला के बारे में हेमनलिनी से सब घटनायें आदि से अन्त तक विस्तार के साथ कह देगा। इसके बाद कमला से भी सब बातों के कहने का अवकाश मिलेगा। इस तरह दोनों तरफ मेल हो जाने पर कमला स्वच्छन्द सखी के रूप में हेमनलिनी के साथ रहने लगेगी। देश में इस बात पर बहुत-सी बातें उठ सकती हैं, यही समझकर उसने हजारीबाग में जाकर वकालत करना स्थिर किया था।

वापस लौटने पर रमेश अन्नदाबाबू के घर गया। सीढ़ी पर अचानक हेमनलिनी से भेंट हो गई और दिन इस प्रकार भेंट होने पर कुछ बात-चीत हो जाती थी किन्तु आज हेमनलिनी का चेहरा लाल हो उठा। उस लालिमा में मुस्कराहट की आभा के प्रकाश की तरह चमक उठी—वह आँखें नीची कर तेजी के साथ चली गई।

हार्मोनियम की जो सरगम सीखी थी, उसी को रमेश घर जाकर अच्छी तरह दोहराने लगा। किन्तु सारा दिन एक ही सरगम बजाने से काम नहीं चलता। उसने कविता की पुस्तकें पढ़ने की चेष्टा की किन्तु बेकार उसके प्रेम का जो सुर बहुत ऊँचाई पर चढ़ गया है, वहाँ तक किसी भी कविता का भाव चढ़ नहीं रहा है।

उधर हेमनलिनी आनन्दोन्मत्त होकर घर का सब काम निपटाकर दोपहर

में अपने कमरे का द्वार बन्दकर सिलाई लेकर बैठ गई। उसके चेहरे पर प्रसन्नता की आभा झलक रही थी एक सर्वांगिण उन्माद उस पर छाया हुआ था।

आज रमेश चाय के समय से पहले ही कविता की पुस्तक और हारमोनियम छोड़ अन्नदाबाबू के घर आ पहुँचा। इससे पहले हेमनलिनी के साथ मुलाकात होने में देर लगती थी। किन्तु आज उसने चाय की कोठरी में देखा, कि वह खाली है; दो मंजिले की बैठक में देखा, वह भी खाली है; हेमनलिनी अभी तक अपने कमरे से नीचे नहीं आई।

अन्नदा बाबू ठीक समय से आकर टेबिल पर अधिकार कर बैठे। रमेश बार-बार चकित हो दरवाजे की ओर देखने लगा।

पैर का शब्द सुनाई दिया, किन्तु घर में अक्षय ने प्रवेश किया। उसने बहुत ही सहृदयता दिखाते हुए कहा, "यहाँ हैं रमेश बाबू, मैं आपके घर गया था।" यह सुनते ही रमेश के चेहरे पर उद्वेग छा गया।

अक्षय ने हँसकर कहा, "डरते क्यों हैं रमेश बाबू, मैं आप पर आक्रमण करने नहीं गया था। शुभ-समाचार की बधाई देने गया था।

इस बात पर अन्नदाबाबू को ख्याल आया, कि हेमनलिनी मौजूद नहीं है। हेमनलिनी को आवाज दी—कोई उत्तर न पाकर उन्होंने ऊपर जाकर कहा, "हेम, यह क्या बात है अभी तक सिलाई लेकर बैठी हुई हो ? चाय तैयार हो गई है। रमेश और अक्षय आ गए हैं।"

हेमनलिनी जरा लज्जा से कहा, "पिता जी, मेरी चाय ऊपर भेज दीजिए, "आज मैं इस सिलाई को समाप्त कर देना चाहती हूँ।"

अन्नदा, "तुममें यही बड़ा दोष है हेम, जब किसी काम को ले बैठती हो, तब और किसी बात का खयाल नहीं करती। नहीं-नहीं, यह न होगा—चलो, नीचे चलकर चाय पी लो।"

यह कहते हुए अन्नदाबाबू जबरदस्ती हेमनलिनी को नीचे ले आये। वह आते ही किसी की ओर न देखकर शीघ्रता के साथ चाय देने में मग्न हो गई।

अन्नदाबाबू ने घबराकर कहा, "हेम, यह क्या करती हो ? मेरे प्याले में चीनी क्यों दे रही हो। मैं तो कभी भी चीनी वाली चाय नहीं पीता।"

अक्षय ने हँसकर कहा, "आज वे अपनी उदारता को सँभाल नहीं पा रही है, आज सबको मीठा खिलायेंगी ।"

हेमनलिनी के प्रति यह छिपी दिल्लगी रमेश के मन मे असह्य हो उठी। उसने मन-ही-मन विचार किया, कि चाहे जो हो, विवाह के बाद अक्षय से किसी प्रकार का लगाव न रखना चाहिए।

तीन-चार दिन बाद एक दिन सन्ध्या समय चाय के टेबिल पर अक्षय ने कहा, "रमेश बाबू, अब आप अपना नाम बदल दीजिए।"

रमेश ने इस दिल्लगी की चेष्टा कर चिढ़कर कहा, "यह तो कहिए, कि क्यों नाम बदल दूँ ?"

अक्षय ने समाचार-पत्र खोलकर कहा, "यह देखिए, आपके नाम के एक छात्र ने किसी और को अपने नाम से इम्तेहान दिलाकर पास करा दिया वह एकाएक गिरफ्तार हो गया।"

रमेश मुँह पर जवाब नही देता, इसे हेमनलिनी जानती है इसलिए अक्षय रमेश पर जितनी चोटें चलाता था उसका जवाब अब तक नही देता, इसलिए क्रोध के लक्षण को छिपाकर हेमनलिनी ने जरा हँसकर कहा, "शायद जेलखाने में अक्षय नाम के भी बहुतेरे लोग हैं।"

अक्षय ने कहा, "यह देखिए, मित्रता से अच्छी सलाह देने पर लोग बुरा मानते है और कुछ इतिहास सुनाऊँ ? आप तो जानती हैं, मेरी छोटी बहन शरत् बालिका विद्यालय में पढ़ने जाती है। उसने कल शाम को आकर बताया कि तुम्हारे रमेश बाबू की स्त्री हमारे स्कूल में पढ़ती है। मैंने कहा, 'धत् पगली ! क्या मेरे रमेश के अतिरिक्त संसार में कोई दूसरा रमेश नहीं है। इस पर शरत् ने कहा, चाहे जो हो, वे अपनी स्त्री पर बड़ा अत्याचार कर रहे हैं। छुट्टी में प्रायः सभी लड़कियाँ घर जाती हैं—उन्होने अपनी स्त्री को बोर्डिंग में ही रखने का प्रबन्ध किया है। वह बेचारी रो-रोकर मर रही है।

अन्नदाबाबू हँस पड़े; कहने लगे, "अक्षय, तुम क्या पागलों की जैसी बातें कर रहे हो ? किसी रमेश की स्त्री स्कूल में पढ़ती और रोती है, इसलिए रमेश अपना नाम बदल दें ?"

इसी समय रमेश वहाँ से उठकर चला गया अक्षय बोल उठा, "यह क्या रमेश बाबू, आप नाराज होकर चले क्यों जा रहे हैं ? आप समझ रहे हैं, कि मैं आप पर सन्देह कर रहा हूँ ?" अक्षय भी रमेश के पीछे चला गया।

अन्नदाबाबू ने कहा, "यह सब क्या गड़बड़ घोटाला है ?"

अन्नदाबाबू ने घबराकर कहा, "यह क्या हेम, रोती क्यों हो ?"

हेमनलिनी ने भरभराई आवाज में कहा, "पिताजी, यह अक्षय बाबू का अन्याय है। वे हमारे घर आए भले आदमी का इस तरह क्यों अपमान करते हैं ?"

अन्नदाबाबू ने कहा, "अक्षय दिल्लगी में न जाने क्या बक गया, इस पर इतना घबराने की क्या जरूरत है ?"

"इस प्रकार की दिल्लगी असहनीय है।"—कहती हुई हेमनलिनी तेजी के साथ ऊपर चली गई।

इस बार कलकत्ते आने के बाद से रमेश बड़ी मेहनत के साथ कमला के पति की खोजकर रहा था। उसने बड़े कष्ट से धोबी पोखर का पता लगाकर कमला के मामा तारिणीचरण को एक पत्र भी भेजा है।

इस घटना के दूसरे दिन सवेरे रमेश को उस पत्र का उत्तर मिला। तारिणीचरण ने लिखा है---दुर्घटना के बाद मेरे दामाद श्रीमान नालिनाक्ष का अब तक कोई पता नहीं चला। वे रंगपुर में डाक्टरी करते थे—वहाँ पत्र लिखने से पता चला है कि वहाँ भी आजतक किसी को उनका कुछ पता नहीं चला। उसका जन्मस्थान कहाँ है, इसका भी पता नहीं।"

रमेश बाबू को यह भी आशा आज जाती रही, कि नलिनाक्ष जीवित है।

रमेश को और भी कई पत्र मिले। विवाह का समाचार पाकर उनके संगी साथियों ने उन्हें अभिनन्दन-पत्र लिखा है। उसमें किसी ने अपने हक का तकाजा किया है तो किसी ने चुपके-चुपके विवाह ठीक कर लेने पर हँसी के साथ तिरस्कार किया है।

इसी समय अन्नदाबाबू के घर के नौकर ने रमेश के हाथ में एक पत्र दिया। हस्ताक्षर देख रमेश बाबू की छाती दहल उठी। पत्र हेमनलिनी का

था। रमेश समझ गया, कि अक्षय की बातों से हेमनलिनी के मन में सन्देह हुआ है और उसी को दूर करने के लिए उसने मुझे पत्र लिखा है।"

उसने पत्र खोलकर देखा, उसमें लिखा था—अक्षय बाबू ने कल आपके साथ अन्याय किया है। मैं समझती थी, कि आज सवेरे ही आप आयेंगे, आये क्यों नहीं ? अक्षय बाबू की बातों को आप अपने मन में स्थान क्यों देते हैं ? आप तो जानते हैं, कि मैं उनकी बातें मानती ही नहीं। आज उस समय से आप जरा जल्दी ही आयें।

इस पत्र में हेमनलिनी के धीरज से भरे कोमल हृदय में चोट पहुँचने का अनुभव कर रमेश की आँखों में आँसू भर आए। रमेश समझ गया कि कल से ही हेमनलिनी रमेश का दुःख दूर करने के लिए व्यग्रता के साथ आसरा देख रही है। इसी तरह उसकी रात बीती और इसी तरह सवेरा बीत गया। अन्त में अधीर होकर यह पत्र लिखा है।

रमेश कल से ही सोच रहा था, कि हेमनलिनी से सब बातें खोलकर कह देना उचित है। किन्तु कल के वातावरण में कहना कठिन हो गया। अब तो शायद यह समझा जायगा, बात खुल जाने पर अपनी निरपराधिता साबित कर रहा है। केवल इतना ही नहीं, इससे अक्षय की भी जीत होगी; वह भी उसे असह्य होगा।

रमेश सोचने लगा, "निश्चय ही अक्षय के मन में यह खयाल है कि कमला का पति कोई अन्य रमेश है। नहीं तो अब तक वह केवल इशारा करके ही शान्त न होता; मुहल्ले भर में शोर मचा देता। अतएव इस समय कोई-न-कोई उपाय होना आवश्यक है।"

इसी समय डाक से एक चिट्ठी आई। रमेश ने पढ़कर देखा, वह पत्र स्त्री-विद्यालय की प्रबन्धिका के पास से आया है। उन्होंने लिखा है कि कमला बहुत दुःखी है ; उसे इस हालत में छुट्टी के समय वे विद्यालय के बोर्डिंग में रखना उचित नहीं समझतीं। आगामी शनिवार को स्कूल में छुट्टी हो जायगी ; उसी समय उसे विद्यालय से घर जाना उचित होगा।

शनिवार को कमला को विद्यालय से ले आना पड़ेगा और आगामी रविवार

को विवाह ।

"रमेश बाबू, मुझे क्षमा कीजियेगा।" कहता हुआ इसी समय अक्षय आ पहुँचा। उसने कहा, "ऐसी एक मामूली दिल्लगी से आप इतने नाराज हो जायेंगे, पहले मालूम होने से मैं यह नहीं करता। दिल्लगी में कुछ सचाई होने से ही लोग चिढ़ते हैं। किन्तु जो बिलकुल निराधार है, उस पर आप सबके सामने इतने नाराज क्यों हुए। अन्नदा बाबू तो कल से ही मुझे धिक्कार रहे हैं, हेमनलिनी मुझसे बोलती ही नहीं। आज सवेरे मैं उन लोगों के यहाँ गया था, वे लोग कमरे से उठकर चले गये। भला आप ही कहिये, कि मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया है।"

रमेश ने कहा, 'इस समय मुझे माफ करें, "मुझे बहुत जरूरी काम है।"

अक्षय—शायद रोशनचौकी का बनाया देने जा रहे हैं। क्योंकि समय बहुत कम है। मैं आपके शुभ कर्म में बाधा नहीं देना चाहता, जाता हूँ।

अक्षय के चले जाने पर रमेश अन्नदा बाबू के घर पहुँचा। घर में घुसते ही हेमनलिनी से उसकी मुलाकात हुई। आज रमेश के जरा जल्दी आने के ख्याल से हेमनलिनी पहले से ही तैयार बैठी थी।

रमेश के घर में घुसते ही हेमनलिनी के चेहरे पर एक उज्जवल और कोमल आभा चमक पड़ी। किन्तु वह क्षणभर में ही मलीन पड़ गई, जब रमेश ने और कोई बात न छेड़कर पहले ही पूछा कि अन्नदा बाबू कहाँ हैं।

हेमनलिनी ने उत्तर दिया, "पिताजी अपनी बैठक में हैं। क्यों क्या अभी उनसे कुछ प्रयोजन है? वह तो बस चाय पीने उतरेंगे।"

रमेश, "नहीं मुझे मिलना बहुत आवश्यक है। देर करना उचित नहीं।"

हेमनलिनी, "तो जाइये, वे कमरे में ही हैं।"

रमेश चला गया। जरूरत है! संसार में जरूरत के लिये सब्र नहीं। इसके कारण प्रेम को भी दरवाजे पर बैठकर प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

रमेश ने अन्नदा बाबू के कमरे में प्रवेश किया। उस समय अन्नदा बाबू अखबार से मुँह ढँक आरामकुर्सी पर पड़े सो रहे थे। रमेश के घर में पहुँचने से ही वे चौंककर उठे और अखबार को हाथ में लेकर कहा, "देखा रमेश इस

बार हैजे से कितने आदमी मर रहे है ?"

रमेश ने कहा, "विवाह कुछ दिन के लिये रोकना होगा, मुझे कुछ विशेष कार्य है।'

अन्नदा बाबू के माथे से शहर की मौत का विवरण एकाएक गायब हो गया। क्षणभर रमेश के मुँह की ओर देखते रहकर उन्होने कहा, "यह कैसी बात है रमेश ! मै निमन्त्रण जो भेज चुका हूँ।"

रमेश ने कहा, 'इस रविवार के बदले आगे का रविवार की तिथि निश्चित कर आज ही फिर निमन्त्रण पत्र भेज देने चाहिये।"

अन्नदा, "रमेश, तुमने तो मुझे परेशान कर दिया। क्या यह भी मुकदमा है, कि अपनी सुविधा के अनुसार तुम तारीख रख लो। जरा सुनूं तो सही, तुम्हें कौन-सा आवश्यक कार्य है।"

रमेश, "एक बहुत आवश्यक कार्य है, देर होने से काम न चलेगा।"

अन्नदा बाबू हवा की चपेट से गिरे हुए केले के वृक्ष की तरह आराम-कुर्सी पर लेट गये। उन्होने कहा, "देर करने से काम न चलेगा। अच्छी बात है, उत्तम बात है तुम्हारी जो इच्छा हो, करो। निमन्त्रण बदलने की व्यवस्था में तुम्हें जो उचित जान पड़े, वही करो। लोग मुझसे पूछेंगे, तो कह दूँगा, कि मै इस बारे में कुछ नही जानता—उन्हें क्या जरूरत है, यह वही जाने ; उन्हें कब सुविधा होगी, इसे वही बता सकते है।"

रमेश कोई उत्तर न दे चुप बैठा रहा। अन्नदा बाबू ने फिर कहा, "हेम-नलिनी से सब बातें बता दी है ?

रमेश, "नही वह अभी कुछ नही जानती।"

अन्नदा, "लेकिन उसका जानना जरूरी है। अकेले तुम्हारा ही विवाह तो है नहीं।"

रमेश, "मैंने सोचा था, कि पहले आपको खबर देकर तब उन्हें दूँगा।"

अन्नदा बाबू बुला उठे, "हेम, हेम !"

हेमनलिनी ने कमरे मे प्रवेश कर कहा, "क्या है पिताजी।"

अन्नदा, "रमेश का कहना है कि उन्हें कुछ विशेष काम है, अभी उन्हें

विवाह करने की फुरसत नहीं।"

हेमनलिनी ने उदास हो रमेश की ओर देखा। रमेश अपराधी की तरह चुपचाप बैठा रहा।

रमेश को यह आशा नहीं थी कि हेमनलिनी को यह समाचार इस रूप में दिया जायगा। इस समाचार ने एकाएक हेमनलिनी पर मर्मान्तिक आघात किया, उसका अनुभव भी अपने व्यथित हृदय से किया। किन्तु जो तीर एक बार चल जाता है, वह फिर नहीं लौटता—रमेश ने साफ देखा कि उस निठुरता ने हेमनलिनी के हृदय के बीचों-बीच चोट की है।

इस बात को अब किसी तरह नरम करने का कोई उपाय नहीं। सच ही है—विवाह इस समय रुक जायगा, रमेश को खास जरूरत है क्या जरूरत है इसे भी वह कह नहीं सकता। इससे बढ़कर कोई नई व्यथा क्या हो सकती है। अन्नदा बाबू ने हेमनलिनी की ओर देखकर कहा, "तुम्हीं लोगों का काम है, अब तुम्हीं लोग इसकी कोई मीमांसा कर लो।"

हेमनलिनी ने सिर झुकाकर कहा, "पिताजी, मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती।" यह कहती हुई वह वहाँ चली गई।

अन्नदा बाबू अखबार को मुँह के सामने रख पढ़ने के बहाने सोच में पड़ गये। रमेश चुपचाप बैठा रहा।

एकाएक रमेश चौंककर उठा और चला गया। बैठने के बड़े कमरे में जाकर उसने देखा कि हेमनलिनी खिड़की के पास चुपचाप खड़ी है। उसकी आँखों के सामने पूजा की छुट्टी से पहले का कलकत्ता, जुआर में आई नदी के समान समूची सड़क और गलियों में जन-प्रवाह से चंचल और प्रमुख हो रहा है।

रमेश को एक बार भी उसके सामने जाने में संकोच हुआ। पीछे की ओर से कुछ देर के लिए स्थिर दृष्टि से देखने लगा। शरत् के सान्ध्य प्रकाश में खिड़की में खड़ी इस मूर्त्ति ने रमेश के मन में एक चिरस्थायी चित्र अंकित कर दिया। वह सुकुमार कपोल का एक अंश, यत्न के साथ गुथी हुई चोटी, गर्दन पर लहराते कोमल बाल, उसके नीचे सोने के हार की एक आभा, बाईं ओर लटकते हुए अंचल का टेढ़ापन—सभी उसके शरीर और मन के ऊपर जमकर

बैठ गया ।

रमेश धीरे-धीरे हेमनलिनी के पास आकर खड़ा हो गया । हेमनलिनी रमेश के बदले सड़क के लोगों की ओर मानो अधिक उत्सुकता का बोध करने लगी । रमेश ने भर्राई आवाज में कहा, "आपसे मैं एक भिक्षा माँगता हूँ ।"

रमेश की आवाज में उछलती हुई वेदना के आघात का अनुभव कर क्षण भर में हेमनलिनी ने मुंह फेरा । रमेश बोल उठा, "तुम मुझ पर अविश्वास न करना ।" रमेश ने पहले-पहल हेमनलिनी को "तुम" कहा । "तुम मुझसे इतना कह दो, कि मुझ पर कभी अविश्वास न करोगी । मैं भी अन्तर्यामी को हृदय से साक्षी देकर कहता हूँ, कि तुम्हारे आगे मैं कभी अविश्वास पात्र न बनूंगा ।"

रमेश के मुँह से और कोई बात न निकली, इसकी आँखों में आँसू छलक आये । हेमनलिनी ने अपने निस्तब्ध करुण नेत्रों से रमेश के मुँह की ओर स्थिर हो देखा । इसके बाद एकाएक बहती हुई आँसुओं की धारा हेमनलिनी के दोनों गालों पर झर-झर बहने लगी । देखते-देखते उस एकान्त खिड़की के पास दोनों में वाक्यहीन शान्ति और धैर्य का स्वर्गखण्ड सृजन हो गया ।

कुछ देर इसी प्रकार अश्रुजल से भीगते हुए गम्भीर मौन के साथ हृदय को निमग्न रख जरा आराम से ठण्डी साँस लेकर रमेश ने कहा. "मैंने सप्ताह भर के लिये विवाह स्थगित रखने का जो प्रस्ताव किया है, उसका कारण तुम जानना चाहती हो ।

हेमनलिनी ने चुपचाप सिर हिलाया, वह नहीं जानना चाहती ।

रमेश ने कहा, "विवाह के बाद मैं तुमसे सब बातें खोलकर कहूँगा ।"

आज भोजन के उपरान्त जब हेमनलिनी रमेश के साथ मिलने की आशा से उत्सुकता के साथ सब सजावट कर रही थी, उस समय वह अनेक बातें अनेक छोटे मोटे सुख चित्र की कल्पना कर रही थी । किन्तु अभी जो कुछ देर पहले दोनों के हृदय ने विश्वास का अदला-बदला किया, यह जो आँखों से आँसू बह पड़े और बातचीत कुछ न हुई तथा दोनों ही एक-दूसरे की बगल में कुछ देर तक खड़े रहे—उस एकान्त आनन्द, गम्भीर शान्ति और परम धैर्य की कल्पना

भी वह नहीं कर सकी थी।

हेमनलिनी ने कहा, "तुम जरा पिताजी के पास जाओ, वे नाराज हो गये हैं।"

रमेश प्रसन्नचित्त से संसार के छोटे-बड़े आघात-संघात को छाती पर सहने के लिये चला।

अन्नदा बाबू ने रमेश को फिर अपनी कोठरी में प्रवेश करते देख आग्रह के साथ उसके मुँह की ओर देखा। रमेश ने कहा, "अगर निमन्त्रण की कापी मेरे हाथ में दें, तो मैं दिन-परिवर्तन की सूचना आज ही भेज दूँ।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "तब दिन बदलने की ही सलाह पक्की रही ?"

रमेश ने कहा, "हाँ, दूसरा कोई उपाय दिखाई नहीं देता।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "देखो बेटा मुझे इस बारे में न घसीटो, जो कुछ बन्दोबस्त करना है, वह तुम्हीं करो। मैं लोक-हँसाई न सहूँगा। विवाह के मामले को यदि अपनी मर्जी के अनुसार लड़कों का खेल बना डालो तब मेरे जैसे बूढ़ों का इसमें न रहना ही अच्छा है। यह लो, अपनी निमन्त्रण की फह-रिस्त। इस बीच में मैं जितने रुपये खर्च कर चुका उसमें ही कितने रुपये बर्बाद हो जायेंगे। मुझमें इतनी ताकत नहीं है, कि बार-बार इस तरह रुपये पानी में बहाऊँ।"

रमेश सब खर्च और व्यवस्था अपने ऊपर लेने को तैयार हुआ। वह उठने की तैयारी कर रहा था, ऐसे समय अन्नदा बाबू ने फिर कहा, "रमेश तुमने ठीक किया है कि विवाह के बाद वकालत की प्रैक्टिस कहाँ करोगे ? कलकत्ते में ही न ?"

रमेश ने कहा, "नहीं! पश्चिम में कोई अच्छी जगह ढूंढ़ रहा हूँ।"

अन्नदा बाबू—वही ठीक है, पश्चिम की अच्छी जगह। इटावा भी कोई खराब जगह नहीं। वहाँ का पानी हाजमे के लिये बहुत मुफीद है—मैं वहाँ महीने भर रहा—उस एक महीने में मेरा भोजन दूना हो गया था। देखो बेटा संसार में मेरी यह एक ही बेटी है—मैं सदा उसके पास-पास न रहूँगा, तो वह भी सुखी न होगी; मैं भी निश्चिन्त रह न सकूँगा। इसी से मेरी इच्छा है

कि तुम्हें एक स्वास्थ्यकर स्थान देखकर रहना चाहिये।

अन्नदा बाबू एक अपराध का मौका पा रमेश पर तरह-तरह की हुकूमत चलाने लगे। उस समय यदि रमेश को इटावे की सलाह न दे गारो या चिरापूंजी की सलाह देते, तो उस पर भी वह उसी समय राजी हो जाता। उसने कहा, "जैसी आज्ञा, मैं इटावे में ही प्रैक्टिस करूँगा।" यह कहकर रमेश निमन्त्रण बदलने का कार्य-भार ले चला गया।

कुछ देर बाद अक्षय के आने पर अन्नदाबाबू ने कहा—"रमेश ने अपना विवाह एक सप्ताह के लिये टाल दिया है।"

अक्षय, "नहीं-नहीं, आप क्या कहते हैं! यह भी कभी हो सकता है?" परसों ही तो विवाह है!

अन्नदा, "समय टालना तो नहीं चाहता था—ऐसा तो मामूली लोगों में भी नहीं होता। किन्तु आजकल तुम लोगों के मामले में सभी सम्भव है।"

अक्षय अपने मुँह को गम्भीर बना आडम्बर के साथ चिन्ता करने लगा। कुछ देर बाद उसने कहा—आप लोग एक बार जिसे सत्पात्र समझ लेते हैं, उसकी ओर से दोनों आँखें बन्द कर लेते हैं। जिसके हाथ लड़की को सदा के लिये समर्पण करना चाहते हैं, उसके बारे में अच्छी तरह खोज-खबर रखना उचित है। हो सकता है कि कोई स्वर्ग का देवता ही हो, फिर भी, सावधान रहने वाले का कभी विनाश नहीं होता।

अन्नदा, "रमेश जैसे लड़के पर भी यदि सन्देह करना पड़े, तब तो संसार में किसी के साथ कोई सम्बन्ध रखना ही असम्भव जान पड़ता है।"

अक्षय, "अच्छा, रमेश बाबू ने कोई कारण बताया कि वे क्यों विवाह का दिन टाल रहे हैं?"

अन्नदा बाबू ने माथे पर हाथ फेरते हुए कहा—"नहीं, उसने कारण तो कुछ नहीं बताया; पूछने पर कहा, कि बहुत आवश्यक काम है।"

अक्षय मुँह फेरकर जरा हँस दिया। इसके बाद कहने लगा—"जान पड़ता है कि आपकी लड़की से रमेश ने कोई कारण बताया हो।"

अन्नदा बाबू, "हो सकता है।"

अक्षय, "उसे जरा बुलाकर पूछना चाहिये।"

"ठीक कहते हो" कहकर अन्नदा बाबू ने ऊँची आवाज में हेमनलिनी को पुकारा। हेमनलिनी कोठरी में अक्षय को देख इस तरह बाप के सामने खड़ी हुई, जिससे अक्षय उसका मुंह न देख सके।

अन्नदा बाबू ने पूछा—"विवाह का दिन एकाएक टाल देने के बारे में रमेश ने उसका कोई कारण भी तुम्हें बताया है?"

हेमनलिनी ने सिर हिलाकर कहा—"नही।"

अन्नदा बाबू—आश्चर्य की बात है। जैसा रमेश, वैसे ही तुम। उसने आकर कह दिया कि 'मुझे विवाह की फुरसत नहीं है'; तुमने भी कह दिया 'अच्छी बात है, फिर किसी दिन होगा।' बस, फिर कोई बात ही नहीं हुई।

अक्षय ने हेमनलिनी का पक्ष लेकर कहा, "जब एक आदमी साफ-साफ कारण छिपा रहा है, तब उससे कुछ पूछना भी तो अच्छा नहीं जान पड़ता। यदि कहने लायक बात होती, तो रमेश बाबू आप ही कह देते।"

हेमनलिनी का मुंह लाल हो गया। उसने कहा, "इस बारे में मैं दूसरे लोगों की कोई बात सुनना नहीं चाहती। जो हो गया, उससे मेरे मन में कोई क्षोभ नहीं।"

यह कहती हुई हेमनलिनी तेजी के साथ वहाँ से चली गई। अक्षय ने मुंह पर हँसी लाकर कहा, "संसार में मित्रता के काम में ही सबसे अधिक लांछना है। मैंने मित्रता के गौरव का अच्छी तरह अनुभव कर लिया है। आप लोग चाहे मुझसे घृणा करें या गाली दें। रमेश पर सन्देह करना ही मैं मित्र का कर्त्तव्य समझता हूँ। आप लोगों के लिये जहाँ कहीं बुरी सम्भावना होती है, वहाँ मैं बिना शंका किये नहीं रहता। मुझमें यही एक बहुत बड़ा दोष है; यह मुझे मानना ही पड़ेगा। जो हो, योगेन्द्र तो कल आयेंगे ही; वह भी यदि सब देख-सुनकर अपनी बहन के सम्बन्ध में निश्चिन्त हो सकेंगे, तो फिर मैं भी कुछ न कहूँगा।"

अन्नदा बाबू अच्छी तरह समझते हैं कि रमेश से प्रश्न करने का समय है; किन्तु जो बात अनजान है, उसे जबर्दस्ती मथकर उसमें अचानक कोई

बखेड़ा खड़ा करने के भय से उन्होंने स्वभावतः उसके लिये कोई आग्रह नहीं किया।

अक्षय के ऊपर उन्हें क्रोध आया उन्होंने कहा, "अक्षय, तुम्हारा स्वभाव बड़ा वहमी है बिना प्रमाण के क्यों तुम नाहक—"

अक्षय अपने को दबाना जानता है, किन्तु लगातार चोट से आज उसका भी धीरज छूट गया। उसने भी उत्तेजित होकर कहा, "देखिये अन्नदा बाबू मुझमें बहुतेरे दोष हैं। मैं सत्पात्र से कुढ़ता हूँ, मैं साधु लोगों पर सन्देह करता हूँ। भले आदमियों की लड़कियों को फिलासफी पढ़ाने लायक विद्या मुझमें नहीं है और उसी के साथ काव्य की आलोचना करने की क्षमता भी मैं नहीं रखता—साधारण लोगों में ही मेरी गिनती है, किन्तु सदा से मैं आपके प्रति अनुरक्त हूँ; आप लोगों का मित्र हूँ रमेश बाबू के साथ किसी विषय में मेरी तुलना हो नहीं सकती, किन्तु जरा-सा अहंकार भी मुझमें है, आप लोगों के आगे मैंने कभी कुछ छिपाया नहीं। आप लोगों के आगे अपनी दीनता प्रकट कर मैं भिक्षा चाहता हूँ; किन्तु मेरा स्वभाव सेंध लगाकर चोरी करना नहीं है। इस बात का क्या अर्थ है, यह कल ही आप लोगों को मालूम हो जायगा।"

पत्र लिखते-लिखते रात हो गई। रमेश सोने गया, किन्तु नींद नहीं आई। उसके मन में गंगा-यमुना की तरह की सफेद और काली दो रंगी चिन्ता की धाराएँ बह रही थीं। दोनों के एक साथ होने वाले कल्लोल ने उसके विश्राम को हवा कर दिया। कई बार करवट लेकर वह उठ बैठा। खिड़की के पास खड़े होकर देखा कि उसकी गली के किनारे एक ओर मकानों की छाया और दूसरी ओर शुभ्र चाँदनी की रेखा है।

रमेश चुपचाप खड़ा रहा। जो नित्य है, शान्त है, विश्वव्यापी है, जिसमें द्वन्द्व नहीं, दुविधा नहीं, उसी में रमेश के हृदय की प्रकृति पिघलकर मिल गई। वह शब्द विहीन, सीमा विहीन, महालोक के नेपथ्य से सदा से जन्म-मृत्यु, कर्म और विकर्म, आरम्भ और अन्त किसी को न सुनाई देने वाले संगीत के लय ताल में विश्व की रंगभूमि के भीतर प्रवेश कर रहा है। रमेश

ने उस प्रकाश और अन्धकार में अतीत देश से नर-नारियों के प्रेम को इन तारों की रोशनी में आविर्भूत होते देखा है।

रमेश धीरे-धीरे छत पर चला गया। उसने अन्नदा बाबू के मकान की ओर देखा। सब सन्नाटा। उसने देखा मकान की दीवार पर, कार्निस के नीचे खिड़की और दर्वाजों की दरार में, चूने और रंग में चाँदनी और छाया की विचित्र आकार की रेखा फैली हुई है।

यह कैसा विस्मय! एक जनपूर्ण नगर के भीतर उस मामूली मकान में किसी भानी के वेश में यह कैसा विस्मय! इस राजधानी में कितने छात्र कितने वकील, कितने प्रवासी और निवासी हैं; इनके बीच रमेश-जैसे एक साधारण आदमी ने न जाने कहाँ से एक दिन आश्विन की पीली धूप में उस खिड़की के पास एक बालिका के सामने चुपचाप खड़े हो जीवन और जगत् को अपरिसीम-आनन्दमय रहस्य के बीच तैरते हुए देखा— यह कैसा विस्मय है!

बहुत रात तक रमेश छत पर टहलता रहा। धीरे-धीरे कब किस समय, चाँद छुप गया; पृथ्वी पर रात की कालिमा गहरी हो गई उसे पता नहीं।

रमेश का थका हुआ शरीर सर्दी से काँप उठा। एकाएक एक आशंका रह-रहकर उसके हृदय को दबाने लगी। याद आया कि जीवन के रणक्षेत्र में कल फिर उसे संग्राम करने को बाहर निकलना पड़ेगा। उस आकाश में यद्यपि चिन्ता की रेखा नहीं, चाँदनी में चेष्टा की चंचलता नहीं, रात और दिन निस्तब्ध और शान्त हैं, तथापि मनुष्य के युद्ध का अन्त नहीं, सुख और दुःख में बाधा और विघ्न में सारा जनसमाज तरंगित हो रहा है। एक ओर अनन्त की यह नित्य शान्ति, और दूसरी ओर संसार का यह नित्य संग्राम दोनों एक ही समय एक साथ कैसे रह सकते हैं; रमेश के हृदय में दुविधा होते भी यह प्रश्न उठा। कुछ देर पहले रमेश को विश्वलोक के अन्तःपुर में प्रेम की जो एक शाश्वत सम्पूर्ण शान्तमूर्ति दिखाई दे रही थी, वही प्रेम, क्षणभर बाद संसार के संघर्ष और जीवन की जटिलता में कदम-कदम पर क्षुब्ध और क्षुण्ण दिखाई देने लगा।

आठ

योगेन्द्र दूसरे दिन सवेरे की गाड़ी से घर आ गया। आज शनिवार है, कल रविवार को हेमनलिनी के विवाह की बात है। किन्तु अपने घर पहुँचने पर उत्सव का कोई भी चिह्न उसे दिखाई न दिया। योगेन्द्र सोचता आ रहा था कि अब तक उसके मकान के बरामदे में देवदारु के पत्तों की मालाएँ लटका दी गई होंगी किन्तु उसने आकर देखा, कि श्रीहीन और मलिन बगल के मकानों में और उसके मकान में कोई अन्तर नहीं है।

मकान में प्रवेशकर देखा कि चाय के टेबिल पर उसके लिये भोजन तैयार है और अन्नदा बाबू अधूरे चाय के प्याले को सामने रख अखबार पढ़ रहे हैं।

योगेन्द्र ने घर में घुसते ही पूछा, "हेम कैसी है?"

अन्नदा बाबू, "अच्छी है।"

योगेन्द्र, "विवाह का क्या समाचार है?"

अन्नदा बाबू, "आगामी रविवार को होगा।"

योगेन्द्र, "क्यों?"

अन्नदा बाबू, क्यों, "यह अपने मित्र से पूछ लो। रमेश ने हम लोगों से केवल इतना ही कहा है कि उसे कोई अत्यावश्यक कार्य है; इसलिये इस रविवार की अपेक्षा विवाह आगामी रविवार हो जाना चाहिये।

योगेन्द्र ने अपने असमर्थ पिता के ऊपर मन-ही-मन रुष्ट होकर कहा, "पिता जी, मेरे न रहने से तुम लोग बड़ी-से-बड़ी गलती कर बैठते हो। रमेश को जरूरत ही किस बात की है? वह स्वाधीन है। उसके अपने सम्बन्धी कोई भी नहीं हैं। यदि उसको रुपये पैसे के सम्बन्ध में कोई गड़बड़ी होती, तो उसे खोलकर कहने में कोई बाधा न थी। रमेश को तुमने सहज ही छोड़ कैसे दिया?"

अन्नदा बाबू, "वह कहीं भागा तो है नहीं, तुम्हीं उससे पूछ लेना।"

यह सुनकर योगेन्द्र उसी समय शीघ्रता से गर्मागर्म एक प्याला चाय पीकर बाहर निकल गया।

अन्नदा बाबू ने कहा, "उफ, योगेन्द्र इतनी जल्दी काहे की पड़ी है। अभी तुमने भोजन भी नहीं किया।"

यह आवाज योगेन्द्र के कान तक नहीं पहुँची। वह रमेश के मकान में जाकर तेजी के साथ उसके कमरे में पहुँचा। "रमेश! रमेश!" रमेश का कोई पता नहीं। उसने घर-घर में ढूँढ़कर देखा, रमेश अपने सोने के कमरे में भी नहीं है, छत पर नहीं, एक-एक मंजिल में कहीं नहीं। अन्त में बैरे से पूछा, बाबू कहाँ हैं ?"

बैरा ने कहा, "बाबू तो सवेरे ही बाहर निकल गये हैं।"

योगेन्द्र, "कब आयेंगे ?"

बैरा ने बताया कि बाबू अपने कुछ कपड़े वगैरह साथ लेकर बाहर गये हैं। कह गये हैं कि लौटने में चार-पाँच दिन लगेंगे। बैरा को यह नहीं मालूम कि वे कहाँ गये हैं।

योगेन्द्र गम्भीर होकर अपने चाय के टेबिल पर लौट आया। अन्नदा-बाबू ने पूछा, "क्या हुआ ?"

योगेन्द्र ने चिढ़कर कहा, "होगा क्या, जिसके आज के बाद कल लड़की का बिवाह करना है, उसे कौन-सी जरूरत पड़ी है, वह कब कहाँ रहता है; इसका तुम्हें कोई पता नहीं। फिर भी, तुम्हारे मकान के बगल में वह रहता है।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "क्यों, कल रात को भी तो रमेश अपने मकान में ही था ?"

योगेन्द्र ने उत्तेजित हो कहा "तुम लोग नहीं जानते कि वह कहाँ जायेगा, उसका बैरा नहीं जनता कि वह कहाँ गया है, यह कैसा मामला चल रहा है ? मुझे तो यह सब अनुचित जान पड़ रहा है।

अन्नदा बाबू ने गम्भीर होकर कहा, "ठीक तो है; यह सब क्या हो रहा है ?"

कर्तव्यहीन रमेश अनायास कल रात को अन्नदा बाबू से विदा होकर जा सकता था। किन्तु यह बात उसके मन में आई भी नहीं। वही जो उसने

"आवश्यक कार्य है" कहा, उसके साथ मानो वह सब बातें कह गया; रमेश का यही खयाल था। इस एक ही बात से उसने सब बातों से छुट्टी पा ली, यह समझ, वह अपने उपस्थित काम में लगकर दौड़-धूप करने लगा।

योगेन्द्र, "हेमनलिनी कहाँ ?"

अन्नदा बाबू, "आज वह जल्दी ही चाय पीकर ऊपर चली गई है।"

योगेन्द्र ने कहा, "रमेश के इन सब अद्भुत आचरणों से शायद बहुत लज्जित हुई है—इसी से मुझसे सामना होने के भय से भागी है।"

संकुचित और व्यथित हेमनलिनी को धीरज देने के लिए योगेन्द्र ऊपर गया। हेमनलिनी अपने कमरे में चौकी पर चुपचाप बैठी थी। योगेन्द्र के पैर की आवाज सुनते ही उसने पढ़ने के बहाने एक पुस्तक उठा ली। योगेन्द्र के जाते ही उठकर और हँसकर उसने कहा, "आहा, दादा! कब आये? तुम तो स्वस्थ दिखाई नहीं देते।"

योगेन्द्र ने चौकी पर बैठकर कहा—"स्वस्थ दिखाई देने की बात भी तो नहीं है। मैंने सब बातें सुनी हैं। किन्तु इस बारे में तुम कोई चिन्ता न करना। मेरे न रहने ही से यह सब बखेड़ा हुआ। अब मैं सब ठीककर दूँगा। अच्छा हेम, रमेश ने तुमसे भी कोई कारण नहीं बताया ?"

हेमनलिनी के लिए रमेश के बारे में यह सन्देहपूर्ण आलोचनाएँ असह्य हो गई हैं। योगेन्द्र से यह बात कहना नहीं चाहती कि रमेश ने विवाह टालने के सम्बन्ध में उससे कोई बात नहीं कही। फिर भी, झूठ बोलना उसके लिए असम्भव है। हेमनलिनी ने कहा, "वे मुझे कारण बताने को तैयार थे किन्तु मैंने सुनने की कोई आवश्यकता नहीं देखी।"

योगेन्द्र ने मन में कहा कि यह बड़े ही अभिमान की बात है और यह अभिमान बिलकुल स्वाभाविक है। उसने कहा, "अच्छा, तुम कुछ डरना नहीं, मैं आज ही सब कारण समझ लूँगा।"

हेमनलिनी ने किताब के पन्नों को उलटते हुये कहा, "दादा, मुझे कोई डर नहीं। कारण जानने के लिए तुम उन पर कोई जोर न देना; क्योंकि मैं ऐसा नहीं चाहती।"

योगेंद्र ने सोचा कि यह भी अभिमान की बात है। उसने कहा, "अच्छा, इसकी कोई चिन्ता तुम्हें न करनी होगी।" यह कहकर वह जाने को उद्यत हुआ।

हेमनलिनी ने उसी समय चौकी से उठकर कहा—"नहीं दादा, इस बात के लिए तुम उनसे आलोचना करने जाने न पाओगे। तुम लोग उनके बारे में मन में जो चाहो समझो, मैं उन पर जरा भी सन्देह नहीं करती।"

तब योगेंद्र स्नेहमिश्रित करुणा के साथ मन-ही-मन हँसा। सोचने लगा कि इन लोगों में संसार की कुछ समझ नहीं है। एक ओर पढ़ी-लिखी भी काफी है और संसार के समाचार भी बहुत जानती है; किन्तु यह जानकारी नहीं हुई कि किस स्थान पर सन्देह करना चाहिये। इस निःशंक भरोसे के साथ रमेश के छद्म व्यवहार की तुलना कर योगेन्द्र मन-ही-मन रमेश पर और भी चिढ़ गया। कारण जानने की इच्छा उसके मन में और भी दृढ़ हो गई। योगेन्द्र के दूसरी बार उठने की चेष्टा करने पर हेमनलिनी ने पास जाकर उसका हाथ पकड़ कर कहा—"दादा, तुम प्रतिज्ञा करो कि उनके आगे यह सब बातें बिलकुल न कहोगे।"

योगेन्द्र ने कहा, "यह देखा जायगा।"

हेमनलिनी, "नहीं दादा, देखा जायगा नहीं। मुझे वचन दो। मैं निश्चय कहती हूँ कि तुम लोगों के लिये कोई चिन्ता का कारण नहीं। एक बार मेरी यह बात भी मानो।"

हेमनलिनी की ऐसी दृढ़ता देख योगेन्द्र ने सोचा कि तब निश्चय ही रमेश ने हेम से सब बातें कह दी हैं। किन्तु हेम को जैसे-तैसे समझा लेना कोई मुश्किल बात नहीं है। उसने कहा, "देखो हेम, अविश्वास की कोई बात नहीं है। कन्या पक्ष के अभिभावकों का जो कर्त्तव्य है, वह तो करना ही पड़ेगा। यदि तुम्हारे साथ उसका कोई समझौता हो गया है, उसे तुम लोग ही समझो; किन्तु इतना ही यथेष्ट तो नहीं हुआ—हम लोगों को भी उससे समझौता करना है। सच बात कहने में हर्ज क्या है, हेम, इस समय तुम्हारे बदले हम लोगों के साथ ही उसके सम्बन्ध अधिक हैं—विवाह हो जाने पर हम लोगों

के अधिक बोलने की कोई आवश्यकता न रहेगी।"

इतना कह योगेन्द्र शीघ्रता से उठकर चला गया। प्रेम जिस आवरण और ओट को खोजता है, वह रह नहीं गया। हेमनलिनी और रमेश के जिस सम्बन्ध ने क्रम से विशेष रूप से घनिष्ठ हो, दोनों को केवल दो ही कर रखा है, उसे दस आदमियों के सन्देह का कठिन स्पर्श बराबर चोट कर रहा है। योगेन्द्र के चले जाने पर भी हेमनलिनी चुपचाप चौकी पर बैठी रही।

योगेन्द्र के नीचे पहुँचते ही अक्षय ने आकर कहा, "अच्छा योगेन्द्र आ गये? सब बातें सुन ली है न? अब तुम्हारी क्या राय है?"

योगेन्द्र, "मन में तो बहुत बातें आ रही हैं; किन्तु अनुमान के भरोसे मिथ्या वादानुवाद से क्या होगा?"

अक्षय, "मैं तो काम की बातें ही जानता हूँ, वही तुम्हारे आगे यहीं कहने के लिए उपस्थित हुआ हूँ।"

योगेन्द्र ने कहा, "अच्छा, काम की बात होगी। बता सकते हो, कि इस समय रमेश कहाँ है?"

अक्षय ने कहा, "बता सकता हूँ।"

योगेन्द्र ने पूछा, "कहाँ है?"

अक्षय ने कहा, "अभी मैं तुमसे यह न बताऊँगा। आज तीन बजे एकदम रमेश से तुम्हें मिला दूँगा।"

योगेन्द्र ने कहा, "बात क्या है, कुछ कहो तो सही। तुम लोग तो सब-के सब साक्षात् पहेली बन गये हो। कुछ दिन के लिये हवाखोरी को बाहर गया; इतना ही सुयोग पाकर संसार ऐसा भयानक और रहस्यमय हो उठा। नहीं-नहीं अक्षय, इस तरह चुप रहने से काम न चलेगा।"

अक्षय, चुप न रहने के कारण ही मेरे लिये सब अचल हो रहा है, तुम्हारी बहन ने तो मेरा मुँह देखना भी छोड़ दिया है। तुम्हारे पिता मुझे सन्दिग्ध-चित्त कहकर गाली देते हैं और रमेश बाबू भी मुझसे मुलाकात होने पर खुश नहीं होते। अब केवल तुम्हीं बाकी हो। तुमसे मैं डरता हूँ—तुम सूक्ष्म आलोचना के आदमी नहीं हो; तुम्हारे लिये सीधा काम ही सहज है—

मैं आलसी आदमी हूँ, तुम्हारी चोट मुझसे सही न जायगी।"

योगेन्द्र, "देखो अक्षय, तुम्हारी यही सब पहेली जैसी बातें मुझे अच्छी नहीं लगती। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम कोई बात बताना चाहते हो, तब उसे छिपाकर उसकी दर बढ़ाने की चेष्टा क्यों कर रहे हो। सरल भाव से कह डालो, बस समाप्त हुआ।

अक्षय, "अच्छा ठीक है, तो मैं सब बातें आरम्भ ही से कहूँगा। बहुत-सी बातों का आपको पता ही नहीं है।

नौ

दर्जीपाड़ा के जिस मकान में रमेश रहता था, उसकी मीयाद अभी खतम नहींहुई है; उसे किसी को किराये पर देने के बारे में रमेश को विचार करने का अवसर भी नहीं मिला। वह इधर कई महीने से सांसारिक दौड़-धूप में पड़ा है, लाभ और हानि का उसने खयाल भी नहीं किया।

आज सवेरे ही उसने उस घर में जाकर घर-द्वार साफ करा लिया है; चौकी पर बिछौना बिछवाया है और भोजनादि का भी बन्दोबस्त कर रहा है। आज स्कूल की छुट्टी के बाद कमला आएगी।

उसके आने में अब भी देर है। इस बीच रमेश चौकी पर चित लेट भविष्य की बातें सोचने लगा। इटावा उसने कभी नहीं देखा किन्तु पश्चिम के दृश्य की कल्पना करना सहज नहीं। शहर के किनारे उसका मकान है, वृक्षों की कतार से छायादार हुई सड़क उसके बाग के किनारे से चली गई है, रास्ते के किनारे बहुत बड़ा खेत है उसके बीच-बीच में कुयें और पशु-पक्षियों को भगाने के लिए माचा बँधा है। खेत सींचने के लिए बैल से हरट चलता है, दोपहर भर उसका करुण शब्द सुनाई देता है—कभी-कभी रास्ते की धूल उड़ाते हुए घोड़ा-गाड़ी भी दौड़ते हैं; जिसके झन्-झन् शब्द से आकाश बोल

-उठता है। उस सुदूर प्रवास की तेज धूप, उदास दोपहर और शून्य निर्जनता में वह दरवाजा बन्द बँगले में सारे दिन हेमनलिनी के अकेली रहने की कल्पना कर क्लेश का अनुभव कर रहा था। उसके पास सखी के रूप में कमला को देख उसे कुछ आराम मिला।

उसने निश्चय किया है कि अभी वह कमला से कुछ न कहेगा। विवाह के बाद हेमनलिनी को छाती से लगाकर मौका देख सकरुण स्नेह के साथ वह उसे धीरे-धीरे सच्चा इतिहास सुनायेगा जहाँ तक कम वेदना के साथ संभव होगा, वह कमला के जीवन से इस जटिल रहस्य-जाल को धीरे-धीरे फैला देगा। इसके बाद उस दूर विदेश में अपने परिचित समाज के बाहर किसी प्रकार का आघात सहे बिना वह कमला को बहुत सहज में अपने साथ मिलाकर अपने साथ रख लेगा।

दोपहर में गली सुनसान थी—जिनको आफिस जाना था, वे आफिस चले गए, जिनको नहीं जाना है, वे दोपहर में सोने की तैयारी में हैं। रमेश अपने निर्जन स्थान में निस्तब्ध मध्याह्न के चित्र को सुख के रंग में रञ्जित कर रहा था।

इसी समय किसी बहुत बड़ी गाड़ी की आवाज सुनाई दी। वह गाड़ी रमेश के द्वार पर आकर लगी। रमेश समझ गया कि स्कूल की गाड़ी कमला को पहुँचाने आई है। उसका हृदय चंचल हो उठा। कमला को किस रूप में देखेगा, उसके साथ कैसे बात-चीत होगी, कमला रमेश से कैसे मिलेगी, एकाएक यह सब चिन्ताएँ उसे आन्दोलित करने लगीं।

नीचे रमेश के दो नौकर थे—उन दोनों ने पहले ही कमला का ट्रंक आदि ऊपर पहुँचाया। इसके बाद कमला घर के दरवाजे तक आकर रुक गई, भीतर नहीं आई।

रमेश ने कहा, "कमला, आओ न।"

कमला ने संकोच दूरकर घर में प्रवेश किया। छुट्टी के समय रमेश उसे विद्यालय में ही रखना चाहता था; इस घटना से और कई महीने के विच्छेद से उसके मन में कुछ संकोच आ गया है। इसीसे कमला घर में प्रवेश कर

रमेश के मुँह की ओर बिना देखे गर्दन टेढ़ी कर कोठरी से बाहर निकल आई।

रमेश कमला को देखकर विस्मित हुआ। मानो उसे फिर से नई देख रहा है। इन कई महीनों में उसमें आश्चर्य रूप से परिवर्तन हुआ है। बिना फूली हुई लता की तरह बहुत बढ़ गई है। गाँव की लड़की के अधखिले शरीर में स्वास्थ्य की जो परिपुष्टता थी, वह कहाँ गई? उसके गालों की पहले की श्यामता ने गायब हो कोमल पीलापन ग्रहण किया है। अब उसके चलने-फिरने और भाव-भंगी में किसी प्रकार की जड़ता नहीं है। आज कोठरी में प्रवेश कर जब वह जरा तिरछी गर्दन कर खुली खिड़की के सामने खड़ी हुई, तो उसके चेहरे पर शरत् के मध्याह्न की रोशनी आकर पड़ी; उस समय उसके माथे पर कपड़ा नहीं था, लाल फीते से गुँथी हुई उसकी चोटी पीठ पर पड़ी हुई थी, हलके रंग की साड़ी उसके शरीर को लपेटे हुई थी—तब रमेश उसकी ओर कुछ देर तक देख चुप हो रहा।

कमला का सौंदर्य इस कई महीने में रमेश के मन में छाया की तरह हो रहा था; आज उस सौन्दर्य ने विकाश प्राप्त कर एकाएक उसके मन में चिहुँक पैदा कर दी है। वह इसके लिये तैयार नहीं था।

रमेश ने कहा, "कमला आओ बैठो।"

कमला एक चौकी पर बैठ गई। रमेश ने कहा, "विद्यालय में तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है?"

कमला ने बहुत संक्षेप में कहा, "ठीक चल रही है।"

रमेश सोचने लगा कि अब क्या कहूँ। एकाएक याद आया, उसने कहा, "जान पड़ता है कि बहुत देर से तुमने कुछ खाया नहीं है; तुम्हारा खाना तैयार है। क्या यहीं लाने को कहूँ?"

कमला ने कहा, "मैं न खाऊँगी, खाकर आई हूँ।"

रमेश ने कहा, "कुछ भी न खाओगी? मिठाई न खाना हो तो फल है—शरीफा, सेब और बेदाना—"

कमला ने कुछ न बोल सिर हिला दिया।

रमेश ने फिर एक बार कमला से मुँह की ओर देखा। कमला उस समय

जरा-सा सिर झुकाकर अंग्रेजी शिक्षा की किताब की तस्वीरें देख रही थी। सुन्दर सुख सोने की सलाई की तरह अपने चारों ओर के सौन्दर्य को जगा रही थी। शरत् के प्रकाश में मानो प्राण आया, आश्विन के दिन ने मानो आकार धारण किया। जैसे केन्द्र अपनी परिधि को नियमित करता है—वैसे ही इस लड़की ने आकाश को, वायु को, प्रकाश को मानो विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित कर लिया—फिर भी, वह इसके बारे में कुछ भी न समझ चुपचाप पढ़ने की किताब में तस्वीरें देख रही थी।

रमेश ने शीघ्रता से उठकर एक थाल में कुछ सेव, नासपाती और बेदाना लेकर उसके सामने रखा। कहा, "कमला! मैं देख रहा हूँ, कि तुम कुछ खाती ही नहीं हो, किन्तु मुझे भूख लगी है; मैं सब्र नहीं कर सकता।"

यह सुनकर कमला जरा हँस पड़ी। इस अकस्मात् की हँसी के प्रकाश से दोनों के हृदय का कुहरा मानो बहुत कुछ दूर हो गया।

रमेश छुरी लेकर सेव तराशने लगा। किन्तु किसी प्रकार के हाथ के काम का रमेश को बिलकुल शऊर नहीं। उसे एक ओर भूख, दूसरी ओर टेढ़े-मेढ़े तराश को देख बालिका खूब हँसी—वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

रमेश ने हँसी के उल्लास में खुश होकर कहा, "शायद मैं ठीक तरह से काट नहीं सकता, इसी से हँस रही हो! अच्छा, तुम तराश दो, देखूँ तुम्हारा शऊर!'

कमला ने कहा, "मैं हँसुवा से काट सकती हूँ, छुरी से नहीं!'

रमेश ने कहा, "तो क्या तुम समझती हो कि यहाँ हँसुआ नहीं है?" एक नौकर को बुलाकर पूछा, "हँसुआ है?" उसने कहा—है, रात के भोजन का सब सामान ले आया हूँ।"

रमेश ने कहा, "अच्छी तरह धोकर हँसुआ ले आओ।"

नौकर हँसुआ ले आया।

कमला जूता उतार हँसुआ लेकर नीचे बैठी और मुस्कराती हुई निपुण हाथ से घुमा-घुमाकर फल का छिलका उतार चकत्ते-चकत्ते काटने लगी। रमेश भी उसके सामने जमीन में बैठ फल के टुकड़ों को थाली में रखने लगा।

रमेश ने कहा, "तुम्हें भी खाना पड़ेगा।"

कमला ने कहा, "नहीं।"

रमेश ने कहा, "तब मैं भी नहीं खाऊँगा।"

कमला ने रमेश के मुंह की ओर निगाह उठाकर कहा, "अच्छा, पहले तुम खा लो, इसके बाद मैं भी खा लूंगी।"

रमेश ने कहा, "देखो बाद को धोखा न देना।"

कमला ने गम्भीर भाव से गर्दन हिलाकर कहा, "नहीं, सच कहती हूँ धोखा न दूंगी।"

बालिका की इस सत्य प्रतिज्ञा से राजी हो रमेश ने थाली से एक टुकड़ा फल उठाकर मुंह में डाला।

एकाएक उसका खाना बन्द हो गया। उसने देखा कि उसके सामने ही दरवाजे से बाहर योगेन्द्र और अक्षय खड़े हैं।

अक्षय ने कहा, "रमेश बाबू, माफ कीजियेगा; मैं समझ रहा था कि शायद आप यहाँ अकेले ही हैं। योगेन्द्र पहले खबर न दे एकाएक इस प्रकार आ पड़ना उचित नहीं हुआ। बोलो, हम लोग नीचे चलकर बैठें।"

हंसुआ फेंक कमला चटपट उठ बैठी। घर से निकल जाने की राह में ही दो आदमी खड़े हैं। योगेन्द्र ने थोड़ा खिसककर रास्ता छोड़ दिया; किन्तु कमला के चेहरे से उसकी निगाहें न हटीं। उसने उसे घूरकर अच्छी तरह देख लिया। कमला सिकुड़कर दूसरी कोठरी में निकल गई।

योगेन्द्र ने पूछा, "रमेश, यह लड़की कौन है?"

रमेश ने कहा, "मेरी एक सम्बन्धिनी।"

योगेन्द्र ने कहा, "कैसी सम्बन्धिनी? शायद उसके बड़ों में कोई नहीं है, स्नेह का सम्बन्ध भी जान नहीं पड़ता। मैंने तुमसे तुम्हारे सब सम्बन्धियों का बात सुनी है, इसके बारे में कोई बात सुनने में नहीं आई।"

अक्षय ने कहा, "योगेन्द्र, यह तुम्हारा अन्याय है—मनुष्य के लिये क्या कोई ऐसी बात नहीं हो सकती, जिसे अपने मित्र से भी छिपाना पड़ता है।"

योगेन्द्र—क्यों रमेश, क्या बहुत गुप्त है। इस लड़की के बारे में मैं तुम

लोगों से कोई आलोचना करना नहीं चाहता।

योगेन्द्र—किन्तु दुर्भाग्य से मैं तुम्हारे साथ आलोचना करने की विशेष इच्छा रखता हूँ। हेम के साथ यदि तुम्हारे विवाह का प्रस्ताव न होता, तब किसके साथ तुम्हारा कितना सम्बन्ध बढ़ा हुआ है, उससे कोई प्रयोजन न होता। जो गुप्त ही रहता।

रमेश ने कहा—मैं तुम लोगों से सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ, कि संसार में किसी के साथ मेरा ऐसा सम्बन्ध नहीं है, जिससे हेमनलिनी के पवित्र सम्बन्ध से किसी तरह का वास्ता हो।

योगेन्द्र—शायद तुम्हारे विचार से कोई बाधा हो नहीं सकती। किन्तु हेमनलिनी के सम्बन्धियों को हो सकती है। मैं एक बात तुमसे पूछता हूँ कि जिसके साथ तुम्हारा जो सम्बन्ध है, उसे छिपाने का कारण क्या है?

रमेश—यदि मैं उस कारण को बता दूँ तो, फिर गुप्त बात कहाँ रही? तुम मुझे बचपन से जानते हो—इसलिए कोई कारण न पूछकर केवल मेरी बात पर तुम लोगों को विश्वास रखना चाहिये।

योगेन्द्र—क्या इस लड़की का नाम कमला है?

रमेश—हाँ।

योगेन्द्र—तुमने अपनी स्त्री के नाम से इसका परिचय दिया है या नहीं?

रमेश—हाँ दिया है।

योगेन्द्र—तब भी तुम पर विश्वास रखना चाहिये? तुम हम लोगों के आगे साबित करना चाहते हो कि यह तुम्हारी स्त्री नहीं है। दूसरे से बताया है कि यह तुम्हारी स्त्री है—यही सत्यपरायणता का ठीक दृष्टान्त है?

अक्षय—विद्यालय के नियम के खिलाफ यह दृष्टान्त व्यवहार में लाया नहीं जा सकता। किन्तु भाई योगेन्द्र, संसार में दो पक्ष के लिए दो प्रकार की बातें कहीं जा सकती हैं; खास-खास हालतों में इसकी आवश्यकता पड़ती है। कम-से-कम इसमें एक तो सत्य है ही। हो सकता है, रमेश बाबू तुमसे जो कहते हैं, वही सत्य हो।

रमेश—मैं तुम लोगों से कोई बात कहना नहीं चाहता। केवल इतना

ही कहता हूँ कि हेमनलिनी के साथ विवाह करना मेरे लिए कर्त्तव्य-विरुद्ध न होगा। कमला के सम्बन्ध में तुम लोगों के साथ बातें करने में बहुतेरी बाधाएँ हैं—चाहे तुम लोग मुझ पर सन्देह ही क्यों न करो, मैं उसके साथ किसी तरह का अन्याय न करूँगा। अपने सुख-दुःख और मान-अपमान का विषय होता, तो मैं तुम लोगों से कभी न छिपाता, किन्तु दूसरे के लिये मैं अन्याय नहीं कर सकता।

योगेन्द्र—हेमनलिनी से तुमने यह सब बातें कहीं हैं?

रमेश—नहीं। सोचा था कि विवाह के बाद उनसे सब कह दूँगा। यदि वह इच्छा करें, अब भी उनसे कह सकता हूँ।

योगेन्द्र—अच्छा, मैं कमला से इसके बारे में दो-एक प्रश्न कर सकता हूँ?

रमेश—नहीं, किसी तरह भी नहीं। अगर तुम मुझे अपराधी समझते हो, मेरा यथा-उचित विधान कर सकते हो। किन्तु तुम लोगों के सामने प्रश्नोत्तर करने के लिये मैं बेकसूर कमला को खड़ी नहीं कर सकता।

योगेन्द्र—किसी को सवाल-जवाब करने की जरूरत भी नहीं हैं। जो मालूम करना था, उसे मैं समझ गया। प्रमाण काफी मिल गया। अब मैं तुमसे स्पष्ट कहता हूँ कि इसके बाद अब यदि तुम मेरे घर में प्रवेश करने की चेष्टा करोगे, तुम्हें अपमानित होना पड़ेगा।

रमेश का मुँह पीला पड़ गया, वह चुपचाप बैठा रहा।

योगेन्द्र ने कहा, "और एक बात है— हेम को तुम चिट्ठी लिख न सकोगे, उसके साथ प्रकट या छिपकर तुम्हारा कोई सम्बन्ध भी न रहेगा। यदि चिट्ठी लिखोगे, तो जिस बात को तुम गुप्त रखना चाहते हो, उसे मैं प्रमाणों के साथ सब लोगों के आगे प्रकट कर दूँगा। अभी अगर मुझसे कोई पूछेगा कि तुम्हारे साथ हेम का विवाह क्यों छूट गया, तो मैं कह दूँगा, कि इस विवाह में मेरी सम्मति नहीं थी, इसलिये छूट गया; भीतरी बातें न बताऊँगा किन्तु तुम यदि सावधान न होगे, तो सब बातें खुल पड़ेंगी। तुम इस समय पाखण्डियों जैसा व्यवहार कर रहे हो। फिर भी, मैं जो अपने को दबाये हुआ हूँ, वह तुम्हारे ऊपर दया करके नहीं—इसके साथ मेरी बहन

हेम का लगाव है, इसी से तुम इतने सहज में छुटकारा पा गये। अब तुमसे मेरा यह आखिरी कहना है कि किसी समय तुम्हारा जो कुछ परिचय था, उसका कुछ प्रमाण तुम्हारी बातों या व्यवहार से प्रकट न होने पाये। इसके बारे में मैं तुमसे सत्य कहला न सका। क्योंकि इस मिथ्या के बाद सत्य तुम्हारे मुँह से माननीय न होगा। अब भी यदि लज्जा हो और अपमान का भय हो, तो मेरी बात पर भ्रम से भी लापरवाही न करना।"

अक्षय—योगेन्द्र, अब इतना क्यों। रमेश बाबू निरुत्तर हो गये हैं, तब भी तुम्हारे मन में दया नहीं आती? अब चलो! रमेश बाबू, कुछ ख्याल न कीजियेगा, अब हम लोग जाते हैं।

योगेन्द्र और अक्षय चले गये। रमेश लकड़ी की मूर्त्ति की तरह कठोर हो बैठा रहा। बुद्धि-भ्रष्टता दूर होने पर वह सोचने लगा कि मकान से बाहर निकलकर वह तेजी से साथ कदम बढ़ाकर सारी अवस्था को एक बार समझ ले। किन्तु, उसे याद आया कि कमला है, उसे अकेली छोड़कर वह कहीं जा नहीं सकता।

रमेश ने बगल की कोठरी में जाकर देखा कि कमला सड़क की तरफ की एक खिड़की की झिलमिली खोलकर चुप बैठी हुई है। रमेश के पैर की आवाज सुन उसने झिलमिली बन्द कर मुँह फेरा। रमेश जमीन में ही बैठ गया।

कमला ने पूछा—यह दोनों कौन थे? ये सवेरे हमारे स्कूल में गये थे।

रमेश ने ताज्जुब के साथ पूछा—स्कूल गये थे?

कमला ने कहा—हाँ। यह लोग तुम्हारे बारे में कुछ पूछ रहे थे।

रमेश ने कहा—यही पूछते होंगे, कि तुम मेरी कौन हो?

कमला ने अब तक ससुराल के अनुशासन के अभाव से लज्जा करना नहीं सीखा था, तब भी बचपन के संस्कार से रमेश की इस बात से उसका चेहरा लाल हो उठा।

रमेश ने कहा—मैंने उन लोगों को जवाब दिया है, कि तुम मेरी कोई नहीं हो।

कमला समझी कि रमेश उसे लज्जित करने के लिये ऐसा कह रहे हैं।

उसने मुँह फेरकर कहा, "जाओ।"

रमेश सोचने लगा कि कमला से कैसे सब बातें खोलकर कहे।

कमला एकाएक व्यग्र हो उठी। उसने कहा—वह देखो तुम्हारा फल कौवा खाये जा रहा है। यह कहती हुई वह तेजी के साथ दूसरी कोठरी में गई और कौवे को भगाकर फल की थाली उठा लाई।

रमेश ने सामने थाली रखकर कहा, "तुम न खावोगी ?"

रमेश को अब भोजन में उत्साह नहीं था—किन्तु कमला की इस सेवा ने उसके हृदय में स्पर्श किया। इससे उसने कहा, "कमला, तुम न खाओगी ?"

कमला ने कहा, "पहले तुम खा लो।"

जरा-सा मामला। अधिक कुछ नहीं किन्तु रमेश की वर्तमान अवस्था ने उसके कोमल हृदय पर चोट पहुँचाई। रमेश कुछ न बोला जबर्दस्ती फल खाने लगा।

खाना समाप्त हो जाने पर रमेश ने कहा, "कमला, आज रात को हम लोग देश चलेंगे।"

कमला ने आँखें नीची और उदासकर कहा, "वहाँ मुझे अच्छा नहीं लगता।"

रमेश, "स्कूल में रहना अच्छा लगता है ?"

कमला 'नहीं मुझे स्कूल न भेजना। मुझे लज्जा आती है। लड़कियाँ मुझसे केवल तुम्हारी ही बातें पूछती रहती हैं।"

रमेश, "तब तुम क्या कहती हो ?"

कमला, "मैं कुछ भी कह नहीं सकती। वह सब मुझसे पूछती थीं कि तुम क्यों मुझे छुट्टी के समय भी स्कूल में रखना चाहते हो—मैं—"

कमला अपनी बात खतम न कर सकी। रमेश के हृदय के घाव पर फिर चोट लगी।

रमेश, "तुमने कह क्यों नहीं दिया कि वह मेरे कोई नहीं हैं।"

कमला ने चिढ़कर रमेश की ओर टेढ़ी निगाहों से देखा—कहा, "जाओ!"

रमेश फिर चिन्ता करने लगा कि क्या किया जाय ? इधर रमेश की

छाती के भीतर धँसी हुई वेदना कीड़े की तरह छेद करती हुई बाहर निकलने की कोशिश कर रही थी। अब तक योगेन्द्र ने हेमनलिनी से क्या कहा होगा, हेमनलिनी क्या समझ रही होगी, सच्ची घटना हेमनलिनी को कैसे समझाई जाय यदि हेमनलिनी से सदा के लिये उसका विच्छेद हो जाय तब जिन्दगी कैसे कटेगी यह सब ज्वालामय प्रश्न उसके हृदय में जम रहे थे, फिर भी, अच्छी तरह विचार करने का समय रमेश को मिल नहीं रहा था। रमेश इतना समझ गया था कि कमला के साथ रमेश का सम्बन्ध झलकने में उसके मित्रों और शत्रुओं की मण्डली में आलोचना का कठोर विषय हो पड़ा है। इस झमेले में यह अफवाह अच्छी तरह फैल पड़ेगी कि रमेश कमला का पति है। इस समय रमेश के लिये कमला के साथ कलकत्ते में एक दिन रहना भी कठिन हो गया है।

किसी और खयाल में डूबते हुए चिन्ता करने के समय कमला ने उसके चेहरे की ओर देखकर कहा, "तुम क्या सोच रहे हो? अगर तुम देश में रहना चाहो, तो मैं भी वहाँ ही रहूँगी।"

बालिका के मुँह से आत्मसंयम की यह बात सुन रमेश की छाती में फिर चोट लगी। फिर उसने सोचा, कि क्या किया जाय? फिर वह चिन्ता में डूबा, देर तक सोचते-सोचते कमला के मुँह की ओर देखा और देखता ही रह गया।

कमला ने गम्भीर मुँह करके पूछा, "अच्छा, क्या तुम इस बात पर नाराज हुए हो, कि मैं छुट्टी के समय स्कूल में नहीं रही? सच कहो।"

रमेश ने कहा, "सच कहता हूँ, मैं तुमसे नाराज नहीं हुआ हूँ; मैं अपने ही ऊपर नाराज हो रहा हूँ।"

रमेश चिन्ता के जाल से जबरदस्ता अपने को निकाल कमला के साथ बात करने में लग गया। उसने उससे पूछा, "अच्छा कमला, यह तो बताओ कि इतने दिनों में तुमने स्कूल में क्या सीखा?"

कमला बड़े उत्साह के साथ अपनी शिक्षा का हिसाब देने लगी। पृथ्वी की गोल आकृति की चर्चा को सुनाकर रमेश को आश्चर्य में डालने की चेष्टा

करने लगी; तब रमेश ने गम्भीर होकर भूमण्डल की गोलाई पर सन्देह प्रकट किया। उसने कहा, "भला यह भी कभी हो सकता है?"

कमला ने आश्चर्य के साथ आँखें फाड़कर कहा, "वाह, हमारी किताब में लिखा है, मैंने पढ़ा है।"

रमेश ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "क्या बकती हो? किताब में लिखा है? कितनी बड़ी किताब है?"

इस बात से कमला ने कुछ संकोच के साथ कहा, "बहुत बड़ी किताब नहीं है—किन्तु छपी हुई किताब है। उसमें तसवीर भी है।"

इतने बड़े प्रमाण पर रमेश को हार माननी पड़ी। इसके बाद कमला ने शिक्षा की बातें समाप्त कर विद्यालय की लड़कियों और गुरुआनी की चर्चा छेड़ी, वहाँ के दैनिक काम के बारे में बकवाद करने लगी। रमेश दूसरी चिन्ता में डूबा हुआ बीच-बीच में 'हाँ' करता गया। कभी उसकी बातों में मौका पा बीच-बीच में टोक भी बैठता था। बातों-ही-बातों में कमला कह उठी, "तुम मेरी बातें सुन के भी नहीं सुन रहे हो।" यह कहती वह नाराज होकर उठ खड़ी हुई।

रमेश ने चौंककर कहा, "नहीं-नही, कमला तुम बुरा न मानो, आज मैं अच्छा नहीं हूँ।"

"अच्छा नहीं" सुनकर कमला ने उसी समय पलटकर पूछा, "तुम्हारी तबीयत खराब है? क्या हुआ है?"

रमेश ने कहा, "कोई ठीक बीमारी नहीं है—समझो कुछ नहीं है। कभी-कभी मेरी तबीयत ऐसी हो जाया करती है, फिर आप ही अच्छी हो जाती है।"

कमला ने रमेश को शिक्षा के बारे में मन बहलाए रखने के खयाल से कहा, "मेरे भूगोल प्रवेश में पृथ्वी का जो चित्र है, वह देखोगे?"

रमेश ने आग्रह दिखाकर देखना चाहा। कमला ने शीघ्रता के साथ किताब लाकर रमेश के सामने खोलकर रख दिया। कहा, "यह जो दो गोले देखते हो वह असल में एक हैं। गोल वस्तु का आगा-पीछा एक साथ तो दिखाई दे नहीं सकता।"

रमेश ने कुछ अपनी जानकारी का बहानाकर कहा, "चिपटी चीज का भी आगा-पीछा दिखाई नहीं देता।"

कमला ने कहा, "इसीलिए इस चित्र में पृथ्वी के दोनों पृष्ठ अलग-अलग छापे गए है।"

इसी प्रकार बातें करते-करते सन्ध्या बीत गई।

दस

अन्नदाबाबू बहुत धीरज के साथ आशा कर रहे थे कि योगेन्द्र कोई शुभ समाचार लेकर आयेगा ; सब झमेला बहुत सहज मे साफ हो जाएगा। योगेन्द्र और अक्षय ने जब घर मे प्रवेश किया, तब अन्नदाबाबू ने डरते हुए दोनों के मुँह की ओर देखा।

योगेन्द्र बोला, "पिता जी, तुम रमेश को इतना चढ़ा दोगे, यह मैं नहीं जानता था।"

अन्नदाबाबू, "रमेश के साथ हेमनलिनी के विवाह में तुम्हारी राय जान ली है। तुम कई बार पहले ही मुझसे कह चुके हो। अगर तुम्हारी बाधा देने की इच्छा थी, तो तुम मुझसे—"

योगेन्द्र, "एक-बारगी बाधा देने का विचार मेरे मन में नहीं हुआ, किन्तु इसी वजह—"

अन्नदाबाबू, "देखो तो सही, इसमें 'इसी वजह' की क्या जरूरत है। या तो अग्रसर होने देते या बाधा देते; इसके अलावा और क्या होता ?"

योगेन्द्र, "इसी से एकबारगी इतना आगे बढ़ाना—"

अक्षय ने हंसकर कहा, "कितनी ही वस्तुयें ऐसी हैं, जो अपनी झोंक से ही अग्रसर होती है, उन्हें सहारा नहीं देना पडता—बढ़ते-बढ़ते आप ही बाढ़ पर पहुँच जाती है। किन्तु जो हो गया, उसके लिए बेकार बहस करने से क्या

फायदा; अब जो कर्तव्य है उसकी सलाह करो।"

अन्नदाबाबू ने डरते-डरते पूछा, "रमेश तुम लोगों से मिले हैं।"

योगेन्द्र, "खूब अच्छी तरह, इससे बढ़कर मुलाकात होने की आशा नहीं थी। यहाँ तक कि उसकी स्त्री से भी परिचय हो गया।"

अन्नदाबाबू चुपचाप हैरान होकर देखते रहे। कुछ ठहरकर उन्होंने पूछा, "किसकी स्त्री के साथ परिचय हुआ ?"

योगेन्द्र, "रमेश की स्त्री के साथ।"

अन्नदाबाबू, "तुम क्या कहते हो, मेरी समझ में नहीं आ रहा है। किस रमेश की स्त्री ?"

योगेन्द्र, "हमारे इन्हीं रमेश की। पाँच-छः महीने पहले जब देश गया था, तब वह विवाह करने के लिए ही गया था।"

अन्नदाबाबू चुपचाप सिर सहलाने लगे। कुछ देर सोचकर उन्होंने कहा, "तब तो हमारी हेम के साथ उसका विवाह हो ही नहीं सकता।"

योगेन्द्र, "हमलोग भी यही कहते हैं।

अन्नदाबाबू, "तुम लोग तो यही कह रहे हो, लेकिन इधर विवाह की सारी तैयारी भी हो गई है!—इस रविवार को न हो सकने की वजह आगामी रविवार के लिए चिट्ठी भेज दी गई है। अब उसे रोककर फिर चिट्ठी लिखनी होगी।"

योगेन्द्र, "विवाह रोकने की जरूरत ही क्या है, थोड़े-से परिवर्तन से काम चला लेना चाहिए।"

अन्नदाबाबू ने आश्चर्य के साथ कहा, "इसमें परिवर्तन कैसा ?"

योगेन्द्र, "जहाँ परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है, वहाँ करना ही पड़ता है। रमेश के बदले और कोई पात्र ठीक कर जैसे हो अगले रविवार को को ही काम हो जाना चाहिए। नहीं तो लोगों के सामने मुँह कैसे दिखाया जायगा ?"

यह कहकर योगेन्द्र ने एक बार अक्षय के मुँह की ओर देखा। अक्षय ने विनम्रता के साथ सिर झुका लिया।

अन्नदाबाबू, "इतनी जल्दी पात्र कहाँ मिलेगा ?"

योगेन्द्र, "इसके लिए तुम निश्चिन्त रहो ।"

अन्नदाबाबू, "किन्तु हेम को भी तो राजी होना चाहिए ।"

योगेन्द्र, "रमेश का सारा समाचार सुनने पर वह निश्चय राजी हो जायगी ।"

अन्नदाबाबू, "तुम्हें जो अच्छा जान पड़े, वही करो। किन्तु रमेश से अच्छा मेल-जोल भी हो गया था। उसमें उपार्जन करने लायक अच्छी विद्या और बुद्धि भी थी। अभी परसों हमारी उसकी बातें तय हुईं, वह इटावा में जाकर प्रैक्टिस करेगा; इसी बीच यह सब बखेड़ा खड़ा हो गया।"

योगेन्द्र, "इसमें फिर काहे की चिन्ता है पिताजी, इटावे में रमेश अब भी प्रैक्टिस कर सकता है। जाऊँ हेम को बुला लाऊँ, क्योंकि अब अधिक समय नहीं है।"

कुछ देर बाद योगेन्द्र हेमनलिनी के साथ कमरे में आया। अक्षय कमरे के एक कोने में किताबों की आलमारी के पास बैठा था।

योगेन्द्र ने कहा, "बैठो हेम, तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

हेमनलिनी चुपचाप चौकी पर बैठ गई क्योंकि यह उसके लिए परीक्षा का समय है।

योगेन्द्र ने भूमिका बाँधते हुए पूछा, "रमेश के व्यवहार में तुम्हें सन्देह का कोई कारण दिखाई नहीं देता ?"

हेमनलिनी ने कुछ न कहकर सिर्फ सिर हिला दिया।

योगेन्द्र, "उसने जो विवाह एक सप्ताह के लिए टाल दिया; उसमें ऐसा कौन-सा कारण था, जो हम लोगों से कहा नहीं जा सकता था ?"

हेमनलिनी ने नीची निगाह कर कहा, "कोई कारण तो होगा ही ।"

योगेन्द्र, "यह तो ठीक है। कारण तो है ही; किन्तु क्या यह सन्देहजनक नहीं है।"

हेमनलिनी ने फिर सिर हिलाकर प्रकट किया, "नहीं ।"

इन सब लोगों से अधिक रमेश पर उसका विश्वास देख योगेन्द्र को क्रोध आया।

योगेन्द्र जरा कड़ाई के साथ कहने लगा, "तुम्हें याद होगा, कि रमेश कोई छः महीने पहले अपने बाप के साथ देश चला गया था। इसके बाद कुछ दिन तक उसकी चिट्ठी-पत्री न पाकर हम लोग आश्चर्य में आ गये थे। यह भी तुम जानती हो, कि रमेश दोनों समय हम लोगों के घर आता था। जिसने हमारे बगल के मकान में कमरा लिया था, वह कलकत्ते में आकर भी हम लोगों से एक बार भी न मिला। इतना होने पर भी तुम लोग विश्वास कर उसे घर ले आए।

योगेन्द्र ने फिर कहा, "रमेश के ऐसे आचरण का कोई अर्थ तुम लोगों की समझ में आया ? क्या इसके बारे में कोई प्रश्न तुम लोगों के मन में नहीं उठा इस पर भी रमेश पर इतना गहरा विश्वास !"

हेमनलिनी चुप रही।

योगेन्द्र, "ठीक है, अच्छी बात है सीधे स्वभाव वाली तुम किसी पर भी सन्देह नहीं करतीं—आशा है कि मुझ पर भी तुम्हारा बहुत विश्वास होगा। मैं स्वयं स्कूल जाकर खबर ले आया हूँ कि रमेश अपनी ही स्त्री कमला को वहाँ बोर्डिंग में रखके पढ़ाता था। छुट्टी के समय भी उसने उसे वहीं रखने का विचार किया था। दो-तीन दिन हुए, रमेश को स्कूल की प्रधान अध्यापिका का एक पत्र मिला कि छुट्टी के समय कमला स्कूल में नहीं रह सकती। आज उसे छुट्टी मिली है, स्कूल की गाड़ी ने दर्जीपाड़ा के एक खिड़की बन्द मकान में कमला को पहुँचा दिया। उस मकान में मैं स्वयं गया था। मैंने देखा, कि कमला हँसुए से सेब काट-काटकर दे रही है और रमेश उसके सामने जमीन पर बैठकर एक-एक टुकड़ा खा रहा है। रमेश से पूछा, कि यह क्या बात है ? अगर रमेश एक बार भी कहता, कि कमला उसकी स्त्री नहीं है, तब भी उसकी बात पर भरोसा कर किसी तरह सन्देह को दूर करने की चेष्टा की जाती। किन्तु वह हाँ न कुछ भी कहना नहीं चाहता। तब क्या इतने पर भी तुम रमेश पर विश्वास रखना चाहती हो ?"

प्रश्न के जवाब के आसरे योगेन्द्र ने हेमनलिनी के मुंह की ओर देखा कि उसके मुंह पर स्वाभाविक उदासी छा गई है। क्षणभर में वह सामने की ओर झुककर बेहोश हो चौकी के नीचे गिर गई।

अन्नदाबाबू घबरा उठे। उन्होंने जमीन में पड़ी हेमनलिनी के सिर को अपनी छाती से लगा र कहा, "बेटी, क्या हो गया बेटी! इन लोगों की बात पर तुम कुछ भी विश्वास न करना—सब झूठ है!"

योगेन्द्र ने अपने पिता को हटाकर हेमनलिनी को एक काउच पर लेटा दिया। इसके बाद सुराही से पानी लेकर लगातार उसके मुंह पर छींटा देने लगा। अक्षय ने एक पंखा ले उसके मुँह पर हवा करना शुरू किया।

हेमनलिनी थो ी ही देर में आँखें खोलकर चौंक पड़ी—अन्नदाबाबू की ओर देख उसने चीख कर कहा, "पिताजी, पिताजी, अक्षय बाबू को यहाँ से हटाइए।"

अक्षय पंखा फेंककर कोठरी से बाहर जा दरवाजे की ओट में खड़ा हो गया। अन्नदा बाबू काउच पर बैठ हेमनलिनी के सिर और शरीर पर हाथ फेरने लगे—वे ठण्डी साँस लेकर बोले, "बेटी!"

देखते-देखते हेमनलिनी की आँखों में आँसू की धारा बहने लगी। उसकी साँस फूलने लगी। वह पिता की गोद में मुंह छिपाकर उमड़ती हुई रुलाई को रोकने की चेष्टा करने लगी। अन्नदा बाबू आँसुओं से भरमाई हुई आवाज में कहने लगे, "बेटी, तुम निश्चिन्त रहो। रमेश को मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ—वह कभी अविश्वासी हो नहीं सकता। योगेन्द्र ने निश्चय ही भूल की है।"

योगेन्द्र से अब न रहा गया, "पिताजी, झूठा भरोसा न दीजिये। अभी के कष्ट से बचाने से उसे दूना कष्ट भोगना पड़ेगा। पिताजी, इस समय हेम को कुछ समय सोचने-विचारने का समय दीजिये।"

हेमनलिनी उसी समय पिता की गोद से उठ बैठी और योगेन्द्र की ओर देखकर कहने लगी, "मुझे जो कुछ समझना था, समझ चुकी। जब तक मैं उनके मुंह से सब बातें सुन न लूंगी तब तक मैं किसी की बात पर विश्वास न करूँगी; यह निश्चय है।"

यह कहती हुई वह उठकर बैठ गई। अन्नदा बाबू ने घबराहट के साथ उसे पकड़कर कहा, "तुम लेटी रहो।"

हेमनलिनी अपने पिता के हाथ का सहारा ले अपने सोने वाली कोठरी में चली। उसने बिछौने पर लेटकर कहा, "पिताजी, कुछ देर के लिये मुझे अकेली रहने दो—मैं सोऊँगी।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "हरिया की माँ को बुला दूं? वह तुम्हें पंखा झलेगी।"

हेमनलिनी ने कहा, 'पंखे की जरूरत नहीं।"

अन्नदा बाबू बगल की कोठरी में आकर बैठ गये। इस लड़की को छः महीने की बच्ची छोड़ इसकी माँ मर गई, उसी हेम की चिन्ता में वे डूब गये। उन्हें वही सेवा, वही धैर्य और वही सदा की प्रसन्नता उन्हें याद आई। वही गृहलक्ष्मी की प्रतिमा के समान यह लड़की उनकी गोद में इतने दिनों में बड़ी हुई है, उसके अनिष्ट की आशंका से उनका हृदय व्याकुल हो उठा। बगल की कोठरी में बैठे-बैठे वे मन-ही-मन उसको सम्बोधन कर कहने लगे, "बेटी, तुम्हारा सारा विघ्न दूर हो, तुम सदा सुख से रहो—तुम्हें सुखी देख, स्वस्थ देख, जिससे तुम प्रेम करती हो, उसके घर में लक्ष्मी की तरह तुम्हें प्रतिष्ठित देख मैं खुशी से तुम्हारी माँ के पास जा सकूँगा।" यह कहते हुए उन्होंने अपने आँसू पोंछे।

स्त्रियों की बुद्धि पर योगेन्द्र पहले से लापरवाह था, आज वह और भी दृढ़ हो गया। स्त्रियाँ प्रमाण पर भी विश्वास नहीं करतीं, इनसे कैसे निपटा जाय, दो और दो चार हो जायेंगी, इससे मनुष्यों को सुख हो या दुःख इसको वे स्थान विशेष में अनायास ही अस्वीकार कर सकती हैं। अगर युक्ति काले को काला कहे और इनका प्रेम उसे गोरा बताये, तो युक्ति पर ये बहुत नाराज हो उठती हैं योगेन्द्र यह समझ ही न सका इनके साथ लोग संसार कैसे चलाते हैं।

योगेन्द्र ने आवाज दी, "अक्षय।"

अक्षय ने धीरे-धीरे कोठरी में प्रवेश किया। योगेन्द्र ने कहा, "सब सुन लिया न। तब क्या उपाय है?"

अक्षय ने कहा, "मुझे इन सब मामलों में क्यों घसीटते हो। मैंने आज तक कोई बात नहीं कही ; तुमने आकर मुझे इस मुश्किल में फँसा दिया।"

योगेन्द्र, "अच्छा, यह सब शिकायतें बाद को करना। अब हेमनलिनी के सामने रमेश के मुंह से सारी बातें कबूल कराये बिना दूसरा उपाय नहीं है।"

अक्षय, "पागल हुए हो ? कहीं आदमी अपने मुँह से—"

योगेन्द्र, "अथवा वह एक पत्र लिखे, तो और भी अच्छा हो। यह भार तुम्हें लेना पड़ेगा। किन्तु अब देर करने से काम न चलेगा।"

ग्यारह

रमेश कमला को रात को लेकर स्यालदह स्टेशन गया। जाते समय जरा फेर खाकर गया। गाड़ीवान को बिना आवश्यकता के कई-कई गलियों में घुमा-कर ले गया। कोलूटोला में एक मकान के सामने आकर उसने आग्रह के साथ मुँह बढ़ाकर देखा। उस परिचित मकान में उसे किसी प्रकार का परिवर्तन दिखाई नहीं दिया।

रमेश ने एक ऐसी गहरी साँस ली, जिससे ऊँघती हुई कमला चौंककर जाग गई। पूछा, "क्या हुआ ?"

रमेश ने उत्तर दिया, "कुछ नहीं।" और कुछ न बोला। गाड़ी में अंधेरे में चुपचाप बैठा रहा। देखते-देखते वह खिड़की के कोने पर सिर रख फिर सो गई। कुछ देर के लिये कमला का होना रमेश को असहनीय जान पड़ा।

घोड़ागाड़ी ठीक समय पर स्टेशन पहुँची। सेकेण्ड-क्लास का एक डब्बा पहले से ही रिजर्व कर लिया गया था—कमला और रमेश उसमें जाकर बैठे। एक किनारे की बेंच पर कमला के लिये बिछौना बिछा गाड़ी की बत्ती के नीचे का पर्दा खींच कर अन्धकार करते हुए रमेश ने कमला से कहा, "बहुत देर से तुम्हारे सोने का समय हो गया है; अब तुम सोओ।"

कमला ने कहा, "मैं गाड़ी छूटने पर सोऊँगी, तब तक खिड़की के पास बैठकर कुछ देखूँगी ।"

रमेश राजी हो गया । कमला माथे का कपड़ा खींच प्लेटफार्म की तरफ के बेंच पर बैठे आते-जाते लोगों को देखने लगी । रमेश बीच की बेंच पर बैठे किसी और ही चिन्ता में लीन रहा । गाड़ी छूटते ही रमेश चौंक उठा, उसे जान पड़ा, मानो एक जान-पहचान का आदमी गाड़ी की ओर दौड़ा आ रहा है । रेलवे कर्मचारी की बाधा से निकल कर एक आदमी किसी तरह गाड़ी में चढ़ गया; खींचा-खींची में उसकी चादर कर्मचारी के हाथ में ही रह गई । चादर लेने के लिए जब उसने खिड़की से झुककर हाथ बढ़ाया, तब रमेश ने अच्छी तरह पहचान लिया, कि वह और कोई नहीं, अक्षय है ।

इस चादर की खींचाखींची के तमाशे से बहुत देर तक कमला की हँसी रुक न सकी ।

रमेश ने कहा, "साढ़े दस बज गया है—गाड़ी छूट गई, अब तुम सोओ ।"

कमला बिछौने पर लेटकर जब तक नींद न आई, तब तक ठहर-ठहरकर खिलखिलाकर हँस पड़ती थी ।

किन्तु इस मामले में रमेश को कोई विशेष आनन्द न आया ।

रमेश जानता था कि किसी गाँव से अक्षय का कोई सम्बन्ध नहीं है । वह पुश्त-दर-पुश्त से कलकत्ते का रहने वाला है । आज इतनी रात को वह दौड़कर कलकत्ता छोड़ कहाँ जा रहा है ? रमेश समझ गया कि अक्षय उसके पीछे लगा है ।

अगर अक्षय उसके गाँव में पहुँच खोज करना शुरू करे, तो वहाँ रमेश के मित्र और शत्रु में एक तरह की कानाफुसी होने लगेगी । तब मामला और खराब हो जायगा; यह सोचकर रमेश का हृदय अशान्त हो उठा । उसके गाँव के लोग क्या कहेंगे; कैसी घोंटाई चलेगी; यह सब रमेश को प्रत्यक्ष दिखाई देने लगा । कलकत्ते जैसे शहर में हर समय अशान्तमय रहता है—किंतु गाँव की गम्भीरता में थोड़ी-सी छेड़-छाड़ से ही आन्दोलन की लहरें लहराने लगेंगी । इस बात पर रमेश जितना विचार करता गया, उतना ही उसका मन

संकुचित होने लगा।

जब बारिकतुर में गाड़ी रुकी, तब रमेश ने गर्दन बढ़ाकर देखा, कि अक्षय उतरा नहीं। नैहाटी में बहुतेरे लोग चढ़ने उतरने लगे, किन्तु उसमें अक्षय दिखाई न दिया। एक वृथा आशा से व्यग्र होकर बाहर देखा—उतरने वालों में अक्षय नहीं दिखाई दिया। इसके बाद और किसी स्टेशन पर उसके उतरने की सम्भावना नहीं थी।

बहुत रात गये रमेश थककर सो रहा।

दूसरे दिन सवेरे ग्वालन्दो में रमेश ने देखा कि अक्षय माथे और मुंह पर चादर लपेट हाथ में बेग लिये पैर बढ़ाता हुआ स्टीमर की ओर चला।

इसी स्टीमर पर रमेश सवार होने वाला था। स्टीमर के छूटने में अब भी देर थी। किन्तु दूसरे घाट पर एक और स्टीमर छूटने की तैयारी में सीटी बार-बार दे रहा था। रमेश ने पूछा, "यह स्टीमर कहाँ जायगा ?" मालूम हुआ कि 'पश्चिम।'

"कहाँ तक जायगा ?"

"पानी न घटा, तो काशी तक जायगा।"

यह सुनकर रमेश ने शीघ्रता के साथ उस स्टीमर पर सवार हो कमला को एक कमरे में बैठा दिया—इसके बाद वह शीघ्रता से दूध, चावल-दाल और एक घौद केला खरीद लाया।

इधर अक्षय दूसरे स्टीमर पर अन्य मुसाफ़िरों से पहले सवार हो और सिकुड़कर ऐसी जगह खड़ा हुआ, जहाँ से वह सब मुसाफिरों का आना-जाना देख रहा था। यात्रियों को कोई जल्दी तो थी नहीं। क्योंकि स्टीमर छूटने में देर है—मुसाफिर लोग इस अवसर में मुंह-हाथ धो स्नानकर या कोई-कोई किनारे पर रसोई बनाने लगे। अक्षय ग्वालन्दो से अपरिचित था। उसने सोचा, कि किसी होटल या दूकान में रमेश कमला को खिला-पिला

अन्त में स्टीमर सीटी देने लगा। तब भी रमेश दिखाई न दिया। कांपते हुए तख्ते के ऊपर से यात्रियों का दल स्टीमर पर चढ़ने लगा। बार-

बार सीटी की आवाज से लोगों की शीघ्रता बढ़ने लगी। किन्तु आये हुए और आने वालों में रमेश का कोई निशान भी न मिला। जब मुसाफिरों की संख्या बन्द हुई—तख्ता उठा लिया गया और कप्तान ने लंगर उठा लेने का हुक्म दिया, तब अक्षय ने घबराकर कहा, "मैं उतरूँगा।" किन्तु खलासियों ने उसकी बात पर ध्यान भी नहीं दिया। डक दूर नहीं था, अक्षय उस पर कूद पड़ा।"

किनारे पहुँचने पर भी उसे रमेश का कोई पता न लगा। थोड़ी ही देर हुई, ग्वालन्दो से सवेरे की पैसिन्जर कलकत्ते की ओर चली गई। अक्षय ने मन-ही-मन सोचा, कि कल रात की गाड़ी में सवार होने के समय की खींचा-तानी में निश्चय उसे रमेश ने देख लिया। रमेश उसकी चालाकी का अनुमान कर अपने देश न जा सवेरे वाली गाड़ी से कलकत्ते चला गया। अगर कलकत्ते में कोई छिपने की चेष्टा करे, तो उसे खोज निकालना बहुत कठिन है।

अक्षय सारे दिन ग्वालन्दो में छटपटाकर शाम की डाक गाड़ी में सवार हो गया। दूसरे दिन सवेरे कलकत्ते पहुँचते ही वह सबसे पहले रमेश के दर्जीपाड़ा वाले मकान में गया; देखा कि दरवाजा बन्द है; पूछकर मालूम किया, कि वहाँ कोई नहीं आया।

कोलूटोला में आकर देखा कि रमेश के मकान में सन्नाटा है। तब अन्नदाबाबू के घर पहुँच उसने योगेन्द्र से कहा, "भाग गया—मैं उसे पकड़ न सका।"

योगेन्द्र ने कहा, "यह क्यों?"

अक्षय ने अपने भ्रमण का सारा हाल सुना दिया।

अक्षय को देखकर रमेश का कमला के साथ भागना, रमेश के विरुद्ध योगेन्द्र का सन्देह निश्चित विश्वास के रूप में बदल गया।

योगेन्द्र ने कहा, "किन्तु अक्षय, रमेश की यह सब युक्तियाँ किसी काम न आयेंगी। केवल हेमनलिनी ही नहीं; पिताजी ने भी सिर्फ एक ही रट लगाई है—उनका कहना है कि रमेश के मुंह से सारी बातें सुने बिना वह किसी तरह उस पर अविश्वास न करेंगे। यहाँ तक कि यदि रमेश आज भी आकर

पिताजी से कह दे, कि अभी मैं कुछ न कहूँगा, तब भी वे हेम के साथ उसका विवाह करने में देर न करेंगे। इन लोगों के कारण मैं बड़ी मुश्किल में पड़ा हूँ। पिताजी हेमनलिनी का कष्ट जरा भी सह नहीं सकते—अगर हेम आज जिद कर बैठे—रमेश की दूसरी स्त्री रहे, मैं उससे ही विवाह करूँगी, तो जान पड़ता है कि पिताजी इसी पर राजी हो जायेंगे। जैसे हो और जहाँ तक जल्द हो, रमेश से ये बातें कबूल कराना ही पड़ेगा। तुम्हारे हताश होने से काम न चलेगा। मैं इस काम में लग सकता था किन्तु मेरी बुद्धि में कोई चाल ही न सुझाई दी। शायद मैं रमेश से मारपीट भी कर बैठता। शायद अभी तक मुंह नहीं धोया और न चाय ही पी है।"

अक्षय मुंह धोकर चाय पीते-पीते कुछ सोचने लगा। इसी समय अन्नदा-बाबू हेमनलिनी का हाथ पकड़े चाय पीने के लिये कमरे में गये। अक्षय को देखते ही हेमनलिनी पलटकर कमरे से बाहर चली गई।

योगेन्द्र ने क्रोध के साथ कहा, "यह हेम की बहुत बड़ी भूल है। पिताजी तुम हेम की इस अभद्रता का समर्थन न करो। उसे जबरदस्ती यहाँ ले आना चाहिये। हेम ? हेम ?"

तब तक हेमनलिनी ऊपर चली गई। अक्षय ने कहा, "योगेन्द्र, देखता हूँ कि तुम मेरे काम को खराब कर दोगे। उसके सामने मेरे सम्बन्ध में कोई बात ही न कहो। समय पर इसका फैसला होगा, जबरदस्ती करने से सब मिट्टी हो जायगा।"

अक्षय चाय पीकर चला गया। अक्षय में हिम्मत की कमी नहीं थी। चाहे सब लक्षण उसके प्रतिकूल हों, फिर भी चिपके रहना जानता है। उसके चेहरे के भाव में किसी प्रकार का विकार दिखाई नहीं देता। वह चिढ़कर कभी गम्भीर मुंह होने नहीं देता या वहाँ से हटता नहीं। अनादर और अपमान से वह विचलित नहीं होता। आदमी टकसाली है। उस पर किसी का कैसा ही ही व्यवहार क्यों न हो वह ज्यों-का-त्यों कायम रहता है।

अक्षय के चले जाने पर अन्नदा बाबू हेमनलिनी को पकड़े हुए चाय के टेबिल पर लाये। आज उसके कपोल पीले हो रहे हैं—उसकी आँखों के नीचे

काली रेखा पड़ गई है। कमरे में आते ही उसने निगाह नीची कर ली, योगेन्द्र के मुँह की ओर देख न सकी। वह जानती थी कि योगेन्द्र उस पर और रमेश पर नाराज है, उनके खिलाफ कठोर विचार कर रहा है। इसीलिये योगेन्द्र के साथ बातचीत करना, उसके लिये कठिन हो गया है।

यद्यपि प्रेम ने हेमनलिनी के विश्वास को अलग कर रखा था, तथापि विचार को बिलकुल ताक पर उठा धरने से काम नहीं चलता। योगेन्द्र के सामने हेमनलिनी कल अपने विश्वास को दृढ़ता दिखाकर चली गई थी, किन्तु रात के अन्धकार में सोने वाली अकेली कोठरी में उसका बल भरपूर न रहा। वास्तव में शुरू से ही रमेश के व्यवहार का कोई अर्थ समझ मे नहीं आता। हेमनलिनी अपने विश्वास के किले में सन्देह के कारणों को जितनी चेष्टा से घुसने नहीं दिया चाहती—उतनी ही जोर वह बाहर से आघात करता है। जैसे माता सांघातिक आघात से अपने बच्चे को छाती से चिपकाकर रक्षित रखती है, वैसे ही हेमनलिनी रमेश के विश्वास को प्रमाणों से विरुद्ध कर हृदय में चिपकाये हुए है। किन्तु हाय, जोर सभी समय बराबर नहीं रहता।

हेमनलिनी की बगल की कोठरी में ही रात को अन्नदा बाबू सोये थे। वह समझ रहे थे कि हेम बिछौने पर इधर-से-उधर करवटें बदल रही थी वे बीच-बीच में उसकी कोठरी में पहुँच पूछते भी थे—बेटी, तुम्हें नींद आ रही है ?

"मुझे नींद आ रही है' मैं अभी सोऊँगी।"

दूसरे दिन सवेरे उठ हेमनलिनी छत पर टहल रही थी। रमेश के घर के एक भी दरवाजे एक भी खिड़की खुली नहीं थी।

धीरे-धीरे सूर्य पूर्व ओर के मकानों की चोटी पर दिखाई दिए। हेमनलिनी के लिए आज का यह नवीन अभ्युदित दिन इतना शुष्क, शून्य, आशाहीन और आनन्दहीन जान पड़ा कि वह उस छत के एक कोने में बैठ दोनों हाथ से मुंह ढँककर रोने लगी। आज सारे दिन कोई न आयेगा, चाय के समय किसी की भी आशा नहीं; यह कल्पना का सुख भी दूर हो गया है कि बगल के मकान में कोई है तो सही।

"हेम ! हेम !"

हेमनलिनी ने चटपट आँख के आँसू पोंछकर जवाब दिया, "क्या है पिता जी !"

अन्नदाबाबू ने छत पर आ हेमनलिनी की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "आज मुझे उठने में देर हो गई ।"

अन्नदाबाबू चिन्ता की वजह से रात को सो नहीं सके—सवेरे के समय उन्हें नींद आ गई थी । वे सवेरे की रोशनी पड़ते ही उठ बैठे और हाथ-मुंह धोकर हेमनलिनी की खबर लेने लगे । उन्होंने देखा कि घर में कोई नहीं है । सवेरे हेमनलिनी को अकेली घूमते जान उनके हृदय को ठेस लगी । उन्होंने कहा, "चलो बेटी चाय पीने चलो ।"

हेमनलिनी की इच्छा नहीं थी कि वह चाय के टेबिल पर योगेन्द्र के सामने बैठकर चाय पिये । किन्तु वह जानती थी कि किसी प्रकार भी नियम के खिलाफ़ काम होने से उसके पिता को कष्ट होता है । इसके अतिरिक्त वह नित्य अपने हाथ से अपने पिता के प्याले में चाय उड़ेलती थी; अपनी इस सेवा से उसने अपने को वंचित होने नहीं दिया ।

नीचे के कमरे में पहुँचने से पहले जब उसने बाहर से ही सुना कि योगेन्द्र के साथ कोई बात-चीत कर रहा है, तब उसकी छाती काँप उठी । एकाएक याद आया कि शायद रमेश आया है । इतने सवेरे और कौन आयेगा ।

काँपते पैर उसने कमरे में जाकर देखा कि अक्षय है; उस समय वह अपने को किसी तरह भी संभाल न सकी—उसी समय वह पलटकर बाहर निकल आई ।

जब दूसरी बार अन्नदाबाबू उसे कमरे में ले गए, तब वह अपने पिता की कुरसी के पास खड़ी हो उनके प्याले में चाय देने लगी ।

योगेन्द्र हेमनलिनी के व्यवहार से बहुत चिढ़ा हुआ था । हेम रमेश के लिए जो शोक का अनुभव कर रही थी, वह उसे असहनीय हो रहा था । इसके बाद जब उसने देखा कि—अन्नदाबाब इस शोक में उसका साथ दे रहे हैं और

वह भी संसार के लोगों के बदले अन्नदाबाबू की स्नेह की छाया में अपनी रक्षा करने की चेष्टा कर रही थी, तब उसका अधैर्य और भी बढ़ गया। वह सोचने लगा कि मानो हम सब-के-सब अत्याचारी हैं। हम लोग जो स्नेह के कारण कर्त्तव्य-पालन की चेष्टा कर रहे हैं, हम लोग जो यथार्थ रूप से उसका मंगल साधन कर रहे हैं—उसके लिए जरा भी कृतज्ञता प्रकाश करना तो दूर की बात, उलटे मन-ही-मन हम लोगों को दोषी समझ रही है। पिताजी को तो किसी बात की समझ है नहीं। अब धीरज देने का समय नहीं है—अब आघात करने का समय है। ऐसा न कर पिताजी अप्रिय सत्य को उससे दूर रखना चाहते हैं।

योगेन्द्र ने अन्नदाबाबू से कहा, "सुना है पिता जी कि क्या हुआ ?"

अन्नदाबाबू ने डरते हुए पूछा, "नहीं, क्या हुआ ?"

योगेन्द्र, "रमेश कल अपनी स्त्री को लेकर ग्वालन्दो मेल से देश जा रहा था—अक्षय को उस गाड़ी में चढ़ते देख न जाकर फिर कलकत्ते लौट आया है।"

हेमनलिनी का हाथ काँप उठा—चाय ढालने के समय चाय गिर गई। वह कुरसी पर बैठ गई।

योगेन्द्र उसके मुँह की ओर देखकर कहने लगा, "भागने की जरूरत क्या थी, यह मेरी समझ में नहीं आया। अक्षय के सामने तो पहले ही प्रकट हो गया था—इसके बाद यह कायरता, यह चोर की तरह इधर-उधर भागते फिरना मेरे आगे तो बहुत ही खराब जँचता है। नहीं मालूम कि हेम क्या समझती है—क्योंकि इस तरह भागना ही उसके अपराध का यथेष्ट प्रमाण है।"

हेमनलिनी ने काँपते-काँपते कुरसी से उठकर कहा, "दादा, मैं प्रमाणों की कोई परवा नहीं रखती। तुम लोग इसका विचार चाहते हो, तो करो—मैं विचारक नहीं हूँ।"

योगेन्द्र, "तुम्हारे साथ जिसके विवाह का सम्बन्ध हो रहा है, क्या उससे हम लोगों का कोई सम्बन्ध नहीं है ?"

हेमनलिनी, "विवाह की बात कौन करता है ? तुम लोग तोड़ना चाहो, तो तोड़ दो, यह तुम लोगों की इच्छा पर है। किन्तु मेरा मन तोड़ने के लिए

झूठी चेष्टा न करो।"

यह कहते-कहते हेमनलिना स्वर के साथ रो उठी। अन्नदाबाबू ने चटपट उसके आँसू से भीगे मुंह को छाती से लगाकर कहा, "चलो हेम, हम लोग ऊपर चलें ?"

बारह

स्टीमर छूट गया। पहले और दूसरे दर्जे के कमरे में कोई नहीं था। रमेश ने एक कमरा पसन्दकर उसमें अपना बिस्तर लगा लिया। सवेरे के समय दूध पीकर उस कमरे की खिड़की खोल कमला नदी और किनारे का तमाशा देखने लगी।

रमेश ने कहा, "जानती हो कमला, कि हम लोग कहाँ जा रहे हैं ?"

कमला ने कहा, "देश जा रहे हैं।"

रमेश, "तो तुम्हें अच्छा नहीं लगता—हम देश न जायँगे।"

कमला, "मेरे लिए तुम देश जाना छोड़ दोगे ?"

रमेश, "हाँ, तुम्हारे लिए।"

कमला ने मुँह भारी कर कहा, "ऐसा क्यों करते हो। मैंने किसी दिन बात-बात में कुछ कह दिया। तुमने वही मान लिया। तुम जरा-जरा-सी बात पर नाराज हो जाते हो।"

रमेश ने हँसकर कहा, "मैं जरा भी नाराज नहीं हुआ हूँ। देश जाने की मेरी भी इच्छा नहीं है।"

तब कमला ने उत्सुकता के साथ पूछा, "तब हम लोग कहाँ जा रहे हैं ?"

रमेश, "पश्चिम की ओर।"

'पश्चिम' का नाम सुन कमला की आँखें चमक उठीं। पश्चिम ! जो लोग सदा घर में ही दिन बिताते हैं, उनके आगे पश्चिम के नाम से क्या पूछना है।

पश्चिम में तीर्थ, पश्चिम में स्वास्थ्य है, पश्चिम में नये-नये देश हैं, नये-नये दृश्य हैं, कितने ही रौजे और सम्राटों की पुरानी कीर्त्ति है, कितने ही कारीगरी से बने देवालय हैं, कितनी ही प्राचीन कहानी, कितने ही वीरत्व का इतिहास है।

कमला ने प्रसन्न होकर पूछा, "पश्चिम हम लोग कहाँ जा रहे हैं ?"

रमेश ने कहा, "कुछ ठीक नहीं। मुंगेर, दानापुर, बक्सर, गाजीपुर, काशी, जहाँ हो, एक जगह उतरना चाहिए।"

इन सब कितने ही जाने और अनजाने शहरों का नाम सुन कमला की कल्पना और भी उत्तेजित हो उठी। उसने दोनों हाथ बजाकर कहा, "तब तो बड़ा मजा है।"

रमेश ने कहा, "मजा तो पीछे आयेगा; इधर कई दिन खाना-पीना कैसे चलेगा। तुम खलासियों के हाथ की रसोई खा सकोगी ?"

कमला ने घृणा से मुंह बिगाड़कर कहा, "हे राम, मुझसे यह न होगा।"

रमेश, 'तब कौन-सा उपाय करना चाहिए।"

कमला, "मैं खुद बना लूंगी।

रमेश, तुम बनाओगी !"

कमला ने हँसकर कहा, "तुम क्या समझते हो, कि मैं नहीं जानती। मैं क्या जरा-सी बच्ची हूँ, कि खाना बनाना भी नहीं जानती। मामा के यहाँ तो मैं बराबर रसोई बनाया करती थी।"

रमेश ने तुरन्त पछतावा प्रकट करते हुए कहा, "ठीक है, तब तो तुमसे इसके बारे में पूछकर मैंने उचित नहीं किया। तब अब रसोई की तैयारी की जाय—क्या कहती हो ?"

यह कह रमेश चला गया और ढूंढ़कर लोहे का एक चूल्हा उठा लाया। केवल इतना ही कि काशी पहुँचा देने के खर्च और खाने का प्रलोभन दे उमेश नाम के एक कायस्थ के लड़के को पानी भरने और बर्तन मलने के लिए ठीक कर लाया।

रमेश ने कहा, "कमला आज क्या बनाओगी ?'

कमला ने कहा, "तुमने जैसी तैयारी की है। सिर्फ चावल और दाल है,

आज खिचड़ी बनाती हूँ।"

रमेश खलासियों से कमला के बताये अन्दाज से मसाला ले गया।

रमेश की अनजानियत पर कमला हँस उठी। उसने कहा, "सिर्फ मसाला लेकर क्या करूँगी ? सिल लोढ़ा न होने से यह पीसा काहे पर जायगा। तुम भी खूब हो!"

बालिका की इस आज्ञा को मानकर रमेश सिल-लोढ़े की खोज में चला। सिल-लोढ़ा न मिलने से खलासिये के पास से इमामदस्ता उठा लाया।

इमामदस्ते में मसाला कूटने का अभ्यास कमला को नहीं था। लाचार वह उसी को लेकर बैठी। रमेश ने कहा, "न हो, तो मैं और किसी से मसाला पिसवा लाऊँ।"

कमला इस पर राजी नहीं हुई। उसने स्वयं उत्साह के साथ काम शुरू किया। इसका अभ्यास न होने से उसे तमाशा जान पड़ने लगा। मसाला छिटक छिटककर चारों ओर फैल रहा था और उसकी यह हँसी देख रमेश भी हँसने लगा।

इस तरह मसाला कूटने का काम समाप्त होने पर कमर में आँचल खोस कमला ने एक अच्छी जगह देख रसोई चढ़ा दी। कलकत्ते से एक हण्डी में सन्देश लाया गया था, उसी हण्डी से आज का काम चल गया।

रसोई चढ़ाकर कमला ने रमेश से कहा, "तुम जाओ, जल्दी स्नान कर आओ, मेरी रसोई में अधिक देर नहीं है।"

रसोई बन गई, रमेश स्नान कर आया। अब प्रश्न यह था कि किस चीज में खाया जाय।

रमेश ने उठते-उठते कहा, "खलासियों के पास से थाली लाई जा सकती है।"

कमला ने कहा, "छि!"

रमेश ने मीठे वचन से समझाया कि ऐसा काम वह इससे पहले कई बार कर चुका है।

कमला ने कहा, 'पहले जो हो गया, वह हो गया; अब न होने पयेगा—मैं

उसे देख न सकूंगा।"

यह कहती हुई वह सन्देश की हण्डी के मुँह पर ढँके पत्तल को धोकर साफ कर लाई। उसने कहा, "आज दिन तुम इसी पर खाओ, फिर देखा जायगा।"

पानी से धोये पोंछे रसोई के स्थान में रमेश पवित्र भाव से बैठ कर भोजन करने लगा। दो-एक ग्रास खाते ही उसने कहा, "वाह! अच्छी खिचड़ी बनी है।"

कमला ने लज्जित हो कहा, "जाओ, तुम तो हँसी करते हो।"

रमेश ने कहा, "हँसी नहीं, तुम अभी देखना।' यह कहकर उसने पत्तल के अन्न को समाप्त कर फिर माँगा। कमला ने एक बारगी बहुत-सा दे दिया। रमेश ने घबरा कर कहा, "यह क्या करती हो। तुम्हारे लिये कुछ बचा है?"

"बहुत है, इसके लिये तुम चिंता न करो।"

रमेश के तृप्ति के साथ भोजन करने पर कमला बहुत खुश हुई। रमेश ने पूछा, "तुम कैसे खाओगी?"

कमला ने कहा, "क्यों, इसी पत्तल से काम चलेगा।"

रमेश घबरा उठा। उसने कहा, "नहीं, ऐसा हो नही सकता।"

कमला ने आश्चर्य के साथ कहा, "क्यों, इसमे हर्ज क्या है?"

कमला ने फिर कहा, "आप रहने दीजिये—मैंने सब ठीक कर लिया है। उमेश, तू काहे में खायगा?"

उमेश ने कहा, "माँजी, नीचे हलवाई पूरी बेच रहा है, मैं उससे पत्तल माँगे लाता हूँ।"

रमेश ने कहा, "तुम यदि उसी पत्तल में खाना चाहती हो तो मुझे दो, मैं उसे धो दूँ।"

कमला ने बहुत संक्षेप में कहा, "पागल हुए हो?" इसके बाद ही वह फिर बोल उठी, "मैंने पान नहीं लगाया, तुम पान लाये ही नहीं।"

रमेश ने कहा, "नीचे पान वाला पान बेच रहा है।"

इस तरह बहुत ही सहज में गृहस्थी हो गई। रमेश मन-ही-मन सोच में

पड़ गया। वह सोचने लगा, कि दाम्पत्य के भाव को कैसे बचाया जाय।

गृहणी के पद पर अधिकार कर लेने के लिये कमला को बाहरी किसी प्रकार की सहायता लेने की जरूरत नहीं दिखाई दी। उसने अपने मामा के घर रहने के समय रसोई बनाई है, लड़का खिलाया है, घर का सब काम चलाया है। उसकी निपुणता, तत्परता और काम में उत्साह देख रमेश बहुत खुश हुआ—किन्तु उसी के साथ वह और बातें भी सोचने लगा कि भविष्य में इसके साथ कैसा बर्ताव किया जाय? उसे कैसे पास में रखूं और दूर भी रखूं। दोनों के बीच में रेखा कैसे खींची जाय। हम दोनों के बीच यदि हेमनलिनी होती, तो सब काम बहुत ही सुन्दरता से हो जाता। किन्तु यदि उधर की आशा छोड़ना ही पड़े, तो अकेली कमला को लेकर सब समस्याओं की मीमांसा कैसे होगी; इसे सोचना भी कठिन है। रमेश ने सोचा कि असल बात कमला से कह देना ही उचित है, अब वह छिपाये नहीं छिपती।

तेरह

अब भी दिन बहुत है; ऐसे समय स्टीमर रेत में फँस गया। उस दिन बहुत खींचा-खींची करने पर भी स्टीमर तैर न सका। ऊँचे कगारे के नीचे जलचर पक्षियों के पैर से अंकित एक तह बालू का निचला तट कुछ दूर तक फैला हुआ दिखाई दे रहा था। यहीं गाँव की स्त्रियाँ उस समय दिन के आखिरी समय में पानी ले जाने के लिये घड़े लेकर आ रही थी। उनमें कोई-कोई चंचला बिना घूंघट की ओट से स्टीमर की ओर देख-देखकर अपना कौतूहल मिटा रही थीं। ऊँची आवाज देने वाले स्टीमर को विपद् में पड़े देख गाँव के लड़के कगारे के ऊपर खड़े हो चिल्ला-चिल्लाकर स्टीमर को चिढ़ाने और नाचने लगे।

उस पार की जलशून्य रेती में सूर्य अस्त हुए। रमेश स्टीमर की रेलिंग

पकड़ सन्ध्या की आभा में पश्चिमी दिगन्त की ओर चुपचाप देख रहा था। कमला घेरा बाँधी रसोई की जगह से निकल कमरे के दरवाजे के पास खड़ी हो गई। रमेश को शीघ्र पीछे की ओर मुँह फेरते न देख वह जरा मीठे स्वर में खाँस दी। किन्तु इसका भी कोई नतीजा न निकला। तब वह चाबियों के गुच्छे से ठक-ठक करने लगी। जब आवाज तेज हुई, तब रमेश ने पीछे की ओर देखा। कमला को देख, उसने उसके पास आकर कहा, "यह बुलाने का कैसा कायदा है?

कमला ने कहा, "तब कैसे बुलाऊँ?"

रमेश ने कहा, "क्यों, माँ-बाप ने मेरा नाम किसलिये रखा है—क्या वह किसी व्यवहार में आने लायक नहीं है? जरूरत पड़ने पर मुझे रमेश बाबू कहकर बुलाने में क्या हर्ज है?"

फिर वही एक तरह की दिल्लगी कमला के कपोलों और कानों पर सन्ध्या की आभा के अलावा और एक लाली ने साथ दिया—उसने गर्दन टेढ़ीकर कहा, "तुम न जाने क्या-क्या बका करते हो, जिसका कोई ठिकाना नहीं। सुनो, तुम्हारा भोजन तैयार है, जरा जल्दी ही खालो। आज उस समय तुम अच्छी तरह खा नहीं सके।"

नदी की हवा से रमेश को भूख जान पड़ती थी। उसने इसलिये कुछ नहीं कहा था कि कमला तैयारी करने में घबरा न उठे। इस समय बिना माँगे भोजन मिलने के सुख से उसका हृदय हिल उठा—इसमें एक विचित्रता थी। केवल भूख मिटाने की सम्भावना का सुख नहीं—बल्कि उसके अनजान में एक की चिन्ता जाग रही थी—एक प्रकार की चेष्टा फैली हुई थी—उसके लिये एक कल्याण का विधान आप ही अपना काम कर रहा था; इस गौरव का अनुभव उसके हृदय में हुए बिना नहीं रहा। किन्तु यह उसके लिये प्राप्त नहीं—इतनी बड़ी चीज केवल भ्रम के ऊपर प्रतिष्ठित थी इस चिन्ता के निठुर आघात से भी वह बच न सका—वह सिर नीचा ठण्डी साँस लेता हुआ कमरे में आया।

कमला ने उसके चेहरे का भाव देख आश्चर्य में आकर कहा, "तुम्हारी

शायद खाने की इच्छा नही है ? भूख नहीं लगी है ? क्या मैं तुम्हें जबर्दस्ती खाने को कह रही हूँ।"

रमेश ने चटपट प्रसन्नता का ढोंग करते हुए कहा, "तुम्हें जबर्दस्ती करने की जरूरत ही क्या है ? मेरा पेट आप ही जोर मार रहा है। इस समय खूब चाभी खटखटाकर तुमने बुला लिया, नहीं तो अन्त में परोसने के समय मानो दर्पहारी मधुसूदन के ही दर्शन होते।"

यह कह रमेश ने कमरे में इधर-उधर निगाह फेर फिर कहा, "खाने की तो कोई चीज दिखाई नहीं दे रही है, बहुत भूख होने पर भी यह असबाब मेरे पेट में हजम न हो सकेगा—क्योंकि बचपन से मुझे और ही कुछ खाने का अभ्यास है।" यह कहते रमेश ने सब असबाबों की ओर उँगली घुमाई।

कमला खिल-खिलाकर हँस पड़ी। हँसी का वेग रुकने पर उसने कहा, "जान पड़ता है, कि अब सब्र नहीं है ? जब आकाश की ओर देख रहे थे, तब शायद भूख-प्यास नहीं थी। फिर जैसे ही मैंने बुलाया, वैसे ही जान पड़ा मानो बड़ी भूख लगी हुई है ! अच्छा, तुम एक मिनट बैठो, मैं अभी लिए आती हूँ।"

रमेश ने कहा, "लेकिन देर होने से यह बिछौना वगैरह कुछ भी तुम्हारे देखने में न आयेगा—तब मेरा दोष न देना।"

रसिकता के इस तरह दोहराये जाने से कमला को बहुत ही प्रसन्नता हुई, उसे फिर जोर से हँसी आ गई। सरल हँसी की लहरी से घर को सुधामय बना कमला तेजी के साथ खाना लेने चली गई। रमेश की सूखे काठ जैसी प्रफुल्लता की बनावटी दीप्ति क्षणभर में कालिमा में व्याप्त हुई।

शाल के पत्ते से ढँकी एक चंगेरी लेकर शीघ्र ही कमला कमरे में आई। बिछौने के ऊपर चंगेरी रख उसने अपने आँचल से जमीन को झाड़ दिया।

रमेश ने चौंककर कहा, "यह क्या करती हो ?"

कमला ने कहा, "मैं तो अभी कपड़े बदलूँगी"—कहकर उसने शाल के पत्तल पर पूरी और तरकारी बहुत ही निपुणता के साथ परोस दिया।

रमेश ने कहा, "बड़े आश्चर्य की बात है। यह पूरियों का इन्तजाम कैसे

कर लिया ?"

कमला ने सहज ही रहस्य न खोल बहुत गम्भीर मुँह बनाकर कहा, "भला कैसे किया, बताओ तो सही !"

रमेश ने बहुत सोच-समझकर कहने का ढोंग रचकर कहा, "जरूर तुमने खलासियों के जलपान में अपना हिस्सा-बाँट भी लगाया है।"

कमला ने खूब चिढ़कर कहा, "कभी नहीं; राम-राम।"

रमेश ने खाते-खाते पूरियों के आदि कारण के सम्बन्ध में कितने ही प्रकार की असम्भव कल्पनाएँ कर कमला को चिढ़ा दिया। जब उसने कहा कि अलिफ लैला के चिराग वाले अलादीन ने बलूचिस्तान से गरमा-गरम पूरियाँ निकालकर अपने दैत्य के हाथ सौगात भेजा होगा, तब कमला किसी तरह भी धीरज रख न सकी; उसने मुँह फेरकर कहा, "तो फिर जाओ, मैं बोलूँगी ही नहीं।"

रमेश ने घबराकर कहा, "नहीं-नहीं, मैं हारा। यह बीच नदी में पूरियाँ—यह कैसे सम्भव हो सकता है; मेरी समझ में कुछ आ ही नहीं रहा है। फिर भी खाने में बड़े स्वाद की हुई हैं।"

यह कह रमेश बात के निर्णय का आसरा न देख पेट भरने की श्रेष्ठता को साबित करता हुआ खाने लगा।

स्टीमर के रेती में फँस जाने पर सूने भण्डार को भरने की इच्छा से कमला ने उमेश को गाँव में भेजा था। स्कूल में रहने के समय जलपान के लिये रमेश ने कमला को जो रुपये दिये थे, उसमें से कुछ बच रहे थे, उन्हीं को खर्च कर उसने थोड़ा-सा घी मैदा मँगा लिया था। कमला ने उमेश से पूछा, "बता, तू क्या खायगा ?"

उमेश ने कहा, "माँजी, अगर तुम राजी हो, तो गाँव में अहीर के घर बहुत ही सरस दही देख आया हूँ—केला तो घर में है ही, दो-एक पैसे का दाना चबेना लेने से ही इस समय का फलाहार हो जायगा।"

लोभी बालक के फलाहार के उत्साह से कमला भी उत्साहित हो उठी—उसने कहा, "कुछ पैसे बचे हैं उमेश ?"

उमेश ने कहा, "नहीं माँजी।"

कमला मुश्किल में पड़ी। रमेश से कैसे मुँह खोलकर रुपये माँगे, इसी चिन्ता में पड़ गई। कुछ ठहरकर उसने कहा, "अगर आज तेरे भाग्य में फलाहार न बदा हो, तो पूरियाँ हैं—इसके लिये कोई चिन्ता नहीं। चल, मैदा गूँध दे।"

उमेश ने कहा, "क्या कहूँ माँ, जो दही देख आया हूँ, आह!"

कमला ने कहा, "देख उमेश, बाबू जब खाने बैठें, तब तू आकर बाजार के लिये पैसे माँगना।"

रमेश का भोजन कुछ समाप्त हो चलने पर उमेश उनके सामने खड़ा हो संकोच से सिर खुजलाने लगा। रमेश ने उसके मुँह की ओर देखा। उसने आधी जुबान कहा, "माँ, बाजार के लिये पैसा—"

तब रमेश को एकाएक याद आया, कि भोजन की तैयारी के लिये रुपये की जरूरत पड़ती है; अलादीन के चिराग के आसरे काम नहीं चलता। उसने व्यस्त हो कहा, "कमला, तुम्हारे पास तो रुपये हैं नहीं। मुझे तुमने याद क्यों न दिला दी।"

कमला ने चुपचाप अपना कसूर मान लिया। भोजन के बाद रमेश ने कमला को एक छोटा मनीबेग देकर कहा, "खर्च के अनुसार इसमें पूरा धनरत्न है।"

इस तरह गृहस्थी का सारा भार आप-ही-आप कमला के हाथ आने लगा। रमेश फिर एक बार स्टीमर की रेलिंग पकड़ पश्चिम ओर देखने लगा। पश्चिम आकाश की ओर देखते-देखते उसकी आँखों के सामने अन्धकार फैल गया।

उमेश ने आज पेट भर चिउड़ा-दही-केला फलाहार किया। कमला ने सामने खड़ी हो उसके जीवन वृतान्त को स्थिरता के साथ सुना।

विमाता के शासन से उपेक्षित उमेश काशी में अपनी नानी के यहाँ भागा जा रहा था—उसने कहा, "माँ जी, अगर तुम अपने हीं पास रखो, तो मैं कहीं न जाऊँगा।"

माता-विहीन बालक के मुँह से ममता का शब्द सुन बालिका के कोमल हृदय में किसी एक गम्भीर हिस्से से जननी का स्वर बज उठा—कमला ने मीठे स्वर में कहा, "अच्छी बात है उमेश, तू हम लोगों के साथ ही रह।"

चौदह

किनारे की बनराशि की कालिमा ने सन्ध्या-बधूके सुनहरे अंचल में काला किनारा खींच दिया है। गाँव की माँद में सारे दिन रहकर जंगली हंसों का दल आकाश के मलिन सूर्यास्त की आभा में उस पार के वृक्षशून्य बालू की रेती के गड्ढों के जलाशय में रात बिताने के लिये चला। कौवों के घोंसले में आने का कलरव बन्द हुआ। उस समय नदी में नावें नहीं थीं—सिर्फ एक बड़ी डोंगी गाढ़े सुनहरे सब्ज स्थिर पानी के ऊपर अपनी कालिमा को साथ-साथ लिए चुपचाप गोंन पर खिंची जा रही थी।

रमेश स्टीमर की छत पर सामने की ओर उदय हुए तरुण चन्द्रमा की चाँदनी में बेंत की कुरसी पर बैठा हुआ था।

पश्चिम आकाश में सन्ध्या की आखिरी स्वर्णछटा लीन हो गई। चाँद की चाँदनी के इन्द्रजाल से कठोर संसार मानो विगलित हो पड़ा। रमेश आप-ही-आप धीरे-धीरे कह उठा, "हेम हेम!" उस नाम का शब्द मानो सुमधुर स्पर्श के रूप में उसके समूचे हृदय को बार-बार घेर प्रदक्षिणा करने लगा—उसी नाम के शब्दमात्र मानो असीम करुणा के रस से सिक्त छायामय दृष्टि रूप में उसके मुँह पर वेदना को विदीर्ण, कर देखने लगा। रमेश का सारा शरीर रोमांचित और दोनों आँखें आँसू से तर हो गईं।

उसने गत दो वर्ष के जीवन के सब इतिहास को अपने मन के सामने फैला दिया—हेमनलिनी के प्रथम परिचय का दिन उसे याद आया। उस दिन को रमेश अपने जीवन के विशेष दिन के रूप में पहचान नहीं सका। योगेन्द्र जब

उसे अपने चाय के टेबिल पर ले गया, उस समय वहाँ हेमनलिनी को बैठी देख लज्जालु रमेश ने अपने को बहुत असमंजस में पाया था। धीरे-धीरे लज्जा दूर हुई, हेमनलिनी के साथ वह अभ्यस्त हो चला, क्रम से उस अभ्यास के बन्धन ने रमेश को बन्दी बना लिया। काव्य-साहित्य में रमेश ने प्रेम का विषय जो कुछ पढ़ा था, उन सब को वह हेमनलिनी से मिलाने लगा कि मैं प्रेम करता हूँ, यह समझकर उसने मन-ही-मन अहंकार का अनुभव किया। उनके सह-पाठी लोग परीक्षा में पास होने के लिये प्रेम की कविता के अर्थ को बानी से रटकर ही मर रहे थे, किन्तु रमेश सचमुच प्रेम करता है इसलिए अन्य छात्रों को वह अपना कृपा-पात्र समझ रहा था। रमेश ने आज विचारकर देखा, कि उस दिन भी वह प्रेम के दरवाजे के बाहर ही था। किन्तु जब एकाएक कमला ने आकर उसके जीवन की समस्या को जटिल बना डाला, तब अनेक प्रकार के विरुद्ध घात-प्रतिघात से देखते-देखते हेमनलिनी के प्रति उसका प्रेम आकार धारण कर जीवन-ग्रहण करता हुआ जाग्रत हो उठा।

रमेश अपनी दोनों हथेलियों के बीच सिर झुका कर विचार में डूब गया, कि सामने ही तो सारा जीवन पड़ा हुआ है—उसका भूखा उपवासी जीवन—दुश्छेद्य संकट के जाल में जकड़ा हुआ है। क्या इस जाल को वह जबरदस्ती दोनों हाथों से तोड़कर फेंक न सकेगा?

यह सोचकर उसने दृढ़-संकल्प के आवेग में एकाएक आँखें खोलकर देखा—समीप ही बेंत की दूसरी कुरसी की पीठ को पकड़े कमला खड़ी है। कमला ने चकित होकर कहा, "तुम सो गए थे, शायद मैंने आकर तुम्हें जगा दिया।"

पछताती हुई कमला को जाने पर उद्यत देख रमेश शीघ्रता से बोल उठा, "नहीं, नहीं कमला, मैं सोया नहीं था—तुम बैठो, तुमसे एक कहानी कहूँ।"

कहानी का नाम सुन प्रसन्न होकर कुरसी खींच बैठ गई। रमेश ने ठीक किया था कि कमला से सब बातें खोलकर कह देने की जरूरत है। किन्तु उसे

वह एकाएक बड़ी चोट दे न सका। इसीसे उसने कहा कि बैठो तुम्हें एक कहानी सुनाऊँ।

रमेश ने कहा, "उस जमाने मे एक जाति के क्षत्रिय थे—वे लोग—"

कमला पूछ बैठी, "किस जमाने मे ? बहुत बीते जमाने से भी पहले ?"

रमेश ने कहा, "हा, बहुत दिन पहले। तब तुम्हारा जन्म भी नहीं हुआ था।"

कमला, "शायद तुम्हारा जन्म हो गया था। तुम बहुत दिन के आदमी हो ! अच्छा आगे कहो।"

रमेश, "उन क्षत्रियों का नियम था कि वे स्वयं विवाह करने न जाते, अपनी तलवार भेज देते थे। उस तलवार के साथ वधू का विवाह हो जाने पर उसे अपने घर लाकर फिर विवाह कहते थे।"

कमला, "ऐसा ! छि:, यह कैसा विवाह !

रमेश, "मैं भी ऐसे विवाह को पसन्द नही करता, किन्तु क्या करूँ—जिन क्षत्रियों की बात कह रहा हूँ, वे ससुर के घर जाकर विवाह करने में अपना अपमान समझते थे। एक दिन वह—"

कमला—तुमने यह नही कहा कि कहाँ का राजा।

रमेश बोल उठा—मद्र देश का राजा एक दिन वह राजा—

कमला—पहले राजा का नाम तो कहो !

कमला सब बातों को साफ कर लेना चाहती है उसके आगे कुछ छिपाने से चल नही सकता। अगर रमेश यह जानता, तो पहले से और तैयार कर लिया होता। अब वह समय गया कि कमला को कहानी सुनने का आग्रह है, किन्तु उसके लिये उसमें कहीं से फर्क पड़ना असह्य है।

रमेश ने इस एकाएक के प्रश्न से कुछ ठहरकर कहा, "राजा का नाम रणजीतसिंह।"

कमला ने एक बार फि दोहरा लिया, "मद्रदेश का राजा, रणजीत सिंह। इसके बाद ?"

रमेश—इसके बाद एक दिन राजा ने भाट के मुंह से सुना कि उसकी ही

जाति के एक राजा के परमासुन्दरी कन्या है।

कमला—वह कहाँ का राजा था ?

रमेश—समझ लो कि काँची का।

कमला—समझ क्या लूं। तो क्या सचमुच वह काँची का राजा नहीं था ?

रमेश—काँची का ही राजा था, उसका नाम सुनना चाहती हो ? अमर-सिंह।

कमला—और उस लड़की का नाम नहीं कहा ? वही परमासुन्दरी कन्या।

रमेश—हाँ-हाँ भूल हो गई। उस लड़की का नाम था चन्दा—

कमला—आश्चर्य है तुम ऐसे ही भूलते हो ! तुम तो मेरा ही नाम भूल गये थे ?

रमेश—कोशल के राजा ने भाट के मुँह से यह सुन—

कमला—यह कोशल के राजा कहाँ से कूद पड़े। तुम तो मद्रदेश का राजा कह रहे थे न ?

रमेश—तो क्या तुम समझती हो कि वह एक ही जगह का राजा था ? वह कोशल का भी राजा था और मद्रदेश का भी राजा था।

कमला—दोनों राज्य शायद पास-ही-पास हैं ?

रमेश—बिलकुल सटे हुए।

इस प्रकार बार-बार भूल करते हुए और सतर्क कमला के प्रश्न की सहायता से इन भूलों का किसी तरह संशोधन करते हुए रमेश इस प्रकार एक कहानी सुना गया—

"मद्रराज रणजीतसिंह ने काँची के राजा के पास राजकन्या के विवाह का प्रस्ताव लेकर दूत भेज दिया। काँची के राजा अमरसिंह खुशी-खुशी राजी हो गये।"

"तब रणजीतसिंह ने अपने छोटे भाई इन्द्रजीतसिंह को सैन्य-सामन्त के साथ निशान उड़ाते गाड़ा-नगाड़ा और दुन्दुभी-दमामा बजाते काँची के राजा के बगीचे में जाकर तम्बू लगा दिया। काँची नगरी में उत्सव की धूम मच गई।"

"राजा के ज्योतिषियों ने गणना कर शुभ दिन और क्षण स्थिर कर दिया। कृष्ण द्वादशी तिथि में रात ढाई पहर के बाद लग्न है। रात में नगर में घर-घर फूलों की मालाएँ लटकाई गईं और दीवाली जगमगा उठी। आज रात में राजकुमारी चन्द्रा का विवाह है।"

"किन्तु राजकुमारी चन्द्रा को यह खबर नहीं कि किसके साथ उसका विवाह है। उसके जन्म के समय परमहंस परमानन्द स्वामी ने राजा से कहा था कि तुम्हारी इस कन्या पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि है, विवाह के समय किसी तरह कन्या अपने पति का नाम न जानने पाये।"

"यथा समय तलवार के साथ राजकन्या का गठ-बन्धन हो गया। इन्द्र-जीतसिंह ने दहेज सामने रख अपनी भौजाई को प्रणाम किया। मद्राराज्य के रणजित् और इन्द्रजीत दोनों ही दूसरे राम लक्ष्मण थे। इन्द्रजीत ने आर्या चन्द्रा के घूँघट की ओट में उसके लज्जारुण मुँह की ओर नहीं देखा—उन्होंने केवल उनके नूपुर पहने सुकुमार चरणों की महावर भर देखी।"

"रीति के मुताबिक विवाह के दूसरे दिन मोतियों की माला और झालर लटकी पालकी पर बहू को ले इन्द्रजित् अपने देश की ओर चले। अशुभ ग्रह की याद आ जाने से शंकित-हृदय काँची राज ने कन्या के माथे पर दाहना हाथ रख आशीर्वाद दिया। माता कन्या का मुँह चूम-चूम आँसुओं की धारा रोक न सकी—देव-मन्दिर में हजारों पण्डित स्वस्ति-वाचन में नियुक्त हुए।"

"काँची से मद्र बहुत दूर—प्राय: एक महीने की राह है। दूसरी रात को जब बतसा नदी के किनारे छावनी डाल इन्द्रजित् दलबल के साथ विश्राम करने की तैयारी कर रहे थे, तब वन के भीतर कुछ मशालों की रोशनी दिखाई दी। समाचार जानने के लिये इन्द्रजित् ने सैन्य के आदमियों को भेजा।"

सैनिक ने आकर कहा, कि "कुमार, वे भी एक विवाह की रस्म पूरी कर बहू को पति के घर ले जा रहे हैं। राह में अनेक विघ्नों का भय है; इससे ये लोग कुमार से शरण की प्रार्थना करते हैं—आज्ञा होगी, तो कुछ दूर तक ये लोग हमारे आश्रय में यात्रा करेंगे।"

कुमार इन्द्रजित् ने कहा "शरण मे आये को आश्रय देना हमारा धर्म है। यत्न के साथ इन लोगो की रक्षा करो।"

"इस तरह दोनो छावनी एक साथ पड़ गई।"

"तीसरी रात अमावस्या थी। सामने छोटे-छोटे पहाड़ और पीछे जंगल। थके हुए सिपाही झिल्ली की झंकार और समीप के झरने की कलध्वनि में गहरी नींद लेने लगे।"

"इसी समय एकाएक कोलाहल सुन सब लोगों ने जाकर देखा कि मद्र-छावनी के घोड़े पागल की तरह इधर-उधर दौड़ रहे है—किसी ने उनकी रस्सी काट दी—बीच-बीच के किसी तम्बू मे आग लगी हुई है। उसकी रोशनी से अमावस की रात लाल हो उठी है।"

"समझ में आया कि डाकुओं ने आक्रमण किया है। मार-काट होने लगी—अन्धकार में शत्रु-मित्र का पहचानना कठिन हो गया। सब प्रबन्ध बिगड गया। इस मुयोग मैं डाकू लूट-पाटकर जंगल पहाड़ों में गायब हो गये।"

"युद्ध के बाद राजकुमारी दिखाई न दी। वह मारे भय के अपनी छावनी से बाहर निकल गई थी और एक दल के आदमियों को भागते देख अपने दूल्हा का आदमी समझ वह उन्हीं के साथ मिल गई।"

"वह दल, दूसरे विवाह वालों का था। इस झमेले में डाकू लोग उसकी पुत्रवधू को हरण कर ले गये थे। राजकन्या चन्द्रा को वे लोग अपनी बहू समझ तेज़ी से कदम बढ़ाते अपने देश की ओर चल पड़े।"

"वे सब दरिद्र क्षत्रिय थे, कलिंग में समुद्र के किनारे इन लोगों का निवास था। वहाँ राजकन्या के साथ दूसरी ओर के वर का मिलन हुआ। वर का नाम चेतसिंह था।"

"चेतसिंह की माँ ने आकर बहू को वरण किया; वह बहू को घर मे ले गई। अपने सगे सम्बन्धी सभी ने कहा कि 'अहा!' ऐसा रूप तो देखने में-में नहीं आता।"

'मुग्ध चेतसिंह नई बहू को घर की कल्याण-लक्ष्मी समझ मन-ही-मन उसकी पूजा करने लगे। राजकन्या भी सती-धर्म की मर्यादा जानती थी, उन्होंने चेतसिंह को अपना पति समझ उसके लिए मन-ही-मन अपने जीवन को न्योछावर कर दिया।"

"नये विवाह की लज्जा करते कुछ दिन लगे। जब लज्जा दूर हुई, तब बातों-ही-बातों में चेतसिंह को मालूम हुआ कि जिसे वह बहू समझकर घर ले आया है, वह तो राजकुमारी चन्द्रा है।"

कमला ने साँस रोक कर बहुत ही आग्रह के साथ पूछा, "इसके आगे ?"

रमेश ने कहा, "बस, मैं यहीं तक जानता हूँ, इसके आगे नहीं जानता; तुम्हीं बताओ, आगे क्या है ?"

कमला—नहीं-नहीं, यह न होगा, इसके आगे क्या हुआ, वह मुझ से कहो।

रमेश—मैं सच कहता हूँ जिस किताब में मैंने यह कहानी पाई है, वह अभी पूरी तरह से प्रकाशित नहीं हुई—मालूम नहीं कि आखिरी अध्याय कब समाप्त होगा ?

कमला ने बहुत क्रोध कर कहा, "जाओ, तुम बड़े पाजी हो। यह तुम्हारा बड़ा अन्याय है।"

रमेश—तुम उन पर नाराज हो, जो किताब लिख रहे हैं। तुमसे मैं केवल इतना ही पूछता हूँ, कि चन्द्रा के साथ चेतसिंह अब कैसा व्यवहार करेगा ?

कमला नदी की ओर देखकर कुछ सोचने लगी—बहुत देर बाद उसने कहा "मैं नहीं जानती, कि वह कैसा व्यवहार करेगा – मेरी समझ में तो कुछ आता ही नहीं।"

रमेश ने कुछ देर चुप रहकर कहा, "क्या चेतसिंह चन्द्रा से सब बातें खोलकर कहेगा ?"

कमला ने कहा, "तुम ठीक तरह से कहानी न कहकर जान पड़ता है सब गोलमाल कर रखोगे। यह तो बहुत ही बुरा जान पड़ता है। सच बातें साफ-

साफ होनी चाहियें।"

रमेश ने हाँ में हाँ मिलाकर कहा, "यह तो होना ही चाहिये।"

कुछ देर ठहर कर फिर रमेश ने कहा, "अच्छा कमला, यदि···"

कमला, "यदि क्या।"

रमेश, "समझ लो' कि मैं यदि सचमुच चेतसिंह होऊँ और तुम यदि चन्द्रा हो···'

कमला बोल बैठी, "तुम ऐसी बात मुझसे न कहो; सच कहती हूँ मुझे यह अच्छा नहीं लगता।"

रमेश—नहीं तुम्हें कुछ कहना ही पड़ेगा—यदि ऐसा हो, तो तुम्हारा क्या कर्त्तव्य है और मरा क्या कर्त्तव्य है ?

कमला इस बात का कोई जवाब न दे कुर्सी छोड़कर तेजी के साथ चली गई। उसने देखा कि उमेश कमरे में बैठकर चुपचाप नदी की ओर देख रहा है। उसने पूछा, "तूने कभी भूत देखा है ?"

उमेश ने कहा, "देखा है माँ।"

यह सुनते ही कमला समीप ही रखे बेंत के एक मोढ़े को खींच उस पर बैठ गई और तब उसने कहा, "कैसे भूत देखा था, बता।"

कमला के नाराज हो चली जाने पर रमेश ने उसे फिर नहीं बुलाया। चन्द्रमा का टुकड़ा उसकी आँखों के सामने घने बाँस के जंगल की ओट में अदृश्य हो गया। डेक के ऊपर की रोशनी बुझाकर खलासी लोग स्टीमर के नीचे के तले में भोजन और विश्राम के लिए चले गये थे। पहले और दूसरे दर्जे में कोई यात्री नहीं था। तीसरी श्रेणी के अधिकांश यात्री भोजनादि बनाने के लिये पानी बहाकर रेती में उतर गये थे। किनारे अन्धकार पूर्ण झाड़ी-झंखाड़ों के बीच ही समीप के बाजार की रोशनी दिखाई दे रही थी। भरी हुई नदी तेज धार से लंगर के लोहे से सीकड़ को झनकारती हुई बही चली जा रही थी और रह-रहकर गंगा की सफेद धारा स्टीमर को कम्पित कर रही थी!

इस अनजान गहराई, इस अन्धकार के पुञ्ज, इस अपरिचित दृश्य की अकाण्ड अपूर्वता के बीच निमग्न हो रमेश ने अपने कर्त्तव्य की समस्या को प्रकट

करने की चेष्टा की। रमेश समझ गया, कि हेमनलिनी या कमला में किसी एक को विसर्जन करना ही पड़ेगा। बीच में दोनों ही की रक्षा करते हुए चले चलने का कोई उपाय नहीं है। फिर भी हेमनलिनी को आश्रय है—अब भी हेमनलिनी रमेश को भूल सकती है, वह और किसी से विवाह कर ले सकती है, किन्तु कमला का त्याग करने से इस जीवन में उसके लिये और कोई उपाय नहीं।

मनुष्य के स्वार्थ का कोई अन्त नहीं। हेमनलिनी रमेश को भूल सकती है, उसकी रक्षा का उपाय है—रमेश के सम्बन्ध में महन के लिये अनन्यगति नहीं है, इससे रमेश को कुछ भी धीरज नहीं हुआ, बल्कि उसके आग्रह की अधीरता और दूनी हो गई। उसे जान पड़ा मानो हेमनलिनी अभी उसके सामने से हटकर सदा के लिये बेकाबू होती जा रही है; अब भी मानो उसे हाथ बढ़ाकर पकड़ा जा सकता है।

दोनों हथेलियों पर वह अपना मुँह रखकर सोचने लगा। कुछ दूर पर सियार बोला; गाँव के दो-चार असहिष्णु कुत्ते भौंक पड़े। तब रमेश ने हथेली पर से अपना मुँह उठाकर देखा, कमला जनशून्य अन्धकार में डेक की रेलिंग पकड़कर खड़ी है। रमेश ने कुर्सी से उठ उसके पास जाकर कहा, "कमला, तुम अभी सोना नहीं चाहतीं? रात तो कम नहीं है।"

कमला ने कहा, "तुम सोने न जाओगे?"

रमेश ने कहा, "मैं अभी जाऊँगा, पूर्व के कमरे में मेरा बिछौना हो गया है। तुम अब देर न करो।"

कमला और कुछ न कहकर धीरे-धीरे अपसे कमरे में चली गई। वह रमेश से कह न सकी कि उसने कुछ ही देर पहले भूत की कहानी सुनी है और उसका कमरा अकेला है।

कमला को अनिच्छा से धीरे-धीरे पैर बढ़ाते देख रमेश के हृदय में कुछ चोट पहुँची; उसने कहा, "डरो मत कमला—तुम्हारे कमरे के पास ही मेरा कमरा है; मैं बीच का दर्वाजा खोल दूंगा।"

कमला ने हिम्मत के साथ अपने सिर को ऊँचा कर कहा, "मैं डरूँ किस लिये ?"

रमेश अपने कमरे में जा बत्ती बुझाकर सो रहा। उसने मन-ही-मन कहा, "कमला को परित्याग करने की कोई राह दिखाई नहीं देती। अतएव हेमनलिनी को विदा करूँ। आज यही ठीक हुआ, अब दुविधा में रहना ठीक नहीं।"

रमेश अन्धकार में लेटकर यह अनुभव करने लगा कि हेमनलिनी को बिदा करने में जीवन की बहुतेरी बातों को विदा करना पड़ेगा। रमेश अब बिछौने पर चुपचाप पड़ा न रह सका—उठकर बाहर आया—रात के अन्धकार में एक बार उसे ऐसा जान पड़ा, कि उसकी लज्जा और उसकी वेदना अनन्त देश और अनन्तकाल को आवृत्त किये हुए नहीं है। आकाश में छाये हुए सदा जगमगाने वाले तारे स्तब्ध हैं—रमेश और हेमनलिनी का छोटा-सा इतिहास उन्हें स्पर्श भी नहीं कर रहा है—यह आश्विन की नदी अपने निर्जन बालु का तट और फूले हुए कास के बन के नीचे इन तारों से झिलमिलाती रात में सोये हुए ग्रामवासियों के वन की छाया में बहती चली जा रही है। इस समय रमेश के जीवन का सब धिक्कार श्मशान के भस्म की चिरधैर्यमयी धरनी में मिलकर सदा के लिये नीरव हो गया है।

पन्द्रह

दूसरे दिन कमला जब नींद से जागी उस समय सवेरे की अन्धेरी थी। चारों ओर देखा, कमरे में कोई नहीं। याद आया कि वह स्टीमर में है। धीरे-धीरे उठकर दर्वाजे की फांक से देखा, निस्तब्ध जल के ऊपर सूक्ष्म और सफेद कुहरा छाया हुआ है— अन्धकार में पीलापन आ गया है और पूर्व की ओर वृक्षों की श्रेणी के पीछे आकाश में सुनहरी छटा छहरा रही है। देखते देखते

नदी की पीली और नीली धारा में मछुओं की डोंगियाँ सफेद-सफेद पाल ताने फैल पड़ी हैं।

कमला किसी तरह समझ न सकी, कि उसके मन में कौन-सी एक गूढ़ वेदना पीड़ा दे रही है। शरत् काल के शिशिर के वाष्प का अम्बर धारण किये हुए ऊषा आज अपनी आनन्दमूर्ति का दर्शन क्यों नहीं दे रही है। न जाने क्यों अश्रु जल का आवेग बालिका की छाती के भीतर से गले से होती हुई आँखों में बराबर आकुल हो उठता है। उसके ससुर नहीं, सास नहीं, सहेली नहीं, स्वजन-सम्बन्धी कोई नहीं ; यह बात कल तो उसके मन में नहीं उठी, इस बीच में क्या हो गया, जिससे आज उसके मन में आ रहा है, कि अकेले रमेश का भरोसा नहीं ? मन में ऐसा क्यों हो रहा है, यह विश्वभुवन बहुत बड़ा है और यह बालिका बहुत छोटी है।

कमला बहुत देर तक दर्वाजा पकड़े चुपचाप खड़ी रही। नदी का जल-प्रवाह सोने के पानी की तरह चमकने लगा। इस समय खलासी अपने काम में लग गये हैं ; इञ्जन ने धकधकाना आरम्भ कर दिया है—लंगर उठा और जहाज चलने के शब्द से कुसमय जागे हुए बालकों का दल नदी किनारे की ओर दौड़ आया।

ऐसे समय रमेश इस गड़बड़ से जागकर कमला की खबर लेने के लिये उसके दर्वाजे के सामने आया। कमला ने चौंककर साड़ी ठीक होने पर भी उसे और खींचकर मानो अपने को विशेष रूप से छिपाने की चेष्टा की।

रमेश ने कहा, "कमला तुम हाथ-मुँह धो चुकीं ?"

कमला के क्रोध का क्या कारण है, यह उससे यदि पूछा जाय, तो वह कुछ भी बता नहीं सकती। किन्तु उसे एकाएक क्रोध आ गया। उसने दूसरी ओर मुंह फेर केवल सिर हिला दिया।

रमेश ने कहा, "दिन चढ़ने पर लोग जाग जायेंगे—इसी समय तैयार हो क्यों नहीं लेती।"

कमला इस बात का कोई जवाब न दे एक चुनी हुई साड़ी और अंगोछा और एक कुरती को कुरसी से उठाकर तेजी के साथ रमेश की बगल से नहाने

की कोठरी में चली गई।

रमेश जो सवेरे-सवेरे उठकर कमला का इस प्रकार आदर करने आया, वह कमला के लिये बहुत अनावश्यक जान पड़ा। यह बात नहीं ; उसने मानो उसका अपमान किया। कमला एकाएक इस बात को समझ गई है, कि रमेश के सम्बन्ध की सीमा केवल दूर-दूर की है, वह एक जगह आकर रुक जाती है। ससुराल में किसी बड़े ने उसे लज्जा करना नहीं सिखाया—माथे पर किस हालत में घूँघट का परिमाण कितना होना चाहिये, इसका अभ्यास भी उसे नहीं हुआ। लेकिन आज रमेश के सामने आते ही क्यों अकारण उसकी छाती लज्जा से संकुचित होने लगी ?

स्नान करके कमला जब अपने कमरे में आई, तब दिन का काम उसके सामने आया। लटकते हुए आँचल से चाबी का गुच्छा ले उसने कपड़े का बैग खोला, उसमें एक छोटा सा मनीबेग दिखाई दिया। इस मनीबेग को पाकर कमला ने कल एक नया गौरव प्राप्त किया था। उसके हाथ में एक स्वाधीन शक्ति आ गई थी। उसने बड़े यत्न से मनीबेग को अपने कपड़े के ट्रंक में चाबी बन्द करके रखा था। आज कमला उस मनीबेग को हाथ में लेकर प्रसन्न नहीं हुई। आज उसे यह मनीबेग अपना नहीं जान पड़ा—यह रमेश का ही है। इस मनीबेग में कमला की पूर्ण स्वाधीनता नहीं। इसलिये यह मनीबेग कमला के लिये एक भारमात्र है।

रमेश ने कमरे में जाकर कहा, "चुपचाप बैठकर खुले बक्स में कौन-सा आनन्द ले रही हो।"

कमला ने मनीबेग उठाकर कहा, "यह अपना मनीबेग लो।"

रमेश ने कहा, "उसे मैं लेकर क्या करूँगा ?"

कमला ने कहा, "तुम्हें जिस चीज की जरूरत हो, उसे समझकर मँगा दो।"

रमेश—शायद तुम्हें कोई जरूरत नहीं है ?

कमला ने कुछ गर्दन टेढ़ीकर कहा, "रुपये की मुझे क्या जरूरत ?"

रमेश ने हँसकर कहा, "इतनी बड़ी बात कितने आदमी हैं जो कह सकते

हैं। जो हो, तुम्हारे लिये इतने अनादर की चीज है, उसे ही क्या दूसरे को देना चाहिये ? मैं उसे क्यों लूं ?"

कमला ने कोई जवाब न दे जमीन पर मनीबेग रख दिया।

रमेश ने कहा, "अच्छा कमला सच कहो, मैंने जो अपनी कहानी समाप्त नहीं की, उससे तुम मुझ पर खफा हो गई हो ?"

कमला ने सिर नीचाकर कहा, "खफा कौन होता है।"

रमेश—खफा नहीं हुई हो, तो इस मनीबेग को रखो। तब समझूंगा, कि तुम्हारी बात सच है।

कमला—क्रोध न करने ही से क्या मनीबेग रखना पड़ेगा ? अपनी चीज तुम रखते क्यों नहीं।

रमेश—वह मेरी चीज तो है नहीं—दी हुई चीज लेकर क्या मरने पर ब्रह्मदैत्य होऊँ। शायद मुझे इसका डर नहीं है।

रमेश के ब्रह्मदैत्य होने की आशंका से कमला को एकाएक हँसी आ गई। उसने हँसते-हँसते कहा, "कभी नहीं यह तो मैंने कभी नहीं सुना, कि दी हुई चीज वापस लेने से ब्रह्मदैत्य होना पड़ता है।"

इस अकस्मात की हँसी से सन्देह का सूत्रपात हुआ। रमेश ने कहा—दूसरे के मुँह से कैसे सुन सकोगी ? अगर कभी किसी ब्रह्मदैत्य से मुलाकात हो, तो उससे पूछने पर सच झूठ का पता लगेगा।"

कमला ने एकाएक कौतूहल में आकर पूछा, "अच्छा हँसी नहीं—तुमने कभी सचमुच के ब्रह्मदैत्य को देखा है ?"

रमेश ने कहा, "सचमुच का नहीं, लेकिन मैंने ऐसे अनेक ब्रह्मदैत्यों को देखा है। बिलकुल सच्ची चीज संसार में दुर्लभ है।"

कमला—क्यों, उमेश तो कहता था—

रमेश—उमेश ? कौन है ?

कमला—वाह, यही लड़का जो हम लोगों के साथ जा रहा है, उसने खुद ब्रह्मदैत्य देखा है।

रमेश—यह बात मुझे स्वीकार करनी ही पड़ेगी, कि इन सब बातों में मैं

उमेश की बराबरी का नहीं हूँ।

इस बीच बड़ी मेहनत से खलासियों के दल ने स्टीमर को तैराकर छोड़ दिया है। जहाज कुछ ही दूर गया होगा, ऐसे समय एक आदमी माथे पर दौरी लादे किनारे-किनारे दौड़ता हुआ आकर स्टीमर ठहराने का अनुरोध करने लगा। कप्तान ने उसकी घबराहट का खयाल नहीं किया। तब तक आदमी रमेश की ओर देख "बाबू-बाबू" कहकर चिल्लाने लगा। रमेश ने कहा, "इस आदमी ने मुझे स्टीमर का टिकटबाबू समझ लिया है।" रमेश ने उसे दोनों हाथ के इशारे से बताया, कि स्टीमर रोकने की क्षमता मुझमें नही है।

एकाएक कमला बोल उठी, "यह तो उमेश है; नहीं-नहीं. उसे छोड़कर न जाओ—चढ़ा लो।"

रमेश ने कहा—मेरी बात पर वह स्टीमर क्यों रोकने लगा।

कमला ने कातरता के साथ कहा, "नहीं, तुम रोकने को कहो—तो सही—किनारा बहुत दूर नहीं।"

रमेश ने कप्तान के पास जाकर उससे स्टीमर रोकने का अनरोध किया—उसने कहा, "बाबू, कम्पनी का नियम नहीं है।"

कमला ने बाहर निकलकर कहा, "उसे छोड़कर मैं जा न सकूँगी—जरा रोको। वह हमारा उमेश है।"

तब रमेश नियम लंघन और आपत्ति-भंजन के सहज उपाय काम में लाया! पुरस्कार के धीरज से कप्तान स्टीमर रोक और उमेश को चढ़ाकर उस पर बहुत नाराज होने लगा। उसका कुछ भी ख्याल न कर वह कमला के पैरों के पास पहुँच ऐसा बैठा, मानो कुछ हुआ ही नहीं है; वह हँसने लगा।

तब तक कमला के मन का क्षोभ मिटा न था। उसने कहा, "हँस रहा है, अगर वह स्टीमर न रोकता, तो तेरा क्या हाल होता?"

उमेश ने इसका कोई जवाब न दे झोली खोल दी। एक गुच्छा कच्चा केला, कई तरह का शाक, कुम्हड़े का फूल और बैंगन बाहर निकल आया।

कमला ने पूछा, "यह सब कहाँ से ले आया ?"

उमेश ने उसके संग्रह करने का जो इतिहास सुनाया, वह किसी तरह भी सन्तोषजनक नहीं था। कल बाजार से दही लाने के समय वह गाँव में किसी के छप्पर और किसी के खेत में यह सब खाने की चीज देख आया था। आज सवेरे स्टीमर छूटने से पहले किनारे पर उतर यथास्थान से यह सब चीजें चुन ले आया था; उसने किसी से कुछ पूछने की जरूरत नहीं देखी।

रमेश ने बहुत नाराज होकर कहा, "पराये खेत से तू यह सब चोरी करके ले आया है ?"

उमेश ने कहा, "चोरी क्यों करूँ खेत में बहुत था, मैं यह थोड़ा ही सा ले आया हूँ, इसमें हर्ज क्या है।"

रमेश—थोड़ा-सा लाने से चोरी नहीं हुई ? दरिद्र कहीं का जा, यह सब यहाँ से ले जा।

उमेश ने करुणा के साथ एक बार कमला के मुंह की ओर देखकर कहा, "माँ, इसका हमारे देश में पिंडिशाक कहते हैं, इसकी भजिया बहुत सरस होती है और यह सब शाक—"

रमेश ने दूने क्रोध से कहा, "ले जा अपने पिंडिशाक को। नहीं तो मैं सब नदी के पानी में फेंक दूंगा।"

अब क्या करे, यह सोचकर उसने कमला के मुंह की ओर देखा। कमला ने उसे ले जाने का इशारा किया। उस इशारे में करुणा की छिपी हुई प्रसन्नता देख उमेश शाक-सब्जी बटोर झोले में रखकर धीरे-धीरे ले गया।

रमेश ने कहा, "यह बहुत बड़ी बदमाशी है। इस लड़के को तुम सहारा न देना।"

रमेश चिट्ठियाँ लिखने के लिये अपने कमरे में चला गया। कमला ने गर्दन फेरकर देखा—सेकेण्ड क्लास के डेक के पास स्टीमर के हाल की तरह, जहाँ रसोई की जगह ठीक की गई थी, वहाँ उमेश चुपचाप बैठा है।

सेकेण्ड क्लास में कोई यात्री नहीं था। कमला ने सिर से कमर तक एक

रैपर ओढ़ उमेश के पास जाकर पूछा, "क्या वह सब फैंक दिया ?"

उमेश ने कहा, "फेकूँ काहे को । उस घर में मैंने सब रख दिया है ।"

कमला ने नाराज होने का बहाना कर कहा, "लेकिन तूने बड़ी बदमाशी की । अब कभी ऐसा न करना, अगर स्टीमर चला जाता तब ?"

यह कह कोठरी के भीतर जा कमला ने कड़ी आवाज में कहा, "ला हँसुआ ले आ ।"

उमेश हँसुआ ले आया । कमला शीघ्रता के साथ उमेश की लाई हुई तरकारियाँ काटने लगी ।

उमेश ने कहा, "माँ इन शाकों के साथ राई बड़ा मजा देती है ।"

कमला ने झिड़ककर कहा, "तब पीस राई ।"

इस तरह उमेश की हिम्मत न बढ़ाने के ख्याल से कमला इस होशियारी से काम लेने लगी । उसनें बहुत गम्भीर मुंह बनाकर उसके शाक, तरकारी और बैंगन आदि काट डाले ।

हाय, घर से निकाले लड़के को सहारा न देने से कमला से रहा कैसे जाता । शाक चुराना कितना खराब काम है, इसे कमला ठीक तरह से समझी नहीं—किन्तु निराश्रय लड़के की लालसा कितनी बड़ी है, उसे वह समझती है । कमला को थोड़ा खुश करने के लिये यह दरिद्री लड़का कल से इन शाकों को चुराने की कोशिश में लगा था; जरा और होने से ही स्टीमर से छूट जाता इसकी करुणा कमला को जरूर आई ।

कमला ने कहा, "उमेश ! तेरे लिए कल का दही कुछ रखा है, आज तुझे फिर दही खिलाऊँ; लेकिन खबरदार, ऐसा काम अब कभी न करना ।"

उमेश ने बहुत दुःखित होकर कहा, "माँ, तो तुमने कल का वह दही खाया ही नहीं ?"

कमला ने कहा, "तेरी तरह मुझे दही का लालच नहीं है । किन्तु उमेश, सब कुछ तो हुआ, मछली का क्या होगा ? बिना मछली के बाबू कैसे खायेंगे ।"

उमेश, "मछली का इन्तजाम हो सकता है माँ, किन्तु बिना पैसे के कैसे होगा ।"

कमला फिर शासन करने लगी। उसने अपनी सुन्दर भौंहों को टेढ़ी करने की चेष्टा कर कहा, "तेरे जैसा बेवकूफ मैंने नहीं देखा। मैंने तुझे कब बिना पैसे चीजें लाने को कहा है ?"

कल से उमेश के मन में न जाने कैसा खयाल जम गया है कि कमला रमेश से पैसा लेने में हिचकती है। इसके अलावा रमेश को यह सब अच्छा भी नहीं लगता। इसी से रमेश का आसरा छोड़ केवल वह और कमला दोनों निरुपाय मिलकर किस उपाय से गृहस्थी चला सकते हैं, इसके कुछ उपाय उसने मन-ही-मन सोच रखा था। शाक, बैंगन और कच्चे केले के लिए तो वह निश्चित हो चुका था, लेकिन मछली के लिए अभी तक उसे कोई उक्ति नहीं सूझी। संसार में निःस्वार्थ भक्ति के बल से मामूली दही और मछली जुटाई नहीं जा सकती; इन सबके लिए पैसा चाहिए—इसलिए कमला के इस अकिंचन भक्त बालक के लिए संसार में सहज स्थान नहीं।

उमेश ने कुछ कातर होकर कहा. "माँ, अगर बाबू से कहकर किसी तरह पाँच पैसे का ठिकाना कर सको, तो मैं एक बड़ी-सी रोहू मछली ला सकता हूँ।"

कमला ने घबराकर कहा, "नहीं-नहीं, अब मैं तुझे स्टीमर से उतरने न दूँगी। जब तू रेती में जा पड़ेगा, तो तुझे कोई न चढ़ाएगा !"

उमेश ने कहा, "किनारे क्यों उतरने जाऊँ। आज सवेरे खलासियों के जाल में बहुत बड़ी-बड़ी मछलियाँ फँसी हैं—उनमें एकाध वह बेंच भी सकते हैं।"

यह सुन चटपट कमला ने एक रुपया लाकर उमेश के हाथ में दिया और कहा, "जो खर्च हो, वह देकर बाकी लौटा ला।"

उमेश मछली ले आया, किन्तु कुछ लौटाकर नहीं लाया, कहा, "रुपये से कम किसी तरह मानता ही नहीं था।"

कमला समझ ग.ं कि यह सच नहीं बोल रहा है—उसने कुछ हँसकर कहा, "अब स्टीमर ठहरे, तो रुपये भुना के रखना होगा।"

उमेश ने गम्भीर मुंह बनाकर कहा, "यह बहुत जरूरी है। समूचा रुपया बाहर निकालने से फिर लौटाना कठिन है।"

भोजन करते समय रमेश ने कहा, "बहुत अच्छा बना है। किन्तु यह सब तुमने मँगाया कहाँ से ! यह तो 'रोहूँ' का सिरा है !"—यह कहते हुए उसने सिरे को उठाकर कहा, "यह तो स्वप्न नहीं, माया नहीं; मतिभ्रम भी नहीं—यह सचमुच सिर है–जिसे रोहित मत्स्य कहते हैं, यह उसी का उत्तम अंग है।"

इस तरह उस दिन के दोपहर का भोजन बड़ी तैयारी के साथ समाप्त हुआ। रमेश ने डेक पर रखी आराम कुर्सी पर लेट पचाने की ओर ध्यान दिया। तब कमला उमेश को खिलाने बैठी। मछली की भजिया उमेश को इतनी अच्छी लगी, कि उसके भोजन का उत्साह कौतूहल न होकर धीरे-धीरे आशंका-जनक हो उठा। कमला ने घबराकर कहा, "उमेश, अब न खा। तेरे लिए भजिया रखे देती हूँ, रात को फिर खाना !"

इस तरह दिन के काम और हँसी-खेल में प्रातःकाल के हृदय का बोझ दूर कैसे हो गया, इसे कमला समझ भी न सकी।

धीरे-धीरे दिन समाप्त हो चला। सूर्य की धूप तिरछी होकर बड़ी छठा के साथ पश्चिम ओर से स्टीमर की छत पर पहुँची। लहरीदार पानी पर तीसरे पहर की हलकी धूप झिलमिलाने लगी। नदी के दोनों किनारे नवीन श्यामल शरत् के खेत के बीच की राह से गाँव की रमणियाँ हाथ-मुंह धोने के लिए बगल में घड़ा दबाकर आने-जाने लगीं।

कमला पान बनाना समाप्त कर शिर गूँथ, मुंह-हाथ धो, कपड़े बदलकर जब शाम के लिए तैयार हुई, तब सूर्य गाँव के बाँस वन के पीछे-पीछे अस्त हो गया। स्टीमर ने उस दिन के लिये स्टेशन पर लंगर डाल दिया।

आज कमला को रात की रसोई का उतना झगड़ा नहीं। सबेरे की कई तरकारियाँ इस समय काम आयेंगी। ऐसे समय रमेश ने आकर कहा, "आज भोजन बहुत हो गया, इस समय मैं भोजन न करूँगा।"

कमला ने दुःखी होकर कहा, "कुछ न खाओगे ? केवल मछली भाजा से—।"

रमेश ने संक्षेप में कहा, "नहीं, रहने दो मछली भाजा।" यह कहता हुआ वह चला गया।

तब कमला ने उमेश के पत्तल पर सब मछली भाजा और भाजिया परोस दी। उमेश ने कहा, 'अपने लिए तुमने कुछ नहीं रखा ?"

कमला ने कहा, "मैं खा चुकी हूँ।"

इस तरह कमला की इस तैरती हुई गृहस्थी का एक दिन का काम पूरा हुआ।

उस समय जल और स्थल में चाँदनी फैल पड़ी। किनारे कोई गाँव नहीं—धान के खेत में सघन-कोमल विस्तीर्ण सब्ज और जनशून्यता के ऊपर निःशब्द चाँदनी विरहिणी की तरह जाग रही है।

किनारे टीन से छाई छोटी-सी कोठरी में स्टीमर का आफिस है; यहाँ एक दुबला-पतला क्लर्क स्टूल के ऊपर बैठ डेस्क के ऊपर किरासिन तेल की छोटी-सी लम्पी जलाकर रजिस्टर लिख रहा था। खुले दरवाजे से रमेश उस क्लर्क को देख रहा था। ठण्ढी साँस लेकर रमेश सोच रहा था, "मेरा भाग्य यदि मुझे इस क्लर्क की तरह संकीर्ण और स्पष्ट जीवन यात्रा में बाँध देता—तो हिसाब लिखता, काम करता, काम में भूल होने से मालिक की घुड़की सहता और काम खतमकर रात को घर जाता—तब कहीं जान में जान आती।"

आफिस घर की रौशनी बुझ गई। क्लर्क भी कोठरी का ताला बन्द कर ओस के भय से माथे पर रैपर लपेट निर्जन शस्य के खेत की बीच की राह से धीरे-धीरे किधर चला गया, फिर दिखाई न दिया।

कमला बहुत देर से चुपचाप स्टीमर की रेलिंग पकड़ पीछे खड़ी थी, रमेश को कुछ खबर नहीं कमला को ख्याल था कि शाम को रमेश उसे बुलायेगा। इसलिए काम-काज समाप्त कर जब उसने देखा, कि रमेश उसको खोजने नहीं आया, तब वह आप ही धीरे-धीरे स्टीमर की छत पर पहुँची। किन्तु वह एका एक ठिठककर खड़ी हो गई, रमेश के सामने आ न सकी। चन्द्रमा की चाँदनी रमेश के मुंह पर पड़ रही थी—वह मुख मानो बहुत दूर है—कमला के साथ उसका कोई सरोकार नहीं। ध्यानमग्न रमेश और उस संगी-विहीन बालिका के बीच मानों चाँदनी की चादर से सिर से पैर तक ढँक विराट रात्रि होठों के ऊपर उँगली रख चुपचाप खड़ा पहरा दे रही थी।

रमेश ने जब दोनों हाथ से मुंह ढांक टेबिल के ऊपर सिर रखा, तब कमला धीरे-धीरे अपने कमरे की ओर चली गई। पैर की आवाज नहीं होने पाई, इसलिये कि कहीं रमेश को यह पता न लगे, कि वह खबर लेने आई थी।

किन्तु उसका सोने का कमरा सन्नाटा और अँधेरा था। उसमें जाते ही उसकी छाती काँप उठी; उसने अपने को बिल्कुल ही परित्यक्त और अकेली समझा—उस छोटी-सी लकड़ी की कोठरी में किसी अपरिचित जानवर की तरह मुंह बाये अन्धकार फैल पड़ा। वह कहाँ जाय? कहाँ अपने शरीर को लुढ़का आँख मूंद यह समझे, कि वह मेरी अपनी कोठरी है?

कोठरी में झाँककर कमला फिर पीछे पलटी। उसके बाहर आने के समय रमेश के छाते के टीन के ट्रंक पर गिरने से आवाज हुई। उस आवाज से चौंककर रमेश ने मुँह फेरा और कुर्सी से उठकर देखा, कि कमला अपने सोने के दरवाजे पर खड़ी है। उसने कहा, "यह क्या कमला, मैं समझता था, कि तुम अब तक सो गई होगी। क्या तुम्हें डर लगता है? अच्छा, अब मैं बाहर न बैठूँगा। मैं इस बगल की कोठरी में सोने जाता हूँ—बीच का दर्वाजा खोले देता हूँ।"

कमला ने हिम्मत के साथ कहा, "मैं नहीं डरती।" यह कहती वह तेजी के साथ अन्धेरी कोठरी में घुसी। उसने बीच के उस दर्वाजे को बन्द कर दिया जिसे रमेश ने खोल दिया था। उसने बिछौने पर होकर चादर से अपना मुंह ढँक लिया। मानो उसने संसार में और किसी को न पा केवल अपने ही द्वारा अपने को ढँक लिया। उसका हृदय विद्रोही हो उठा। जहाँ भरोसा नहीं, स्वाधीनता नहीं, वहाँ जीवन कैसे बचे।

रात मानो कटती ही नहीं। इस बीच रमेश भी बगल की कोठरी में सो गया। अब बिछौने पर कमला से रहा न गया। धीरे-धीरे वह बाहर निकल आई। स्टीमर की रेलिंग पकड़ किनारे की ओर देखने लगी। आदमी का कहीं पता नहीं—चाँद पश्चिम की ओर झुक पड़ा है। दोनों किनारे के खेतों के बीच का सँकरा रास्ता अदृश्य हो गया है। उस ओर देख कमला सोचने लगी कि इस रास्ते से कितनी औरतें पानी लेकर नित्य अपने घर जाती हैं।

घर! घर की याद आते ही उसका प्राण छाती से बाहर निकलने को छटपटाने लगा। केवल दो घर हैं—वह भी घर कहाँ! शान्त किनारा भ्रम रट रहा है—प्रकाण्ड आकाश दिगन्त से दिगन्त तक स्तब्ध है। अनावश्यक है आकाश—अनावश्यक है संसार—छोटी बालिका के लिये यह अन्तहीन विशालता बिलकुल ही अनावश्यक है—केवल उसे एक घर का प्रयोजन था।

ऐसे समय कमला एकाएक चौंक पड़ी—न जाने कौन उसके पास ही खड़ा है।

"भय नहीं माँ, मैं हूँ उमेश। रात बहुत बीती, क्या नींद नहीं है?"

अब तक आँसू टपका नहीं था; देखते-देखते दोनों आँखों से आँसू लुढ़क पड़ा। बड़ी-बड़ी बूंदें किसी तरह रोके न रुक सकीं; केवल झर-झर बहने लगीं। गर्दन टेढ़ी कर कमला ने उमेश की ओर से मुँह फेर लिया। पानी से भरा हुआ मेघ उड़ा जाता है—जैसे ही उसमें, उसकी ही तरह घर त्यागे हुई हवा लगती है, वैसे ही उसका पानी का बोझ लुढ़क पड़ता है—उस गृहहीन दरिद्र बालक-द्वारा जरा आदर का वचन सुनते ही कमला की अपनी छाती में भरा आँसुओं का बोझ फिर रोके न रुका। उसने कुछ कहने की कोशिश की, किन्तु रुँधे हुए गले से आवाज नहीं निकली।

पीड़ित चित्त उमेश की समझ में न आया कि कैसे धीरज दिया जाता है! अन्त में कुछ देर चुप रह वह एकाएक बोल उठा, "माँ, तुमने जो रुपया दिया था, उसमें से सात आने बचे हैं।"

तब कमला के आँसुओं का बोझ हलका हो चला था। उमेश की इस चालबाजी के समाचार से उसने स्नेह मिश्रित हँसी हँसकर कहा, "अच्छी बात है, उसे अपने ही पास रहने दे। जा अब सो रह।"

चन्द्रमा पेड़ों की आड़ में उतर पड़ा। इस बार कमला जैसे ही बिछौने पर आकर लेटी, वैसे ही उसकी थकी हुई आँखें नींद से भर उठीं—सवेरे की धूप ने जब उसके दर्वाजे पर थपकी दी, तब वह नींद में पड़ी हुई थी।

सोलह

कमला का दूसरा दिन आरम्भ हुआ। उस दिन उसकी आँखों में सूर्य की रोशनी क्लान्त, नदी की धारा क्लान्त और किनारे के वृक्ष भी बहुत दूर के राही पथिक की तरह क्लान्त दिखाई दिये।

उमेश जब उसके काम में सहायता देने आया, तब कमला ने आलस्य के स्वर में कहा, "जा उमेश, आज मुझे दिक न कर।"

उमेश सहज ही मानने वाला लड़का नहीं। उसने कहा, "मैं दिक क्यों करूँगा, मसाला पीसने आया हूँ।"

सवेरे रमेश ने कमला के मुँह का भाव देख पूछा था, "कमला, क्या तुम्हारी तबियत खराब है?"

यह प्रश्न कितना अनावश्यक और असंगत है, जिसके जवाब में कमला चुपचाप गर्दन हिलाकर रसोईघर में चली गई।

रमेश ने सोचा कि समस्या प्रतिदिन कठिन ही होती जाती है। बहुत शीघ्र इसका कुछ फैसला होना जरूरी है। हेमनलिनी के साथ एक बार साफ बातचीत हो जाने पर कर्त्तव्य-निर्द्धारण सहज हो जायेगा; रमेश ने मन-ही-मन ऐसी ही आलोचना की।

बहुत विचार के बाद वह हेम को चिट्ठी लिखने बैठा। एक बार लिखता और बार-बार काटता था; ऐसे समय "महाशय, आपका नाम" सुनकर उसने अपना सिर उठाया। देखा कि एक प्रौढ़ उम्र के भले आदमी हैं, पकी हुई मूँछें माथे के सामने की ओर के पतले बाल सफेदी लिये सामने ही उपस्थित हैं। रमेश का लगा हुआ चित्त चिट्ठी की लिखावट से एक बार उखड़कर क्षण-भर के लिये कौतूहली हो उठा।

"आप ब्राह्मण हैं? नमस्कार। आपका नाम रमेश बाबू है—यह मैं पहले ही जान चुका हूँ—फिर भी देखिये, हमारे देश में नाम पूछते हुए परिचय करने की प्रणाली है। यह सज्जनता है आजकल कोई-कोई इससे बहुत बुरा मानते हैं। आप यदि नाराज हुए हों, तो क्षमा कीजियेगा! मुझसे पूछिये, मैं

अपना नाम बताऊँगा, अपने बाप का नाम बताऊँगा, दादा का नाम बताने में भी आपत्ति काहे की ?"

रमेश ने हँसकर कहा, "मेरी नाराजगी इतनी भयंकर नहीं; सिर्फ आपका नाम सुनने से ही मैं खुश होऊँगा।"

"मेरा नाम त्रैलोक्य चक्रवर्ती। पश्चिम में सब लोग मुझे "चाचा" कहा करते है। आपने तो इतिहास पढ़ा है। भारतवर्ष में भरत चक्रवर्ती राजा थे—वैसे ही मैं सारे पश्चिम देश में चक्रवर्ती चाचा हूँ। जब पश्चिम जा रहे हैं, तब मेरा परिचय आपसे छिपा न रहेगा। किन्तु आप कहाँ जा रहे हैं ?"

रमेश ने कहा, "अभी तक मैं कुछ ठीक नहीं कर सका।"

त्रैलोक्य, "आपके ठीक करने में देर हो सकती है, किन्तु स्टीमर पर चढ़ने मे तो देर नहीं सही जा सकती।"

रमेश ने कहा, "एक दिन गोवालन्दो में उतरकर देखा कि स्टीमर सीटी दे रहा है। उस समय यह जान पड़ा कि मेरे निश्चय करने में देर है, किन्तु स्टीमर छूटने में देर नहीं। इसलिये जो काम जल्दी का था, उसे ही मैंने पूरा किया।"

त्रैलोक्य, "तब आप नमस्कार के योग्य हैं। आपके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ रही है। हम लोगों में और आप में बहुत भेद है। हम लोग पहले मन ठहराते हैं, इसके बाद स्टीमर पर चढ़ते हैं—क्योंकि हम लोग बहुत भीरु स्वभाव के हैं। आपने जाना तो स्थिर किया, किन्तु यह स्थिर नहीं किया कि कहाँ जायेंगे, यह क्या कम है। आप परिवार के साथ ही हैं ?"

"हाँ" कहकर उत्तर देने में रमेश को क्षणभर के लिये खटका जान पड़ा। उसे चुप देख चक्रवर्ती ने कहा, "मुझे माफ कीजियेगा। मैं पहले ही यह खबर पा चुका हूँ कि आप परिवार के साथ हैं। बहूजी उस घर में रसोई बना रही हैं, मैं भी पेट के लिये रसोईघर की खोज में वहाँ जा पहुँचा। मैंने बहूजी से कहा, "बेटी, मुझे देखकर संकोच न करना मैं पश्चिम देश का एकमात्र चक्रवर्ती चाचा हूँ।" आहा, बहू मानो साक्षात् अन्नपूर्णा है। मैंने उनसे फिर कहा, "बेटी, जब तुमने रसोईघर पर दखल जमा लिया है, तब अन्न से मुझे वंचित

न करना, मैं लाचार हूँ। बहू जरा हँस दी, समझ गया कि प्रसन्न है, अब मुझे कोई चिन्ता नहीं। पत्रे में शुभ घड़ी देखकर सदा प्रस्थान किया करता हूँ, किन्तु ऐसा सौभाग्य हर बार नहीं होता। आप काम कर रहे हैं, अब आपको तंग न करूँगा अगर कहें, तो बहू को कुछ सहायता दूँ। मेरे रहते वे कमल जैसे हाथों में बेड़ी क्यों पहनें। नहीं-नहीं, आप लिखिये आपके उठने की जरूरत नहीं मैं परिचय कर लेना जानता हूँ।"

यह कहते-कहते चक्रवर्ती चाचा बिदा हो रसोईघर की ओर चले। उन्होंने वहाँ पहुँचते ही कहा, "बहुत अच्छी खुशबू निकल रही है—जैसा भोजन होगा, वह मुंह में जाने से पहले ही मालूम हो गया। किन्तु चटनी मैं बताऊँ बेटी—जो लोग पश्चिम की गर्मी में नहीं रहते, वे ठीक तरह से चटनी बनाना नहीं जानते। तुम सोच रही होगी, कि बूढ़ा क्या बक रहा है; लेकिन इमली तो है ही नहीं, चटनी कैसे बनेगी? अच्छा, मेरे रहते तुम्हें इमली की चिन्ता नहीं। जरा सब्र करो, मैं सब इन्तजाम किये देता हूँ।"

यह कहते हुए चक्रवर्ती ने कागज में लपेटे एक बर्तन से इमली निकालकर सामने रख दिया।

"जाओ बेटी, अब तुम जाकर मुंह-हाथ धोओ। दिन बहुत चढ़ आया। रसोई में जो बाकी है, मैं पूरा कर दूँगा। कुछ संकोच न करना—मुझे इन सब कामों का अभ्यास है। मेरे परिवार के सब लोग सुस्त हैं; उन सबकी अरुचि दूर करने के लिये चटनी बनाते-बनाते मेरा हाथ मँज गया है। बूढ़े की बात सुनकर हँस रही हो—किन्तु यह हँसी की बात नहीं, बिलकुल सच है।"

कमला ने हँसकर कहा, "मैं आपसे चटनी बनाना सीखूँगी।"

चक्रवर्ती—अरे बस, भाई, बस, विद्या की गूढ़ता नष्ट करूँ, तो वीणा-पाणि अप्रसन्न हो जायेंगी। दो-चार दिन बूढ़े की खुशामद करनी पड़ेगी। मैं जिस तरह खुश होऊँगा, यह तुम्हें सोचकर समझना पड़ेगा। खुद ही विस्तार के साथ सब कह दूँगा। पहली बात तो यह कि मैं पान बहुत खाता हूँ। किन्तु सुपारी का टुकड़ा न होना चाहिये। मुझे बस में लाना सहज काम नहीं—किंतु तुम्हारे हँसमुख चेहरे को देख मेरा काम बहुत कुछ अग्रसर हो रहा है।

रमेश भी इस वृद्ध के आने से बहुत कुछ निश्चिन्त हुआ। पहले कई महीने तक रमेश कमला को अपनी स्त्री समझता था। तब से अबकी निकट-वर्तित में बहुत फर्क है, एकाएक ऐसा प्रभेद, बालिका के हृदय में चोट लगे बिना न रही। इस समय यह चक्रवर्ती आकर यदि रमेश की ओर से कमला की चिन्ता को कुछ हटा सके तो रमेश अपने हृदय की चोट की ओर भी कुछ ध्यान दे।

समीप ही उसके कमरे के दरवाजे पर आकर कमला खड़ी हो गई। उसके मन में इच्छा थी कि बेकाम की दोपहर वह चक्रवर्ती के साथ काट सकेगी। चक्रवर्ती उसे देखते ही बोल उठे, "नहीं बेटी! नहीं। यह ठीक नहीं हुआ। यह किसी तरह भी ठीक नहीं।"

कमला, "क्या ठीक नहीं?" कहकर आश्चर्य से संकोच में पड़ गई।

वृद्ध ने कहा, "यह जूता! रमेश बाबू! यह आप ही का काम है। चाहे जो कहें, यह आप अधर्म कर रहे हैं, देश की मिट्टी को इस चरण स्पर्श से वंचित न करें, नहीं तो देश मिट्टी हो जायगा। रामचन्द्र यदि सीता को डासन का बूट पहिनाते, तो क्या लक्ष्मण चौदह वर्ष तक वन में चल फिर सकते, कभी नहीं। मेरी बात सुनकर आप हँस रहे हैं—मन में मेरी बात जमती नहीं है। आप तो स्टीमर की सीटी सुनकर ठहर न सके, एकदम सवार हो बैठे, किन्तु यह सोचा भी नहीं कि कहाँ जा रहे हैं?"

रमेश ने कहा, "तो चाचा, आप ही हम लोगों के जाने की जगह ठीक कर दें। स्टीमर की सीटी से आपकी सलाह पक्की होगी।"

चक्रवर्ती ने कहा, "यह देखिये, आपकी विवेचना शक्ति ने इसी बीच उन्नति प्राप्त की है—फिर भी अभी थोड़ी देर का परिचय है। तब चलिये, गाजीपुर चलिये—जाओगी बेटी गाजीपुर? वहाँ गुलाब के खेत हैं और वहाँ तुम्हारा यह बूढ़ा चक्र भी रहता है।"

रमेश ने भी कमला के मुंह की ओर देखा। कमला ने उसी समय सिर हिलाकर अपनी राय दे दी।

इसके बाद उमेश और चक्रवर्ती ने मिलकर लज्जित कमला के कमरे में

सभा स्थापित की। रमेश एक ठण्डी साँस छोड़कर बाहर ही रह गया। दोपहर के समय स्टीमर धकाधक चला जा रहा था। शरत् के धूप से रंगे हुए दोनों किनारे शान्तिमय वैचित्र्य के स्वप्न की तरह आँखों के आगे परिवर्तित होता जा रहे थे। कहीं धान के खेत, नाव बाँधने के घाट, कहीं बालू का किनारा कहीं गाँव के ग्वाले, कहीं बाजार के टीन का छाजन, कहीं-कहीं पुराने वृक्ष के नीचे खेने वाली नाव के आसरे दो-चार उतरने वाले यात्री दिखाई दिये। इस शरत् के मध्याह्न की स्तब्धता में समीप के ही कमरे के भीतर से जब क्षण-क्षण कमला के स्निग्ध कौतुक की हँसी रमेश के कानों में पहुँचती, तब उसकी छाती धड़क उठती। यह सब कितना सुन्दर है, फिर भी दूर है। यह सब रमेश के आर्त-जीवन में बहुत ही भयानक चोट पहुँचाते हुए विछिन्न है।

कमला की उम्र अब भी कम है—कोई संशय, आशंका या वेदना स्थायी होकर उसके मन में ठहर नहीं सकती।

रमेश के व्यवहार के बारे में इन कई दिनों से उसे किसी तरह की चिन्ता करने का समय नहीं मिला। धारा जहाँ बाधा पाती है, वहीं उसके साथ का सब कतवार भी जाकर इकट्ठा हो जाता है—कमला के मन की धारा का सहज प्रवाह रमेश के आचरण से एकाएक एक जगह रुका और उसी में भँवर पड़ने से तरह-तरह की बातें एक ही जगह घूम-घूमकर टकराने लगीं। बूढ़े चक्रवर्ती को पाने से हँसी, गप्प, रसोई, खाना—इन सबसे कमला के हृदय का स्रोत सब बाधाओं को तोड़ता हुआ चला गया—भँवर कट गई, जो कुछ कतवार जमता या रुकता था, वह सब बह गया। उसने अपने बारे में कुछ सोचा ही नहीं।

आश्विन के सुन्दर दिन ने नदी किनारे के विचित्र दृश्यों को रमणीय बना, उसी के बीच कमला के नित्य के आनन्दित गृहिणीपने को मानो सुनहरे चित्र के बीच-बीच में कविता के सरल पृष्ठ की तरह पलटने लगा।

काम के उत्साह से दिन आरम्भ होता था। उमेश आजकल स्टीमर से होशियार रहता है; किन्तु उसकी झोली भर जाती है, छोटी-सी गृहिणी के भीतर उमेश की झोली सवेरे के समय बड़े कौतूहल का विषय बन जाती है।

"यह क्या रे, यह तो कद्दू है। अरे राम, यह सहजन तू कहाँ से बटोर लाया? उमेश कहता, "यह देखो, चाचा जी, खट्टा पालन भी इन पश्चिमी लोगों के देश में मिलता है, यह मैं जानता न था।" झोली के बारे में रोज सवेरे इस प्रकार एक कोलाहल मचता है जिस दिन रमेश उपस्थित रहता है, उस दिन ये बात कुछ बेसुरी जान पड़ती है। वह चोरी का सन्देह किए बिना न रहता था। कमला उत्तेजित होकर कह देती "वह, मैंने अपने हाथों से उसे पैसे गिनके दिये हैं।"

रमेश कहता, "इसी से उसकी चोरी की सुविधा दूनी हो जाती है। वह पैसे भी चुराता है और तरकारी भी चुराता है।"

यह कह उमेश को बुलाकर कहता, "अच्छा, हिसाब तो बता।"

तब उसके एक बार के हिसाब से दूसरी बार का हिसाब मेल नहीं खाता था। जोड़ लगाने पर जमा से खर्च अधिक बढ़ जाता था। इससे उमेश जरा भी लज्जित नहीं होता। वह कहता, "अगर मैं हिसाब ही ठीक रख सकता तो मेरी यह दशा क्यों होती? मैं कहीं मुनीमी न करता, क्यों चाचाजी?"

चक्रवर्ती कहते, "रमेश बाबू, भोजन के बाद आप इसका विचार कीजिएगा—तब आप सुविचार कर सकेंगे—अभी तो मैं इस लड़के को उत्साहित किये बिना रह नहीं सकता। बेटा उमेश; चीजों का संग्रह करना भी किसी विद्या से कम नहीं है—बहुत थोड़े लोग ऐसा कर सकते हैं। चेष्टा सभी करते हैं; किन्तु सफल कितने होते हैं? रमेश बाबू, मैं गुणी का आदर करना जानता हूँ। आजकल सहजन का समय नहीं है, लेकिन कहिये तो सही, बड़े सवेरे विदेश में सहजन कितने लड़के हैं, जो ला सकें। महाशय, सन्देह अनेक कर सकते हैं—किन्तु हजार में एक संग्रह करना जानते हैं।"

रमेश, "चाचा! यह अच्छी बात नहीं है, आप उत्साह देकर भूल कर रहे हैं।"

चक्रवर्ती—लड़के में अधिक विद्या नहीं है, यह भी बात है। अगर यह उत्साह का भाव भी नष्ट हो जायगा, तो बहुत ही कष्ट की बात होगी, कीम-से-कम जब तक हम लोग इस स्टीमर पर हैं। अरे उमेश, कल थोड़ी-सी मन

की पत्ती ले आना—अगर नरम मिलें, तो बहुत ही अच्छा है—बेटी सुक्तनू अवश्य ही चाहिये—हमारे आयुर्वेद में कहा है—जाने दो इस समय आयुर्वेद की बात, इधर देर हुई जा रही है। उमेश, सब्जी अच्छी तरह धो लो !

रमेश इस प्रकार जितना उमेश पर सन्देह करता, किटकिटाता उमेश उतना ही कमला को अपनाता जाता था। इस बीच चक्रवर्ती के उसका पक्ष लेने पर कमला का दल रमेश से कुछ स्वतन्त्र होता जाता था। रमेश अपनी सूक्ष्म विचार-शक्ति को लेकर एक ओर अकेला और दूसरी ओर कमला, उमेश और चक्रवर्ती अपने कर्म सूत्र सें, स्नेह के सूत्र से, आमोद-प्रमोद के सूत्र से सब को मिला एक ओर हैं। चक्रवर्ती के आने पर उनके उत्साह के संक्रामक ताप से रमेश कमला को पहले से अधिक उत्साह के साथ देखने लगा था, किन्तु वह इस दल में मिल नहीं सकता था। जैसे बड़ा जहाज किनारे लगना चाहता है, लेकिन पानी कम होने से उसे कुछ दूरी पर लंगर डाल खड़ा हो जाना पड़ता है, और इधर छोटी-छोटी पनसुइया अनायास ही किनारे जा लगती हैं, यही दशा रमेश की है।

पूर्णिमा के इधर एक दिन सवेरे उठकर देखा गया, कि ढेर-के-ढेर काले बादल दल बाँधकर आकाश में छाये हुए हैं। हवा धीरे-धीरे बह रही है। कभी-कभी पानी बरसता है फिर कुछ देर के लिये धूप भी निकल आती है। आज बीच गंगा में कोई नाव नहीं, जो एकाध दिखाई भी देती है, उनकी घबराहट साफ समझ में आती है। पानी भरने वाली औरतें आज घाट पर अधिक नहीं ठहर रही हैं। पानी के ऊपर बादल की बिजली से चमक पैदा हो जाती है और पानी इस किनारे से उस किनारे तक बड़ी-बड़ी लहरें ले रहा है।

स्टीमर ठीक तरह से चला जा रहा है। इस दुर्दिन की कितनी ही असुविधाओं में भी किसी प्रकार कमला की रसोई चल रही है। चक्रवर्ती ने आकाश की ओर देखकर कहा, "बेटी, ऐसा करो जिसमें इस समय रसोई न बनाना पड़े। तुम खिचड़ी चढ़ा दो, इस बीच में रोटी बेलकर रखे देता हूँ।"

खाना-पीना समाप्त होने में आज अधिक समय बीत गया। झटके की हवा का जोर और भी बढ़ गया। नदी फेनिल हो-होकर लहराने लगी। कुछ

मालूम नहीं, कि सूर्य अस्त हो गया या कुछ दिन रहते ही आज स्टीमर ने लंगर डाल दिया।

सन्ध्या हो गई, कहीं-कहीं फटे बादलों के बीच से पीले हँमुए के समान चन्द्रमा की चाँदनी निखर आती थी। बड़े झटके के साथ हवा और फिर मूसलाधार वृष्टि होने लगी।

कमला एक बार पानी में डूब चुकी है—इसलिये हवा के झोकों से वह घबरा उठी। रमेश ने आकर उसे धीरज दिया, "स्टीमर में कोई डर नहीं कमला। तुम निश्चिन्त होकर सो सकती हो, मैं बगल की कोठरी में जाग रहा हूँ।"

आँधी के बाप में कितनी मजाल है, यह कहना कठिन है, लेकिन अन्धड़ में क्या भय है, यह कमला से छिपा नहीं—उसने चटपट दरवाजे के पास जा घबराहट के साथ आवाज दी, "चाचा जी तुम घर में आकर बैठो।"

चक्रवर्ती ने सकोच के साथ कहा, "अब तुम लोगों के सोने के समय हो गया, बेटी मैं अभी—"

उन्होंने कोठरी में जाकर देखा कि रमेश नहीं है—आश्चर्य में आकर उन्होंने कहा, "रमेशबाबू इस अन्धड़ में कहाँ गये? उन्हें तो शाक चुराने का अभ्यास है नहीं।"

"कौन, चाचा हैं क्या। मैं तो यहाँ बगल की कोठरी में हूँ।"

पास की कोठरी में चक्रवर्ती ने झाँककर देखा, कि रमेश बिछौने पर अधलेटा हुआ किताब पढ़ रहा है।

चक्रवर्ती ने कहा, "बहूजी अकेली मारे डर के सूखी जाती हैं। आपकी किताब तो आँधी से डरती नहीं, उसे इस समय रख देने में भी कोई डर नहीं। आइये इस घर में।"

कमला आवेग में अपने को भूल शीघ्रता के साथ चक्रवर्ती का हाथ पकड़कर कहने लगी, "नहीं-नहीं चाचाजी! नहीं।" आँधी के शोर में कमला की यह आवाज रमेश के कान तक नहीं पहुँची, किन्तु चक्रवर्ती विस्मृत होकर लौट आए।

रमेश किताब रखकर उस कमरे में आया। उसने पूछा, "क्या है, चक्रवर्ती चाचा, बात क्या है। शायद कमला आपको—।"

कमला रमेश के मुंह की ओर न देखकर चटपट बोल उठीं, "नहीं नहीं; मैंने उन्हें सिर्फ कहानी कहने को बुलाया है।"

पूछने से कमला यह बता न सकती, कि किसके प्रतिवाद में कमला ने 'नहीं' किया। उस 'नहीं' का मतलब यह न समझो कि मुझे डर दूर करने की जरूरत है—नहीं, कोई जरूरत नहीं। अगर समझो, कि मेरा संग देने की जरूरत है, तो नहीं कोई जरूरत नहीं।

इसके बाद ही कमला ने कहा, "चाचाजी, रात होती जा रही है। आप सोने जाइए; एक बार उमेश की खबर लीजियेगा, शायद वह डरता होगा।"

दरवाजे के पास से आवाज आई, "नहीं मैं किसी से भी नहीं डरता।"

उमेश गुरमुटाया हुआ कमला के दरवाजे के पास बैठा है। कमला का हृदय पिघल गया—उसने चटपट बाहर जाकर कहा, "क्यों रे उमेश, तू आँधी-पानी में भीग क्यों रहा है। दरिद्री कहीं का जा चाचा के पास सो रह।"

कमला के मुँह से दरिद्री सम्बोधन सुन उमेश बहुत परितृप्त होकर चक्रवर्ती चाचा के साथ सोने चला गया।

रमेश ने कहा, "जब तक नींद न आये तब तक कहानी कहूँ ?"

कमला ने कहा, "नहीं, मुझे खूब नींद लगी है।"

रमेश कमला के मन का भाव समझ गया। किन्तु उसने बात दोहराई नहीं। कमला के अभिमान से भरे चेहरे की ओर देख वह धीरे-धीरे अपनी कोठरी में चला गया।

कमला के मन में इतनी शान्ति नहीं थी कि वह स्थिर होकर नींद के आसरे बिछौने पर पड़ी रह सके। तब भी वह जबरदस्ती लेट रही। आँधी के वेग के साथ पानी की कलकलाहट धीरे-धीरे बढ़ रही थी। खलासियों का हल्ला-गुल्ला सुनाई दे रहा था। बीच-बीच में इन्जन की कोठरी में संकेत का घण्टा बज उठता था। प्रबल हवा के झटके के विरुद्ध जहाज को स्थिर रखने के लिए लंगर गिराने पर भी इंजन धीरे-धीरे चल रहा था।

कमला बिछौना छोड़ कमरे के बाहर आकर खड़ी हो गई। क्षण भर के लिए दृष्टि बन्द हो गई है, किन्तु आँधी की हवा चुटीले जानवर की तरह चिल्ला कर दिगदिगन्त में टकरा रही है। बादल रहने पर भी शुक्ला चतुर्दशी का आकाश क्षीण प्रकाश में अपनी अशान्त संहारमूर्त्ति को छिपे रूप में प्रकट कर रहा है। किनारा साफ दिखाई नहीं देता, नदी भी धुधली दिखाई देती है; किन्तु ऊपर और नीचे, दूर और समीप, दृश्य और अदृश्य में एक मूढ़ उन्मत्तता है; एक अन्ध आन्दोलन मानो अद्‌भुत मूर्त्ति धारणकर यमराज के ऊँची सींग वाले भैंसे की तरह बीच-बीच में मस्तक झटकार रहा है।

इस पागल रात्रि, इस आकुल आकाश की ओर देखकर कमला की छाती काँपने लगी: यह नहीं कहा जा सकता कि भय से या आनन्द से। इस प्रलय के भीतर एक बाधाहीन शक्ति है, एक बन्धनहीन स्वाधीनता है। उसने मानो कमला के हृदय में एक सोई हुई सगिनी को जगा दिया। इस विश्व-व्यापी विद्रोह के वेग ने कमला के चित्त को विचलित कर दिया। यह विद्रोह किसके विरुद्ध था। उसका उत्तर क्या इस तूफान के गर्जन में मिलेगा? नहीं, वह कमला के हृदय के वेग के समान ही अव्यक्त है। एक प्रकार के अनिर्दिष्ट, अमूर्त्त मिथ्या स्वप्न के अन्धकार के जाल को काटकर निकल आने के लिए ही आकाश-पाताल के इस मतवालेपन रोषगर्जित क्रन्दन है। पथहीन मैदान के प्रान्त से यह हवा केवल 'नहीं, नहीं' चीख मारती हुई निशीथ रात्रि में दौड़ी जा रही है—उसमें केवल प्रचण्ड अस्वीकार है—काहे का अस्वीकार? यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता—किन्तु नहीं, हर तरह से नहीं, नहीं, नहीं, नहीं है।

दूसरे दिन सवेरे आँधी का वेग कुछ कम हुआ, किन्तु बिलकुल ही रुका नहीं—कप्तान अभी तक यह ठीक न कर सका कि लंगर उठाया जायगा या नहीं। वह चिन्ता के साथ आकाश की ओर देख रहा है।

सवेरे ही चक्रवर्ती ने रमेश की खोज में कमला के बगल की कोठरी में प्रवेश किया। देखा कि रमेश तब भी पड़े हुए हैं; चक्रवर्ती को देख वह चटपट उठ बैठा। इस कोठरी में रमेश को सोया देख चक्रवर्ती ने गई रात की

घटना के साथ मन-ही-मन सब समझ लिया। उन्होंने पूछा, "शायद कल रात इसी घर में सोये रहे।"

रमेश ने इस प्रश्न के जवाब को उड़ाते हुए कहा, "यह कैसा दुर्योग आरम्भ हुआ है ; शायद कल रात आपको नींद नहीं आई।"

चक्रवर्ती ने कहा, "रमेश बाबू, मैं देखने में नासमझ जैसा हूँ, मेरी बात-चीत भी वैसी ही है, फिर भी इतनी उम्र में मुझे बहुत गहरी-गहरी चिन्ताएँ उठानी पड़ी हैं ; उनमें कितनी ही की मीमांसा भी मैंने की है—किन्तु आपको मैं दुरूह समझ रहा हूँ।"

क्षणभर के लिये रमेश का मुँह लाल हो उठा, इसके बाद अपने को सँभाल उसने हँसकर कहा, "दुरूह होना भी कोई अपराध है चाचा ? तेलगू भाषा का पहला पाठ भी दुरूह होता है, किन्तु तेलगू के बालक के आगे वह पानी की तरह सरल है—जिसको न समझें, उसे चटपट दोष न दे बैठें और जिस अक्षर को न समझें, उस पर लगातार आँख गड़ाये रहने से ही आप समझ जायेंगे, ऐसी आशा न रखें।"

बूढ़े ने कहा, "मुझे माफ कीजियेगा रमेश बाबू। मेरे लिये जिसके समझने का कोई लगाव नहीं, उसे समझने की चेष्टा करना ही धृष्टता है। किन्तु संसार में दैवात् ऐसे-ऐसे लोग भी मिल जाते हैं, जिनकी आँखों से आँख मिलते ही सम्बन्ध स्थिर हो जाता है—इसका साक्षी, यह खड़ा हुआ कप्तान है, उससे पूछिये बहूजी के साथ उसका जो आत्मीय सम्बन्ध है, वह उसे अभी स्वीकार करना पड़ेगा—उसकी गर्दन पर चढ़कर स्वीकार कराऊँगा, न स्वीकार करे तो वह मुसलमान नहीं। इस हालत में बीच में तेलगू भाषा के आ जाने से बड़ी कठिनाई में पड़ना पड़ेगा। केवल क्रोध करने से काम न चलेगा, रमेश बाबू, जरा मेरी बात विचार कर देखिये।"

रमेश ने कहा, "मैं समझ कर देख रहा हूँ, इसी से तो क्रोध नहीं कर रहा हूँ—किन्तु क्रोध करूँ या न करूँ आप दुःख पायें या न पायें, तेलगू भाषा तेलगू ही रहेगी—प्रकृति का ऐसा ही निष्ठुर नियम है।" यह कह रमेश ने एक ठंडी साँस भरी।

इसी बीच रमेश विचार करने लगा, कि गाजीपुर जाना उचित है या नहीं। पहले वह सोच रहा था, कि अपरिचित स्थान में रहने के बदले वृद्ध के साथ परिचय में असुविधा भी है। कमला के साथ उसके सम्बन्ध की आलोचना और अनुसन्धान विषय हो जाने पर वह कमला के लिये बहुत भयानक हो उठेगा इसलिये जहाँ सभी अपरिचित हैं, जहाँ पूछने वाला कोई नहीं है, वहाँ ही रहना उचित है।

गाजीपुर पहुँचने के एक दिन पहले रमेश ने चक्रवर्ती से कहा, "चाचा, अपनी प्रैक्टिस के लिये मैं गाजीपुर को अनुकूल नहीं समझता, अभी मैंने काशी ही जाने का ठीक किया है।"

रमेश की बातों में निःसशय का स्वर सुन बूढ़े ने हँसकर कहा "बार-बार तरह-तरह से स्थिर करने को स्थिर करना नहीं कहते—यह तो अस्थिर करना है। जो हो, इस समय काशी जाना ही आपका आखिरी निश्चय है ?"

रमेश ने संक्षेप में कहा, "हाँ।"

वृद्ध कोई जवाब न दे चले गये और असबाब बाँधने में लग गये।

कमला ने आकर कहा, "चाचा जी, क्या आज मुझसे आपका झगड़ा है।"

वृद्ध ने कहा, "झगड़ा तो रोज दोनों समय होता है, किन्तु एक दिन भी तो मैं जीत नहीं पाता।"

कमला, "आज तुम सवेरे से ही भागे-भागे फिरते हो ?"

चक्रवर्ती, "तुम लोग तो बेटी, मुझसे भी बढ़कर भागने की चेष्टा में हो और मुझे भागने का दोष देती हो ?"

कमला बात न समझकर देखने लगी। वृद्ध ने कहा, "क्या रमेश बाबू ने अभी तुमसे नहीं कहा ? तुम लोगों का काशी जाना स्थिर हुआ है !"

यह सुन कमला ने हाँ ना कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद कहा, "चाचाजी, तुमसे न बनेगा, लाओ तुम्हारा ट्रंक मैं सजा दूँ।"

काशी जाने के सम्बन्ध में कमला की इस उदासीनता से चक्रवर्ती की छाती में एक गहरी चोट लगी। उन्होंने मन-ही-मन कहा, "अच्छा ही हुआ, मेरी जैसी उम्र में यह नया जाल क्यों बिछे।"

इसी समय काशी जाने की सलाह करने के लिये रमेश कमला के पास आये। उन्होंने कहा, "मैं तुम्हें ढूंढ रहा था।"

कमला चक्रवर्ती के कपड़े सजा रही थी। रमेश ने कहा, "कमला इस बार हम लोग गाजीपुर नहीं जा सकते मैंने ठीक किया है, कि काशी में जाकर ही प्रैक्टिस करूंगा। तुम्हारी क्या राय है ?"

कमला ने चक्रवर्ती के ट्रंक से बिना दृष्टि फेरे कहा, "नहीं मैं गाजीपुर ही जाऊँगी। मैंने सब असबाब बाँध लिया है।"

कमला की इस द्विविधाहीन उत्तर से रमेश को आश्चर्य आया। पूछा, "क्या तुम अकेली ही जाओगी ?"

कमला ने चक्रवर्ती के मुँह की ओर अपनी स्निग्ध दृष्टि उठाकर कहा, "क्यों, वहाँ चाचाजी तो है ही।"

कमला की इस बात पर चक्रवर्ती ने संकुचित हो कहा, "बेटी अगर तुम चाचा के प्रति इतना पक्षपात दिखाओगी, तो शायद रमेश बाबू मुझे दोनों आँखों से देख न सकेंगे।"

इसके जवाब में कमला ने इतना ही कहा, "मैं गाजीपुर जाऊँगी।"

कमला की आवाज से यह जाहिर न हुआ, कि इसके बारे में उसे किसी से राय लेने की भी जरूरत है।

रमेश ने कहा, "चाचा, तब गाजीपुर ही ठीक है।"

आँधी-पानी के बाद उस दिन की रात को साफ़ चाँदनी खिली है। रमेश डेक के पास की कुरसी पर बैठ सोचने लगा, "इस तरह काम न चलेगा। धीरे-धीरे विद्रोही कमला के कारण जीवन की समस्या बहुत भारी हो जायगी। इस तरह पास में रहकर दूरत्व की रक्षा करना कठिन है। कमला ही मेरी स्त्री है—मैंने तो उसे स्त्री समझकर ही ग्रहण किया था। मन्त्रपाठ नहीं हुआ, तो इसमें संकोच की कौन सी बात है। यमराज ने उस दिन कमला को स्त्री के रूप में मेरे हवाले कर उस निर्जन बालू के तट पर स्वयं गठबन्धन कर दिया है—उनके जैसा पुरोहित इस संसार में कौन होगा ?"

हेमनलिनी और रमेश के बीच एक युद्धक्षेत्र तैयार है। बाधा अपमान-

अविश्वास दूर कर यदि रमेश विजयी हो जायगा तभी वह सिर ऊँचा कर हेमनलिनी के सामने खड़ा हो सकेगा। उस युद्ध की याद आने से उसे भय होता है—जीतने की कोई आशा नहीं रह जाती। तब कैसे प्रमाणित करूँ? प्रमाणित करने से सब लोगों के सामने सब बातें खोलने से बहुत ही घृणित और कमला के लिये तो ऐसी गहरी चोट होगी, कि उसके विचार को भी मन में स्थान देना कठिन है।

इसलिये दुर्बलों की तरह अब दुविधा में न पड़ कमला को स्त्री मान लेने में ही सब ओर से भलाई है। हेमनलिनी तो रमेश से घृणा करती है—यह घृणा ही उसे उपयुक्त सत्पात्र को मन अर्पण करने में अनुकूल होगी। यह सोच रमेश ने एक ठण्डी साँस ले उधर की आशा की।

सत्रह

रमेश ने उमेश को प्यार से पूछा, "क्यों रे, तू कहाँ चल रहा है?"

उमेश ने उत्तर दिया, "मैं माँजी के साथ जाऊँगा।"

रमेश, "मैंने तो तेरे लिये काशी तक का टिकट दिला दिया है। यह तो गाजीपुर घाट है; हम लोग काशी न जायेंगे।"

उमेश, "मैं भी न जाऊँगा।"

रमेश को यह आशा नहीं थी, कि उमेश उसके लिए चिरस्थायी बन्दोबस्त में आ जायगा। किन्तु लड़के की अटल दृढ़ता देख रमेश कुछ स्तम्भित हुआ। उसने कमला से पूछा, "कमला, क्या उमेश को भी साथ लेना पड़ेगा?"

कमला ने कहा, "नहीं तो वह कहाँ जायगा?"

रमेश, 'क्यों, काशी मे उसके सम्बन्धी हैं।"

कमला, "नहीं, उसने हमारे ही साथ चलने को कहा है। देख उमेश, तू

चाचा जी के साथ-साथ रहना। नहीं तो विदेश में भीड़ के कारण कहीं भूल जायगा।"

किस देश में जाना होगा, और किसे साथ में लेना होगा, इन सब बातों के फैसले का भार कमला ने अपने ऊपर लिया। रमेश की इच्छा और अनिच्छा का बन्धन पहले कमला नम्र-भाव से स्वीकार करती थी, एकाएक कई दिन से उसने उसे दूर कर दिया है।

इसलिए उमेश भी अपनी छोटी-सी गठरी लेकर चला, इस बारे में और अधिक बातचीत नहीं हुई।

शहर और अँग्रेजों के मुहल्ले के बीच के एक स्थान में चाचाजी का एक छोटा-सा बँगला था। उसके पीछे आम का बगीचा, सामने पक्का कुआँ—सामने की ओर एक छोटी चहारदीवारी है—कुएँ के पानी से सिंचकर गोभी और छीमी का खेत अपनी शोभा दे रहा हैं।

पहले दिन कमला और रमेश इसी बँगले में जाकर उतरे।

चाचा समाज में प्रचार करते हैं कि उनकी स्त्री हरिभाविनी का शरीर बहुत कमजोर है, किन्तु उनकी कमजोरी का कोई बाहरी लक्षण दिखाई नहीं देता। उनकी उम्र कम नहीं, किन्तु चेहरे पर कड़ाहट और सामर्थ्य है। सामने के कुछ-कुछ बाल पके हैं किन्तु कच्चे का हिस्सा ही अधिक है। उसके लिये बुढ़ापे की केवल डिग्री मिली है; किन्तु दखल अब तक नहीं मिला।

असल बात यह है कि जब दोनों जवान थे, तब हरिभाविनी को मलेरिया ने बड़े जोरों से ग्रसा। वायु-परिवर्तन के सिवा और कोई उपाय न देख चक्रवर्ती गाजीपुर स्कूल में मास्टरी करते हुये यहीं बैठ गए।

मेहमानों को बाहरी घर में बैठाकर चक्रवर्ती जनानखाने में प्रवेश कर आवाज दी, "सेज बहू।"

उस समय सेज बहू आँगन में रामकली से गेहूँ छँटवा रही थी और छोटे-छोटे तरह-तरह के बर्तन और हाँड़ी में कई प्रकार के अचारों को धूप में रख रही थीं।

वहाँ पहुँचते ही चक्रवर्ती ने कहा, "शायद अब ठण्डक पड़ रही है; शरीर

पर कोई रैपर ओढ़ लिया होता।"

हरिभाविनी, "तुम्हारी सब बातें निराली हैं अभी ठण्डक है कहाँ—धूप में पीठ सेंक रही हूँ।"

चक्रवर्ती, "यह भी ठीक नहीं। छाया में कुछ पैसे तो लगते नहीं।"

हरिभाविनी, "अच्छा देखा जायगा। तुमने आने में इतनी देर क्यों की ?"

चक्रवर्ती, "बहुतेरे कारण हैं—इस समय घर में मेहमान मौजूद हैं। उनकी सेवा का बन्दोबस्त करना होगा।"

यह कहकर चक्रवर्ती ने आने वालों का परिचय दिया। चक्रवर्ती के यहाँ इस प्रकार मेहमानों का आना-जाना होता ही रहता है; किन्तु स्त्री सहित मेहमान के लिए हरिभाविनी उतनी मुस्तैद नहीं—उन्होंने कहा, "हे राम तुम्हारे यहाँ जगह कहाँ है ?"

चक्रवर्ती ने कहा, "पहले परिचय तो करो, इसके बाद घर की बात पीछे होती रहेगी। मेरी शैल कहाँ है ?"

हरिभाविनी, "वह अपने लड़के को नहला रही है।"

चक्रवर्त्ती चटपट कमला को भीतर बुला लाये। कमला हरिभाविनी को प्रणाम कर खड़ी हो गई; हरिभाविनी ने अपने दाहिने हाथ से कमला की ठोडी छूकर चूम लिया और अपने पति से कहा, "देखा, इसका चेहरा बहुत कुछ हमारे विधु जैसा है।"

विधु इनकी बड़ी लड़की है—कानपुर में अपने पति के घर रहती है। चक्रवर्त्ती मन-ही-मन हँसे; वे जानते थे कमला के साथ विधु का कोई मेल नहीं खाता, किन्तु हरिभाविनी रूप और गुण में बाहरी लड़कियों की जीत कभी स्वीकार नहीं कर सकती। शैलजा उनके घर में ही रहती है, इससे प्रत्यक्ष तुलना करने से हार न खाना पड़े, इसलिए जो मौजूद नहीं उससे तुलना कर गृहिणी ने जय-पताका अपने घर में गाड़ दी।

हरिभाविनी, "बहुत अच्छा हुआ यह लोग आ गये हैं; किन्तु अभी तो हमारे नये मकान की मरम्मत समाप्त नहीं हुई—यहाँ हम लोग किसी तरह घुस-पैठकर बैठे हैं—इन्हें कष्ट होगा।"

बाजार में चक्रवर्त्ती के एक छोटे मकान की मरम्मत हो रही है सही किन्तु वह एक दूकान है—वहाँ रहने की कोई सुविधा नहीं।

चक्रवर्त्ती ने इस झूठ का कोई प्रतिवाद न कर कुछ हँस कर कहा, "बेटी! अगर कष्ट को हम कष्ट समझते तो यहाँ तुम्हें न ले आते। (स्त्री की तरफ देखकर बोले) देखो भाई! तुम बाहर न खड़ी रहो, जाड़े की धूप बहुत खराब होती है।"

यह कहकर चक्रवर्त्ती रमेश के साथ बाहर चले गये।

इसके बाद ही हरिभाविनी विस्तार के साथ कमला का परिचय लेने लगीं। "तुम्हारे पति शायद वकील हैं? कितना कमाते हैं? शायद अभी तक काम नहीं शुरू किया है। तो फिर खर्च कैसे चलता होगा? कुछ ससुर का धन होगा शायद? अच्छा तो तुम्हें नहीं मालूम? हे राम! तुम कैसी लड़की हो? अपनी ससुराल का हाल तक नहीं जानती? क्या तुम इतना भी नहीं जानतीं कि गृहस्थी के खर्च के लिये तुम्हारे पति तुम्हें क्या देते हैं? तुम कोई छोटी नहीं हो। जब तुम्हारी सास नहीं हैं तो गृहस्थी का भार तो तुम्हीं को उठाना चाहिये। मेरा दामाद तो जो कुछ कमाता है सब कुछ विधु के हाथ में रख देता है। इसी तरह की सुख-दुःख की बातों की पूछ-ताछ करके तथा बहुत सी नेक सलाहें दे करके उसने कमला को अपनी बना लिया।

हरिभाविनी के प्रश्नों से कमला का भी मन संशय एवं भावना से भर उठा कि रमेश की स्त्री होकर भी वह उसके बारे में न के बराबर जानती है तथा उधर रमेश के साथ अच्छी तरह किसी बात पर विचार करने की उसे फुरसत ही नहीं मिली। उसे यह बड़ा विचित्र-सा लगा तथा अपनी इस नादानी पर लज्जा भी अनुभव हुई।

इसी समय शैलजा अपनी दो साल की लड़की का हाथ पकड़े वहाँ आ पहुँची। शैलजा सांवली है, उसका मुँह छोटा-सा है मुट्ठी-भर का शरीर है, दोनों आँखें चमकदार ललाट चौड़ा है, चेहरे की ओर देखने से वह स्थिर बुद्धि और शान्त भाव की जान पड़ती है।

शैलजा की छोटी-सी लड़की ने कमला के सामने खड़े हो उसे अच्छी तरह

देखने के बाद कहा, "मौसी !" यह नहीं कि उसने विधु के धोखे में कहा हो, एक विशेष उम्र की कोई भी स्त्री जो उसे पसन्द आ जाय वह उन्हें मौसी के नाम से ही बुलाती है। कमला ने चटपट उसे गोद में उठा लिया।

हरिभाविनी ने शैलजा को कमला का परिचय देते हुए कहा, "उनके पति वकील हैं। नई वकालत करने को बाहर निकले हैं। रास्ते में तुम्हारे पिता से उनकी जान-पहिचान हो गई ; वे उन लोगों को गाजीपुर ले आये हैं।"

शैलजा ने कमला के मुँह की ओर देखा, कमला ने भी शैलजा के मुँह की ओर देखा—और इस देखा-देखी में ही दोनों एक क्षणभर में रागी बन गईं। शैलजा ने कमला का हाथ पकड़कर कहा, "चलो जी मेरी कोठरी में चलो।"

थोड़ी ही देर में दोनों बड़े मेल के साथ बातचीत शुरू हो गई। आँख से देखने पर यह सहज ही नही जान पड़ता कि शैलजा से कमला की उम्र में फर्क है। शैलजा में कुछ छोटा-मोटा संक्षिप्त भाव है—कमला ठीक उसके विपरीत है—लम्बाई-चौड़ाई और भाव-भंगी में वह अपनी उम्र का कुछ अंश बिता चुकी है। विवाह के बाद उसके सिर पर ससुराल का कोई दाब न होने से अथवा और किसी कारण से वह देखते-देखते बिना किसी संकोच के बढ़ गई थी। उसके चेहरे के भाव मे एक प्रकार की स्वाधीनता का तेज था। उसके सामने जो कुछ आता है, उसके बारे में कम से कम मन में ही सही, वह बिना प्रश्न किये शान्त नहीं होती थी। 'चुप रहो' जो कहा जाता है, वही किये चलो' 'बहु-बेटियों की ऐसी जिद शोभा नहीं देती' इस प्रकार की बातें आज तक उसके सुनने में नहीं आईं। इसी से वह सिर ऊँचा कर उठती है—उसकी सरलता में सबलता है।

शैलजा की लड़की ने उन दोनों का ध्यान अपनी ओर करने की चेष्टा की, किन्तु दोनों सखियों में जमकर बातें होने लगीं। इस बातचीत में कमला अपनी दीनता सहज ही समझ गई। शैलजा को कहने के लिये बहुतेरी बातें हैं, किन्तु कमला के कहने को कुछ नहीं। कमला के जीवन के चित्रपट में उसके दाम्पत्य का जो एक चित्र अंकित हुआ है, वह पेन्सिल की एक क्षीण रेखा का है—वह चित्र सब जगह से साफ नहीं है, उस पर आजकल कोई रंग चढ़ा ही

नहीं। कमला ने इतने दिन तक इस अभाव को समझने का अवसर नहीं पाया—हृदय में उसने अभाव का अनुभव किया, कभी-कभी विद्रोह का भाव भी उपस्थित हुआ, किन्तु उसका कोई भाव उसके चेहरे पर प्रकट नहीं हुआ।

शैलजा के पति विपिन गाजीपुर के अफीम-आफिस में काम करते हैं। चक्रवर्ती की कुल दो लड़कियाँ हैं—बड़ी लड़की ससुराल गई है। छोटी को प्राण के समान विदा न कर सकने के कारण चक्रवर्ती ने एक अपने शक दामाद ढूँढ़ लिया और साहबों से सिफारिश कर उसे यहीं नौकरी दिला दी। विपिन इन्हीं लोगों के घर रहता है।

बातों-बातों में शैल बोल उठी, "तुम जरा बैठीजी, मैं अभी आती हूँ।' कुछ ही देर में कारण बताती हुई वह हँसकर बोली, "वह स्नान करके घर में आये हैं—अब खा-पीकर आफिस जायेंगे।"

कमला ने सरल विस्मय के साथ पूछा, "तुम कैसे जान गईं कि वे आये हैं?"

शैलजा, "दिल्लगी न करो। जैसे सब जानती हैं वैसे ही मैं भी जान गई। तुम अपने पति के पैर की आवाज नहीं पहचानतीं?"

यह कह हँसकर कमला की ठोड़ी को जरा-सा हिलाकर वह आँचल में बँधे चाबी के गुच्छे को पीठ पर फेंक गोद में लड़की को लिए चली गई। कमला आज तक यह समझ ही न सकी, कि पैर की आवाज की भाषा इतनी सहज है। वह चुपचाप बैठ खिड़की की ओर निगाह किये सोचने लगी।

अठारह

एक खुली जगह में गंगा के किनारे एक अलग मकान लेने की चेष्टा हो रही है। रमेश को गाजीपुर की अदालत में कायदे से वकालत करने के लिये कुछ चीजें लेने कलकत्ते जाना पड़ेगा किन्तु कलकत्ते जाने की उसकी हिम्मत नहीं होती। कलकत्ते की एक खास गली का चित्र मन में आते ही रमेश की

छाती को मानो कोई दबा देता है। अभी तक वह उसके जाल से बाहर नहीं निकला—दूसरी ओर शीघ्र ही कमला से पति-पत्नी का भाव बनाये बिना भी काम नहीं चलता। इन्हीं दुविधाओं में कलकत्ते जाने का दिन टलता ही चला गया।

कमला चक्रवर्ती के जनाने खाते में ही रहती है। वह बँगला बहुत छोटा होने की वजह से रमेश को बाहरी घर में ही रहना पड़ता है। कमला के साथ मुलाकात होने का उतना मौका नहीं मिलता।

इस लगातार विच्छेद के मामले में शैलजा कमला के आगे केवल दुःख ही प्रकट किया करती थी। कमला ने कहा, "तुम इतनी हाय-हाय क्यों करती हो? ऐसी कौन-सी भयानक दुर्घटना हो गई है।"

शैलजा, "धत्, यही तो बात है। तुम्हारा मन पत्थर की तरह कठोर है। इन सब बातों से मुझे छल न सकोगी, तुम्हारे मन में जो हो रहा है, क्या उसे मैं समझती नहीं हूँ।"

कमला ने पूछा, "अच्छा जी, सच कहना, अगर दो दिन विपिन बाबू तुमसे मुलाकात न करें, तो क्या तब भी तुम इसी प्रकार—"

शैलजा ने गर्व के साथ कहा, "उनकी मजाल क्या जो दो दिन मुलाकात न करें।"

यह कहकर शैलजा विपिन बाबू की अधीरता का हाल कहने लगी। इसके बाद जब आफिस में जाना शुरू हुआ, तब दोनों की वेदना और विपिन का कभी-कभी आफिस से भागना, बहुत-सी बातें हुईं। इसके बाद एक बार ससुर के रोजगार के कारण कुछ दिन के लिए विपिन को पटना जाना पड़ा, तब शैलजा ने अपने पति से पूछा था, "तुम पटने जाकर रह सकोगे?" उस समय विपिन ने बड़े अभिमान के साथ कहा था, "क्यों न रह सकूँगा? मजे में रहूँगा।" उसकी इस हिम्मत से शैलजा को अभिमान हुआ था—उसने कड़े दिल से प्रतिज्ञा की थी, कि विदाई के समय किसी प्रकार का दुःख प्रकट न करेगी; किन्तु न जाने कैसे वह प्रतिज्ञा आँख के आँसुओं के साथ बह गई। दूसरे दिन जब जाने की सारी तैयारी हो गई, तब विपिन के माथे में दर्द के साथ ऐसी

कौन-सी बीमारी हुई, कि उसका जाना रुक गया, इसके बाद जब डाक्टर दवा दे गया, तब दवा की शीशी चुपके से पनाले में लुढ़का कैसे अपूर्व उपाय से बीमारी दूर की यह सब कहते-कहते कब कितना दिन निकल जाता, इसका कोई खयाल शैलजा को होता नहीं था। फिर भी ऐसे समय दूर या बाहर दरवाजे पर किसी के शब्द होने-न-होने पर भी शैलजा चौंक उठती थी। विपिन बाबू आफिस से आए या नहीं—यह जानने के लिए गप-शप होते रहने पर भी शैलजा उत्कठित हृदय से दरवाजे की ओर ही कान लगाये रहती थी।

ऐसा नहीं, कि कमला के आगे यह सब बातें बिल्कुल गूलर के फूल के समान थीं कुछ-कुछ आभास उसे भी मिला है। पहले कई महीने रमेश के साथ प्रथम परिचय के रहस्य में उसके मन में मानों एक प्रकार की रागिनी बज उठती थी। इसके बाद स्कूल से छुटकारा पाकर कमला जब रमेश के पास आई, तब भी कभी-कभी ऐसी लहरें अपूर्व संगीत और अपूर्व नृत्य से उसके हृदय पर आघात करती थीं—जिसका ठीक अर्थ वह आज शैलजा की बातों से समझ सकी। किन्तु उसका यह सब छिपा-छिपाया था, इसमें धारावाहिकता नहीं। वह किसी परिणाम तक पहुँच न सकी शैलजा और विपिन में जो एक प्रकार के आग्रह का खिंचाव है, वह, रमेश और उसमें कहाँ है ? इधर कई दिन से इन लोगों की मुलाकात भी बन्द है। इससे उसके मन में और भी एक प्रकार की घबराहट उत्पन्न हुई है। रमेश भी उससे मिलने के लिए बाहर बैठे-बैठे तरह-तरह के विचार किया करता है; यह उसके लिए किसी तरह भी विश्वास के योग्य नहीं।

इसी बीच जिस दिन रविवार पड़ा उस दिन शैलजा कुछ मुश्किल में पड़ी। अपनी नई सखी को बहुत देर के लिए अकेली छोड़ने में उसे कुछ लज्जा जान पड़ने लगी, फिर भी छुट्टी का दिन बिलकुल ही व्यर्थ जाय, इतनी त्याग-शीलता भी उसमें नहीं थी। इधर रमेश बाबू के साथ रहने पर भी कमला जब मिलने से वंचित रही, तब छुट्टी के दिन अपने भाग्य का अभाग्य भोगने में उसे कुछ कष्ट जान पड़ा। आहा ! यदि किसी तरह रमेश से कमला की मुलाकात हो जाती !

इन सब बातों में बड़े-बढों से सलाह नहीं चलती—किन्तु चक्रवर्ती सलाह के लिये आसरा देखने वाले नहीं। उन्होंने घर में कह दिया, कि आज वे किसी विशेष काम से शहर के बाहर जा रहे हैं। रमेश को समझा गये, कि आज कोई बाहरी आदमी उनके मकान में आने वाला नहीं है। वे सदर दर्वाजा बन्द किये जाते हैं। यह बात उन्होंने अपनी कन्या से भी कह दी—वे अच्छी तरह जानते थे, कि किस बात का क्या अर्थ है, उसे शैलजा समझ जायेगी।

स्नान के बाद शैलजा ने कमला से कहा, "आओजी, तुम्हारे बाल सवाँर दूं।" कमला के लाख मना करने पर भी उसने अपने ही मन की की।

इसके बाद कपड़े के बारे में दोनों में खूब बहस हुई। शैलजा उसे रंगीन साडी पहनाना चाहती है कमला को उसके पहनने का कोई कारण दिखाई नही दिया। अन्त में शैलजा को सन्तुष्ट करने के लिये उसे पहनना ही पडा।

दोपहर में भोजन के बाद शैलजा अपने पति के कान मे धीरे से कुछ कहकर थोड़ी देर के लिये छुट्टी ले आई। इसके बाद वह कमला को बाहर की कोठरी में भेजने के लिये तंग करने लगी।

इससे पहले कमला रमेश के पास कितनी ही बार निःसंकोच गई है। इस बात के जानने का उसे कभी मौका ही नहीं मिला, कि इसके बारे में समाज में कुछ लज्जा प्रकट करने का विधान है। परिचय के आरम्भ में ही रमेश ने उसका संकोच तोड़ दिया था। निर्लज्जता के बहाने धिक्कार देने वाली कोई संगिनी भी नहीं थी।

किन्तु आज शैलजा का अनुरोध पालन करना उसके लिये कठिन जान पडा। पति के पास शैलजा जिस अधिकार से जाती है, उसे वह समझ गई है—कमला उस अधिकार को जब समझती ही नहीं, तब दीन-भाव से आज वह रमेश के पास कैसे जा सकती है?

कमला जब किसी तरह से राजी नहीं हुई, तब शैल समझी, कि शायद उसने रमेश से मान ठाना है। मान करने की बात भी है। कई दिन बीत गये, किन्तु रमेश ने किसी बहाने मुलाकात की भी चेष्टा नहीं की।

उस समय मकान की मालकिन भोजन के उपरान्त घर का दर्वाजा बन्द कर सो रही थी शैलजा ने विपिन के पास जाकर कहा, "आज तुम रमेश बाबू को कमला के नाम से भीतर बुला लाओ। पिताजी कुछ न कहेंगे, माँ को कुछ मालूम ही न होगा।"

उस समय रमेश बाहरी बैठक में जाजिम के ऊपर चित्त लेट एक पैर के घुटने पर एक पैर रख पायनियर पढ़ रहा था। पढ़ाई का हिस्सा समाप्त कर जब वह बेकाम विज्ञापनों की ओर ध्यान देने जा रहा था, उस समय विपिन को कमरे में आते देखकर प्रसन्न हो उठा। संगी के बहाने विपिन प्रथम श्रेणी का आदमी था, फिर भी विदेश में दोपहर के समय रमेश ने उसका आना बहुत अच्छा समझा और बोल उठा, "आइये विपिन बाबू आइये!"

विपिन ने बिना बैठे ही जरा माथा खुजलाते हुये कहा, "आपको जरा वह भीतर बुला रही हैं।"

रमेश ने पूछा, "कौन कमला?"

विपिन ने कहा, "हाँ।"

रमेश कुछ आश्चर्य में आया। रमेश ने पहले ही ठीक कर लिया है कि कमला को वह स्त्री के रूप में मानेगा, किन्तु उसका दुविधा में पड़ा मन कई दिन से मौका पाकर विश्राम कर रहा है। कल्पना में कमला को गृहिणी के पद पर अभिषिक्त कर वह मन को भावी सुखों के धीरज से उत्तेजित भी कर चुका है—किन्तु पहला आरम्भ ही कठिन है। कुछ दिन से वह लगातार कमला से दूर-दूर रहने का अभ्यस्त था, एकाएक एक दिन में वह कैसे उसे तोड़ दे, यह उसकी समझ में नहीं आया, इसी से किराये का मकान लेने के लिये वह जल्दी नहीं कर रहा था।

कमला का बुलाना सुनकर रमेश ने मन में सोचा कि निश्चय कोई विशेष प्रयोजन होगा। जरूरत की बुलाहट होने पर भी उसके मन में एक लहर पैदा हो गई। पायनियर रखकर जब वह विपिन के साथ भीतर गया, तब मधुकर गुँजरित कार्तिक के आलस्ययुक्त दोपहर ने अभिसार का आभास देते हुये उसके चित्त को कुछ चंचल कर दिया।

विपिन दूर ही से कोठरी दिखाकर चला गया । कमला समझ रही थी कि शैलजा उसकी कोठरी से निकल कर विपिन के पास चली गई है । इसलिये वह खुले दर्वाजे की चौखट पर बैठ सामने के बगीचे की ओर देख रही थी शैलजा ने न जाने कैसे कमला के मन में और बाहर प्रेम का स्तर बाँध दिया था। हलकी गर्म हवा से जैसे बाहरी वृक्ष मरमर शब्द से काँप रहे थे, वैसे ही कमला के हृदय के भीतर से रह-रहकर एक गहरी साँस निकलकर व्यक्त वेदना से एक अपूर्व कॅपकॅपाहट पैदा कर रही थी ।

ऐसे समय रमेश ने जब भीतर पहुँच पीछे से आवाज दी, 'कमला' तब वह चौंककर खड़ी हो गई । उसके हृदय का खून तरंगें मारने लगा जिस कमला ने इससे पहले कभी रमेश के आगे विशेष लज्जा अनुभव नहीं की, वह आज अच्छी तरह आँखें उठाकर देख भी न सकी । उसकी कनपटी लाल हो गई ।

आज की सजावट और भाव-आभास में रमेश ने कमला की नई मूर्ति देखी एकाएक कमला के इस आभास ने उसे आश्चर्य में डाल दिया । उसने धीरे-धीरे कमला के पास आकर क्षणभर खड़े रहने के बाद मीठे स्वर में कहा, "कमला ! तुमने मुझे बुलाया है ?"

कमला चौंककर अनावश्यक उत्तेजना के साथ बोल उठी, "नहीं-नहीं नहीं; मैं क्यों बुलाने लगी ।"

रमेश ने कहा, "बुलाने में भी क्या, दोष है कमला ?"

कमला दूनी प्रबलता के साथ बोली, "नहीं मैंने नहीं बुलाया ।"

रमेश ने कहा, "अच्छी बात है, मैं तुम्हारे बिना बुलाये ही आया हूँ । इस-लिये क्या अनादर करके लौटा दोगी ?"

कमला, "तुम्हारा आना जानकर लोग नाराज होंगे तुम जाओ । मैंने तुम्हें नहीं बुलाया ।"

रमेश ने कमला का हाथ पकड़ कर कहा, "अच्छा, तुम मेरे कमरे में चलो, वहाँ बाहर का कोई आदमी नहीं है ।"

कमला ने काँपकर शीघ्रता के साथ रमेश से हाथ छुड़ा बगल की कोठरी में जाकर दर्वाजा बन्द कर लिया ।

रमेश समझ गया, कि यह सब मकान की किसी स्त्री की करामात है—यह समझ वह प्रसन्न चित्त बाहर चला गया। चित्त लेटकर पायनियर के विज्ञापन के अंश पर वह दृष्टि दौड़ाने लगा। किन्तु मन न बहला। उसके हृदय के आकाश में रंग-बिरंगे भाव के बादल उठ-उठकर मँडराने लगे।

शैल ने बन्द दर्वाजे पर चोट दी, "किसी ने खोला नहीं। तब उसने दर्वाजे की झिलमिली से हाथ डाल सिटकिनी खोल दी। घर में जाकर देखा कि कमला जमीन में पेट के बल लेटकर दोनों हाथों के भीतर मुँह छिपाकर रो रही है।

शैल बड़े आश्चर्य में आई। ऐसी कौन-सी घटना हो गई, जिससे कमला के हृदय में इतनी चोट पहुँची। वह चटपट उसके पास बैठ उसके कान के पास मुँह लगाकर मीठे स्वर में बोली, "काहे को जी, क्या हुआ क्या—रोती क्यों हो?"

कमला ने कहा, "तुम क्यों उन्हें बुला लाई? यह बहुत बेजा बात है।"

कमला के इस अकस्मात आवेग की प्रबलता को उसका और दूसरों का समझना कठिन है। किसी को यह खबर नहीं कि कितने दिन से गुप्त वेदना उसके हृदय में संचित है।

कमला आज कल्पना के लोक में अधिकार कर बैठी थी। रमेश यदि सहज में ही उस लोक में पहुँच जाता, तो सुख की ही बात होती। किन्तु उसे बुलाकर सब खाक में मिला दिया गया। कमला की छुट्टी के समय स्कूल में उसे कैदकर रखने की चेष्टा, स्टीमर में रमेश की उदासीनता, यह सभी उसके मन को मथने लगा। पास में आने से ही आना हो गया, यह बात नहीं—असल बात क्या है, इसे गाजीपुर आने के बाद ही बहुत सहज में वह साफ-साफ समझ गई।

किन्तु शैल का इन सब बातों को समझना कठिन है। वह इसकी कल्पना भी कर न सकी, कि कमला और रमेश के बीच कौन-सी बाधा हो सकती है। उसने बड़े प्यार से कमला के सिर को अपनी गोद में ले पूछा, "अच्छा जी, रमेश बाबू ने क्या तुम्हें कोई कड़ा वचन कहा है? शायद वह उनको बुलाने

गये थे, इससे नाराज हुये हों। तुमने बता क्यों नहीं दिया, कि यह सब मेरी कार्रवाई है ?"

कमला ने कहा, "नहीं-नहीं, उन्होंने कुछ नहीं कहा। किन्तु तुमने उन्हें बुलाया क्यों ?"

शैल ने दु:खी होकर कहा, "अच्छा जी, कुसूर हुआ, माफ करो।"

कमला ने चटपट उठ शैल का गला पकड़ कहा, "जाओ जी, तुम जाओ। नहीं तो विपिन बाबू नाराज होंगे।"

बाहर अकेली कोठरी में रमेश ने पायनियर पर नाहक दृष्टि दौड़ाते-दौड़ाते झल्लाकर उसे एक ओर फेंक दिया। इसके बाद बैठकर उसने आप-ही-आप कहा, "नहीं, अब नहीं। कल ही कलकत्ते जाकर तैयार हो लौट आऊँगा। कमला को अपनी स्त्री मानकर ग्रहण करने में जितनी देर हो रही है, उतना ही मैं बेजा कर रहा हूँ।"

रमेश की कर्त्तव्य बुद्धि आज एकाएक जागकर सब दुविधा और संशय को एक साँस में लाँघ गई।

उन्नीस

रमेश ने सोचा था, कि वह कलकत्ते में केवल अपना काम कर लौट आयेगा। कोलूटोला की उस गली के किनारे भी न जायगा।

रमेश दर्जी पाड़ा वाले मकान में ठहरा। दिन का समय बहुत सहज में काम-काज में बीत गया। बाकी समय बीत नहीं रहा है। रमेश कलकत्ते में जिस दल से मिलता-जुलता था उससे इस बार आने पर मिला भी नहीं। इस भय से, कि कहीं राह में किसी से मुलाकात न हो, वह बहुत सावधान रहा।

जोर का प्रयोग जितनी अतिरिक्तता के साथ किया जाता है, उतना ही जोर घटता जाता है। यह प्रतिज्ञा करते हुये, कि हेमनलिनी को वह अब किसी

तरह भी मन में आने न देगा, हेमनलिनी की बात सारी रात उसके मन में जागती रह गई। भूलने का संकल्प ही स्मरण रखने का प्रबल उपाय हो उठा।

रमेश को यदि सचमुच जल्दी होती, तो वह बहुत पहले ही कलकत्ते का काम समाप्त कर लौट जाता। किन्तु मामूली काम खतम होते-होते भी बढ़ता ही गया। अन्त में सब काम समाप्त हो गया।

कल रमेश पहले किसी काम से इलाहबाद जाकर, तब गाजीपुर लौटेगा। इतने दिन से वह धीरज धरे था, किन्तु उस धैर्य का कोई पुरस्कार नहीं। किन्तु विदा होने से पहले छिपकर एक बार कोलूटोला की खबर लेने में हर्ज क्या है ?

आज कोलूटोला की उसी गली में जाना स्थिर कर वह एक चिट्ठी लिखने बैठा। उसमें उसने कमला के साथ अपना सम्बन्ध होना शुरू से आखिर तक लिख दिया। यह भी प्रकट कर दिया, कि इस बार गाजीपुर लौटकर वह लाचार हो अभागिनी कमला को अपनी विवाहिता स्त्री के रूप में ग्रहण करेगा। इस प्रकार हेमनलिनी से अपना हर तरह का विच्छेद होने से पहले सच्ची घटना को पूरी तरह से पत्र द्वारा प्रकट कर वह विदा हो जायगा।

चिट्ठी लिखकर उसने लिफाफे में बन्द कर दिया, किन्तु ऊपर किसी का नाम नहीं लिखा, भीतर भी किसी के नाम का सम्बोधन नहीं। सन्ध्या के समय रमेश ने चिट्ठी को हाथ में ले चिरपरिचित गली के भीतर काँपती छाती और काँपते पैरों से प्रवेश किया। दर्वाजे के पास आकर उसने देखा, कि दर्वाजा बन्द है, ऊपर की ओर देखा सब खिड़कियाँ बन्द हैं, मकान में सन्नाटा और अन्धेरा है।

तब भी रमेश ने दर्वाजे पर थपकी दी। दो-चार बार थपकी देने पर भीतर से एक बैरा दर्वाजा खोलकर बाहर आया। रमेश ने पूछा, "कौन है, सुक्खन ?"

बैरा ने कहा, "हाँ, बाबू !"

रमेश, "बाबू कहाँ गये हैं ?"

बैरा, "दीदी को लेकर पच्छिम हवा खाने गये हैं।"

रमेश, "कहाँ गये हैं ?"

बैरा "यह मैं नहीं कह सकता।"

रमेश, "साथ में कौन-कौन गया है ?"

बैरा, "नलिन बाबू साथ में हैं।"

रमेश, "यह नलिन बाबू कौन हैं ?"

बैरा, "यह मैं नहीं जानता।"

रमेश पूछकर समझ गया, कि नलिन बाबू कोई युवा पुरुष हैं, कुछ दिन से इस घर में आते-जाते हैं। यद्यपि रमेश हेमनलिनी की आशा का त्याग करके ही जा रहा था, तथापि नलिन बाबू के प्रति उसके मन में सद्भाव नहीं उत्पन्न हुआ।

रमेश—तेरी दीदी का शरीर कैसा है ?

बैरा ने कहा, "उनका शरीर तो अच्छा है।"

सुक्खन बैरा ने समझा था कि इस समाचार से रमेश बाबू निश्चिन्त और सुखी होंगे। अन्तर्यामी ही जानते हैं, सुक्खन बैरा ने गलत समझा।

रमेश, "मैं ऊपर के घर में जाना चाहता हूँ।"

बैरा धुआँ फेंकता हुआ किरासन का डब्बू लेकर रमेश को ऊपर ले गया। रमेश भूत की तरह हर कोठरी में एक बार घूम आया। एक कुर्सी चुनकर उस पर बैठ गया। देखा, कि चीज-वस्तु घर की सजावट, सब पहले ही के समान है, बीच में यह नलिन बाबू कहाँ से कूद पड़े। संसार में किसी के अभाव से अधिक दिन तक शून्यता नहीं रहती। जिस खिड़की में एक दिन हेमनलिनी के पास खड़े हो शान्त बरसात के श्रवण के सूर्यास्त आभा में दोनों हृदयों का मिलन मण्डित हुआ था—उस खिड़की में क्या अब सूर्य की आभा नहीं आती ? यदि उस खिड़की के पास और कोई युगल मूर्ति को रचना चाहे तो क्या पहले का इतिहास बाधा देकर खड़ा होगा ? चुपचाप उँगली उठाकर उन दोनों को दूर हटा देगा ? दुःखित अभिमान से रमेश का हृदय फूल आया।

दूसरे दिन रमेश इलाहाबाद न जाकर सीधे गाजीपुर चला गया।

कलकत्ते में रमेश प्रायः महीना भर बिताकर आया है। यह एक महीना कमला के लिये कम नहीं है। कमला के जीवन में एक परिणति का स्रोत एका-

एक बड़ी तेजी से बह रहा है। ऊषा की आभा उसे देखते-देखते सवेरे की धूप में खिल उठती है—वैसे ही कमला की नारी प्रकृति थोड़े दिन में ही निद्रा से सचेत हो उठी है। शैलजा से यदि उसका घनिष्ट परिचय न होता, शैलजा के जीवन के प्रेम के प्रकाश की छटा और उत्ताप यदि उसके हृदय पर न पड़ता, तो न जाने कितने दिन उसका आसरा देखना पड़ता।

इस बीच रमेश के आने में देर देख शैलजा के विशेष अनुरोध से चाचा ने कमला के रहने के लिये गंगा के किनारे एक बँगला ठीक किया है थोड़ा-थोड़ा असबाब संग्रह कर मकान रहने योग्य बनाने के लिये तैयारी हो रही है और नई गृहस्थी के लिये जरूरत के मुताबिक नौकर-नौकरानियाँ भी ठीक कर ली गई हैं।

बहुत दिन बाद रमेश जब गाजीपुर आया तब चाचा के मकान में पड़े रहने की कोई जरूरत न रही। एक दिन बाद कमला ने अपनी नई गृहस्थी में प्रवेश किया।

बंगले के चारों ओर बाग लगाने लायक जमीन काफी है। दो लाइन बड़े-बड़े शीशम की कतार के बीच छायादार रास्ता है। जाड़े की सँकरी गंगा हट जाने से गंगा और बंगला के बीच एक नीची रेती निकल आई है—उस रेती में खेतिहरों ने जगह-जगह गेहूँ बो रखे है। बीच-बीच में कहीं तरबूज और खरबूजा लगाए जा रहे हैं। मकान के दाहिनी ओर गंगा की तरफ एक बहुत बड़ा नीम का पेड़ है जिसके नीचे चौतरा बँधा है।

बहुत दिन तक किरायेदार के अभाव से मकान और जमीन अनादर की हालत में पड़ी रहने की वजह से बाग में फूल-पौदे कुछ भी नहीं थे और मकान भी गन्दा हो रहा था। किन्तु कमला को यह सब अच्छा जान पड़ा। गृहणी का पद पाने की आशा से उसकी दृष्टि में सभी सुन्दर जान पड़ा। उसने मन-ही-मन सब ठीक कर लिया कि कौन-सी कोठरी किस काम आयेगी और किस जमीन में कौन-सा पौदा लगाया जायगा। चाचा से सलाह ले कमला ने सारी जमीन बो देने की व्यवस्था की। खुद खड़ी होकर रसोई घर में चूल्हा बनवा लिया और उसके बंगल में भंडार घर आदि जहाँ जैसा परिवर्तन आवश्यक था,

सब ठीक कर डाला। सारे दिन धोना-धाना झाड़ना-बोहारना आदि कामों का अन्त नहीं। चारों ओर कमला का ममत्व फैलने लगा।

घर के कामों में रमणी का सौंदर्य जैसा विचित्र है, जैसा मधुर है, वैसा और किसी का नहीं। रमेश ने आज कमला को उसी काम में लगी देखा—उसने मानों पक्षी को पिंजड़े से निकल कर आकाश में उड़ते देखा। उसके प्रसन्न मुख और उसकी चतुरता ने रमेश के मन में एक नया विस्मय और बिखेर दिया।

इतने दिन रमेश ने कमला को अपनी जगह नहीं देखा—आज उसे जब उसने अपनी नई गृहस्थी के शिखर पर देखा तो सौंदर्य के साथ उसे उसकी महिमा भी दिखाई दी।

कमला के पास आकर रमेश ने कहा, "कमला, यह क्या कर रही हो। थक जाओगी।"

कमला ने अपने काम में लगे हुए जरा रुककर रमेश की ओर देखा, अपने मधुर मुख से मुस्कराई, उसने कहा, "नहीं; मैं न थकूँगी।"

रमेश उसका मतलब समझने आया था। उसे वह पुरस्कार स्वरूप समझ फिर अपने काम में लग गई।

मुग्ध रमेश ने बहाने से फिर उसके पास जाकर कहा, "तुम कुछ खा चुकी हो कमला?"

कमला ने कहा—अच्छी तरह खाया नहीं तो क्या भूखी हूँ? कभी की खा चुकी।

रमेश यह जानता था, फिर भी इस प्रश्न के बहाने कमला का कुछ आदर किये बिना न रहा—कमला भी रमेश के इस प्रश्न से खुश हुई।

रमेश ने फिर बात का सिलसिला जारी रखने के लिये कहा, "कमला, तुम अपने हाथ से कितना काम करोगी—मुझे भी लगा लो न?"

कर्मिष्ठ आदमी में यही एक दोष होता है कि दूसरे के काम पर उसे अधिक विश्वास नहीं होता। उन्हें यह भय होता है कि जिस काम को हम स्वयं न करेंगे, उस काम को दूसरा करके कहीं बिगाड़ न दे। कमला ने हँसकर कहा,

"नहीं, यह सब काम तुम लोगों का नहीं है।"

रमेश ने कहा, "पुरुष बहुत सहनशील होते हैं, इसलिए मर्दों के लिए तुम लोगों की इस अवज्ञा को हम लोग बरदाश्त करते हैं, विद्रोह नहीं करते—तुम्हारी तरह यदि मैं भी स्त्री होता तो खूब झगड़ा करता। अच्छा, चाचा को जो तुम काम में लगा लेती हो—क्या मैं उनसे भी निकम्मा हूँ ?"

कमला ने कहा, "यह मैं नहीं जानती, किन्तु रसोई घर में झाड़ू देने के खयाल से भी मुझे हँसी आती है। तुम यहाँ से हटो—अब बहुत धूल उड़ेगी।"

रमेश ने कमला से बात का सिलसिला जारी रखने के लिए कहा, "धूल तो किसी का विचार करती नहीं, धूल जिस आँख से मुझे देखती है, उसी आँख से तुम्हें भी देखती है।"

कमला, "मेरा काम है, इसलिए धूल सहती हूँ, तुम्हारा काम ही नहीं, तब तुम क्यों बरदाश्त करोगे ?"

रमेश ने नौकरों के कान में आवाज न पहुँचने के खयाल से धीरे से कहा, "काम हो या न हो, तुम जो तकलीफ सहोगी, उसका कुछ हिस्सा मैं लूँगा।"

कमला की कनपटी जरा लाल हो गई—रमेश की बात का कोई जवाब न दे उसने जरा हटकर कहा, "उमेश, यहाँ और एक घड़ा पानी छोड़ दे—देखता नहीं, कितना कीचड़ जमा है। झाड़ू मेरे हाथ में दे तो सही।" यह कहती झाड़ू लेकर वह सफाई में लग गई।

रमेश ने कमला को झाड़ू देते देख कुछ व्यस्त होकर कहा, "आहा कमला यह क्या कर रही हो ?"

इस समय पीछे से आवाज आई—क्या है रमेश बाबू यहाँ बेकाम का कौन सा काम हो रहा है। अँग्रेजी पढ़कर आप लोग मुँह से साम्य का विचार प्रकट किया करते हैं; झाड़ू देने का काम अगर इतना घृणित जान पड़ता है, तब नौकर के हाथ में ही क्यों झाड़ू देते हैं। मैं तो मूर्ख हूँ, अगर आप मुझसे पूछते हैं, तो मैं इन सती माई के हाथ में झाड़ू की प्रत्येक सींक को सूर्य के किरण की तरह उज्ज्वल देखता हूँ। बेटी, तुम्हारा जंगल मैं एक तरह से समाप्त कर आया, अब जरा दिखा दो कि तरकारी कहाँ बोओगी।"

कमला ने कहा, "चाचा जी, जरा सब्र कीजिए, मेरी यह कोठरी साफ हो हो गई है।"

यह कह बंगला घर की सफाई कर कमर में लिपटे आँचल से माथे को ढककर बाहर चाचा के साथ तरकारी के खेत के बारे में सलाह करने लगी।

इसी तरह देखते-देखते दिन समाप्त हो गया, किन्तु घर की सफाई अभी तक ठीक प्रकार से नहीं हुई। बंगला बहुत दिन से 'व्यवहार में नहीं आया था, बन्द था, अब यह देखने में आया कि और दो-चार दिन सफाई न होने और खिड़की-दरवाजे खुला न रखने से मकान रहने लायक न होगा।

लाचार आज सन्ध्या के बाद चाचा के घर में ही आश्रय लेना पड़ा। आज इससे रमेश का मन कुछ दब गया। आज वह दिन भर यही कल्पना करता रहा कि उसके अपने एकान्त के कमरे में शाम को चिराग जलेगा और कमला की सलज्ज मुस्कराहट के सामने रमेश अपने परिपूर्ण हृदय को अर्पण कर देगा। किन्तु और भी दो-चार दिन देर देख रमेश अपने अदालत सम्बन्धी काम से इलाहाबाद चला गया।

दूसरे दिन कमला के नये मकान में शैल का चिउड़े की खिचड़ी का निमंत्रण हुआ। विपिन के भोजन के बाद आफिस जाने पर शैल निमन्त्रण खाने गई। कमला के अनुरोध से चाचा ने सोमवार को स्कूल छोड़ दिया। दोनों ने मिलकर नीम के पेड़ के नीचे रसोई चढ़ा दी, उमेश सहायता देने में व्यस्त रहा।

रसोई और भोजन हो जाने पर चाचा घर में जा दोपहर की नींद लेने लगे और दोनों सखियाँ नीम के पेड़ के नीचे बैठ अपनी सदा की बात-चीत में लग गई। इस बात चीत में मिलकर कमला की दृष्टि में वह नदी का किनारा जाड़े की वह धूप और पेड़ की छाया बहुत मनोहर हो पड़ी। इस मेघ शून्य नीले आकाश में जितनी ऊँचाई पर रेखा के समान चील्ह मँडरा रही है, कमला के हृदय का उद्देश्य और आकांक्षा उतनी ही ऊँचाई पर उड़ने लगी।

सन्ध्या होने से पहले ही शैल घबरा उठी। उसके पति के आफिस से आने का समय है। कमला ने कहा, "क्या एक दिन भी तुम्हारा नियम टूटने वाला नहीं।"

शैल ने इस बात का कोई जवाब न दे जरा हँसकर कमला की ठोडी पकड़कर हिला दिया—इसके बाद उसने बँगले में जाकर अपने पिता को जगाकर कहा, "पिताजी, मैं घर जाती हूँ ।"

कमला की ओर देखकर चाचा ने कहा, "बेटी, तुम भी चलो ।"

कमला ने कहा, "नहीं, मेरा कुछ काम बाकी है, मैं शाम के बाद आऊँगी ।"

चाचा अपने पुराने नौकर और उमेश को कमला के पास छोड़ शैलजा को घर पहुँचाने चले गये । वहाँ उन्हें कुछ काम था, इसलिये कहा, "मुझे लौटने में कुछ देर न होगी ।"

कमला ने जब अपने घर की सफाई समाप्त की, उस समय सूर्य अस्त हुए न थे । वह सिर-से पैर तक एक रैपर ओढ़ नीम के पेड़ के नीचे बैठ गई । दूर उस पार जहाँ दो-तीन बड़ी-बड़ी नावें अपने मस्तूल की सुनहरी धूप में काले पाल ताने खड़ी थीं, उनके पीछे ऊँचे ढहे के पीछे सूर्य अस्त हो गये ।

ऐसे समय उमेश एक बहाने से सामने आ खड़ा हुआ । कहने लगा, "माँ जी, बहुत देर से तुमने पान नहीं खाया—उस मकान से आने के समय मैं पान ले आया हूँ ।" यह कहकर उसने कागज में लपेटे कई बीड़े पान कमला के हाथ में दिये ।

तब कमला को होश आया, कि शाम हो गई है । वह चटपट उठी । उमेश ने कहा, "चक्रवर्ती बाबू ने गाड़ी भेज दी है ।"

कमला गाड़ी पर सवार होने से पहले एक बार बँगले की कोठरियों को देखने के लिये भीतर गई ।

बड़े कमरे में जाड़े के दिन में आग जलाने के लिये एक आतिशदान बना हुआ था । उसी से सटे ताक पर किरासिन की रोशनी जल रही थी । उसी ताक पर पान की पुड़िया रख वह कुछ और देखने जा रही थी । इसी समय एकाएक कागज में लिपटा रमेश के हाथ से अपना नाम लिखा एक कागज उसे दिखाई दिया ।

उमेश से कमला ने पूछा, "यह कागज तुमने कहाँ पाया ?"

उमेश ने कहा, "बाबू के कमरे के कोने में पड़ा था, झाड़ू देने के समय उठा लाया।"

कमला उस कागज को खोलकर पढ़ने लगी।

हेमनलिनी को उस दिन रमेश ने विस्तार के साथ जो चिट्ठी लिखी थी, यह वही चिट्ठी है। शिथिल स्वभाव रमेश से वह कब गिर गई, इसकी उसे कोई खबर नहीं।

कमला ने चिट्ठी समाप्त किया। उमेश ने कहा, "माँ जी, इस तरह चुपचाप खड़ी क्यों हो ! रात हो रही है।"

मकान सन्नाटा था। कमला के मुँह की ओर देख उमेश डरा। कहने लगा, "माँ जी, मेरी बात सुन रही हो ? घर चलो रात हो गई।"

कुछ देर बाद चाचा के नौकर ने आकर कहा, "माँ जी गाड़ी बहुत देर से खड़ी है। चलिये, हम लोग चलें।"

बीस

शैलजा ने पूछा, "ऐजी, आज तुम्हारी तबियत कैसी है ? क्या सिर दर्द है ?"

कमला ने कहा, "नहीं तो चाचाजी दिखाई नहीं देते, कहाँ गये ?"

शैल ने कहा, "स्कूल में छुट्टी है—दादी को देखने के लिये माँ ने उन्हें इलाहाबाद भेज दिया है। कुछ दिन से दादी की तबियत अच्छी नहीं है।"

कमला ने पूछा, "वह कब आयेंगे ?"

[illegible]

अगर शैल से कमला सब बातें कह सकती, तो उसकी तबियत हलकी होती—किन्तु कहने लायक बात नहीं है। "जिसे अब तक मैं अपना पति समझती थी वह मेरा पति नहीं है।" इस बात को वह किससे कहे। शैल से तो किसी तरह भी कह नहीं सकती।

कमला अपने सोने की कोठरी का दरवाजा बन्द कर चिराग की रोशनी में एक बार रमेश की वही चिट्ठी लेकर बैठी। चिट्ठी जिसके उद्देश्य से लिखी गई है, उसका न नाम है और न पता। किन्तु वह स्त्री है, रमेश से उसके विवाह का प्रस्ताव हुआ था और कमला के कारण ही उसका सम्बन्ध टूट गया; चिट्ठी से यह बातें साफ समझ में आ जाती हैं। जिसको चिट्ठी लिखी गई है, रमेश उसी से प्रेम करता है और उसे अपना हृदय दे चुका है। दैवी घटनावश न जाने कहाँ से कमला आकर उसकी गर्दन पर सवार हो गई; इस अनाथ के प्रति दयाकर अपने प्रेम के बन्धन को वह लाचार तोड़कर सदा के लिये उससे अलग होने को तैयार है—यह बात भी चिट्ठी से प्रकट होती है।

उस दिन की रेती में रमेश की पहली मुलाकात से लेकर गाजीपुर आने तक की सब घटनाओं की याद कमला के मन-ही-मन जाग उठी—जो छिपा था, वह आज स्पष्ट हो गया।

रमेश सदा से उसे पराई स्त्री समझता है और सोच-समझकर घबराता है, कि उसे लेकर वह क्या करे, इधर कमला निश्चिन्त मन से उसे पति समझ बिना किसी संकोच के उसके साथ चिर-स्थायी गृहस्थी बसाने चली है; उसकी लज्जा कमला को बार-बार गर्म सूजे की तरह छेदने लगी। रोज-रोज की विचित्र घटनाओं को यादकर वह मारे लज्जा के मानो जमीन में धँसी जा रही है। यह लज्जा उसके जीवन के साथ मिलकर एक हो गई—इससे किसी तरह भी उसका उद्धार नहीं।

बन्द दर्वाजे को खोल कमला खिड़की राह से बाहर निकल गई। अँधेरी जाड़े की रात काला आकाश काले पत्थर की तरह ठंडा है; तारे साफ चमक रहे हैं।

सामने नाटे-नाटे कलमी आमों की छाया जमीन के अन्धकार को और बढ़ा रही है। कमला किसी तरह कुछ भी सोच समझ नहीं सकी। वह ठंडी घास पर बैठ गई और लकड़ी की मूर्ति की तरह काठ हो रही—लेकिन उसकी आँखों से एक बूँद भी आँसू न निकला।

नहीं कहा जा सकता कि इस तरह कब तक बैठी रहती—किन्तु कड़ी ठंडक ने उसकी छाती हिला दी—उसका सारा शरीर थर-थर काँपने लगा। बहुत रात को कृष्ण पक्ष के चन्द्रोदय ने जब सन्नाटे ताड़ों के बगीचे के अन्धकार के एक टुकड़े हिस्से को काट दिया, तब कमला ने धीरे-धीरे कोठरी में जाकर दर्वाजा बन्द कर लिया।

सवेरे कमला ने आँख खुलते ही देखा, कि शैल उसकी चारपाई के पास खड़ी है। बहुत दिन चढ़ा समझकर लज्जित कमला चटपट बिछौने पर उठ बैठी।

शैल ने कहा, "नहीं जी, तुम उठो नहीं, थोड़ा और सो लो—निश्चय तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं है। तुम्हारा मुँह बहुत सूखा-सूखा दिखाई दे रहा है। आँख के नीचे काला पड़ गया है। क्या हुआ है जी, मुझसे कहो न।" यह कह कमला के पास बैठकर शैलजा ने उसके गले में अपनी बाँह डाल दी।

कमला की छाती फूलने लगी—उसके आँसू रोके नहीं रुकते थे। शैल के कन्धे पर सिर झुकाते ही उसके रुलाई फूट पड़ी। शैल ने कुछ न कहकर उसे अपने दोनों हाथों से लिपटा लिया।

कुछ देर बाद कमला एकाएक शैलजा क हाथों से निकलकर उठ खड़ी हुई—आँख पोंछकर जोर से हँसने लगी। शैल ने कहा, "रहने दो, रहने दो, अब हँसने की जरूरत नहीं। मैंने बहुतेरी लड़कियाँ देखीं, तुम्हारी जैसी दब्बू लड़की मैंने नहीं देखी। किन्तु तुम समझती हो, कि मुझसे सब छिपा लोगी—मुझे ऐसी बेवकूफ न समझना। तो फिर कहूँ? रमेश ने इलाहाबाद जाने के बाद से तुम्हें कोई चिट्ठी नहीं लिखी; इसी पर तुम चिढ़ी हो—मानकर बैठी हो, किन्तु तुम्हें भी समझना चाहिये, कि वह वहाँ काम से गये हैं, दो दिन में आवेंगे ही—इस बीच उन्हें कुछ समय नहीं मिला, इससे तुम इतनी खफा हो

गई हो । छि: ! किन्तु मैं यह भी मानती हूँ जो, तुम्हें तो आज मैं इतना उपदेश दे रही हूँ— मैं होती, तो मैं भी ऐसा ही कर बैठती । ऐसी झूठ-मूठ की रुलाई लड़कियों को बहुत रोनी पड़ती है । फिर जब यह रुलाई दूर होगी और हँसी आ जायगी, तब कुछ भी याद न रहेगा—यह कहती हुई कमला को छाती के पास खींच शैल ने कहा, "आज तुम सोच रही हो, कि रमेश बाबू को कभी माफ न करोगी, क्यों यही न ? अच्छा सच कहो—"

कमला ने कहा, "हाँ सच कहती हूँ ।"

शैल ने कमला के गाल पर प्यार का थप्पड़ लगाकर कहा, "धत् ! यह बात है । अच्छा मैं भी देखूँगी बाजी लगा लो ।"

कमला की बातचीत होने के बाद शैल ने इलाहाबाद में अपने बाप को चिट्ठी लिखी । उसमें लिख दिया, "कमला रमेश बाबू की कोई चिट्ठी-पत्री न पाने के कारण चिन्तित है । एक तो बेचारी नई-नई विदेश आई है, उस पर रमेश बाबू उसे जब-तब अकेली छोड़ जाते हैं और पत्र भी नहीं लिखते; इससे उसको जितना कष्ट है, उसे जरा समझ कर देखो । क्या उनका इलाहाबाद का काम खतम न होगा ? काम सभी को होता है, किन्तु क्या काम के कारण दो लाइन चिट्ठी लिखने की भी फुरसत नहीं मिलती ।"

चाचा ने रमेश से मुलाकात कर अपनी कन्या के पत्र का विशेष अंश सुनाकर उन्हें धिक्कारा ।

कमला की ओर रमेश का मन पूरी तरह से आकृष्ट हो गया था, यह सही है, किन्तु आकृष्ट होने के कारण ही उसकी दुविधा और बढ़ गई ।

इस दुविधा में पड़कर रमेश इलाहाबाद से लौट नहीं रहा है । इसी बीच उसने चाचा से शैल की चिट्ठी का हाल सुना ।

चिट्ठी से वह अच्छी तरह समझ गया, कि कमला रमेश के लिये विशेष उद्वेग प्रकट कर रही है— वह स्वयं लज्जा के मारे लिख नहीं सकी ।

इससे रमेश की दुविधा की दो शाखाएँ देखते-देखते एक होकर मिल गईं । अब अकेले रमेश के सुख-दुःख की बात तो है नहीं, कमला भी रमेश के लिए खेद करती है । विधाता ने [illegible] मिलाया ही नहीं, दोनों का

मन भी एक कर दिया है।

यह सोचकर रमेश जरा भी देर न कर कमला को एक पत्र लिखने बैठ गया। लिखा 'प्रियतमासु'—

कमला तुमको जो यह सम्बोधन किया, उसे पत्र लिखने की एक प्रचलित पद्धति न समझना। यदि मैं तुम्हें संसार में सबसे अधिक प्रिय न समझता तो कभी भी प्रियतमा के नाम से सम्भाषण न करता। यदि तुम्हारे मन में कभी कोई सन्देह हुआ हो, यदि मैंने कभी तुम्हारे कोमल हृदय को दुखाया हो, तो आज मैं सच्चे रूप में तुम्हें जो प्रियतमा कह रहा हूँ, उससे तुम्हारा सब संशय और सब वेदनाएँ घुल जायेंगी। इससे बढ़कर और तुम्हें विस्तार के साथ क्या लिखूँ अब तक मेरे कितने ही आचरण तुम्हारे लिये निश्चय दुःखदायी हुए होंगे उससे यदि तुम मन-ही-मन मेरे विरुद्ध अभियोग लगाओ, तो मैं प्रतिवादी होकर तुम्हारी बात को कभी न काटूँगा—में केवल इतना ही कहूँगा, कि आज से तुम मेरी प्रियतमा हो। तुमसे बढ़कर प्रिय मेरे लिये और कोई नहीं। इन सबसे भी यदि मेरे अपराध का, सब असंगत आचरणों का आखिरी जवाब न मिले तो फिर किसी तरह कुछ हो नहीं सकता।

"अतएव कमला, आज तुम्हें प्रियतमा सम्बोधन कर मैं अपने दोनों के बीच के अतीत के संशय को दूर करता हूँ, यह प्रियतमा सम्बोधन कर मैं अपने दोनों के प्रेम को भविष्यत के लिये शुरू करता हूँ। तुमसे मेरी बहुत-बहुत विनती है, कि तुम आज से मेरे प्रियतमा शब्द पर पूर्ण विश्वास करो। अगर इसे तुम ठीक समझकर अपने मन में ग्रहण करो, तो कोई संशय रखने और कुछ पूछने की आवश्यकता न होगी।

"इसके बाद, मुझे इस बात के पूछने का साहस नहीं होता, कि मैंने तुम्हारा प्रेम पाया या नहीं; मैं यह पूछूँगा भी भी नहीं। मेरे इस अनुच्चारित प्रश्न का अनुकूल उत्तर एक दिन तुम्हारे हृदय से हमारे हृदय में निःशब्द पहुँच जायगा; इसमें मैं जरा भी सन्देह नहीं करता। यह मैं अपने प्रेम के भरोसे कह रहा हूँ—मैं योग्यता पाकर अहंकार नहीं करता, किन्तु मेरी साधना क्यों न सार्थक होगी।

"मैं अच्छी तरह समझता हूँ, कि मैं जो लिखता हूँ, सहज क्यों नहीं हो रहा है—वह पढ़ने में रचना के समान जान पड़ता है—इच्छा होती है, कि इस पत्र को फाड़कर फेक दूँ। किन्तु जो पत्र मन के मुताबिक होगा, उसका अभी लिखा जाना सम्भव नहीं। क्योंकि पत्र दो आदमियों की चीज है—केवल एक ओर से पत्र लिखा जाता है, तो उस पत्र में ठीक तरह से सब बातें नहीं लिखी जा सकती—तुम्हारे और हमारे जिस दिन मन की पहचान बाकी न रहेगी, उसी दिन पत्र के मुताबिक पत्र लिख सकूँगा। आमने-सामने दो दर्वाजों के खुले रहने पर ही उसमें बिना बाधा के हवा आती-जाती है। कमला प्रियतमा, मैं तुम्हारे हृदय को कब पूरी तरह से खोल सकूँगा ?

"इन सब बातों की मीमांसा धीरे-धीरे क्रम-क्रम से होगी—व्यस्त होने से कोई फल नहीं, जिस दिन तुम्हें मेरा यह पत्र मिलेगा, उसके दूसरे दिन सवेरे ही मैं गाजीपुर पहुँच जाऊँगा। तुमसे मेरा इतना ही अनुरोध है, कि गाजीपुर पहुँचने पर मैं अपने बँगले में ही तुम्हें देख पाऊँ। बहुत दिन घर-छोड़ुआ की तरह बीते, अब मुझे धीरज नहीं है—अब इस बार मैं अपने घर में प्रवेश करूंगा—हृदयलक्ष्मी को गृहलक्ष्मी के रूप में देखूँगा। उसी समय दूसरी बार हम लोगों की शुभदृष्टि होगी। हम लोगों की वह प्रथम बार की शुभदृष्टि तुम्हें याद है ? वही चाँदनी रात में, उस नदी के किनारे, सन्नाटी रेता में ! वहाँ छत नहीं थी, दीवार नहीं थी, माता-पिता भाई या आत्मीय पड़ोसियों का कोई सम्बन्ध नहीं था—यह घर से एकदम बाहर की बात है। मानो वह स्वप्न था—वह कुछ भी नहीं था। इसलिये और एक दिन स्निग्ध और निर्मल प्रातःकाल की रोशनी में घर के भीतर सचमुच उस शुभदृष्टि को सम्पूर्ण कर लेने की अपेक्षा है। पुण्य पौष महीने की प्रातःकाल में अपने घर में तुम्हारी सरल और हास्य मूर्ति को चिर-जीवन की तरह अपने हृदत में अंकित कर लूँगा ; उसके लिये मैं आग्रह से परिपूर्ण हूँ। प्रियतमे, मैं तुम्हारे हृदय के द्वार का अतिथि हूँ—मुझे लौटाना नहीं।

प्रसादभिक्षु—रमेश।

इक्कीस

शैल ने मुर्झाई हुई कमला को कुछ उत्साहित करने के लिये कहा, "आज अपने बँगले न जाओगी ?"

कमला ने कहा. "नहीं अब जरूरत नहीं।"

शैल, "तुम्हारे घर की सजावट पूरी हो गई ?"

कमला, "हाँ जी, पूरी हो गई ?"

कुछ देर बाद फिर शैल ने आकर कहा, "तुम्हें एक चीज दूं, तो बोलो क्या दोगी ?"

कमला, "मेरे पास क्या है दीदी ?"

शैल, "क्या कुछ भी नहीं ?"

कमला, "कुछ नहीं।"

शैल ने कमला के सिर में ठुमकी देकर कहा, "धत्, जो कुछ था भी जान पड़ता है, कि वह सब तुमने किसी एक को अर्पण कर दिया है। देखो, यह क्या है।" कहते हुए शैल ने आँचल के भीतर से एक पत्र निकाला।

लिफाफे पर रमेश की लिखावट देख कमला का मुँह उसी समय पाला पड़ गया—उसने जरा मुँह फेर लिया।

शैल ने कहा, "वाह जी, अब मान करने से काम न चलेगा, बहुत हो गया। इधर पत्र लूट लेने के लिये भीतर से मन छटपटा रहा है—मुंह खोलकर तुम्हारे बिना मांगे मैं न दूँगी—कभी न दूंगी···देखूं कब तक तुम्हारी जिद रहती है।"

इसी समय उमा साबुन के एक बक्स में डोरी बांध खींचती हुई आकर बोली, "मांसी ग-ग।"

कमला चटपट उसको गोद में उठा बराबर चूमती हुई सोने की कोठरी में चली गई ? उमा अपनी गाड़ी चलाने में बाधा पड़ने की वजह चीखने से लगी—किन्तु कमला ने किसी तरह नहीं छोड़ा—उसे कोठरी में ले जाकर तरह-तरह की बकवाद से उसका मनोरंजन करने की चेष्टा करने लगी।

शैल ने आकर कहा, "मैं हारी—तुम्हारी जीत हुई—मैं ऐसा न कर सकती। तुम धन्य हो। यह लो पत्र, मैं क्यों नाहक अभिशाप लूँ।"

यह कह वह बिछौने पर पत्र फेंक उमा को गोद से छुड़ाकर ले गई।

लिफाफे को जरा इधर-उधर देख कमला ने खोला—पहली दो-चार लाइनों पर दृष्टि पड़ते ही उसका चेहरा लाल हो उठा, मारे लज्जा के उसने पत्र फेंक दिया। पहले धक्के की प्रबल वितृष्णा के आक्षेप को संभाल फिर पत्र को जमीन से उठाकर पढ़ा। नहीं मालूम, कि सारी बातें वह समझी या नहीं, किन्तु उसके मन में ऐसा जान पड़ा, मानो वह हाथ में कुछ कीचड़ लिए है। उसने फिर पत्र फेंक दिया। जो आदमी उसका पति नहीं, उसी के साथ गृहस्थी चलानी होगी, इसीसे यह अभिमान है। रमेश ने जान-बूझकर इतने दिन बाद उसका अपमान किया। गाजीपुर आने पर रमेश की ओर कमला ने जो अपना हृदय बढ़ा दिया था, वह रमेश समझकर या अपना पति समझकर, रमेश ने ऐसा ही लक्ष्य किया था, इसी से अनाथ के प्रति दयाकर उसने आज यह प्रेम-पत्र लिखा है। भ्रम से उसने रमेश के आगे जो प्रकट किया था, उसे आज कमला कैसे लौटा ले—किस तरह! इतनी लज्जा और इतनी घृणा कमला में क्यों हुई। उसने जन्म पाकर किसका क्या अपराध किया है। अब घर के नाम से मानो कोई भयानक जानवर कमला को खा जाने के लिए आ रहा है—इससे कमला कैसे रक्षा पाये। दो दिन पहले कमला ने स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं की थी कि रमेश उसके लिए इतनी बड़ी विभीषिका बन जायगा।

इसी समय दरवाजे के पास आकर उमेश खाँसा। कमला की ओर से कोई इशारा न पाकर उसने कहा, "माँ जी आज सिधुबाबू के यहाँ लड़की के विवाह में कलकत्ते से एक रासधारियों का दल आया है।"

कमला ने कहा, "ठीक तो है उमेश, तू जाकर रास देख।"

उमेश, "क्यों कल सवेरे के लिए फूल तोड़कर लाना है?"

कमला, "नहीं-नहीं कोई जरूरत नहीं।"

उमेश चला जा रहा था, तब कमला ने एकाएक उसे आवाज दी; कहा, "अरे उमेश, तू रास देखने जा रहा है? यह पाँच रुपये ले।"

उमेश आश्चर्य में आया। रास देखने में पाँच रुपये की क्या जरूरत, यह वह न समझ सका। उसने पूछा, "माँ जी, क्या शहर से तुम्हारे लिए कुछ ले आना है ?"

कमला, "नहीं-नहीं, मुझे कुछ न चाहिए। तू अपने पास रख, तेरे काम आयेगा।"

बेवकूफ उमेश जाने को तैयार हुआ, तब कमला ने फिर उसे बुलाकर कहा, "उमेश तू इसी कपड़े से रास देखने जायगा—तुझे लोग क्या कहेंगे ?"

उमेश को इस बात का खयाल भी न था कि लोग उमेश की सजावट पर विशेष ध्यान देंगे उसमें त्रुटि होने से आलोचना करेंगे। इसलिये धोती का सफेदी और दुपट्टे के अभाव की ओर उसका ध्यान भी नहीं था। कमला का प्रश्न सुन उमेश कुछ न बोल सिर्फ हँस दिया।

कमला ने अपना जोड़ा धोती उमेश के आगे फेंककर कहा, "यह ले, पहन ले।"

धोती का जोड़ा किनारा देख उमेश बहुत प्रसन्न हो उठा। उसने कमला के पैरों पर गिर के प्रणाम किया और हँसी रोकने की वृथा चेष्टा से मुँह बनाता चला गया। उमेश के चले जाने पर कमला आँख के आँसू पोंछ खिड़की के पास चुपचाप खड़ी हो गई।

शैल ने कोठरी में आकर कहा, "कमल" मुझे अपनी चिट्ठी न दिखायेगी ?

कमला के आगे शैल ने कोई बात छिपाई नहीं थी—इससे शैल ने इतने दिन बाद मौका पाकर यह बात कहीं।

कमला ने कहा, "वह पड़ी है दीदी, देखो न।" कहकर उसने जमीन पर पड़ी चिट्ठी की ओर इशारा किया। शैल ने आश्चर्य में आकर सोचा, "वाह रे अभी तक क्रोध नहीं गया।" जमीन से चिट्ठी उठाकर शैल सब पढ़ गई। पत्र में प्रेम की बातें बहुत हैं सही, फिर भी यह किस ढंग का पत्र है। आदमी अपनी स्त्री को ऐसा पत्र लिखता है ! यह न जाने कैसी लिखावट है। शैल ने पूछा, "अच्छा, क्या तुम्हारे पति उपन्यास लिखते हैं।"

"पति" शब्द सुनते ही क्षणभर में कमला का शरीर और मन संकुचित हो गया। उसने कहा, "मालूम नहीं।"

शैल ने कहा, "तब तुम आज बंगले में ही रहोगी ?"

कमला ने सिर हिलाकर प्रकट किया कि हाँ।

शैल ने कहा, "मैं भी आज शाम तक तुम्हारे साथ रह सकती, किन्तु जानती हो जी, आज नरसिंह बाबू की बहू आयेंगी। बल्कि माँ तुम्हारे साथ जायेंगी।"

कमला ने व्याकुलता के साथ कहा, "नहीं-नहीं" माँ जाकर क्या करेंगी। वहाँ नौकर तो है ही।"

शैल ने हँसकर कहा, "और तुम्हारा बाहन उमेश भी है, तुम्हें डर काहे का ?"

उस समय उमा कहीं से एक पन्सिल पाकर दीवार में जहाँ-तहाँ घिसने लगी और चिल्ला-चिल्लाकर अनजान भाषा में न जाने क्या बक रही थी। वह अपनी समझ में पढ़ रही थी। शैल उसकी इस साहित्य-रचना से उसे जबर्दस्ती खींच लाई—वह जोर से चीखकर आपत्ति मचाने लगी। कमला ने कहा, "तुझे एक बढ़िया चीज दूँगी, आओ।"

यह कह उसने उसे उठा कोठरी में ले जाकर बिछौने पर पटककर खूब खेलाया। जब उसने "बढ़िया चीज" माँगी, तब कमला ने अपना बाक्स खोल एक जोड़ा सोने का ब्रेसलेट निकाला। यह दुर्लभ खिलौना पाकर उमा बहुत खुश हुई। माँसी ने उसके हाथ में पहना दिया, वह डगमग करती हुई ढीला गहना सँभालने के लिये दोनों हाथ उठाये बड़े गर्व से अपनी माँ को दिखाने आई। माँ ने व्याकुलता के साथ उसे लौटाने के खयाल से ब्रेसलेट उतार लिया—कहा, "कमला यह तुम्हारी कैसी बुद्धि है ? ऐसी चीजें उसके हाथ में क्यों देती हो ?"

इस दुर्व्यवहार से उमा बहुत जोर से चीख उठी। कमला ने पास आकर कहा, "दीदी" यह ब्रेसलेट का जोड़ा मैंने उसको दिया है।"

शैल ने चकित होकर कहा, "तुम पागल हो क्या ?"

कमला ने कहा, "तुम्हें मेरे माथे की कसम दीदी, यह ब्रेसलेट का जोड़ा तुम मुझे लौटा न सकोगी। इसको तोड़वाकर उमिया को हार बनवा देना।"

शैल ने कहा, "सच कहती हूँ, तुम्हारे जैसी पागल लड़की मैंने नहीं देखी।"

यह कहकर वह कमला के गले से लिपट गई। कमला ने कहा, "आज तुम्हारे घर से तो मैं चली दीदी—बड़े सुख से रही—ऐसा सुख मैंने अपने जीवन में कभी नहीं पाया।" यह कहते-कहते उसकी आँखों से झर-झर आँसू गिरने लगे।

शैल ने भी अपने उमड़ते हुए आँसू को रोककर कहा, "यह तुम्हारी आदत है कमल, मानो बहुत दूर जा रही हो। तुम जैसे सुख में रहीं, उसे मैं खूब समझती हूँ—अब तुम्हारी सब बाधाएँ दूर हुई, सुख से अपने घर में अकेली राज्य करो—कभी-कभी हम लोगों के आने पर ख्याल रखना।"

कमला ने इसके जवाब में हाँ-ना कुछ नहीं कहा।

बंगले में जाकर कमला ने देखा कि उमेश आ गया है। बोली, "तू कहाँ था रास देखने न जायगा?"

उमेश बोला, "तुम जो आज यहाँ रहोगी—"

कमला ने कहा—"अच्छा-अच्छा, तुझे इसमें काहे की चिन्ता है। तू रास देखने जा—यहाँ बिशुन है न। जा देर न कर।

उमेश, "अभी रास में बहुत देर है।"

कमला, "होने दे, विवाह के घर में खूब धूम-धाम होता रहता है, अच्छी तरह देख के आना, जा।"

इस बारे में उमेश को अधिक उत्साहित करने की जरूरत नहीं थी। उसे जाने को तैयार देख कमला ने बुलाकर कहा, "चाचाजी के आने पर तू—"

इतना ही कह वह चुप हो गई, आगे कुछ कह न सका। उमेश उसके मुँह की ओर देखता ही रह गया। कमला ने कुछ देर सोचकर कहा, "याद रखना" चाचाजी तुझे प्यार करते हैं—तुझे जब जिस चीज की जरूरत पड़े, मेरा प्रणाम कहकर तू उनसे माँग लेना; वह देंगे—उनसे मेरा प्रणाम कहना

न भूलना—समझा ?

उमेश इस सिखावन का कोई अर्थ न समझकर "अच्छा" कह वहाँ से चला गया।

शाम को बिशुन ने पूछा, "माँजी, कहाँ जा रही है ?"

कमला ने कहा, "गंगा स्नान करने जा रही हूँ।"

बिशुन ने कहा, "मैं साथ चलूँ ?"

कमला ने कहा "नहीं, तू घर का ख्याल रख।" यह कहती हुई वह उसके हाथ में अनायास ही एक रुपया देकर चली गई।

बाईस

एक दिन शाम को हेमनलिनी के साथ एकान्त में चाय पीने की आशा से अन्नदा बाबू उसे ढूँढ़ने के लिये दो मंजिल पर गये। दो मंजिले के बैठने के कमरे में उसे नहीं पाया, सोने की कोठरी में भी वह नहीं थी। बैरा से पूछने पर मालूम हुआ, कि वह कहीं बाहर नहीं गई। तब बहुत हैरानी में पड़ अन्नदा बाबू ऊपरी छत पर गये।

उस समय कलकत्ता शहर के अनेक आकार और आयतन के विस्तृत छतों पर हेमन्त की धूप मलिन पड़ रही है—दिन के अन्त को हलकी हवा इच्छा-नुसार घूम-फिर रही है। हेमनलिनी छत की मुंडेर के पास बैठी है।

अन्नदा बाबू कब उसके पीछे आकर खड़े हो गये इसकी उसे खबर भी नहीं। आखिर जब धीरे-धीरे अन्नदा बाबू ने उसके पास आकर उसके कन्धे पर हाथ रखा, तब वह चौंक उठी और इसके बाद ही उसके चेहरे पर लाली दौड़ गई। हेमनलिनी के चटपट उठने से पहले ही अन्नदा बाबू उसके पास बैठ गये। थोड़ी देर ठहर उन्होंने ठण्डी साँस लेकर कहा, "हेम, इस समय यदि तेरी माँ होती मैं तेरे किसी काम न आया।"

बूढ़े के मुँह से ऐसे करुण वचन सुन हेमनलिनी मानो एक गहरी मूर्छा से एकाएक जाग उठी। उसने बाप के मुँह की ओर देखा। उस चेहरे पर कितना स्नेह, कैसी करुणा, कैसी वेदना है। इन कई दिनों में उनके चेहरे में कुछ परिवर्तन हो गया है। संसार में हेमनलिनी के नाते जैसा अन्धड़ उठा है, उसका सारा वेग अपने ऊपर लेकर वृद्ध अकेला जूझ रहा है—वह कन्या के घायल हृदय के पास बराबर आते हैं—धीरज देने की सब चेष्टाओं को व्यर्थ हुई देख आज हेमनलिनी की माँ उन्हें याद आई है और उनके अपने अक्षय स्नेह के भीतर से ठण्डी साँस उथल रही है—एकाएक हेमनलिनी के आगे आज यह सब बज्र की चमक के समान जान पड़ा। धिक्कार के आघात ने उसे अपने शोक के घेरे से एक मुहूर्त्त में बाहर निकाल दिया। जो पृथ्वी उसके आगे छाया की तरह विलीन हो गई थी,, वह अब सत्य होकर प्रकट हो पड़ी। एकाएक एक क्षण में हेमनलिनी के मन में बहुत लज्जा आ गई। जिस याद में वह एकदम डूबी बैठी थी, उसकी जबरदस्ती अपनी चारों ओर झटकार-फटकार से उसने अपने को मुक्त किया। उसने पूछा, "पिताजी, अब तुम्हारी तबियत कैसी है ?"

तबियत ! तबियत ही तो है आलोचना का विषय है ; उसे अन्नदा कई दिन से एकदम भूल गये थे उन्होंने कहा, "मेरी तबियत ! मेरी तबियत तो बहुत अच्छी है, बेटी ! इस समय मेरा चेहरा जैसा हो गया है, वह तुम्हारी तबियत की चिन्ता में है। हम लोगों का शरीर न जाने कब से टिका हुआ है; हम लोगों का सहज ही कुछ नहीं होता तुम लोग अभी इस दिन की हो, भय होता है, कि कहीं चोट न दे बैठे।" यह कह वह धीरे-धीरे उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे।

हेमनलिनी ने पूछा, "अच्छा पिता जी, माता जी जब मरीं, तो मैं कितनी बड़ी थी ?"

अन्नदा—[illegible] तू [illegible] की थी, कुछ-कुछ [illegible] थी। मुझे अच्छी [illegible] है, तूने पूछा था कि [illegible] कहाँ गई ?" मैंने कहा [illegible] [illegible] के यहाँ गई है। तेरे पैदा होने से पहले ही तेरी माँ ने पिता को

मृत्यु हो चुकी थी, तूने उन्हें देखा भी नहीं। मेरी बात सुन कुछ न समझ सकने के कारण तू मेरा मुँह देखने लगी थी। कुछ देर बाद तू मेरा हाथ पकड़ अपनी माँ की सूनी कोठरी में ले जाने के लिये खींचने लगी। तुझे विश्वास था, उस शून्यता में मैं तुझे उसका कोई पता बता सकूँगा। तू समझती थी कि तेरे पिता में बड़ी शक्ति है, उस समय तेरे मन में यह बात आ ही नहीं सकती थी, कि जो असल बात है, उनमें तेरे पिता बच्चों के समान अनजान और अक्षम हैं। आज भी यही बात याद आती है, कि मनुष्य कितना अक्षम है—ईश्वर ने बाप के मन में स्नेह दिया है, किन्तु क्षमता बहुत कम ही है।

यह कहते हुए उन्होंने हेमनलिनी के माथे पर अपना दाहिना हाथ फेरा।

हेमनलिनी अपने पिता के अल्याणवर्षी काँपते हुए हाथ को अपने एक हाथ से पकड़ दूसरे हाथ से सहलाने लगी। उसने कहा, "माता की मुझे बहुत थोड़ी-सी याद है। मुझे याद है, कि दोपहर के समय वह बिछौने पर लेट किताब पढ़ा करती थीं, मुझे यह बिलकुल ही अच्छा न लगता था, मैं उनसे किताब छीनने की चेष्टा किया करती थी।"

उस समय ऐसी ही पुरानी बातें उठीं माँ कैसी थी, क्या किया करती थी, उस समय क्या होता था ऐसी ही बातचीत में सूर्य अस्त हो गये और आकाश मलिन ताँबे के रंग जैसा हो गया। कलकत्ते में चारों ओर काम का कोलाहल हो रहा है, ऐसे ही समय एक गली के मकान की छत के एक कोने में यह वृद्ध और नवयुवती मिलकर पिता और कन्या स्निग्ध सम्बन्ध को सन्ध्या के आकाश की मलिन छाया में आँसू से तर कर माधुरी में परिणत कर रहे हैं।

इसी समय सीढ़ी पर योगेन्द्र के पैर की आवाज सुनने से दोनों की बातचीत रुक गई और चौंक कर दोनों ही खड़े हो गए। योगेन्द्र ने आते ही दोनों की ओर तेज निगाह से देखकर कहा, "आजकल इसी छत पर हेम की सभा बैठती है?"

योगेन्द्र अधीर हो गया था। घर में जो दिन-रात एक शोक की कालिमा छाई रहती थी, उसने उसे प्राय: घर छोड़ुआ-सा बना दिया। फिर मी इष्ट-मित्रों के घर जाने से हेमनलिनी के विवाह के विषय में हर तरह की जवाबदेही

में पड़ना पड़ता था, इससे कहीं जाना भी मुश्किल था। वह केवल यही कहा करता, "हेमनलिनी बहुत बढ़-चढ़ गई है। लड़कियों को अँग्रेजी उपन्यास पढ़ाने से यही दुर्गति होती है। हेम, सोचती है, कि जब रमेश ने उसे परित्याग किया है तब उसे भी अपना हृदय तोड़ डालना चाहिये; इसी से आजकल बड़ी तैयारी के साथ वह हृदय तोड़ रही है। उपन्यास पढ़कर कितनी लड़कियों के भाग्य में प्रेम की निराशा सहने का ऐसा अच्छा सुयोग मिलता है!"

योगेन्द्र के कड़े वचनों से कन्या को बचाने के लिए अन्नदाबाबू बोल उठे, "मैं हेम के साथ कुछ बात-चीत कर रहा था।" मानो वे ही बात-चीत के लिए ले आये थे।

योगेन्द्र ने कहा, "तो क्या चाय के टेबिल पर बातचीत नहीं हो सकती? पिताजी, तुम केवल हेम को पागल बना देने की चेष्टा कर रहे हो। इस तरह तो मकान में रहना भी कठिन है।"

चौंककर हेमनलिनी ने पूछा, "पिता जी, अभी तक तुमने चाय नहीं पी?"

योगेन्द्र, "चाय कुछ कवि की कल्पना नहीं, जो सन्ध्या समय के आकाश की सूर्यास्त की आभा से टपक पड़ेगी। छत के कोने में बैठने से चाय का प्याला न भरेगा, क्या यह भी समझाना पड़ेगा?"

अन्नदा हेमनलिनी की लज्जा दूर करने के लिये जल्दी से बोल उठे, "मेरी इच्छा है कि आज मैं चाय न पीऊँगा।"

योगेन्द्र, "क्यों पिता जी, क्या तुम सब लोग तपस्वी ही हो जाओगे। तब मेरी क्या दशा होगी। वायु-आहार मुझसे हो न सकेगा।"

अन्नदा, "नहीं-नहीं, तपस्या की बात नहीं हो रही है। कल रात मुझे अच्छी नींद नहीं आई, उसीसे विचार कर रहा था कि आज चाय न पीकर देखूँ कैसी तबियत रहती है।

वास्तव में हेमनलिनी से बात करने के समय भरे हुये चाय के प्याले की ध्यान-मूर्ति ने अनेक बार अन्नदाबाबू को लुभाया है, किन्तु आज वे उठ नहीं सके। बहुत दिन बाद आज हेमनलिनी उनसे अच्छी तरह बात-चीत की है, उस एकान्त छत पर दोनों में खूब बात-चीत हुई है, ऐसे गहरे भाव से और

कभी बातें नहीं हुईं। इस बात-चीत को एक जगह से दूसरी जगह खींच ले जाने में ठीक न होगा—हटाने की चेष्टा करने से ही डरी हुई हरिणी की तरह वह भागेगी। इसलिये आज अन्नदाबाबू ने चाय के प्याले की बुलाहट की भी उपेक्षा की है।

हेमनलिनी को बात का विश्वास नहीं हुआ कि अन्नदाबाबू चाय पीना बन्दकर अनिद्रा की चिकित्सा कर रहे हैं। उसने कहा, "चलो पिताजी, चाय पीयोगे।" उसी समय अन्नदाबाबू अनिद्रा की आशंका को भूल चाय के टेबिल की ओर लपके।

चाय पीने की कोठरी में पहुँचते ही अन्नदाबाबू ने देखा कि वहाँ अक्षय बैठा हुआ था। उनका मन कुछ हिचक उठा। उनके मन में आया कि हेमनलिनी का मन आज कुछ अच्छा हुआ है, किन्तु अक्षय को देखते में वह फिर विकल हो उठेगी—फिर भी कोई उपाय नहीं। क्षण भर ही हेमनलिनी भी कमरे में आई। अक्षय उसे देखते ही उठ खड़ा हुआ और बोला, "तब योगेन्द्र, मैं जाता हूँ।"

हेमनलिनी ने कहा, "क्यों अक्षय बाबू, क्या आपको कोई काम है? एक प्याला चाय पीते जायें।"

हेमनलिनी की इस अभ्यर्थना से घर के सभी लोग आश्चर्य में आए अक्षय ने फिर बैठकर कहा, "आपके न रहते मैं दो प्याले चाय पी चुका हूँ। दबाव पड़ने से और भी दो प्याले पी सकता हूँ, यह कैसे कहूँ?"

हेमनलिनी ने हँसकर कहा, "चाय के प्याले के लिए तो आपसे कभी जिद नहीं की गई।"

अक्षय ने कहा, "नहीं, अच्छी चीज को तो मैं कभी लौटा ही नहीं सकता; विधाता ने मुझे इतनी बुद्धि दी है।"

योगेन्द्र ने कहा, "इस बात को याद रखकर किसी दिन अच्छी चीज़ तुम्हें न लौटा दे। मैं यही आशीर्वाद करता हूँ।"

बहुत दिन बाद अन्नदा बाबू के टेबिल पर इस तरह [illegible] [illegible] [illegible] उठी। तथापि हेमनलिनी [illegible] [illegible] [illegible]

की आवाज बीच-बीच में बातचीत से भी ऊँची जाने लगी। उसने हँसी में अन्नदा बाबू से कहा, "पिताजी, जरा अक्षय बाबू की बातें देखिये—कई दिन से तुम्हारी गोली न खाकर भी ये अच्छे हैं। अगर उस पर कुछ भी कृतज्ञता होती, तो अब तक माथा धर लेता।"

अन्नदा बाबू खूब प्रसन्न होकर हँसने लगे। बहुत दिन बाद आज फिर उनकी गोलियों के डिब्बे पर आत्मीय लोगों का कटाक्ष चला है; इसे वह पारिवारिक स्वास्थ्य का लक्षण समझे थे, उनके मन से एक भाव दूर हो गया।

उन्होंने कहा, "शायद इसी को विश्वास में हस्तक्षेप करना कहते हैं! मेरी गोली खाने वालों में सिर्फ एक अक्षय है, उसे भी तुम लोग भड़काना चाहते हो?"

अक्षय ने कहा, "इसका कोई भय नहीं अन्नदा बाबू, अक्षय को बहकाना जरा कठिन है।"

योगेन्द्र, "नकली रुपये की तरह—तुड़ाने जाने वाले से पुलिस केस की सम्भावना है।"

इस तरह के हँसी-मजाक से अन्नदा बाबू के चाय की टेबिल का भूत मानो बहुत दिन के बाद उतर गया।

आज चाय के टेबिल की सभा जल्दी न उखड़ती—किन्तु आज हेमनलिनी ने ठीक समय से चोटी नहीं की थी, इसलिए चली गई। तब अक्षय को भी एक काम की याद आई और वह भी चला गया।

योगेन्द्र ने कहा, "पिताजी, अब देर करने की जरूरत नहीं—हेमनलिनी के विवाह को ठीक कर डालो।"

अन्नदा बाबू हैरान होकर उसके मुँह की ओर देखते रह गये। योगेन्द्र ने कहा, "रमेश के साथ विवाह सम्बन्ध टूट जाने से समाज में बहुत कानाफूसी चल रही है—इसलिए मैं कहाँ तक लोगों से अकेला झगड़ता रहूँगा। अगर सब बातें खोलकर कहने लायक होतीं, तो झगड़ा करने में मुझे आपत्ति न होती। किन्तु हेम के कारण मुँह खोलकर मैं कुछ कह नहीं सकता। नाहक बात का बतंगड़ करना पड़ता है। अभी उस दिन अखिल को धमकाना पड़ा। सुनता हूँ

कि उसके मन में जो आता है वही कहता है। अगर शीघ्र हेम का विवाह हो जाय तो यह सब बातें खतम हो जावे और मुझे भी आस्तीन खिसकाते हुये लोगों को धमकाते न फिरना पड़े। मेरी बात मानो, अब देर न करो।"

अन्नदा, "विवाह किस के साथ होगा योगेन्द्र ?"

योगेन्द्र—एक ही आदमी तो है। जो मामला हो गया है, और जिसके बारे में बातें उठ रही हैं, उससे पात्र का मिलना मुश्किल है। केवल बेचारा अक्षय रह गया—उसे कोई किसी तरह भी बिगाड़ नहीं सकता। उसे गोली खिलाना चाहो, तो गोली खायगा—विवाह करना चाहो तो, विवाह करेगा।

अन्नदा, "पागल हुये हो योगेन्द्र ! अक्षय से हेम विवाह न करेगी।"

योगेन्द्र, "अगर तुम बीच में न पड़ो, तो मैं उसे राजी कर ले सकता हूँ।"

अन्नदा ने घबरा कर कहा, "नहीं योगेन्द्र, नहीं; तुम हेम को नहीं पहचानते। तुम उसे भय दिखाकर कष्ट पहुँचा कर हैरान कर डालोग। अब उसे कुछ दिन आराम से रहने दो—उस बेचारी ने बहुत कष्ट पाया है, विवाह के लिये अभी बहुत समय है।"

योगेन्द्र ने कहा, "मैं जरा भी कष्ट न दूँगा। जहाँ तक सावधानी और मिठास से काम होगा, उसमें त्रुटि न होगी। तुम क्या समझते हो, क्या मैं झगड़ा किये विना कोई बात कर नहीं सकता ?"

योगेन्द्र अधीर प्रकृति का आदमी है। उस दिन चोटी करके शाम को सामने आते ही योगेन्द्र ने उससे कहा, "हेम तुमसे कुछ बात करनी है।"

बात करनी है, सुनते ही हेम का हृदय काँपा। योगेन्द्र के साथ-साथ वह बैठक के कमरे में आकर बैठ गई। योगेन्द्र ने कहा, "हेम, पिताजी की तबियत कैसी खराब होती जाती है, यह तो तुम भी देखती ही हो ?"

हेमनलिनी के चेहरे पर कुछ उद्वेग छा गया, उसने कुछ न कहा।

योगेन्द्र—मेरा कहना है कि इसका कोई उपाय न करने से वह बदतर बीमार हो जायेंगे।

हेमनलिनी समझ गई, कि उसके पिता की अस्वस्थता का अपराध उसको ही लग रहा है वह सिर नीचा कर उदास मुँह से धोती का किनारा खींचने

लगी।

योगेन्द्र ने कहा—जो होना था, वह हो चुका, उसके बारे में जहाँ तक बात बढ़ेगी, वहाँ तक लज्जा की बात है। अब अगर पिताजी को तन्दुरुस्त करना चाहती हो, तो जहाँ तक शीघ्र हो सके, इन सब अप्रिय बातों को काट फेकना चाहिये।"

यह कह जवाब के आसरे में योगेन्द्र हेमनलिनी के मुँह की ओर चुपचाप देखता रहा।

हेम ने सलज्ज भाव से कहा, "ऐसी सम्भावना तो नहीं है कि मैं इन सब बातों के लिये पिताजी को कुछ विरक्त करूँ।"

योगेन्द्र—मैं जानता हूँ कि तुम ऐसा न करोगी। किन्तु इससे दूसरों का मुह तो नहीं बन्द किया जा सकता।

हेम ने कहा, "तब बताओ, मैं क्या कर सकती हूँ?"

योगेन्द्र—चारों ओर जो तरह-तरह की बातें हो रही हैं, उसे रोकने का एक ही उपाय है।

योगेन्द्र ने जिस उपाय को मन-ही-मन ठहराया है, उसे समझकर हेमनलिनी जल्दी से बोल उठी, "ऐसे समय क्या पिताजी को लेकर पश्चिम घूमने चले जाना ठीक न होगा? दो-चार महीने घूम आने से सब झगड़ा आप ही मिट जायेगा।'

योगेन्द्र ने कहा, "उससे भी काम पूरा न होगा। तुम्हारे मन में कोई क्षोभ नहीं, जब तक पिताजी इस बात को अच्छी तरह समझ न पायेंगे, तब तक उनके मन पर पत्थर चपा रहेगा—तब तक वे कभी अच्छे न रह सकेंगे।"

देखते-देखते हेमनलिकी की दोनों आँखों में आँसू भर आये। इसने चटपट आँसू पोंछ डाले—कहा, "तब कहो, मुझे क्या करना चाहिये।"

योगेन्द्र ने कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम्हारे कान में यह बातें कठोर सुनाई देगीं; किन्तु अगर सब ओर से मगल चाहती हो, तो तुम्हें जरा भी देर न कर विवाह कर लेना चाहिये।"

हेमनलिनी चुपचाप बैठी रही। योगेन्द्र धीरज न रख सकने की वजह से

बोल उठा, "हेम, तुम लोग कल्पना द्वारा छोटी बात को बड़ी बना डालना पसन्द करती हो। तुम्हारे विवाह के सम्बन्ध में जो बखेड़ा खड़ा हो गया है, ऐसी कितनी ही लड़कियों के लिये होता ही है—फिर बिगड़ बनकर साफ हो जाता है—नहीं तो घर में बातों ही बात में उपन्यास बनते रहने से काम नहीं चलता। जीवन भर संन्यासिनी बनकर छत पर बैठ आकाश की ओर ताकते रहने, उस निकम्मे झूठे की याद में उसे हृदय में बैठाकर पूजा करने, संसार के आगे ऐसे काव्य की रचना करने में तुम लोगों को लज्जा नहीं—किन्तु हम लोग मारे लज्जा के मरे जाते हैं। इसलिये भले गृहस्थ के आदमी से वादा कर दरिद्री काव्य को जहाँ तक हो सके, समाप्त कर दो।"

हेमनलिनी अच्छी तरह समझती है कि समाज की आँखों के सामने काव्य बना डालने में कितनी लज्जा है। इसलिये योगेन्द्र के कटु वचन ने उसके हृदय पर छुरी भोंकने जैसा काम किया। उसने कहा, "दादा, क्या मैं कह रही हूँ विवाह न करके संन्यासिना बनी रहूँगी?"

योगेन्द्र ने कहा, "अगर ऐसा नहीं करना चाहती, तो विवाह करो। फिर भी यदि तुम कहो कि स्वर्गराज्य के इन्द्रदेव के न मिलने से तुमको पसन्द ही न आयेगा, तब तो संन्यासिनी व्रत ग्रहण करने ही के समान है। संसार में मन के मुताबिक कितनी चीजें मिला करती हैं?—जो मिलता है, उसे ही मन को अपने अनुसार बना लेना पड़ता है। मैं तो कहूँगा कि यही मनुष्य का यथार्थ महत्त्व है।"

हेमनलिनी ने मर्माहत होकर कहा, "दादा, तुम मुझे इस तरह कोंच-कोंच कर क्यों बातें सुना रहे हो। मैंने कभी तुम्हारी पसन्द के ऊपर कोई बात कही है?"

योगेन्द्र ने कहा, "सही है, कि तुमने कुछ नहीं कहा—किन्तु अकारण अन्याय रूप में तुमने अपने किसी-किसी मित्र पर साफ विद्वेष प्रकट करने में कोई संकोच नहीं किया है। किन्तु यह तुम्हें स्वीकार करना ही पड़ेगा, कि इस जीवन में जितने लोगों से तुम्हारी जान-पहचान हुई है, उनमें एक ही आदमी दिखाई दिया है जिसने सुख-दुःख और मान-अपमान में तुम्हारी ओर

से हृदय को स्थिर रखा है। इसलिए मैं उस पर मन-ही-मन बहुत श्रद्धा करता हूँ। तुम्हें सुखी रखने के लिए जो अपना जीवन दे सकता है। अगर तुम ऐसा पति चाहती हो, तो उसे कहीं ढूंढ़ने जाने की जरूरत नहीं और यदि तुम काव्य रचना करना चाहती हो, तो—"

हेमनलिनी ने खड़ी होकर कहा, "ऐसी बात तुम मुझसे न कहो। पिताजी मुझे जैसी आज्ञा देंगे, जिससे विवाह करने को कहेंगे, मैं उनकी आज्ञा का पालन करूँगी। अगर न करूँ तो तुम काव्य का ताना देना।"

योगेन्द्र ने उसी समय नर्म होकर कहा, "हेम, नाराज न हो, बहन! तुम जानती हो, कि मेरा मन बिगड़ जाने से माथा ठीक नहीं रहता—जब जो मुँह मे आता है वही कह देता हूँ मंने क्या बचपन से तुम्हें देखा नहीं—मैं क्या नही जानता, कि लज्जा तुम्हारा स्वाभाविक गुण है और तुम पिताजी को बहुत मानती हो।"

यह कहता हुआ योगेन्द्र अन्नदा बाबू के कमरे में चला गया। योगेन्द्र अपनी बहन को न जाने किस प्रकार उत्पीड़ित कर रहा है—यही सोचकर अन्नदा बाबू अपने कमरे में विचलित हो बैठे हुए थे। भाई-बहन की बात-चीत में दखल देने के लिए बार-बार वे उठने की चेष्टा करते थे, इसी समय योगेन्द्र आ पहुँचा—अनन्दा उसके मुँह की ओर देखने लगे।

योगेन्द्र ने कहा—पिताजी, हेम विवाह करने को राजी हो गई है। तुम समझते होगे कि मैंने जिद करके उसे राजी किया है—किन्तु यह बात नहीं है। अब अगर तुम उसे मुँह खोलकर कहोगे, तो वह अक्षय से विवाह करने पर आपत्ति न करेगी।

योगेन्द्र—तुम न कहोगे, तो वह खुद जाकर कहेगी, कि मैं अक्षय से विवाह करूँगी? अच्छा, अगर तुम अपने मुँह से कहने में संकोच करते हो, तो मुझे आज्ञा दो; मैं तुम्हारा आदेश उससे प्रकट कर दूँगा।

अन्नदा बाबू ने घबराकर कहा, "नहीं-नहीं, मुझे जो कहना है, वह मैं आप ही कहूँगा। किन्तु इतनी जल्दी की जरूरत क्या है? मेरी राय में और कुछ दिन बीतने देना चाहिये।"

योगेन्द्र ने कहा, "नहीं पिताजी, देर करने से बहुतेरे विघ्न हो सकते हैं—इस तरह अधिक दिन तक बिताना बेकार है।"

योगेन्द्र की जिद के आगे किसी को बोलने की मजाल नहीं—वह जो जिदकर बैठता है, उसे बिना किये नहीं मानता। अन्नदा भी मन-ही-मन उससे डरते हैं। कम-से-कम बात हटाने के ख्याल से उन्होंने कहा, "अच्छा मैं कहूँगा।"

योगेन्द्र ने कहा, "पिताजी, आज ही कहने का उपयुक्त समय है। वह तुम्हारे आदेश के लिए आसरे में बैठी है। आज ही जो कुछ हो, समाप्त कर दो।"

अन्नदा बैठे-बैठे सोचने लगे। योगेन्द्र ने कहा, "पित जी, तुम्हारे विचार करने से काम न चलेगा—जरा हेम के पास चलो।"

अन्नदा ने कहा, "योगेन्द्र, तुम ठहरो मैं अकेला ही उसके पास जाऊँगा।"

योगेन्द्र ने कहा, "अच्छा, मैं यहीं बैठा रहता हूँ।"

अन्नदा ने कमरे में जाकर देखा—अन्धकार है। चटपट एक काउच से उन्हें किसी के उठने की आहट मिली और इसके बाद ही रुलाई से भरभराती हुई आवाज आई, "पिता जी, रोशनी बुझ गई है—बैरा से जलाने को कहूँ।"

रोशनी बुझने का कारण अन्नदा बाबू अच्छी तरह समझ गए। उन्होंने कहा, "रहने दो बेटी, रोशनी की जरूरत क्या है?" यह कहते हाथ से टटोलते हुए वे हेमनलिनी के पास आकर बैठ गये।

हेम ने कहा, "पिताजी, तुम अपने शरीर का खयाल नहीं करते हो।"

आनन्द ने कहा, "इसका विशेष कारण है बेटी—शरीर अच्छा है, यह जानकर ही कोई चेष्टा नहीं कर रहा हूँ। जरा तुम अपने शरीर की ओर ध्यान दो, हेम!"

हेमनलिनी दुःखी होकर बोल उठी, "तुम सभी लोग एक ही बात कहते हो—यह बहुत अन्याय है पिता जी! मैं तो ठीक साधारण मनुष्यों जैसी हूँ—मुझे तुमने कब अपने शरीर का खयाल करते नहीं देखा। यदि तुम लोगों के मन में हो, कि शरीर के लिए कुछ करने की जरूरत है, तो मुझसे कहते क्यों

नहीं। मैंने कभी तुम्हारी बात टाली नहीं है पिताजी ?" उसके यह आखिरी शब्द रुलाई से भरे हुए सुनाई दिए।

अन्नदाबाबू ने व्यस्त और व्याकुल होकर कहा, "कभी नहीं बेटी। तुम्हें कभी कुछ कहना भी नहीं पड़ा—तुम मेरी बेटी हो न—इसीसे तुम मेरे हृदय की बात जानती हो—तुम मेरी इच्छा समझ कर काम करती हो। मेरे एकांत मन का आशीर्वाद यदि व्यर्थ न हो, तो ईश्वर तुम्हें सदा सुखी रखेंगे।"

हेम ने कहा, "पिताजी, क्या तुम मुझे अपने पास न रहने दोगे ?

अन्नदा, "क्यों न रखूंगा बेटी।"

हेम, "कम-से-कम जब तक दादा की दूल्हन आये तब तक तो रहने दो। मेरे न रहने से तुम्हारा खयाल कौन करेगा ?"

अन्नदा, "मेरा खयाल, यह बात न कहो बेटी। मुझ अपने को देखने के लिए तुम लोगों के साथ लगकर रहना पड़ेगा, मेरा मूल्य ही क्या है ?"

हेम ने कहा, "पिताजी, कमरे में बहुत अन्धकार है—रोशनी ले आऊं।" कहकर उसने बगल की कोठरी से लालटेन लाकर रख दी। फिर कहा, "कई दिन से शाम के वक्त बखेड़े उठने से तुम्हें अखबार नहीं सुनाया गया। सुनाऊँ ?"

अन्नदा ने उठकर कहा, "अच्छा, जरा बैठो बेटी, मैं अभी आकर सुनता हूँ।" कहते हुए वे योगेन्द्र के पास चले गए। मन में सोचे थे, कि कह दूंगा—आज बात-चीत नहीं हो सकी फिर कभी होगी। किन्तु जैसे ही योगेन्द्र ने पूछा, 'क्या हुआ पिताजी, विवाह के लिए कहा ?" वैसे ही वे चटपट बोल उठे, "हाँ कह दिया।" उन्हें भय था, कि कहीं योगेन्द्र खुद पहुँच कर उसे तंग न करे।

योगेन्द्र ने कहा, "वह जरूर राजी हो गई होगी ?"

अन्नदा, "हाँ, एक प्रकार से राजी ही है।"

योगेन्द्र ने कहा, "तब मैं अक्षय से कह आऊँ ?"

अन्नदा ने घबराकर कहा, "नहीं-नहीं, अक्षय से अभी कुछ न कहो। समझते हो योगेन्द्र, इतनी जल्दबाजी करने से काम बिगड़ सकता है। अभी किसी

से कुछ कहने की जरूरत नहीं—बल्कि हो सके तो, एक बार हम लोग पश्चिम में हवा पानी बदल आयें, इसके बाद सब ठीक होगा।"

योगेन्द्र इस बात का कोई जवाब न देकर चला गया। वह कन्धे पर चद्दर रख सीधे अक्षय के घर पहुँचा। अक्षय उस समय एक अँग्रेजी महाजनी हिसाब की पुस्तक ले बुककीपिंग सीख रहा था। योगेन्द्र ने उसके बही बस्ता हटाकर कहा—"यह सब काम फिर करना, अब अपने विवाह का दिन ठीक करो।"

अक्षय ने कहा—"यह क्या कह रहे हो ?"

दूसरे दिन सवेरे जब हेमनलिनी उठकर और तैयार हो बाहर आई, तब उसने देखा, कि अन्नदा बाबू अपने सोने की कोठरी में खिड़की के पास कनवास की कुर्सी खींचकर बैठे हैं। इस कमरे में अधिक असबाब नहीं है। एक चारपाई है और एक कोने में एक अलमारी है—एक दीवार में अन्नदा बाबू की परलोक निवासिनी स्त्री की तस्वीर लटक रही है—और उसके सामने की दीवार में उनकी पत्नी का अपने हाथ से बनाया पशम का टुकड़ा टँगा है, जिस पर उन्होंने अपने हाथ से बेल-बूटे बनाये थे। स्त्री की जीवित दशा में उस अलमारी में जो टुकड़े वगैरह पड़े थे, वह सब आज भी ज्यों-के-त्यों हैं।

पिता के पीछे खड़ी हो पक्के बाल निकालने के बहाने कोमल उँगलियों को फेरते हुये हेम ने कहा, "पिता जी चलो आज सवेरे-ही-सवेरे चाय पी लें। इसके बाद घर में बैठकर तुम्हारी वह पुरानी बातें सुनूंगी—वह सब बातें मुझे इनती अच्छी लगती हैं कि क्या कहूँ।"

हेमनलिनी के सम्बन्ध में अन्नदा बाबू की सूझ आजकल इतनी तेज हो गई है कि उसके चाय पीने की जल्दी के मतलब को समझने में उन्हें जरा भी देर न हुई। कुछ देर बाद ही अक्षय आकर बैठेगा—उसी का साथ बचाने के लिये शीघ्रता से चाय पीकर वह अपने पिता की एकान्त कोठरी में बैठना चाहता है, इस बात को वह उसी समय समझ गये। इस बात से उनके मन में बहुत चोट पहुँची कि व्याघ्र के भय से डरी हुई हरिणी की तरह उनकी लड़की सदा डरती रहती है।

उन्होंने नीचे जाकर देखा कि नौकर ने अभी तक चाय का पानी नहीं तैयार किया है । उस पर वे एकाएक नाराज हो उठे—उसने समझाने की चेष्टा की कि आज समय से पहले ही आप चाय माँग बैठे हैं । वह यही बड़-बड़ाकर रह गये कि सब नौकर आजकल बाबू बन गये हैं, उनको जगाने के लिए और एक नौकर की जरूरत पड़ेगी ।

नौकर ने जल्दी से चाय का पानी हाजिर किया । अन्नदा बाबू बराबर बात करते-करते धीरे—सुस्ता के आराम से चाय के रस का उपभोग करते थे, आज वैसा न कर शीघ्रता के साथ प्याला खाली करने लगे । हेमनलिनी ने कुछ आश्चर्य में आकर कहा, "पिताजी आज क्या तुम्हें कहीं बाहर जाने की जल्दी है ?"

अन्नदा बाबू ने कहा, "कहीं नहीं, कहीं नहीं । जाड़े के दिन में गर्म चाय का घूँट-घूँट भर पी लेने से शरीर में गर्मी आती है और शरीर हलका पड़ जाता है ।"

किन्तु अन्नदा बाबू का शरीर गर्माने से पहले ही योगेन्द्र ने अक्षय के साथ घर में प्रवेश किया । आज अक्षय के पहनावे में कुछ विशेष चमक थी हाथ में चाँदी के मूठ की छड़ी का चेन लटकता हुआ—बाएँ हाथ में बादामी रंग के कागज में लिपटी किताब थी । अन्य दिनों अक्षय टेबिल के जिस हिस्से में बैठता था, वहाँ न बैठ आज उसने हेमनलिनी के पास कुरसी खींच ली और हँस के कहा, "आप लोगों की घड़ी आज तेज चल रही है ।"

हेमनलिनी ने अक्षय के मुँह की ओर नहीं देखा, उसने उसकी बात का जवाब भी नहीं दिया । अन्नदा बाबू ने कहा, "हेम चलो बेटी ऊपर । जरा मेरे गर्म कपड़ों को धूप में डाल दो ।" योगेन्द्र ने कहा, "पिताजी धूप कहीं भागी जा रही है—इतनी जल्दी काहे की है । हेम, अक्षय के प्याले में चाय डाल दो । मुझे भी चाय की जरूरत है—किन्तु अतिथि को पहले दो ।"

अक्षय ने हँसकर हेमनलिनी से कहा, "कर्त्तव्य की खातिर से कहीं इतना बड़ा आत्मत्याग देखा है ?"

हेमनलिनी ने अक्षय की बात पर कुछ भी ध्यान न दे, दो प्याले चाय

तैयार कर एक योगेन्द्र को और दूसरा प्याला अक्षय की ओर धीरे से खिसका दिया और अन्नदाबाबू के मुँह की ओर देखा। अन्नदाबाबू ने कहा, "धूप चढ़ आने से तकलीफ होगी—चलो अब चलो।"

योगेन्द्र ने कहा, "आज कपड़ा धूप में न डालो। अक्षय आए हैं।"

अन्नदा एकाएक चिढ़कर बोल उठे, "तुम लोगों की हर बात में जबर्दस्ती है तुम लोग केवल जिद कर दूसरे को मर्मान्तिक कष्ट देते हुए भी अपनी इच्छा पूरी करना चाहते हो मैंने बहुत दिन चुपचाप सह लिया, किन्तु अब इस तरह न चलेगा। बेटी हेम, कल से ऊपर की कोठरी में हम तुम बैठकर चाय पियेंगे।"

यह कहते हेम को साथ ले अन्नदाबाबू ऊपर चलने को तैयार हुए, तब हेम ने शान्त स्वर में कहा,,"पिताजी, जरा बैठो। आज तुम अच्छी तरह चाह पी नहीं सके। अक्षय बाबू, क्या मैं पूछ सकती हूँ, कि इस कागज में लिपटा हुआ यह कौन-सा रहस्य है?"

अक्षय ने कहा, "केवल पूछना क्या? आप रहस्य को खोल भी सकती हैं।" यह कह उसने कागज के बण्डल को हेमनलिनी के आगे खिसका दिया।

हेम ने खोलकर देखा कि जिल्द बँधी टेनिसन है। एकाएक चौंक पड़ने से उसका मुँह पीला पड़ गया। ठीक कहा टेनिसन, ऐसी ही जिल्द एक बार उसे पहले उपहार में मिल चुकी है—वह किताब आज भी उसकी सोने की कोठरी में दराज के भीतर छिपाकर बड़े आदर के साथ रखी हुई है।

योगेन्द्र कुछ हँसकर कहा, "रहस्य अभी पूरी तरह नहीं खुला।" यह कहते हुए उसने किताब के पहले पन्ने को खोल उसके हाथों में दे दिया। उस पेज में लिखा था...श्रीमती हेमनलिनी को अक्षय की श्रद्धा का उपहार।

उसी समय हेम के हाथ से वह किताब जमीन पर गिर गई और उसकी ओर बिना देखे ही उसने कहा, "पिताजी, चलो।"

दोनों कोठरी से बाहर निकल गये। योगेन्द्र की दोनों आंखें आग की तरह जलने लगीं। उसने कहा, "नहीं, अब मैं यहाँ रह नहीं सकता कहीं-न-कहीं स्कूल मास्टरी खोज यहाँ से चला जाऊँगा।"

अक्षय ने कहा, "भाई तुम नाहक क्रोध करते हो मैंने तो पहले ही कह

दिया था कि तुम गलत समझे हो। तुम्हारे बार-बार धीरज देने पर ही मैं विचलित हुआ था, लेकिन मैं निश्चय कहे देता हूँ कि मेरे प्रति हेमनलिनी का मन कभी भी अनुकूल न होगा। इसलिए यह आशा छोड़ दो किन्तु असल बात यह है कि तुम लोगों को ऐसी चेष्टा करनी चाहिये, जिससे वह रमेश को भूल जाय।"

योगेन्द्र ने कहा, "तुमने कर्त्तव्य तो बताया, लेकिन उपाय क्या है?"

अक्षय ने कहा, "शायद मेरे अतिरिक्त इस संसार में कोई युवक है ही नहीं। मैं देखता हूँ कि यदि तुम अपनी बहन होते, तो मेरे इस नाम को मिटाने के लिए पितृपुरुषों को हताश हो दिन न गिनना पड़ता। अब जैसे हो, एक अच्छा पात्र ढूँढ़ो—जिसकी ओर देखने ही कपड़े को धूप में सुखाने की प्रबल इच्छा न हो।"

योगेन्द्र—पात्र फर्माइश देने से तो मिलेगा नहीं।

अक्षय, "तुम बिलकुल ही हिम्मत छोड़कर क्यों बैठे जाते हो? पात्र का पता मैं दे सकता हूँ लेकिन जल्दी करने से सब मामला बिगड़ जायगा पहले ही विवाह का प्रस्ताव कर दोनों पक्ष को संकित करने से काम न चलेगा। धीरे-धीरे मेल-मिलाप जमने दो, इसके बाद समय देखकर दिन ठीक करना।

योगेन्द्र—रास्ता तो अच्छा है, किन्तु जरा सुनूँ तो कि पात्र कौन है।

अक्षय, "तुम उसे अच्छी तरह नहीं जानते, फिर भी तुमने देखा है; वही नलिनाक्ष डाक्टर।"

योगेन्द्र, "नलिनाक्ष?"

अक्षय, "चौंकते क्यों हो। उसके बारे में ब्रह्म-समाज में झमेला मचा है, तो मचने दो। क्या इसके लिए ऐसे पात्र को छोड़ दोगे?"

योगेन्द्र, "यदि मेरे हाथ खींच लेने से पात्र हाथ से न निकल जाय, तब चिन्ता किस बात की है। किन्तु नलिनाक्ष विवाह करने पर राजी होगा?"

अक्षय, "मैं यह नहीं कह सकता, कि आज ही राजी हो जायगा किन्तु समय से क्या नहीं हो सकता। योगेन्द्र, मेरी बात मानो। कल नलिनाक्ष का व्याख्यान है—उस व्याख्यान में हेमनलिनी को ले जाओ। उसमें बोलने की

अच्छी क्षमता है। स्त्रियों के मन को आकर्षित करने के लिये उसमें कम क्षमता नहीं है। हाय, अबोध अबलाएँ यह बात नहीं समझतीं कि वक्ता पति से श्रोता पति अच्छा होता है।

योगेन्द्र, "किन्तु नलिनाक्ष का इतिहास क्या है, अच्छी तरह कहो, मैं सुनना चाहता हूँ।"

अक्षय, "देखो योगेन्द्र, अगर इतिहास में कुछ खराबी निकले, तो उससे घबरा न जाना। थोड़ी-सी खराबी को दूर करने से दुर्लभ भी सुलभ हो जाता है—मैं तो उसे लाभ समझता हूँ।"

अक्षय ने नलिनाक्ष का जो इतिहास कहा, वह संक्षेप में इस प्रकार है। नलिनाक्ष के पिता राजवल्लभ फरीदपुर जिले में एक छोटे-मोटे जमींदार थे। उन्होंने अपनी तीस वर्ष की उम्र में ब्रह्म-धर्म की दीक्षा ली। किन्तु उनकी स्त्री ने किसी तरह भी पति का धर्म ग्रहण नहीं किया और आचार-विचार में वह बहुत सावधानी के साथ अपने पति के साथ अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करती हुई चलने लगी—उनका यह बर्ताव राजवल्लभ के लिए सुखकर हुआ। उनके लड़के नलिनाक्ष ने धर्म-प्रचार के उत्साह से और वक्तृता का शक्ति से उपयुक्त उम्र में ब्रह्म-समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। उन्होंने सरकारी डाक्टरी के काम में बंगाल के अनेक स्थानों में रहकर चरित्र की निर्मलता, चिकित्सा की निपुणता और सत्कार्य के उद्योग से सर्वत्र यश प्राप्त किया।

इसी समय एक विचित्र घटना हो गई। बुढ़ापे में राजवल्लभ एक विधवा से विवाह करने के लिए उन्मत्त हो उठे। कोई उन्हें समझा न सका। राजवल्लभ कहने लगे, कि मेरी वर्तमान स्त्री मेरी सच्ची सहधर्मिणी नहीं है—जिससे धर्म, मत व्यवहार और हृदय का मेल हो चुका है, उसे स्त्री के रूप में ग्रहण न करने से पाप होगा। यह कह राजवल्लभ ने सर्वसाधारण के धिक्कारने पर भी उस विधवा हिन्दू मतानुसार विवाह कर लिया।

इसके बाद नलिनाक्ष की माँ जब घर छोड़कर काशी जाने को तैयार हुई, तब नलिनाक्ष ने रँगपुर की डाक्टरी को छोड़ माँ के पास आकर कहा, "माँ, मैं तुम्हारे साथ काशी चलूँगा।"

माँ ने रोकर कहा, "मेरे साथ रहने से तुम्हें कुछ भी न मिलेगा, नाहक क्यों कष्ट सहोगे।"

नलिनाक्ष ने कहा, "तुम्हारे साथ मेरा किसी बात में अलगाव न होगा।"

नलिनाक्ष पिता द्वारा परित्यक्त और अपमानित माता को सुखी करने के लिए दृढ़सकल्प हुआ। वह उनके साथ काशी गया। माँ ने कहा, "बेटा, क्या घर में बहू न आयेगी।"

नलिनाक्ष बड़े संकट में पड़ा। उसने कहा, "काम ही क्या ? मैं अच्छी तरह हूँ।"

माँ ने सोचा, कि नलिन ने बहुत त्याग किया है, किन्तु फिर भी ब्रह्म-परिवार के अलावा विवाह करने को तैयार नहीं है। उन्होंने दुःखित होकर कहा, "बच्चे, तुम मेरे लिये सदा संन्यासी बने रहोगे। यह किसी तरह भी नहीं हो सकता। तेरी जहाँ इच्छा हो, वहाँ विवाह कर, मैं कोई एतराज न करूँगी।"

नलिन ने दो-एक दिन विचार कर कहा, "तुम जैसी चाहो, मैं वैसी ही बहू लाकर तुम्हारी दासी बना दूँगा। तुम्हारे साथ किसी विषय में कुछ भी अनमेल न होगा। जिससे तुम्हें दुःख हो, वैसी लड़की मैं घर में न लाऊँगा।"

यह कहकर नलिन बंगाल चला आया। इसके बाद बीच के इतिहास में कुछ विच्छेद है। कोई कहता है, कि चुपके से एक गाँव में जा उसने किसी अनाथ से विवाह किया और विवाह के बाद ही उसका स्त्री-वियोग हो गया। कोई उस पर सन्देह प्रकाश करता है। किन्तु मेरा (अक्षय) मत है, कि विवाह करने के समय वह इन्कार कर गया।

जो हो, अक्षय की राय में नलिनाक्ष जिसे पसन्द करे, उसी से विवाह कर सकता है, उसकी माँ किसी तरह की आपत्ति न कर खुशी होगी। हेमनलिनी जैसी लड़की नलिनाक्ष को कहाँ मिलेगी और चाहे कुछ हो, हेम का जैसा मधुर स्वभाव है, उससे वह अपनी सास पर बहुत ही भक्ति और श्रद्धा करेगी; किसी तरह भी उन्हें कष्ट न होने देगी, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। नलिनाक्ष दो दिन हेम को अच्छी तरह देखते ही समझ जायगा। अतएव अक्षय की सलाह है, कि किसी तरह दोनों का परिचय करा देना चाहिये।

अक्षय के जाते ही योगेन्द्र दो-एक मंजिल में चला गया। देखा कि ऊपर बैठने के कमरे में हेमनलिनी को पास बैठाकर अन्नदाबाबू बातचीत कर रहे हैं। योगेन्द्र को देखकर अन्नदा कुछ लज्जित हुए। आज चाय के टबिल पर उनका स्वाभाविक शान्तभाव नष्ट होकर कुछ क्रोध आ गया था; इससे मन में कुछ क्षोभ था। इसी से उन्होंने चटपट आदर के स्वर में कहा, "आओ योगेन्द्र, बैठो।"

योगेन्द्र ने कहा, "पिताजी, आजकल तुमने कहीं बाहर जाना बिलकुल बन्द कर दिया है। दोनों आदमियों का दिन-रात घर में बैठा रहना क्या अच्छा है?"

अन्नदा ने कहा, "तब सुनो। मैंने तो सदा से इसी तरह कोने में बैठकर बिताया है। हेम को कहीं बाहर ले जाने में माथा-पच्ची करनी होगी।"

हेम ने कहा, "मुझे क्यों दोष देते हो पिताजी! तुम मुझे कहाँ ले चलना चाहते हो, चलो।"

हेमनलिनी अपने स्वभाव के विरुद्ध होने पर भी जबरदस्ती प्रमाणित करना चाहती है, कि वह मन में शोक छिपाकर घर की मट्टी खोदकर पड़ी नहीं है। उसके चारों ओर जहाँ जो कुछ हो रहा है, उन सब में मानो उसकी उत्सुकता सजीव ही है।

योगेन्द्र ने कहा, "पिताजी, कल एक मीटिंग है, वहाँ हेम को भी ले चलो।"

अन्नदाबाबू जानते थे, कि मीटिंग की भीड़ में घुसने से हेमनलिनी हमेशा से अनिच्छा और संकोच करती है—इसी से उन्होंने कुछ-न-कुछ एक बार हेम के मुँह की ओर देखा।

हेम ने उस समय अस्वाभाविक उत्साह प्रकट कर कहा, "मीटिंग, वहाँ कौन व्याख्यान देगा दादा?"

योगेन्द्र—डाक्टर नलिनाक्ष।

अन्नदा—नलिनाक्ष!

योगेन्द्र, 'बोलने में बहुत तेज है। इसके अतिरक्त उनका इतिहास सुनने से आश्चर्य में आना पड़ता है। ऐसा त्याग स्वीकार, ऐसी दृढ़ता! ऐसा आदमी

होना दुर्लभ है।

इससे दो घण्टे पहले एक अफवाह के अतिरिक्त नलिनाक्ष के सम्बन्ध में योगेन्द्र कुछ भी नहीं जानता था।

हेम ने बड़े आग्रह के साथ कहा, "अच्छी बात है तो पिता जी, चलो न; उनका व्याख्यान सुनना चाहिए।"

हेमनलिनी के इस उत्साह पर अन्नदाबाबू ने बिलकुल विश्वास नहीं किया फिर भी वह मन-ही-मन कुछ खुश हुए। उन्होंने सोचा, हेम अगर जबर्दस्ती भी इस प्रकार के मेल-मिलाप में जाना चाहे तो शीघ्र ही उसका मन बदल जायगा। मनुष्य का सहवास ही मनुष्य के हक में तरह-तरह से मनोविकार दूर करने की प्रधान दवा है। उन्होंने कहा, "अच्छी बात है योगेन्द्र, कल ठीक समय से हम लोगों को मीटिंग में ले चलना। किन्तु जरा कहो तो, नलिनाक्ष के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो बहुतेरे लोग तो तरह-तरह की बातें कहते हैं।"

पहले योगेन्द्र ने उन लोगों को खूब गाली दी, जो अनेक लोग अनेक बातें कहा करते हैं। उसने कहा, "धर्म के नाम से जो लोग ढोंग करते हैं कि पराई बात पराये अविचार पर परनिन्दा करने के लिये भगवान् के दस्तखती दलील को लेकर उन्होंने जन्म लिया—धर्मव्यवसायियों के समान संकीर्ण-चित्त और विश्व-निन्दक संसार में और कोई नहीं।" कहते-कहते योगेन्द्र बहुत उत्तेजित हो उठा।

अन्नदा योगेन्द्र को ठण्डा करने के लिये बार-बार कहने लगे, "ठीक है, यह बात ठीक है। केवल पराये के दोषों की आलोचना करने से मन छोटा हो जाता है स्वभाव सन्दिग्ध हो जाता है और हृदय में सरसता रह नहीं जाती।"

योगेन्द्र ने कहा, "पिता जी, क्या तुम मुझे लक्ष्य कर ऐसा कह रहे हो? किन्तु मेरा स्वभाव धार्मिकों जैसा नहीं है—मैं बुरा कहना भी जानता हूँ, अच्छा कहना भी जानता हूँ और मुँह पर साफ कहकर हाथों-हाथ फैसला कर देता हूँ।"

अन्नदा ने घबराकर कहा, "योगेन्द्र, तुम पागल हो गये हो? मैं तुम्हें लक्ष्य कर क्यों कहूँ? क्या मैं तुम्हें नहीं पहचानता?"

तब बड़ी-बड़ी प्रशंसाओं से परिपूर्ण कर योगेन्द्र ने नलिनाक्ष का वृत्तान्त कह सुनाया, उसने कहा, "माता को सुखी करने के लिये नलिनाक्ष अपने आचार में संयत हो काशीवास करता है ; इसीलिये पिता जी, जिसे तुम अनेक लोग कहते हो वह सब अनेक तरह की बातें उड़ाते हैं। किन्तु मैं तो इसमें नलिनाक्ष की तारीफ ही करूँगा। हेम, तुम्हारी क्या राय है।"

हेमनलिनी ने कहा, "मैं भी ऐसा ही कहती हूँ।"

योगेन्द्र ने कहा, "हेम अच्छा ही कहेगी, यह बात मैं निश्चय रूप से जानता था। पिता जी को सुखी करने के लिये हेम कुछ त्याग स्वीकार करने का उपलक्ष्य ढूँढ़ती रहती है। इसे मैं अच्छी तरह समझता हूँ।"

अन्नदा ने स्नेह-भरी कोमल हँसी हँसकर हेम की ओर देखा—हेमनलिनी ने लज्जा से सिर झुका लिया।

तेईस

सभा भंग होने के बाद जब अन्नदा हेमनलिनी को लेकर घर लौटे, उस समय संध्या हुई थी। चाय पीने बैठने पर अन्नदा बाबू ने कहा, "आज बड़ा आनन्द आया।" इससे अधिक वे और कुछ न बोले—उनके मन के भीतर भाव की एक धारा बह रही थी।

आज चाय पीने के बाद ही हेमनलिनी धीरे-धीरे ऊपर चली गई, अन्नदा-बाबू को इसका ख्याल भी नहीं हुआ।

आज सभास्थल में नलिनाक्ष, जिसने वक्तृता दी थी, देखने में विचित्र युवक और सुकुमार है। जवानी में भी उनके बचपन की लावण्यता ने उनके मुख-श्री को परित्याग नहीं किया है; फिर भी उनकी अन्तरात्मा से मानों एक प्रकार की ध्यान-परता का गाम्भीर्य उनके चारों ओर बिखर रहा है।

उनकी वक्तृता का विषय 'क्षति' था। उन्होंने कहा, कि संसार में जो

आदमी कुछ खोता नहीं, वह पाता भी नहीं। इसी तरह जो हमारे हाथ में आता है, उसे हम पूरी तरह से प्राप्त नहीं करते। जब त्याग द्वारा हम उसे पाते हैं, तब यथार्थ में वह हमारे हृदय का धन बन जाता है। जो प्रकृत सम्पत् है, उसके सामने से हट जाने पर जो मनुष्य उसे खो बैठता है, वह अभागा है, बल्कि उसका त्याग कर उसे अधिक रूप में पाने की क्षमता ही मनुष्य के चित्त में होती है। मेरा जो जाता है, उसके सम्बन्ध में यदि हम झुककर हाथ जोड़कर यह कह सकें कि 'हमने दिया, यह हमारे त्याग का दान है' तब छोटा बड़ा हो उठता है, अनित्य-नित्य हो जाता है और जो हमारे व्यवहार की सामग्री मात्र पूजा का उपकरण बनकर हमारे अन्तःकरण के देव-मन्दिर के रत्न-भण्डार को चिरसंचित बना देता है।

यह सब शब्द आज हेमनलिनी के हृदय में मिलकर बजने लगे। छत के ऊपर जगमगाते तारों वाले आकाश के नीचे आज वह चुपचाप बैठी हुई है। उसका मन आज परिपूर्ण है—सारा आकाश, सारा संसार आज उसके लिये परिपूर्ण है।

व्याख्यान की सभा से लौटने के समय योगेन्द्र ने कहा, "अक्षय तुमने अच्छे पात्र को ढूँढ़ निकाला। यह तो संन्यासी है। इसकी आधी बातें तो मेरी समझ में आई ही नहीं।"

अक्षय ने कहा, "रोगी की हालत देखकर दवा की व्यवस्था करनी चाहिये। हेमनलिनी रमेश के ध्यान में डूबी हुई है—उस ध्यान को बिना संन्यासी के हम लोगों जैसे सहज आदमी तोड़ नहीं सकते। जब वक्तृता हो रही थी, उस समय तुमने हेम के मुँह की ओर लक्ष्य करके नहीं देखा।"

योगेन्द्र, "देखा था। यह समझ में आ गया, कि उसे अच्छा लग रहा है। किन्तु वक्तृता अच्छी जान पड़ने से ही वक्ता के गले में बरमाला पहनाना तो सहज नहीं इसका कोई लक्षण भी दिखाई नहीं देता।"

अक्षय—वही वक्तृता हम लोगों में से किसी के मुंह से सुनने से अच्छी नहीं जान पड़ती! तुम नहीं समझते योगेन्द्र, तपस्वियों के लिये औरतों में एक विशेष आकर्षण है। सन्यासी के लिये उमा ने तपस्या की थी, कालिदास इसे

काव्य में लिख गये हैं। मैं तुमसे ठीक कह रहा हूँ ; अगर तुम और किसी पात्र को खड़ा करोगे, तो हेमनलिनी रमेश के साथ मन-ही-मन उसकी आलोचना करेगी—उसकी तुलना में कोई ठहर न सकेगा। नलिनाक्ष साधारण आदमियों जैसा नहीं है—इसकी तुलना के लिये मन में कोई भाव उठ नहीं सकता और किसी युवक को सामने लाने से ही हेमनलिनी तुम्हारे उद्देश्य को ठीक समझ जायगी और साथ-ही-साथ उसका हृदय विद्रोही हो उठेगा। किन्तु नलिनाक्ष को तुम किसी कौशल से यहाँ ला सको तो हेम के मन में किसी तरह का सन्देह न होगा। इसके बाद धीरे-धीरे श्रद्धा से माल्यदानदान तक किसी प्रकार चलाये चलना कठिन न होगा।

योगेन्द्र—यह कोशल मुझसे ठीक तरह से न होगा—कह देना ही मेरे लिए सहज है। किन्तु तुम जो कहो, यह पात्र मेरे पसन्द नहीं है।

अक्षय—देखो योगेन्द्र, तुम अपनी जिद से सब मिट्टी न करो। सब सुविधाएँ एक साथ नहीं मिलतीं। चाहे जैसे हो रमेश की चिन्ता को हेमनलिनी के मन से हटा सकना मुझे सरल नहीं जान पड़ता। साथ ही यह न समझना कि तुम अपने जोर से सब ठीक कर लोगे। अगर मेरी सलाह के साथ ठीक तरह से चलोगे, तो तुम्हारी कुछ भलाई हो सकती है।

योगेन्द्र—असल बात यह है कि नलिनाक्ष हम लोगों की समझ से बाहर का आदमी है। ऐसे आदमी को साथ लेने में मुझे भय जान पड़ता है। एक दोष से छुटकारा पाकर दूसरे दोष में फंस जाना पड़ेगा।

अक्षय—भाई, तुम अपने ही दोष से फँसे हो—इसी से आज सेन्दुरिया मेघ देखकर आतंक जान पड़ता है। रमेश के बारे में तुम लोग शुरू से आखीर तक अन्धे थे। सोचा कि ऐसा लड़का है ही नहीं—रमेश जानता ही नहीं, छल किसे कहते हैं— दर्शनशास्त्र में रमेश को दूसरा शंकराचार्य ही कहना चाहिये, और साहित्य में वह स्वयं सरस्वती की उन्नीसवीं शताब्दी का पुरुष है। रमेश मुझे पहले ही पसन्द नही आया—ऐसे ऊँचे आदर्श के आदमियों को हमने अपनी इस उम्र में बहुत देखा है। किन्तु मुझे कुछ कहने की क्षमता नहीं थी—तुम लोग तो जानते हो कि मेरे जैसा अयोग्य केवल महात्मा लोगों से कुढ़ना ही

जानता है, हमारे लोगों में और कोई क्षमता नहीं। जो हो, इतने दिन बाद तुम समझ गये हो, कि दूसरे ही महात्माओं की भक्ति करना ठीक है, किन्तु साथ ही अपनी बहन का विवाह ठीक करना आफत से खाली नहीं। किन्तु काँटा काँटे से नहीं निकलता है। जब यह एकमात्र उपाय है, तब नाहक इधर-उधर करना ठीक नहीं।

योगेन्द्र—देखो अक्षय, तुम्हारे हजार कहने पर भी मैं इस बात का विश्वास न करूँगा कि तुमने हम लोगों से पहले रमेश को पहचान लिया था। उस समय तुम मारे कुढ़न के रमेश को देख नहीं सकते थे—तब मैं यह कैसे मानूँ कि यह तुम्हारी साधारण बुद्धि का परिचय है। जो हो, कलाकौशल से अगर जरूरत देखो, तुम लोग करो, मुझसे यह काम न होगा। सबसे बड़ी बात तो यह है कि नलिनाक्ष मुझे पसन्द नहीं।

योगेन्द्र और अक्षय अन्नदा के चाय पीने के कमरे में आये, तब देखा कि हेमनलिनी ने इन लोगों को खिड़की से आते देख लिया था। तब वह जरा मुस्कराकर अन्नदा बाबू के पास बैठ गई। अपने हाथ का चाय का प्याला भरकर उसने कहा, "नलिनाक्ष बाबू जो कहते हैं, वह हृदय से कहते हैं; इसीलिये उनकी बातें सीधे हृदय को स्पर्श करती हैं।"

अन्नदाबाबू ने कहा, "आदमी में क्षमता है।"

अक्षय ने कहा, "केवल क्षमता ही नहीं, ऐसा साधुचरित्र आदमी दिखाई नहीं देता।"

योगेन्द्र किसी और ध्यान में था, फिर भी उससे रहा न गया, वह बोल बैठा, "आह साधुचरित्र का नाम न लो। साधुओं के संग से भगवान् ही हम लोगों को बचायें।"

योगेन्द्र ने कल इसी नलिनाक्ष की साधुता की प्रशंसा की थी—जो नलिनाक्ष के विरुद्ध बातें करते हैं, उसे निन्दक कहकर गाली दी थी।

अन्नदा ने कहा, "छिः, योगेन्द्र, ऐसी बात न कहो। बाहर से जो लोग अच्छे जान पड़ते हैं, उनका हृदय भी अच्छा होता है; इस बात पर विश्वासकर बल्कि मैं ठगे जाने को तैयार हूँ, फिर भी अपनी छोटी बुद्धि के गौरव के लिये

किसी की साधुता पर सन्देह करने को तैयार नहीं हूँ। नलिनाक्ष बाबू ने जो सब बातें कही हैं, वह सब पराये मुँह की बातें नहीं हैं। उन्होंने अपनी आध्यात्मिक जानकारी से जो प्रकट किया है, वह मेरे लिये आज नया लाभ जान पड़ा। जो आदमी कपटी है उसके पास सच्ची चीज कहाँ से मिलेगी। जैसे सोना बनाया नहीं जा सकता, वैसे ही सच बातें भी बनाई नहीं जा सकतीं। मेरी इच्छा है, कि मैं स्वयं जाकर नलिनाक्ष बाबू को साधुवाद दे आऊँ।"

अक्षय ने कहा, "मुझे भय होता है, कि उसका शरीर चलेगा या नहीं।"

अन्नदा बाबू ने व्यस्त होकर पूछा, "क्यों, क्या उसका शरीर अच्छा नहीं है?"

अक्षय, 'अच्छे-खराब की बात नहीं—वह दिन-रात अपनी साधना और शास्त्र की आलोचना में ही लगा रहता; शरीर की ओर तो उसका ध्यान ही नहीं है।

अन्नदा ने कहा, "यह बहुत खराब बात है। शरीर को नष्ट करने का अधिकार हम लोगों को नहीं है—क्योंकि शरीर हम लोगों का बनाया नहीं है। अगर मैं उसे अपने पास पाता, तो निश्चय थोड़े दिन में ही मैं उसके स्वास्थ्य की व्यवस्था कर देता। असल में स्वास्थ्य-रक्षा के कुछ थोड़े से नियम हैं—उनमें पहला है—"

योगेन्द्र ने अधीर होकर कहा, "पिताजी, वृथा क्यों चिन्ता कर मर रहे हो। नलिनाक्ष बाबू का शरीर तो सुन्दर दिखाई देता है—उसे देखकर आज मुझे अच्छी तरह मालूम हो गया, कि साधुता भी स्वास्थ्यकर है। मेरा मन स्वयं चाहता है, कि जरा मैं भी चेष्टा करके देखूँ।"

अन्नदा ने कहा, "नहीं योगेन्द्र, अक्षय जो कहते हैं वह हो भी सकता है। हमारे देश में बड़े-बड़े लोग प्रायः थोड़ी उम्र में ही मर जाते हैं। वह अपने शरीर की उपेक्षा कर देश का नुकसान करते हैं। यह किसी तरह से होने देना न चाहिये। योगेन्द्र, तुम नलिनाक्ष बाबू को जैसा समझते हो, वह नहीं है; उसमें असल चीज है। उसे अभी से सावधान कर देना चाहिये।"

अक्षय, "मैं उसे आपके पास लाकर उपस्थित करूँगा, अगर आप उसे

अच्छी तरह समझा सकें, तो अच्छा ही है। मुझे याद है, कि आपने जो सीकड़ का रस मुझे परीक्षा के समय दिया था, वह बहुत बलकारक है। जो लोग सदा मानसिक मेहनत करते हैं उनके लिए दूसरी कोई महौषध नहीं। अगर आप एक बार नलिनाक्ष बाबू को—"

योगेन्द्र ने एकाएक कुर्सी से उठकर कहा, "आह, अक्षय, तुम तो हद करते हो इतनी बढ़ाचढ़ी! मैं जाता हूँ।

चौबीस

पहले जब उनका शरीर अच्छा था, तब अन्नदा बाबू डाक्टरी और आयुर्वेदिक तरह-तरह की दवाइयों का सेवन किया करते थे—अब उन्हें दवा खाने का उत्साह नहीं और आजकल अपने स्वास्थ्य की शिकायत भी नहीं करते, बल्कि तबियत छिपाने की ही चेष्टा करते हैं।

आज जब वे कुसमय आराम कुर्सी पर सो रहे थे, उस समय सीढ़ी पर किसी के पैर की आवाज सुन हेमनलिनी अपनी गोद से सिलाई का सामान उतार अपने दादा को सावधान करने के लिए उनके दर्वाजे पर गई। उसने जाकर देखा कि उसके दादा के साथ नलिनाक्ष बाबू भी आ रहे है वह शीघ्रता से दूसरे कमरे में जाने लगी, इसी समय योगेन्द्र ने आवाज दी, "हेम, नलिनाक्ष बाबू आये है, आओ, इनके साथ तुम्हारा परिचय करा दूँ।"

हेम ठिठक के खड़ी हो गई और नलिनाक्ष के आते ही उसने उनके मुँह का ओर न देखकर नमस्कार किया। अन्नदा बाबू ने जागकर आवाज दी—'हेम' हेम ने उनके पास मीठे स्वर में कहा, "नलिनाक्ष बाबू आये हैं।"

योगेन्द्र के साथ नलिनाक्ष को देखकर अन्नदा बाबू ने चटपट उठ नलिनाक्ष की अभ्यर्थना की। कहा, "आज मेरा बड़ा सौभाग्य है, जो आप मेरे घर आये। हेम, कहाँ जा रही हो बेटी, यहीं बैठो। नलिन बाबू, यह मेरी कन्या हेम है

हम दोनों ही उस दिन आपकी वक्तृता सुनने जाकर बहुत आनन्द प्राप्त कर आये हैं। आपने जो एक बात कही थी—कि हम लोग जो पाते हैं, उसे कभी नहीं खोते; उसे जो यथार्थ में नहीं पाते वही खोते हैं—इसका अर्थ बहुत गम्भीर है, क्यों बेटी ? वास्तव में किसी चीज को, हम अपना बना लेते हैं और किसी को नहीं बना सकते। इसकी परीक्षा तभी होती है, जब वह हमारे हाथ से निकल जाती है। नलिनाक्ष बाबू, आप से हम लोगों का एक अनुरोध है। वह यह कि कभी-कभी आकर आप यदि हम लोगों के साथ आलोचना कर जायँ, तो हम लोगों का बड़ा उपकार हो। हम लोग कहीं बाहर नहीं आते-जाते। आप जब आयेंगे, तब मुझे और मेरी लड़की को घर ही में पायेंगे।"

नलिनाक्ष ने लज्जित हेमनलिनी के मुँह की ओर एक बार देखकर कहा, "मैं वक्तृता-सभा में बड़ी-बड़ी बातें कह आया, इससे आप लोग मुझे बहुत गम्भीर आदमी न समझियेगा। उस दिन छात्रों ने बहुत तँग किया, इससे मैं वक्तृता देने गया था, अनुरोध न मानने की ताकत मुझमें नहीं है—किन्तु इस तरह व्याख्यान दे आया हूँ, जिससे दूसरी बार उन लोगों के अनुरोध करने का आशंका नहीं है—छात्रों का साफ कहना है, कि वक्तृता का बारह आना हम लोगों की समझ में नहीं आया। योगेन्द्र बाबू, आप भी तो उस दिन उपस्थित थे, आपने जब घबराकर घड़ी की ओर देखा, उससे यह न समझें कि मेरा हृदय भी कुछ विचलित नहीं हुआ था।

योगेन्द्र ने कहा, "मैं अच्छी तरह समझ नहीं सका, यह मेरी बुद्धि का दोष हो सकता है, इसके लिये आप नाराज न होइयेगा।"

अन्नदा—योगेन्द्र, सब बातों के समझने के लिये उम्र होना चाहिये।

नलिनाक्ष—सब बातों के समझने के लिये सब समय जरूरत भी तो नहीं होती।

अन्नदा—किन्तु नलिनबाबू, आपसे मुझे एक बात कहना है। ईश्वर ने आप लोगों को काम करा लेने के लिए ही संसार में भेजा है, इसलिये आप अपने शरीर से लापरवाही न करें। जो लोग दाता हैं, उन्हें यह बात सदा याद रखना चाहिये कि मूलधन नष्ट न होने पाये, नहीं तो दान करने क

शक्ति चली जायेगी।

नलिनाक्ष—आपको यदि कभी मुझे अच्छी तरह पहचानने का अवसर मिलेगा, तो आप समझ जायेंगे कि मैं संसार से कभी किसी तरह की लापरवाही नहीं करता। संसार में मैं बिलकुल भिक्षु की तरह आया था, बड़े कष्ट से अनेक लोगों की अनुकूलता से धीरे-धीरे यह शरीर तैयार हुआ है। मेरे लिये यह नवाबी शोभा नहीं देती कि मैं सबसे लापरवाही कर सब नष्ट कर दूँ। जो बना नहीं सकता, उसे बिगाड़ने का भी कोई अधिकार नहीं।

अन्नदा—बहुत ठीक बात कर रहे हैं। आपने बहुत कुछ ऐसी ही बातें उस दिन के प्रबन्ध में भी कही थीं।

योगेन्द्र—आप लोग बैठिये, मैं जरा काम से जाता हूँ।

नलिनाक्ष—योगेन्द्र बाबू, मुझे आप माफ कीजियेगा। निश्चय समझिये कि किसी का हर्ज कराने का मेरा स्वभाव नहीं। आज दिन मैं भी अब चला। चलिये, कुछ दूर रास्ते में हमारा आपका साथ रहेगा।

योगेन्द्र—नहीं-नहीं आप बैठिये। मेरा ख्याल न करिये। मैं कहीं भी कुछ देर तक चुप बैठा रह नहीं सकता।

अन्नदा—नलिनाक्ष बाबू, योगेन्द्र के लिए आप उतावले न हों। योगेन्द्र इसी तरह अपने मन से आता है, अपने मन से जाता है; इसे पकड़ रखना कठिन है।

योगेन्द्र के चले जाने पर अन्नदा बाबू ने पूछा, "नलिन बाबू, आजकल आप कहाँ रहते हैं।"

नलिनाक्ष ने हँसकर कहा, "मैं खास एक ही जगह रहता हूँ, यह कह नहीं सकता। मेरे जान-पहचान के बहुत लोग हैं, वे मुझे खींच-तानकर घुमाते फिरते हैं। मुझे यह बुरा नहीं जान पड़ता—किन्तु मनुष्य को कहीं चुपचाप रहना भी जरूरी है। इसी से योगेन्द्र बाबू ने आप लोगों के बगल के मकान में ही मेरे लिये जगह कर दी है। यह गली बहुत एकान्त है।"

इस समाचार से अन्नदा बाबू ने बहुत आनन्द प्रकट किया, किन्तु अगर वह देखते तो देख सकते थे कि यह सब सुनते ही हेमनलिनी का मुँह क्षणभर

के लिये विबर्ण हो गया। इसी बगल के मकान में रमेश रहता था।

इसी समय चाय तैयार होने की खबर पाकर सब लोग चाय पीने के लिये नीचे के कमरे में चले आये। अन्नदा बाबू ने कहा, "बेटी हेम, नलिन बाब को एक प्याला चाय दो न।"

नलिनाक्ष ने कहा, "अन्नदा बाबू मैं चाय न पीऊँगा।"

अन्नदा—आप डाक्टर हैं. आपसे और क्या कहूँ। मध्याह्न भोजन के तीन-चार घण्टे बाद चाय के बहाने थोड़ा गर्म पानी पीना हाजमे के लिये बहुत उपकारी है। अगर अभ्यास न हो तो आपके लिये खूब पतली चाय बनवा दूँ।

नलिनाक्ष आश्चर्य के साथ हेमनलिनी के मुँह की ओर देखकर यह समझ गये कि हेमनलिनी नलिनाक्ष के चाय न पीने के संकोच पर कुछ अन्दाज लगा रही है और मन-ही-मन इसी बात पर गौर कर रही है। उसी समय हेमनलिनी की ओर देखकर नलिनाक्ष ने कहा, "आप जो सोच रही हैं, वह बिलकुल सही नहीं है। आप यह न समझियेगा कि आपके इस चाय के टेबिल से घृणा करता हूँ। पहले मैंने बहुत चाय पिया है—चाय की खुशबू को अब भी मेरा मन चाहता है। आप लोगों को शायद मालूम नहीं कि मेरी माँ बहुत आचार-विचार की है—सिवा मेरे यथार्थ में उनके और कोई नहीं है—उस माँ के सामने मैं संकुचित होकर जा न सकूँगा। इसी से मैं चाय नहीं पीता। किन्तु आप लोगों को चाय पीने में जो सुख मिलता है, मुझे उससे संतोष हो गया है। आप लोगों के आतिथ्य से वंचित नहीं।

इससे पहले नलिनाक्ष की बातचीत से हेमनलिनी के मन में कुछ ठेस लगी थी। वह समझ रही थी कि नलिनाक्ष अपने को उन लोगों के आगे अच्छी तरह प्रकट नहीं कर रहा है। वह केवल अधिक बातें कह अपने को छिपाये रहने की चेष्टा कर रहा है। हेमनलिनी नहीं जानती थी, कि प्रथम परिचय में नलिनाक्ष संकोच के भाव को हटा न सकेगा। इसलिये नये लोगों के सामने अनेक समय वह अपने स्वभाव के विरुद्ध जबर्दस्ती छिपा रखता है। अपनी बनावटी बात करने में भी वह कुछ बेसुरापन पैदा कर देता है।

यह उसे खुद भी खटकता है। इसी से आज योगेन्द्र जब अधीर होकर उठ गया, तब नलिनाक्ष अपने मन में धिक्कार का अनुभव कर उसके साथ जाने को तैयार हो गया था।

किन्तु नलिनाक्ष ने जब अपनी माँ की बात कही, तब हेमनलिनी श्रद्धा की दृष्टि से उसकी ओर बिना देखे रह न सकी और माता की बात कहने के समय नलिनाक्ष के मुँह पर जो सरल भक्ति का गाम्भीर्य प्रकट हुआ, उसे देख हेमनलिनी का मन आर्द्र हो उठा। उसकी इच्छा हुई कि नलिनाक्ष की माता के सम्बन्ध में उससे कुछ बातचीत करे, किन्तु संकोच से वह ऐसा कर न सकी।

अन्नदा बाबू ने व्यस्त हो कहा, "बहुत अच्छा! अगर मैं पहले जानता, तो कभा आपसे चाय पीने का अनुरोध न करता माफ कीजियेगा।"

नलिनाक्ष ने जरा हँसकर कहा, "चाय न ले सकने की वजह से आप लोगों के अनुरोध से क्यों वंचित होऊँ।"

नलिनाक्ष के चले जाने पर हेमनलिनी अपने पिता को साथ लेकर दो-मंजिले पर चली गई। वहाँ वह किसी बँगला मासिक पत्र से निबन्ध चुनकर उन्हें सुनाने लगी। सुनते-सुनते अन्नदा बाबू शीघ्र ही सो गये। कुछ दिन से अन्नदा बाबू के शरीर में ऐसी सुस्ती का लक्षण नित्य ही दिखाई देता है।

कई दिन में ही नलिनाक्ष से अन्नदा बाव के घराने का परिचय घनिष्ठ हो गया। पहले हेमनलिनी समझी थी, कि नलिनाक्ष जैसे आदमी से केवल बड़े-बड़े आध्यामिक विषयों में ही उपदेश मिला करेगा—वह यह सोच भी न सकी, कि ऐसे आदमी से साधारण विषय में साधारण आदमियों के समान ही बातचीत हो सकती है। इसलिये सभी हँसी मजाक की बातों से नलिनाक्ष कुछ अलग था।

एक दिन अन्नदा बाबू और हेमनलिनी के साथ नलिनाक्ष की बातचीत चल रही थी, इसी समय योगेन्द्र ने कुछ उत्तेजित भाव से आकर कहा, "सुन पिताजी, आजकल हम लोगों को समाज के लोग नलिनाक्ष बाबू का चेला कहने लग गये हैं, इसी पर अभी-अभी परेश के साथ मेरा खूब झगड़ा ह

गया है ।"

अन्नदा बाबू ने हँसकर कहा, "मुझे तो लज्जा की कोई बात दिखाई नहीं देती । आखिर नलिनाक्ष बाबू करते क्या हैं जिससे लोग हमें उनका चेला कहते हैं ?"

नलिनाक्ष, "हाँ आप कहिये तो मैं क्या करता हूँ ।"

योगेन्द्र—यही कि आप प्राणायाम करते हैं, सूर्य की ओर ताकते रहते हैं, खाने-पीने में तरह-तरह के आचार-विचार करते हैं—आदि-आदि ।

योगेन्द्र की इस रूखी बात से व्यथित हो, हेमनलिनी ने सिर नीचा कर लिया । नलिनाक्ष ने हँसकर कहा, "योगेन्द्र बाबू, दस आदमियों में बेपानी होना दोष की बात है किन्तु तलवार और आदमी, क्या सभी पानीदार होते हैं । तलवार के जिस अंश पर पानी होना चाहिए, उसमें सब तलवार एक समान पानीदार हैं—बाहरी मूठ पर कारीगर की इच्छा और निपुणता के अनुसार तरह-तरह की कारीगरी होती है । मनुष्य में भी देश के पानी के साथ बाहर विशेष कारीगरी है, क्या उसे भी आप लोग बेदखल कर लेना चाहते हैं । फिर मेरे लिये यह भी आश्चर्य की बात है, कि मैं सब की निगाहों से बच कर जो अनुष्ठान किया करता हूँ, उसे लोग कैसे देख लेते हैं, और उस पर आलोचना क्यों करते हैं ।"

योगेन्द्र, "आप नहीं जानते, जो संसार की उन्नति का भार अपने कन्धे पर लादे हुये हैं, वह यह खोज-खबर रखने में अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि किसके घर क्या हो रहा है । जो खबर नहीं मिलती, उसे पूरी कर लेने की शक्ति भी उनमें है । नहीं तो संसार में संशोधन का काम कैसे चले । इसके अतिरिक्त नलिन बाबू, जिस काम को चार आदमी नहीं करते, वह काम निगाह बचाकर करने से भी लोगों की निगाह में पड़ जाता है—जो सभी करते हैं, उसे कोई देखता भी नहीं । देखिये न, आप छत पर बैठकर जो सब काम करते हैं, वह हमारी हेम की निगाह में भी पड़ चुका है—हेम पिताजी से सब कह रही थी—फिर भी हेम ने आपके संशोधन का भार तो लिया नहीं है ।"

हेमनलिनी का मुंह लाल हो उठा । वह घबराकर कुछ कहना चाहती थी,

इसी बीच नलिनाक्ष ने कहा, "आप जरा भी लज्जित न हों, छत पर टहलने के समय सवेरे-शाम यदि आप मेरे नित्य के कर्म को देखती हैं, तो इसके लिए कौन आपको दोषी कह सकता है। आपकी दो आँखें होने के कारण आप लज्जित न हों; यह दोष हम लोगों में भी है।"

अन्नदा, "इसके अलावा हेम ने आपके नित्य-कर्म के सम्बन्ध में मेरे आगे किसी तरह की आपत्ति प्रकट नहीं की। वह श्रद्धापूर्वक आपकी साधना-प्रणाली के सम्बन्ध में मुझसे पूछती थी।"

योगेन्द्र. "किन्तु मैं यह सब कुछ समझता नहीं। हम लोग साधारण संसार में सहज भाव से जिस प्रकार चले चल रहे हैं उसमें कोई विशेष असुविधा दिखाई नहीं देती—मुझे यह विश्वास नहीं, कि छिपकर अद्भुत काम करने से कुछ विशेष लाभ होता है—बल्कि उससे मन का सामञ्जस्य नष्ट होता है और मनुष्य एक तरफ हो जाता है। किन्तु आप मेरी बात से नाराज न होइ-—गा—मैं बिलकुल ही साधारण आदमी हूँ। संसार में मैं बहुत ही मध्य के स्थान में रहता हूँ; जो किसी प्रकार के ऊँचे सिंहासन पर चढ़के बैठते हैं, उनकी ओर ढेले न फेंकने के सिवा और कोई सम्भावना नहीं। मेरे जैसे असंख्य आदमी हैं, अतएव यदि आप सबको छोड़ किसी विचित्र लोक की ओर यात्रा कर रहे हैं, तो आपको असंख्य ढेले सहने पड़ेंगे।"

नलिनाक्ष—ढेले भी कई प्रकार के होते हैं। कोई लग जाता है और कोई निशान बनता चला जाता है। अगर कोई कहे, कि यह आदमी पागलपन करता है, लड़कपन करता है, तो उससे कोई हर्ज नहीं—किन्तु जब लोग कहते हैं, कि साधुगीरी-साधकगीरी करता है, गुरु बनकर चेला संग्रह करने की चेष्टा में है, तब इस बात को हँसी में उड़ाने के लिये जितनी हँसी की जरूरत है, उस परिमाण से हँसी भी नहीं आती।

योगेन्द्र—किन्तु मैं फिर कहता हूँ। मुझ पर नाराज न होइयेगा नलिन-बाबू, आप छत पर जो मन में आये करें, मैं उस पर आपत्ति करने वाला कौन। मेरा कहना केवल इतना ही है, कि साधारण सीमा में अपने को बाँध रखने से फिर कोई बात रह नहीं जाती। जिस तरह सब लोग चले चलते हैं,

वैसे ही मेरा भी चले चलना यथेष्ठ है उससे अधिक चलने से ही लोगों की भीड़ जम जाती है। वे गाली दें या भक्ति करें, उससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं—किन्तु, क्या इतनी भीड़ में जीवन आराम से व्यतीत किया जा सकता है?

नलिनाक्ष—योगेन्द्रबाबू, आप जाते कहाँ हैं। मुझे अपनी छत से एकदम सर्वसाधारण में जमीन पर एकाएक उतारकर अब आपके भागने से काम न चलेगा।

योगेन्द्र—आज मेरे लिये यहीं तक यथेष्ट है—अब बस। जरा नींद जान पड़ती है।

योगेन्द्र के चले जाने पर हेमनलिनी सिर झुकाकर टेबिल पर ढके कपड़े की झालर से छेड़-छाड़ करने लगी। उस समय यदि कोई देखता, तो उसे उसकी आँखों के किनारे कुछ गीला-गीला-सा दिखाई देता।

हेमनलिनी नित्य नलिनाक्ष से बातें करते-करते अपने हृदय की दीनता को देख सकी है और नलिनाक्ष की राह पर चलने के लिये व्याकुल भाव से व्यग्र हो उठी है। बहुत ही दुःख के समय जब उसे भीतर-बाहर किसी तरह का अवलम्बन खोजे नहीं मिल रहा था, उस समय नलिनाक्ष ने उसके सामने संसार को एक नये रूप में खोल दिया। ब्रह्मचारिणी की तरह किसी नियम के लिये उसका मन कुछ दिन से उत्सुक था—क्योंकि नियम मन का एक दृढ़ अवलम्बन है—केवल इतना ही नहीं, शोक केवल मन में आकार में टिक नहीं सकता, वह बाहर भी किसी कठोर साधना में अपने को सत्य बनाने की चेष्टा करता है। यहाँ तक हेमनलिनी वैसा कुछ न कर सकी—लोगों की निगाह पड़ने के संकोच—से वह बहुत छिपकर अपने मन के भीतर ही उसे पालती आई है। नलिनाक्ष की साधन प्रणाली का अनुसरण कर आज जब उसने शुद्ध आचार और निरामिष आहार ग्रहण किया, तब उसके मन को काफी तृप्ती मिली। अपने सोने के कमरे से चटाई और दरी हटाकर उसने बिछौने की एक ओर पर्दे का आड़ कर दिया—उस कोठरी में उसने और कोई चीज रहने नहीं दी। उस जमीन को नित्य हेमनलिनी अपने हाथ से पानी से धोती थी एक रकाबी में कुछ फूल रखती, स्नान के बाद सफेद कपड़ा पहन उसी

जमीन में हेमनलिनी बैठती थी। सब खुली खिड़कियों से कोठरी में बिना रुकावट के प्रकाश आता था और उस प्रकाश द्वारा, और वायु के द्वारा वह अपने हृदय को अभिषिक्त कर लेती थी। अन्नदा बाबू पूरी तरह से हेमनलिनी का साथ दे नहीं सकते थे किन्तु नियम के पालन से हेमनलिनी के चेहरे पर जो परितृप्ति का प्रकाश दिखाई देता था, उसे देख वृद्ध परितृप्त हो जाता था। अब नलिनाक्ष के आने पर हेमनलिनी की उसी कोठरी में जमीन के ऊपर बैठ उन तीनों आदमियों में बातचीत होती।

योगेन्द्र बिल्कुल ही विद्रोही हो उठा, "यह सब क्या हो रहा है। तुम सब लोगों ने तो मिलकर मकान को भयानक रूप से पवित्र कर डाला है—मेरे जैसे आदमी के लिये तो यहाँ पैर रखने की भी जगह नहीं।"

पहले योगेन्द्र के कटाक्ष से हेमनलिनी बहुत संकुचित हो पड़ती थी—अब अन्नदा बाबू योगेन्द्र की बात पर कभी-कभी नाराज हो उठते हैं, किन्तु, हेमनलिनी नलिनाक्ष का साथ देती हुई शान्त और स्निग्ध भाव से हँसती रहती है। अब उसने दुविधा-विहीन एक निश्चित सहारे का अवलम्बन किया है—इस बारे में लज्जा करने को भी कमजोरी समझती है। लोग उसके आजकल के आचरणों को अद्भुत समझ उसकी हँसी उड़ाते हैं; इसे वह समझती है; किन्तु नलिनाक्ष के प्रति जिसकी भक्ति और विश्वास ने सब लोगों को ढक सा दिया है—इसलिये योगेन्द्र के सामने वह किसी तरह का संकोच नहीं करती।

एक दिन हेमनलिनी प्रातः स्नान के बाद उपासना समाप्त कर अपनी एकान्त कोठरी में खिड़की के सामने चुपचाप बैठी थी। ऐसे समय एकाएक अन्नदा बाबू नलिनाक्ष को लिये हुए वहाँ आ पहुँचे। उस समय हेमनलिनी का हृदय परिपूर्ण था। उसने उसी समय जमीन पर बैठ पहले नलिनाक्ष को और फिर अपने पिता को प्रणाम कर पैर की धूलि माथे से लगाई। नलिनाक्ष संकुचित हो उठे। अन्नदा बाबू ने कहा, "आप संकोच न करें, हेमनलिनी ने अपना कर्त्तव्य किया है।"

और दिनों इतने सवेरे नलिनाक्ष यहाँ आते नहीं थे। इसलिये बहुत

उत्सुकता के साथ हेमनलिनी ने उसके मुँह की ओर देखा। नलिनाक्ष ने कहा, "काशी से माँ का समाचार मिला है, उनका शरीर उतना अच्छा नहीं है, इसी से मैंने ठीक किया है कि आज शाम की गाड़ी से काशी जाऊँगा। दिन-ही-दिन मुझे अपना सब काम कर लेना पड़ेगा, इसी से इसी समय आप लोगों से विदा होने आया हूँ।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "इस पर मैं और क्या कहूँ आपकी माँ बीमार हैं; भगवान् करें वे शीघ्र अच्छी हो जायँ इधर कुछ दिनों से आपसे हम लोगों का जो उपकार हुआ है, वह ऋण हम लोग कभी भी चुका न सकेंगे।"

नलिनाक्ष ने कहा, "यह निश्चित समझें कि आप लोगों से मेरा बड़ा उपकार हुआ है। पड़ोसी का जितना आदर-सत्कार होना चाहिये, वह तो हुआ ही है—इसके अतिरिक्त जिन सब गम्भीर बातों पर मैं अकेले मन-ही-मन आलोचना किया करता था, आप लोगों की श्रद्धा से उसमें नया तेज आया है—मेरी भावना और साधना आप लोगों के जीवन का अवलम्बन कर मेरे लिये और भी दूना आश्रयस्थल बन गया है। इस बात को अच्छी तरह समझ गया हूँ कि किसी के हृदय की सहयोगिता से सार्थकता प्राप्ति कितनी सहज हो उठती है।"

अन्नदा ने कहा, "मुझे यह आश्चर्य है कि हम लोगों में किसी बात की बहुत खोज थी, किन्तु किस बात की खोज, इसे हम समझते नहीं थे—ठीक ऐसे ही समय न जाने कहाँ से आप मिल गये और देखा कि आपके न मिलने से हमारा कुछ चलता नहीं था हम लोग बहुत ही संकोची हैं—हम लोग समाज में अधिक आते-जाते भी नहीं—किसी सभा में जाकर वक्तृता सुनने की आदत भी हम लोगों में नहीं है—हो सकता है कि मैं जाऊँ भी, किन्तु हेमनलिनी को ले जाना बहुत कठिन हो जाता है। किन्तु उस दिन कैसी आश्चर्य की बात हुई, योगेन्द्र से सुना कि आप व्याख्यान देंगे, हम दोनों ही कोई आपत्ति प्रकट न कर सीधे वहाँ उपस्थित हुए—ऐसी घटना कभी हुई नहीं। यह बातें याद रखियेगा नलिन बाबू। इससे आप समझ सकेंगे कि निःसन्देह आपकी हम लोगों की जरूरत है, नहीं तो ऐसी घटनाएँ क्यों होतीं।

हम लोग आपके लिये भार स्वरूप हैं।"

नलिनाक्ष—आप लोग भी यह याद रखियेगा कि आप लोगों को छोड़ किसी के आगे मैंने अपने जीवन की गूढ़ बातें प्रकट नहीं की है। सत्य को प्रकाश करना ही सत्य की चरम शिक्षा है। उसके प्रकाश करने के गूढ़ प्रयोजन को मैं आप लोगों के द्वारा ही मिटा सका हूँ। अतएव आप लोग भी इस बात को न भूलियेगा कि आप लोगों की मुझे कितनी जरूरत है।

हेमनलिनी कुछ नहीं बोली, खिड़की की राह से धूप आकर जमीन पर पड़ रही थी, उसी ओर देखती हुई वह चुपचाप बैठी थी। अब नलिनाक्ष के उठने का समय हुआ, तब उसने कहा, 'खबर दीजियेगा कि आपकी माताजी कैसी है ?"

नलिन के खड़े होने पर हेमनलिनी ने फिर भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया।

इधर कई दिन से अक्षय दिखाई नही दिया। नलिनाक्ष के काशी चले जाने पर आज वह योगेन्द्र के साथ अन्नदा बाबू के चाय के टेबिल पर दिखाई दिया है। अक्षय ने कल-ही-मन ठहराया में था, कि रमेश की याद हेमनलिनी के मन में कहाँ तक मौजूद है, उसके समझने का सहज उपाय अक्षय के प्रति उसकी नाराजी है। आज उसने देखा, कि हेमनलिनी का चेहरा शान्त है—अक्षय को देखकर उसके चेहरे का भाव बिलकुल नही बिगड़ा। सहज प्रसन्नता के साथ हेमनलिनी ने कहा, "आप कई दिन से दिखाई नहीं दिये ?"

अक्षय ने कहा, "क्या मैं नित्य देखने योग्य हूँ।"

हेमनलिनी ने हँसकर कहा, "यह योग्यता न होने से मिलन-जुलना भी बन्द कर दिया जाय, तो हम सभी लोगों को निर्जनवास करना चाहिये।"

योगेन्द्र, "अक्षय समझे थे, कि अकेले विनय कर बहादुरी लूटें, किन्तु हेम ने उस पर धक्का दे समस्त मनुष्य जाति के लिए विनय किया, किन्तु इसके बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूँ। हम लोग जैसे साधारण आदमी ही नित्य मिलने-जुलने के योग्य हैं और जो असाधारण है उनसे कभी-कभी मिलना ही अच्छा है, इससे अधिक बर्दाश्त से बाहर है। इसी से तो ऐसे लोग जंगल-पहाड़ और गुफाओं में ही घूमते-फिरते हैं। अगर वह लोगों में स्थायीभाव से बैठने

लगें, तो अक्षय और योगेन्द्र जैसे बिलकुल मामूली लोगों को जंगल-पहाड़ में छिपना पड़ेगा।

योगेन्द्र की बातों में खोंचा था, उसने हेमनलिनी को छेद दिया। इसका कोई जवाब न दे उसने तीन प्याला चाय तैयार कर अन्नदा, अक्षय और योगेन्द्र के सामने रख दिया। योगेन्द्र ने कहा, "क्या तुम चाय न पियोगी?"

हेमनलिनी समझती थी, कि योगेन्द्र कुछ कठोर वचन कहेगा, फिर भी उसने शान्त और दृढ़ भाव से कहा, "मैंने चाय छोड़ दिया है।"

योगेन्द्र "शायद अब कायदे के साथ तपस्या आरम्भ हुई है। शायद चाय की पत्तियों में यथेष्ट आध्यात्मिक नहीं पाये जाते जो कुछ है, वह केवल हरीतकी में है। कैसी आफत है। हेम, यह सब छोड़ो। एक प्याला चाय पीने से ही यदि तुम्हारा योगध्यान छूट जाय, तो छूट जाने दो—इस संसार में बहुत मजबूत चीज कायम नही रहती ऐसा भाव लेकर चार आदमियों में शामिल रहना असम्भव है।"

यह कह योगेन्द्र ने अपने हाथ से एक प्याला चाय तैयार कर हेमनलिनी के सामने रख दिया। उसने उसमें हाथ न लगा अन्नदा बाबू से कहा, "पिता जी, आज तुमने केवल चाय ही पी है, और कुछ न खाओगे?"

अन्नदा बाबू की आवाज और हाथ काँपने लगा। उन्होंने कहा, "बेटी, मैं सच कहता हूँ। इस टेबिल पर कुछ खाना मुझे रुचता ही नहीं। योगेन्द्र की बातों को मैं बहुत देर से चुपचाप सहन करने की चेष्टा कर रहा हूँ। मैं यह जानता हूँ कि अपने शरीर और मन की इस अवस्था में कुछ बोलते समय मैं न जाने क्या कह बैठ सकता हूँ—किन्तु, पीछे पछताना पड़ता है।"

हेमनलिनी ने अपने पिता की कुरसी के पास खड़ी होकर कहा, "पिताजी, तुम नाराज न हो। दादा मुझे चाय पिलाना चाहते हैं, यह तो अच्छा ही है—मैं तो इसका कुछ खयाल भी नहीं करती। नहीं पिताजी तुम कुछ खाओ—खाली पेट चाय पीने से तुम्हें नुकसान पहुँचता है; यह मैं जानती हूँ।"

यह कह हेमनलिनी ने जलपान की रकाबी खींचकर अपने पिता के सामने रख दी। अन्नदा धीरे-धीरे जल-पान करने लगे।

हेमनलिनी अपनी कुर्सी पर बैठकर योगेन्द्र के दिये हुये चाय के प्याले से चाय पीने को तैयार हुई। किन्तु चटपट उठकर अक्षय ने कहा, "माफ कीजियेगा, यह प्याला मुझे दे दीजिये, मेरा प्याला खाली हो गया।"

योगेन्द्र ने हेमनलिनी के हाथ से प्याला लेकर अन्नदा से कहा, "माफ करो, मुझसे भूल हुई।"

अन्नदा इसका जवाब दे न सके, देखते-देखते उनकी आँखों से आँसू टपक पड़े।

योगेन्द्र, अक्षय के साथ धीरे-धीरे कोठरी से बाहर निकल गया। अन्नदा बाबू जलपान कर हेमनलिनी का हाथ पकड़ काँपते पैरों से ऊपर चले गये।

उसी रात अन्नदा बाबू को शूल वेदना जैसी बीमारी हुई। डाक्टर ने परीक्षा कर कहा, "उन्हें यकृत का विकार है—अभी रोग बढ़ा नहीं है, इस समय पश्चिम के किसी स्वास्थ्यकर स्थान में जाकर वर्ष छः महीने रह आने से शरीर निर्दोष हो सकता है।"

दर्द कम होने और डाक्टर के चले जाने पर अन्नदा बाबू ने कहा, "हेम चलो बेटी हो सके तो हम लोग कुछ दिन काशी में चलकर रहें।"

इसी समय हेमनलिनी के मन में भी यही बात आई थी। नलिनाक्ष के चले जाने के बाद से हेम अपने साधन के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी का अनुभव करने लगी थी। नलिन के रहते हेमनलिनी की सब नित्यक्रियाएँ दृढ़ता के साथ चल रहीं थीं। उसके मुख श्री में एक स्थिर निष्ठा और प्रशान्त प्रसन्नता की दीप्ति थी, उसी ने हेमनलिनी के विश्वास को सदा विकसित कर रखा था। नलिन के न रहने पर उसके उत्साह में मानो एक मलिन छाया आ पड़ी। इसीसे आज सारे दिन हेमनलिनी ने नलिन के बताये अनुष्ठानों को बड़े जोर और बहुत अधिक रूप में किया। किन्तु उससे थकावट आकर ऐसी निराशा उत्पन्न हो गई थी, कि वह अपने आँसुओं को रोक न सकी। चाय के टेबिल पर बड़ी दृढ़ता के साथ उसने आतिथ्य किया था, किन्तु उसका मन एक बोझ से दबा था। उसकी पुरानी स्मृति ने फिर उस पर दूने वेग से आक्रमण किया है—फिर उसका मन मानो गृह-हीन और आश्रयहीन की तरह हाय-हाय

कर घूमने लगा है। इसीसे जब उसने काशी चलने का प्रस्ताव सुना, तब घबड़ा कर कहा, "पिताजी, यह ठीक है।"

दूसरे दिन तैयारी होते देख योगेन्द्र ने पूछा, "क्या बात है?"

अन्नदा ने कहा, "हम लोग पश्चिम जा रहे हैं।"

अन्नदा ने कहा, "घूमते-फिरते कोई जगह पसन्द कर लेंगे।"

उन्होंने योगेन्द्र से संकोचवश काशी जाने का नाम नहीं लिया।

योगेन्द्र ने कहा, "किन्तु मैं इस बार तुम लोगों के साथ जा न सकूँगा। मैंन हेडमास्टरी के लिये जो दरख्वास्त भेजी है, उसके जवाब की राह देखूँगा।"

पच्चीस

रमेश सवेरे ही इलाहाबाद से गाजीपुर लौट आया। उस समय रास्ते में अनेक लोग नहीं थे और शीत की अधिकता से राह किनारे के पेड़ मानो पत्तों की आड़ में जड़ाए हुए खड़े थे। मुहल्ले की बस्ती पर उस समय भी सफेद ओस के अण्डे के ऊपर चुपचाप बैठे हुए बतख की तरह बादल छाया हुआ था। उस निर्जन राह में घोड़ागाड़ी के भीतर एक मोटे ओवर कोट के नीचे रमेश की छाती के भीतर हृदय आघात कर रहा था।

बँगले के बाहर गाड़ी खड़ी कर रमेश उतरा। सोचा, कि गाड़ी की आवाज निश्चय ही कमला ने सुनी होगी—आवाज सुनकर शायद वह बाहर बरामदे में आ गई होगी। अपने हाथ से कमला के गले में पहनाने के लिये इलाहाबाद से रमेश सोने का एक कीमती नेकलेस ले आया था। जेवर का बक्श रमेश ने ओवरकोट से निकालकर हाथ में ले लिया।

बँगले के सामने आकर रमेश ने देखा, कि बिशुन बैरा बरामदे में पड़ा सो रहा है। बँगले का दरवाजा बन्द है। दुःखी हो रमेश कुछ ठिठक कर खड़ा हो गया। जरा ऊँचे स्वर से आवाज दी, "बिशुन!" सोचा, कि ऐसे ही आवाज

देने की जरूरत है। रमेश आधी रात से सोया नहीं था।

दो तीन बार बुलाने पर भी बिशुन नहीं जागा। अंत में उसे हिलाकर जगाना पड़ा। बिशुन उठकर कुछ देर बेवकूफों की तरह ताकता रहा। रमेश ने पूछा, "बहूजी घर में हैं ?"

पहले बिशुन मानो रमेश की बात समझ ही नहीं सका। इसके बाद एका-एक चौंककर कहने लगा, "हाँ, वह घर में ही हैं।" इसके बाद वह फिर लेट-कर सोने की चेष्टा करने लगा।

रमेश के ठेलते ही दरवाजा खुल गया। भीतर जाकर उसने हर कोठरी में देखा, कहीं कोई नहीं। फिर भी उसने एक बार ऊँचे स्वर से बुलाया, "कमला !" कहीं कोई आवाज नहीं। बाहर बाग में नीम के नीचे तक घूम आया, रसोईघर में, नौकरों की कोठरी में, अस्तबल घर में ढूंढ़ आया, किन्तु कहीं भी कमला दिखाई नही दी।

इसी समय खूब—चौड़े किनारे की बढ़िया धोती पहने चादर ओढ़े लाल-लाल आँखें किये उमेश आ पहुँचा। रमेश ने उससे पूछा, "उमेश, तेरी माँजी कहाँ हैं ?"

उमेश ने कहा, "माँ तो कल से यहीं हैं।"

रमेश ने पूछा, "तू कहाँ था ?"

उमेश ने कहा, "मुझे माँ ने कल सुधू बाबू के घर यात्रा सुनने को भेज दिया था।"

रमेश, "चल तो चाचा जी के यहाँ देखें।" रमेश के साथ उमेश ! बँगले में आ पहुँचा। यहाँ के जनानखाने में वह आता-जाता था। इस बालक पर शैलजा प्रेम भी करती थी। उमेश ने उनसे पूछा, "माँ कहाँ हैं मासीजी ?"

शैल ने विस्मय के साथ पूछा, "क्यों ? तू तो उन्हें साथ लेकर कल उस मकान में गया न ?"

उमेश ने उदास होकर कहा, "उस मकान में तो वह दिखाई नहीं दी।"

शैल ने भी घबराकर पूछा, "यह कैसी बात ? कल रात तू कहाँ था ?"

उमेश—मुझे तो माँ ने रहने नहीं दिया। उस मकान में जाते ही उन्होंने

मुझे सिधू के घर यात्रा देखने को भेज दिया।

शैल—जा जा, जल्दी से बाबू को बुला ला।

विपिन के आते ही शैल ने उसे बनाया और कहा, "अरे यह कैसा सर्वनाश हुआ ?"

विपिन का मुंह पीला पड़ गया। उसने घबराकर पूछा, "क्यों क्या हुआ ?"

विपिन, "क्या वह कल रात यहाँ नहीं आई ?"

शैल, "क्या रमेश बाबू आये है ?"

विपिन, "जान पड़ता है कि उसे बंगले में न देख कर वह समझे हैं, कि कमला यहाँ ही आई है। वह तो हमारे यहाँ आकर बैठे हैं।"

शैल—जाओ जाओ, जल्दी जाओ, उन्हें साथ लेकर खोज करो।

विपिन और रमेश फिर उसी गाड़ी पर सवार हो बँगले लौट आये और बिशुन से पूछ-ताछ करने लगे। बहुत पूछताछ करने पर यह पता लगा कि कल शाम को कमला अकेली गंगा किनारे की ओर गई थी। बिशुन ने उसके साथ जाने को कहा, किन्तु कमला ने उसके हाथ में एक रुपया दे, उसे लौटा दिया। वह पहरा देने के लिए बगीचे के फाटक पर बैठा रहा। जिस राह से उसने कमला को गंगा किनारे जाते देखा, वह बता दिया।

उसी राह से ओस से सिंचे हुए खेतों के बीच से रमेश, विपिन और उमेश कमला को ढूंढ़ने चले। गंगा के किनारे आकर तीनों एक बार खड़े हो गए। वहाँ चारों ओर खुलासा था। सफेद बालू सवेरे की धूल से चमक रही थी। कहीं कोई भी दिखाई न दिया। उमेश ऊँचे स्वर से चिल्लाया, "माँ-माँ, कहाँ हो।" उस पार के ऊँचे करारे से लड़कर उसकी प्रतिध्वनि लौट आई। कहीं कोई पता नहीं।

ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उमेश ने एकाएक कुछ सफेद चीज देखा। उसने जल्दी से वहाँ पहुँचकर देखा कि पानी के किनारे एक रूमाल में बँधा चाबी का गुच्छा पड़ा है 'वह क्या है' कहता हुआ रमेश भी वहाँ पहुँच गया। उसने देखा कि चाबी का गुच्छा कमला का ही है।

जहाँ चाबी पड़ी थी, वहीं बालू के किनारे-किनारे दलदल मिट्टी भी थी।

उस कच्ची मिट्टी में गंगा के भीतर तक छोटे-छोटे पैर के निशान पड़े थे। थोड़े से पानी में कुछ झिलमिला रहा था, वह उमेश की निगाह से बच न सका—उसने जल्दी से उठाया तब दिखाई दिया कि वह सोने के ऊपर पच्चीकारी किया हुआ एक छोटा-सा ब्रांच था—यह रमेश का दिया उपहार था।

इस तरह सारी ढुंढाई ने जब गंगा के किनारे की ओर ही उँगली उठाई, तब उमेश अब शान्त रह न सका, वह 'माँ-माँ' चिल्लाकर पानी में कूद पड़ा। वहाँ पानी अधिक नहीं था—उमेश बार-बार डुबकी लगा जमीन थहाने लगा—उसकी ढूँढ़ाई से पानी गँदला हो गया। रमेश हत्‌बुद्धि हो खड़ा रहा।

विपिन ने चुपचाप खड़े रमेश को हिलाकर कहा, "रमेश बाबू चलिये। यहाँ खड़े रहने से क्या फायदा। जरा पुलिस में रिपोर्ट की जाय वह सब पता लगायेंगे।"

उस दिन तीसरे पहर चाचा भी आ गये। कई दिन से कमला के व्यवहार और शुरू से—आखिर तक सब वृत्तान्त सुन उन्हें उसके डूब मरने में कोई भी सन्देह न रहा।

रमेश की छाती मानो सूख गई—उसमें आँसू की थाह भी नहीं थी। वह बठे-बैठे सोचने लगा कि एक दिन यही कमला गंगा के पानी से निकलकर मेरे पास आई थी, फिर पूजा के पवित्र फूल की तरह उसी गंगा के पानी में समा गई।

उस समय सूर्य अस्त हो गये थे, तब रमेश फिर गंगा किनारे आया। जिस जगह चाबी का गुच्छा पड़ा था, वहीं खड़े हो एक दृष्टि से पैरों का निशान देखने लगा। इसके बाद जूता उतार धोती चढ़ा कुछ दूर तक पानी में उतर गया। उसने बाक्स से नया नेकलेस निकालकर पानी में फेंक दिया।

अब रमेश के लिये कोई काम रह नहीं गया। उसके मन में आया, कि शायद इस जीवन में वह कोई काम न कर सकेगा। यह नहीं, कि हेमनलिनी उसे याद नहीं आई—उसने मन-ही-मन सोचा, कि मेरे जीवन पर भयानक घटनाओं ने चोट पहुँचाई, उसने मुझे सदा के लिये संसार में अयोग्य बना डाला। बिजली का मारा हुआ पेड़ खिले बगीचे में स्थान पाने की आशा

कैसे करे।

रमेश घूमने-फिरने के लिये बाहर निकला। कहीं भी दो-एक दिन से अधिक न रहा। उसने नाव पर चढ़ के काशी के घाटों की शोभा देखी। वह दिल्ली के कुतुबमीनार पर चढ़ा। आगरा में चाँदनी रात में ताजमहल देख आया। अमृतसर में गुरुद्वारा देखा। राजपूताने के आबू पहाड़ के मन्दिर देखने गया—इस तरह रमेश ने शरीर और मन को विश्राम नहीं दिया।

अन्त में भ्रमण से थका हुआ वह युवक हृदय से केवल घर की खोज में हाहाकार करने लगा। उसके मन में शान्तिमय घर की अतीत स्मृति और सम्भव पर घर की सुखमयी कल्पना चोट पहुँचाने लगी। अन्त में एक दिन उसका शोक काटने का समय बिताना समाप्त हो गया और वह ठण्डी साँस भर कलकत्ते का टिकट ले गाड़ी पर सवार हो गया।

कलकत्ते पहुँचने पर रमेश कोलूटोला वाली गली में सहसा प्रवेश कर न सका। उसका कोई ठिकाना नहीं, कि वहाँ जाकर वह क्या देखे सुनेगा। उसके मन में केवल यही एक आशंका होने लगी, कि वहाँ कोई बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है। एक दिन वह गली के मोड़ तक जाकर लौट आया। दूसरे दिन शाम के समय उसने अपने को जबर्दस्ती उस मकान के सामने पहुँचाया। देखा, कि मकान के सब खिड़की दर्वाजे बन्द हैं—ऐसा नहीं जान पड़ता, कि भीतर कोई है सोचा, कि शायद सुक्खन बैरा सन्नाटे मकान में हो, यह समझ रमेश ने बैरा को आवाज देते हुए दर्वाजे पर कई धक्के दिये। किसी ने जवाब नहीं दिया। पड़ोसी चन्द्रमोहन अपने दर्वाजे पर बैठे तम्बाकू पी रहे थे; उन्होंने कहा, "कौन रमेश बाबू हैं क्या। अच्छी तरह तो हैं? इस मकान में इस समय अन्नदा बाबू वगैरह कोई नहीं हैं।"

रमेश—आप जानते हैं, वह लोग कहाँ गये हैं?

चन्द्रमोहन—यह तो नहीं कह सकता, किन्तु यह जानता हूँ, कि पश्चिम गये हैं।

रमेश—कौन-कौन गये हैं?

चन्द्रमोहन—अन्नदा बाबू और उनकी लड़की।

रमेश कुछ देर चुप रहा। फिर पूछा, "आप बता सकते हैं, कि योगेन्द्र इस समय कहाँ हैं ?"

चन्द्रमोहन ने बताया, कि योगेन्द्र मयमनसिंह के किसी जमींदार द्वारा स्थापित हाईस्कूल के हेडमास्टर होकर विशईपुर गये हैं।

अन्त में उसने योगेन्द्र से मिलने का मन-ही-मन निश्चय किया।

योगेन्द्र विशईपुर में जमींदार के मकान के बगल में एक मंजिले मकान में रहता है—वहाँ वह रविवार के सवेरे समाचार-पत्र पढ़ रहा था, उसी समय बाजार के एक आदमी ने उसके हाथ एक चिट्ठी दी। लिफाफे के ऊपर की लिखावट देखकर वह आश्चर्य में आया। खोलकर देखा, कि रमेश ने लिखा है—वह विशईपुर की एक दूकान में उसके आसरे है, कुछ जरूरी बातें कहनी हैं।

चिट्ठी लाने वाले को साथ ले योगेन्द्र स्वयं रमेश की खोज में चला। देखा, कि वह एक बनिये की दूकान में एक किरासिन के खाली बाक्स को उलटकर चुपचाप बैठा है। बनिया ब्राह्मण के हुक्के में उसे तम्बाकू देने को तैयार हुआ, किन्तु यह जानकर, कि चश्मा पहने बाबू तम्बाकू नहीं पीते, वह उसे शहर के किसी अद्भुत श्रेणी के पदार्थों में समझ बैठा था। इसलिये दोनों में परिचय की भी कोई बातचीत नहीं हुई।

योगेन्द्र ने तेजी के साथ आकर रमेश का हाथ पकड़कर खींचा। कहा, "तुमसे मैं हारा। तुम अपनी दुविधा को साथ ही लेते गये। कहाँ तुम्हें सीधे मेरे घर आना चाहिये, कहाँ रास्ते में बनिये की दूकान में गुड़-बताशे और फरुई के चाकत्तों के बीच अटल होकर बैठे हुए हो।

रमेश शर्म से हँस दिया। फिर दोनों बासे पर आये।

रमेश ने चारों ओर देखकर कहा, "मजे की निर्जन जगह है।"

योगेन्द्र—इसलिये मैं अपने ही जैसे और किसी को बाद दे इस निर्जनता को और बढ़ाने के लिये नित्य व्याकुल होता रहता हूँ।

रमेश—यह कहो; मन की शान्ति के लिये तो—

योगेन्द्र—यह सब बातें मुझसे न कहो—कुछ दिन से खूब मन की शान्ति

देते-देते मेरा प्राण कण्ठगत है। मैंने अपने भरसक इस शान्ति को तोड़ने में कोई त्रुटि नहीं की। इसी बीच सेक्रेटरी से हाथापाई होने की नौबत आ गई। जमींदार बाबू को भी मैंने अपने मिजाज का जैसा परिचय दिया है, उस पर सहज ही वह हस्तक्षेप करने न आयेंगे। वह मुझसे समाचार पत्र के बारे में मुसाहिबी करना चाहते थे—किन्तु मैंने उन्हें अच्छी तरह समझा दिया कि मैं स्वतन्त्र स्वभाव का आदमी हूँ। फिर भी मैं जो यहाँ टिका हुआ हूँ, वह अपने गुण से नहीं। यहाँ के ज्वाइन्ट साहब ने मुझे बहुत पसन्द किया है—इसी से जमींदार मारे भय के मुझे छुड़ा नहीं सकता—जिस दिन गजेट में ज्वाइण्ट साहब की बदली हो गई, उसी दिन समझ जाऊँगा, कि मेरी हेड-मास्टरी का सूर्य विशईपुर के आकाश में अस्त हो गया। इस बीच यहाँ मेरा एक ही मुलाकाती पैदा हुआ है—यह पंचू कुत्ता, और सब लोगों की मुझ पर जैसी दृष्टि है, उसे मैं किसी तरह से भी शुभदृष्टि नहीं कह सकता।

इस प्रकार भोजन, बातचीत और विश्राम में दिन बीत गया। रमेश किस खास बात के लिये यहाँ आया था, उसे कहने के लिये योगेन्द्र ने दिन भर कोई मौका नहीं दिया। संध्या के बाद भोजन के उपरान्त किरासन तेल की रोशनी में दोनों आदमी कुर्सी खींचकर बैठकर गये। समीप ही सियार बोलने लगे और अंधेरी रात में झिल्ली की झनकार होने लगी।

रमेश ने कहा, "योगेन्द्र, तुम तो समझते ही हो कि मैं क्या कहने के लिये यहाँ आया हूँ। एक दिन तुमने मुझसे जो पूछा था, उसका जवाब देने का समय वह नहीं था। अब उसका जवाब देने में कोई बाधा नहीं।"

यह कह रमेश कुछ देर चुप बैठा रहा। इसके बाद धीरे-धीरे वह शुरू से आखिर तक सब बातें कह गया। बीच-बीच में उसका गला रुद्ध होता और आवाज काँप उठती थी—कहीं-कहीं बस वह दो-एक मिनट के लिये चुप भी हो जाता। योगेन्द्र कुछ न कहकर चुपचाप रमेश की बातें सुनता रहा।

जब बातें खतम हुईं तब एक गहरी साँस लेकर योगेन्द्र ने कहा, "अगर यह सब बातें तुम उस दिन कहते तो मैं विश्वास न करता।"

रमेश—विश्वास करने का कारण जो उस समय था, वही अब भी है।

इसलिये तुमसे मेरा यही प्रार्थना है कि जिस गाँव में मैंने विवाह किया था उस गाँव में तुम्हें एक बार जाना पड़ेगा। इसके बाद मैं तुम्हें वहाँ से कमला के मामा के यहाँ भी ले चलूंगा।

योगेन्द्र—मैं कहीं के लिये एक कदम भी न बढ़ाऊँगा—मैं इस कुर्सी पर बैठे-ही-बैठे तुम्हारी बात के अक्षर-अक्षर पर विश्वास कर रहा हूँ। तुम्हारी बातों पर विश्वास करने का मुझे सदा से अभ्यास है—जीवन में सिर्फ एक बार उसमें फर्क पड़ा है, इसके लिये मैं तुमसे माफी चाहता हूँ।

यह कह वह कुरसी से उठ रमेश के सामने आया—रमेश भी खड़ा हो गया; बचपन के दोनों मित्र गले मिले। रमेश ने अपने रुँधे हुए गले को साफ कर कहा, "मैं न जाने कैसे भाग्य विरंचित इस कठिन मायाजाल में पकड़ गया था, कि उसमें पूरी तरह से पकड़ जाने के सिवा और किसी ओर कोई उपाय देख नहीं पाता था। आज मैंने उससे छुटकारा पाया है मैं यह भी समझ नहीं सका, कि कमला ने क्यों और किसलिये आत्महत्या की; अब उसके समझने की कोई सम्भावना भी नहीं है किन्तु निश्चय है, कि यदि मृत्यु हम दोनों के बीच की कठिन गाँठ को काट न देती, तो अन्त में हम दोनों की जैसी दुर्गति होती, उसे यादकर अब भी मेरा हृदय काँप उठता है। जैसे एक दिन मृत्यु के ग्रास से एकाएक वह समस्या उत्पन्न हुई थी, वैसी ही मृत्यु के गर्भ में एक दिन वह समस्या समा गई।"

योगेन्द्र—लेकिन संशय में यह न समझ बैठना, कि कमला ने निश्चय ही आत्महत्या कर ली है। जो हो, तुम्हारी राह तो साफ हो गई, अब मैं हेम की बात सोच रहा हूँ। पता नहीं कैसी होती जा रही है।

इसके बाद दोनों मित्रों में घर चलने की सलाह हुई।

छब्बीस

चन्द्रमोहन से रमेश का हाल सुनकर अक्षय के मन में अनेक चिन्ताएँ उत्पन्न हुईं। वह सोचने लगा कि बात क्या है? रमेश गाजीपुर में प्रैक्टिस कर रहा था—इतने दिन से अपने को अच्छी तरह छिपाये हुये था—इस बीच ऐसी कौन-सी बात हुई, जिससे वह वहाँ की प्रैक्टिस छोड़ हिम्मत बाँध कोलू-टोला की गली में अपने को प्रकट करने के लिये उपस्थित हुआ। किसी दिन रमेश कहीं से यह समाचार पाकर कि अन्नदाबाबू वगैरह काशी में हैं, कहीं वहाँ न जा पहुँचे। उसने स्थिर किया कि इसी बीच वह गाजीपुर पहुँचकर सब बातें मालूम करे और इसके बाद काशी जाकर अन्नदाबाबू से मुलाकात कर आये।

एक दिन अगहन के महीने में तीसरे पहर हाथ में बैग लटकाये अक्षय गाजीपुर में आ पहुँचा। पहले उसने बाजार में पूछा कि रमेश बाबू नामक एक बंगाली वकील का मकान कहाँ है? लोगों से मालूम हुआ कि बाजार में रमेश बाबू के नाम से कोई वकील मशहूर नहीं। तब वह अदालत में गया। अदालत उठ गई थी। एक बंगाली वकील गाड़ी पर सवार होने जा रहे थे, उनसे अक्षय ने पूछा, "महाशय, रमेशचन्द्र चौधरी के नाम से एक नये बंगाली वकील गाजीपुर में आये हैं, आप जानते हैं कि वह कहाँ रहते है?"

अक्षय को इनसे मालूम हुआ कि रमेश तो अब तक चाचा के मकान में थे, अब वह कहाँ हैं, यह नहीं मालूम। उसकी स्त्री मिल नहीं रही है, शायद वह पानी में डूब कर मर गई है।

अक्षय चाचा के मकान चला। राह में चलते हुए सोचने लगा—अब रमेश की चाल समझ में आ रही है। स्त्री मर गई, अब वह निःसंकोच हेमनलिनी के आगे यह प्रमाणित करने की चेष्टा करेगा कि उसकी स्त्री कभी थी ही नहीं। हेमनलिनी की जैसी हालत है, इससे रमेश पर अविश्वास करना उसके लिये असम्भव होगा। जो लोग धर्मनीति के ढोंग से अपने को खूब बढ़ा-चढ़ाकर बनाये फिरते हैं छिपे-छिपे वह कैसे भयानक होते हैं, मन-ही-मन इसकी आलो-

चना कर अक्षय आप ही अपनी ओर श्रद्धा का अनुभव करने लगा।

चाचा के पास पहुँच रमेश और कमला की बात पूछते ही वह शोक सँभाल न सके—उनकी आँखों से आंसू बहने लगे। उन्होंने कहा, "जब आप रमेश बाबू के मित्र हैं, तब बेटी कमला को निश्चय ही आप जानते होंगे; किन्तु मैं ठीक कह रहा हूँ कि कई दिन की मुलाकात में ही मैं उसे अपनी कन्या के समान ही मानता था। मैं नहीं जानता था कि दो दिन के लिए प्रीति बढ़ाकर वह इस तरह वज्रधात कर मुझे छोड़ जायगी।"

अक्षय ने चेहरे को उदास बनाकर कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसी घटना कैसे हो गई। निश्चय ही रमेश ने कमला से अच्छा व्यवहार न किया होगा।

चाचा—आप नाराज न होइयेगा—आपके रमेश को मैं आज तक पहचान न सका। देखने में बाहर से तो बहुत भले आदमी हैं, किन्तु मन में क्या सोचते और समझते है, यह जानना कठिन था। कमला जैसी स्त्री का यह क्यों अनादर करते थे, यह समझ में नहीं आता। कमला सती लक्ष्मी थी, मेरी लड़की से उसका पहले जैसा बर्ताव था—फिर भी उसने कभी अपने पति के विरुद्ध कोई बात नहीं कही। मेरी लड़की कभी-कभी समझती थी कि वह मन-ही-मन बहुत कष्ट उठाती है, किन्तु आखिरी दिन तक वह उससे एक बात भी कहला न सकी। यह तो आप समझ ही सकते हैं कि ऐसी स्त्री बिना असह्य यातना पाये ऐसा काम कर नहीं सकती।

दूसरे दिन सबेरे चाचा को साथ ले अक्षय रमेश के बँगले और गंगा के किनारे घूम आया। घर लौटने पर उसने कहा, "देखिये महाशय, कमला के गंगा में डूबकर आत्म-हत्या करने के बारे में आप जितने निःसंशय हैं, उतना मैं नहीं हूँ।"

चाचा—आप क्या जानते है ?

अक्षय—मुझे जान पड़ता है कि वह घर छोड़कर कहीं चली गई है—उन्हें अच्छी तरह ढूँढ़ना चाहिये।

चाचा ने एकाएक उत्तेजित होकर कहा, "आप ठीक कह रहे हैं; यह बात

बिलकुल सम्भव है।"

अक्षय—समीप ही काशीतीर्थ है। वहाँ मेरे मित्र हैं—हो सकता है कि कमला उन्हीं के पास चली गई हो।

चाचा ने आशान्वित होकर कहा, "उन मित्र की बात तो रमेश बाबू ने हम लोगों से कभी कहीं नहीं। अगर मैं जानता, तो खोज में कसर न करता।"

अक्षय—तब एक बार चलिए न, हम दोनों ही काशी चलें—पश्चिम अँचल आपका खूब जाना-समझा है, आप अच्छी तरह खोज कर सकेंगे।

चाचा इस प्रस्ताव पर बड़े उत्साह के साथ राजी हो गये। अक्षय जानता था कि हेमनलिनी उसकी बात का विश्वास न करेगी; इसलिए प्रमाण-स्वरूप चाचा को लेकर वह काशी गया।

× × ×

शहर के बाहर कन्टूनमेन्ट के हलके में खुले स्थान के एक बँगले को किराये पर लेकर अन्नदाबाबू ठहरे हुए थे।

अन्नदाबाबू आदि ने काशी में पहुँचते ही खबर पाया कि नलिनाक्ष की माता क्षेमंकरी को मामूली बुखार, खाँसी से अब न्यूमोनिया हो गया है। बुखार के रहते भी इस जाड़े के दिन में भी उन्होंने नियमित प्रातःस्नान बन्द नहीं किया; इसीसे उनकी हालत इतनी बिगड़ गई।

कई दिन बड़े परिश्रम से हेम ने उनकी सेवा की, जिससे क्षेमंकरी की खतरनाक हालत दूर हो गई है। किन्तु अब भी बहुत कमजोर है। पवित्रता के कारण बहुत विचार रखने से पथ्य और पानी के बारे में हेमनलिनी की सहायता उनके किसी काम न आई। इससे पहले वह अपने हाथ से बनाती-खाती थीं, अब नलिनाक्ष स्वयं उनका पथ्य तैयार कर देते और भोजन-पानी की सेवा भी नलिनाक्ष स्वयं करते थे। इससे क्षेमंकरी सदा आक्षेप कर कहा करतीं, "मेरा जाना ही अच्छा था, केवल तुम लोगों को कष्ट देने के लिये ही विश्वेशर ने मुझे फिर से बचाया है।"

क्षेमंकरी ने अपने बारे में कठोरता का अवलम्बन किया था, किन्तु अपने चारों ओर की परिपाटी तथा सौंदर्य की ओर उनकी दृष्टि थी। हेमनलिनी

ने यह बात नलिनाक्ष से सुन रखा थी। इसलिये वह बड़े यत्न से चारों ओर सफाई रख घर-द्वार तथा स्वयं अपने को भी सजधज कर क्षेमंकरी के सामने जाती थी। अन्नदाबाबू ने कन्टूनमेन्ट में जो बगीचा किराये पर ले रखा था, वहाँ से हेमनलिनी नित्य फूल तोड़ लाती और उन्हें उनकी चारपाई तथा गुल-दस्ते में सजाकर रखती।

नलिनाक्ष ने अपनी माँ के लिये कई बार दासी रखने की चेष्टा की; किन्तु उनके हाथ से सेवा लेने की उनकी इच्छा न होती थी। अवश्य ही पानी भरने के लिये नौकर-नौकरानी थे सही, किन्तु अपने निज के कामों में वह तनख्वाह-दार किसी नौकर के हस्तक्षेप को सहन नहीं करती थीं। जिस हरि की माँ ने बचपन से उन्हें पालकर बड़ी किया था, उसके मर जाने के बाद से वह किसी दासी को पंखा हाँकने या शरीर पर हाथ फेरने नहीं देती थीं।

वह स्वयं तपस्विनी जैसी थीं—स्नान और पूजा में दिन बीत जाने पर वह एक समय फल-दूध मीठा खाकर रह जाती थीं, किन्तु उनका इतना नियम और संयम नलिनाक्ष को अच्छा नहीं जान पड़ता था।

जब वह बीमारी से अच्छी होकर उठीं, तब उन्होंने देखा कि हेमनलिनी नलिनाक्ष के उपदेश के अनुसार अनेक प्रकार के नियमों का पालन करने लगी है; यहाँ तक कि बूढ़े अन्नदाबाबू नलिनाक्ष की बातों को प्रवीण गुरु-वाक्य के समान श्रद्धा और भक्ति के साथ बड़े ध्यान से सुना करते थे।

इससे क्षेमंकरी को बड़ा कौतूहल हुआ। उन्होंने एक दिन हेमनलिनी को बुला हँसकर कहा, "बेटी देखती हूँ कि तुम लोग नलिन को और भी पागल बना डालोगी। उसकी वह पागलों जैसी बातें तुम लोग क्यों सुनती हो? तुम सज-धजकर हँसी-खेल और आमोद-प्रमोद के साथ रहो; क्या यह तुम्हारी साधना की उम्र है। यदि कहो, कि तुम ऐसा क्यों करती हो, तो इसमें एक बात है। मेरे माँ-बाप बहुत ही निष्टावान थे। बचपन से हम भाई-बहन वैसी शिक्षा में बड़े हुए। यदि मैं इसे छोड़ दूँ तो मेरे लिये दूसरा कोई आश्रय नहीं।

तीसरे पहर पाँच बजे के बाद हेमनलिनी की चोटी करते-करते यह सब

बातें चलती थीं ।

क्षेमंकरी फिर बीमार पड़ी । किन्तु इस बार का बुखार जल्दी ही कई दिन बाद छूट गया ।

सवेरे नलिनाक्ष ने प्रणाम कर उनके पैर की धूलि लेते हुए कहा, "माँ, तुम्हें कुछ दिन रोगी के नियम के अनुसार रहना चाहिये । दुर्बल शरीर पर इतनी कठोरता सही नहीं जाती ।"

क्षेमंकरी ने कहा, "मैं रोगी के नियम से रहूँ और तुम योगी के नियम से रहो । नलिन, तुम्हारा यह सब काम अधिक दिन न चलेगा । मैं आज्ञा देती हूँ, कि तुम्हें विवाह करना ही होगा ।"

नलिनाक्ष चुपचाप बैठा रहा । क्षेमंकरी ने कहा, "देखो बेटा, मेरा यह शरीर अब न चलेगा—अब तुम्हें गृहस्थ बना देखकर सुख से मर सकूँगी । पहले मैं समझती थी, कि एक छोटी-सी खूबसूरत बहू मुझे मिलेगी, मैं उसे अपने हाथ सिखा-पढ़ाकर बड़ी करूँगी, उसे सजाधजाकर मन में सुख मानूँगी, किन्तु इस बार की बीमारी में भगवान् ने मुझमें चेतन्यता दी है । मैं अच्छी तरह समझती हूँ, कि यही मेरे लिये आखिरी काम है—इसी को पूरा करने के लिये मुझे जीना पड़ेगा, नहीं तो मुझे शान्ति न मिलेगी ।"

नलिनाक्ष—अपने लोगों के साथ मेल खाने लायक यात्री मैं कहाँ ढूँढूँ ।

क्षेमंकरी ने कहा, "अच्छा मैं खुद ठीक करके तुमसे कहूँगी, इसके लिए तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं ।"

आज तक क्षेमंकरी अन्नदाबाबू के सामने नहीं आईं । शाम होने के कुछ पहले जब नियमानुसार हवाखोरी करते हुए अन्नदाबाबू नलिनाक्ष के मकान तक आये तब क्षेमंकरी ने अन्नदाबाबू को बुलवा भेजा । उन्होंने उनसे कहा, "आपकी लड़की मानो लक्ष्मी है—उस पर मेरा स्नेह बहुत बढ़ गया है । मेरे नलिन को तो आप जानते ही हैं, उस लड़के को कोई किसी तरह का दोष दे नहीं सकता—डाक्टरी में भी उसका अच्छा नाम है । आपकी लड़की के लिये क्या ऐसा सम्बन्ध ढूँढ़ने से मिलेगा ?

अन्नदाबाबू घबराकर बोल बैठे, "यह आप क्या कह रही हैं । मुझे तो

ऐसी बात की आशा का साहस भी नहीं होता। नलिनाक्ष के साथ यदि मेरी लड़की का विवाह हो तो उससे बढ़कर मेरा और क्या सौभाग्य हो सकता है। किन्तु क्या वह—"

क्षेमंकरी ने कहा, "नलिन इसमें आपत्ति न करेगा। वह आजकल के लड़कों जैसा नहीं है—वह मेरी बात मानता है। फिर उसमें जोर देने की जरूरत ही क्या है—आपकी लड़की को कौन पसन्द न करेगा? किन्तु इस काम को मैं बहुत जल्द कर डालना चाहती हूँ। अपने शरीर की हालत मैं अच्छी तरह समझ रही हूँ।"

उस दिन अन्नदाबाबू प्रसन्न होकर लौटे। उसी रात उन्होंने हेमनलिनी को बुलाकर कहा, "बेटी मेरी उम्र बहुत हुई। अब शरीर भी अच्छी तरह नहीं चलता। तुम्हारा कोई ठिकाना न कर जाने से मेरे मन को खुशी न होगी। हेम, आगे लज्जा करने से काम न चलेगा। तुम्हारी माँ नहीं है, अब तुम्हारा कुल भार मेरे ही ऊपर है।"

हेमनलिनी उत्कंठा के साथ अपने पिता के मुँह की ओर देखती रही।

अन्नदाबाबू ने कहा, 'बेटी, तुम्हारे लिये एक ऐसे सम्बन्ध की बात आई है, जिसे मारे आनन्द के मैं छिपाये नहीं रह सकता। मुझे यही भय जान पड़ता है कि पीछे कहीं कोई बाधा न पड़े। आज नलिन की माँ ने मुझे बुलाकर अपने पुत्र के साथ तुम्हारे विवाह का प्रस्ताव किया।"

हेमनलिनी का मुँह लाल हो गया। उसने बड़े संकोच के साथ कहा, "पिताजी, तुम यह क्या कह रहे हो? नहीं-नहीं यह कभी नहीं हो सकता।"

इस सम्भावना का सन्देह कभी हेमनलिनी के मन में नहीं आया, कि नलिन से कभी उसका विवाह किया जा सकता है—एकाएक पिता के मुँह से यह प्रस्ताव सुन वह मारे लज्जा और संकोच से घबरा उठी।

अन्नदाबाबू ने पूछा, "विवाह क्यों नहीं हो सकता?"

हेमनलिनी ने कहा, "नलिनबाबू से! यह कभी नहीं हो सकता।" ऐसे जवाब को ठीक युक्ति नहीं कहा जा सकता—किन्तु युक्ति की अपेक्षा यह बहुत कुछ प्रबल है।

हेम वहाँ बैठ न सकी। वह बरामदे में चली गई।

अन्नदाबाबू बहुत उदास हो गये। उन्होने ऐसी बाधा की कल्पना भी नहीं की थी। बल्कि उनको विश्वास था, कि नलिन से विवाह की बात सुन हेमनलिनी मन-ही-मन खुश होगी। हतबुद्धि उदास किरासिन तेल की रोशनी की ओर देखते हुये स्त्री प्रकृति के गूढ़ रहस्य और हेमनलिनी की माँ के अभाव से मन ही-मन चिन्ता करने लगे। उन्होंने फिर व्याकुल हो ठंडी साँस ली और मन-ही-मन कहा, "हेमनलिनी अभी तक रमेश को भूल न सकी।"

तब अन्नदाबाबू कुछ बिना बोले उठकर सोने चले गये।

कहीं काम में नुकसान न पहुँचे, इसीलिये हेमनलिनी रमेश की याद कर अपने मन को पीड़ित नहीं होने देती थी। इसके लिऐ वह अब तक अपने मन के साथ खूब लड़ती आई है। किन्तु जब बाहर से चोट पड़ती है, तब उसकी चाट का दर्द बढ़ जाता है। हेमनलिनी अब तक यह नहीं सोच सकी थी, कि उसका भविष्य जीवन कैसे बीतेगा। इसीलिये एक मजबूत अवलम्बन खोज और नलिन को गुरु मान वह उनके उपदेश के अनुसार चलने को तैयार हुई थी। किन्तु जब विवाह के प्रस्ताव से उसके हृदय की गहराई के भीतर से उसके आश्रयसूत्र को कोई खींचना चाहता है, तब वह समझ सकती है, कि वह बन्धन कितना कठिन है। उसे जब कोई काटने आता है, तब हेमनलिनी का मन व्याकुल हो उस बन्धन को दूने बल से पकड़ने की चेष्टा करना चाहता है।

इधर क्षेमंकरी ने नलिन को बुलाकर कहा, "मैंने तुम्हारे लिये यात्री ठीक कर ली है।"

नलिन ने हँसकर कहा, "बिल्कुल ठीक कर लिया है?"

क्षेमंकरी—नहीं तो क्या? मैं सदा जीती रहूँगी। सुनो, मैंने हेमनलिनी को ही पसन्द किया है—ऐसी लड़की फिर न मिलेगी। रंग उतना साफ नहीं है सही, किन्तु—

नलिन—दुहाई माँ, मैं साफ रंग की बात नहीं सोच रहा हूँ। किन्तु हेमनलिनी से कैसे होगा, यह भी कभी हो सकता है?

क्षेमंकरी—अब यह कैसी बात? न होने का कोई कारण तो दिखाई

नहीं देता।

नलिन के लिये इसका जवाब देना कठिन था। किन्तु हेमनलिनी—जिसे वह अपने पास बैठा निःसंकोच गुरु की तरह उपदेश देता आया है; एकाएक उसके साथ विवाह के प्रस्ताव से नलिन को मानो लज्जा की चोट लगी।

नलिन को चुपचाप देख क्षेमंकरी ने कहा, "अब मैं तुम्हारी कोई आपत्ति न सुनूँगी मेरे लिये सब छोड़-छाड़कर काशीवासी हो तपस्या करोगे, इसे मैं किसी तरह सह न सकूँगी। अब जब शुभ दिन होगा, वह दिन खाली न जायेगा, यह मैं कहे रखती हूँ।"

नलिन ने कुछ देर चुप रहने के बाद कहा, "तब एक बात सुन रखो माँ! मैं पहले ही कहे देता हूँ, कि तुम घबराओ नहीं। मैं जिस घटना की बात कह रहा हूँ, उसे नौ-दस महीने हो गये, अब उसके लिये उतावला होने की जरूरत नहीं। किन्तु तुम्हारा जैसा स्वभाव है माँ, एक अमंगल के दूर हो जाने पर भी उसका भय तुम्हारे मन से कभी नहीं जाता इसलिये इतने दिन से मैं तुमसे कुछ कहते-कहते भी कह न सका। मेरे ग्रह की शान्ति के लिए तुमसे जितना स्वाध्या कराते बने कराओ। किन्तु अनावश्यक मन को पीड़ा न दो।"

क्षेमंकरी ने घबराकर पूछा, "क्या जाने बेटा तुम क्या कहोगे; किन्तु तुम्हारी भूमिका सुनकर मेरा मन और भी घबरा गया।

नलिन ने कहा, "इसी माघ महीने में मैं रंगपुर में अपना सब सामान बेचकर और अपने बाग और मकान को किराये पर देकर लौट रहा था। साँडा में आकर मेरी ऐसी मति फिरी, कि रेलगाड़ी से कलकत्ते न जाकर नाव से चला। नाव से दो दिन चलने के बाद एक दिन रेती के किनारे नाव बाँध मैं स्नान करने लगा। उसी समय एकाएक देखा, कि हमारे भूपेन्द्र हाथ में बन्दूक लिये खड़े हैं। मुझे देखते ही वह उछल पड़े, वह उसी ओर कहीं का डिप्टी मजिस्ट्रेट था—तम्बू के साथ दौरा करने निकला था। साथ-साथ घुमाने-फिराने लगा। धौपापूकर नामक स्थान में एक दिन उसका तम्बू गड़ा था। उस गाँव में तारिणी चटर्जी नाम के एक सज्जन महाजनी करते थे।

उनके समान, कंजूस गाँव में कोई भी न होगा। उन्होंने अपने मकान में बच्चों के पढ़ाने के लिये स्कूल खोला था यह दिखलाने के लिये कि वह बड़ा लोक-हितैषी व्यक्ति है और इसी बहाने सरकार से रकम भी खींचता था। उसी स्कूल में पण्डित को सिर्फ भोजन देकर बच्चों को भी पढ़वाता था तथा दस बजे रात तक उससे सूद का हिसाब भी करवाता। उसी की एक विधवा बहिन थी जिसके एक कन्या थी जो बड़ी सुशील और नम्र थी। विवाह योग्य उम्र हो जाने पर भी इसी तारिणी चटर्जी के व्यवहार के कारण गाँव का कोई व्यक्ति उससे विवाह नहीं करना चाहता था। लड़की का नाम कमला था। बस बिलकुल लक्ष्मी की प्रतिमा स्वरूप थी। चार भले आदमियों और भूपेन्द्र की वजह से मुझे कमला से विवाह करना पड़ा।"

क्षेमंकरी ने चौंककर कहा, "विवाह हो गया? यह क्या कहते हो, नलिन?"

नलिनाक्ष—हाँ, हो गया? मैं बहू को लेकर नाव पर सवार हुआ। जिस दिन तीसरे पहर नाव में सवार हुआ, उसी दिन दो घण्टे बाद सूर्यास्त के एक दण्ड बाद एकाएक कुसमय फाल्गुन के महीने में बहुत गर्म हवा के साथ एक बवंडर उठा, जिसने क्षणभर में हम लोगों की नाव को उलट दिया; हम लोग कुछ भी समझ न सके।

क्षेमंकरी ने कहा, "मधुसूदन! उनका सारा शरीर रोमांचित हो उठा।"

नलिनाक्ष—क्षणभर बाद जब होश आया, तब देखा; कि मैं नदी में एक जगह तैर रहा हूँ, यह बात मैं कभी तुम्हारे सामने न कहता, किन्तु विवाह के लिये तुम जिद कर रही हो, इसलिए कहना पड़ा।

क्षेमंकरी ने कहा, "तो एक बार एक दुर्घटना होने के कारण तू इस जीवन में कभी विवाह ही न करेगा?"

नलिनाक्ष ने कहा, "इसलिए नहीं माँ, शायद वह लड़की जीती हो?"

क्षेमंकरी, "पागल हुआ है? जीती होती, तो तुझे खबर न देती?"

नलिनाक्ष—मेरा पता वह क्या जाने? मुझसे बढ़कर अपरिचित उसके लिए और कौन है शायद उसने मेरा मुँह भी नहीं देखा। काशी में आने पर

मैंने तारिणी चटर्जी को अपना पता दिया है—उन्होंने मुझे चिट्ठी में लिखा है, कि उन्हें कमला का कोई पता नहीं लगा।

क्षेमंकरी—तब फिर क्या ?

नलिनाक्ष—मैंने मन-ही-मन ठीक कर रखा है कि एक वर्ष बीतने पर मैं समझूँगा कि उसकी मृत्यु हो गई।

क्षेमंकरी—तुम सब विषयों में जिद करते हो। अब एक वर्ष किस आशा से बिताओगे ?

नलिनाक्ष—माँ, एक वर्ष में अब देर ही क्या है। आजकल अगहन है। पूस में विवाह हो ही नहीं सकता—फिर माघ के बाद फागुन।

क्षेमंकरी—अच्छी बात है। किन्तु मैं यात्रा ठीक किये रहूँगी। हेमनलिनी के बाप को मैंने वचन दे रखा है। नलिनाक्ष ने कहा, "माँ, मनुष्य तो केवल वचन ही दे सकता है, उसकी सफलता जिसके हाथ है, उन्हीं पर भरोसा रखो।"

सत्ताईस

कमला जब गंगा के किनारे पहुँची, उस समय जाड़े के दिन के सूर्य-किरण की छटा से हीन हो पश्चिम आकाश में उतर चुके थे। कमला ने आने वाले अन्धकार के सामने अस्तगामी सूर्य को प्रणाम किया। इसके बाद माथे पर गंगाजल का छींटा दे कुछ दूर पानी में उतर गई और हाथ जोड़कर गंगाजल अंजली में भर फूल सहित अर्घ्य दिया। इसके बाद उसने सब बड़ों के उद्देश्य से प्रणाम किया। प्रणाम कर सिर उठाते ही उसे और एक आदमी की याद आई। कभी निगाह उठाकर उसने उनके मुँह की ओर देखा भी नहीं—जब एक रात कुछ देर उनके पास बैठी रही, तब उसने उनके पैर की ओर भी निगाह नहीं किया—कोहबर में अन्य औरतों से वे दो-चार बार बोले थे, उसे

भी वह घूँघट के भीतर मारे लज्जा के सुन नहीं सकी। आज उनके कंठस्वर को याद करने के लिये उसने गंगा में खड़ी हो ध्यानपूर्वक बहुत चेष्टा की, किन्तु किसी तरह भी याद न आई।

रमेश ने हेमनलिनी को जो चिट्ठी लिखी थी, वह कमला के अंचल के कोने में बँधी थी—उस पत्र को खोल बालू के किनारे बैठ वह उसके एक अंश को गोधूली की रोशनी में पढ़ने लगी। उसी अंश में उसके स्वामी का परिचय था—अधिक बातें नहीं, केवल उनका नाम नलिन चट्टोपाध्याय, और वे रंगपुर में डाक्टरी करते थे, अब वहाँ उनका पता नहीं—बस। चिट्ठी के बाकी अंश में उसे ढूँढ़ने पर भी कुछ न मिला। 'नलिनाक्ष' नाम उसके हृदय में सुधा की वर्षा करने लगा। इस नाम ने उसके हृदय को परिपूर्ण कर दिया। कमला जी-जान से कह उठी, "अगर मैं सती होऊँगी, तो इस जीवन में ही उनके चरण की धूलि पाऊंगी, जब मैं हूँ, तब वह कहीं गये नहीं, उन्हीं की सेवा करने के लिये भगवान् ने मुझे बचा रखा है।"

यह कहकर उसने रूमाल में बँधे चाबी के गुच्छे को वहीं फेंक दिया। एकाएक उसे याद आया कि रमेश का दिया ब्राच उसके कपड़े में बँधा है। उसे भी जल्दी से खोल उसने पानी में फेंक दिया। इसके बाद पश्चिम मुँह कर वह चलने लगी—कहाँ जायगी, क्या करेगी, यह उसके मन में नहीं आया। वह केवल इतना जानती थी कि चलना चाहिये, यहाँ एक मुहूर्त्त रहने का भी स्थान नहीं।

उसने यही ठीक किया था कि बराबर नदी के किनारे-किनारे चली चलेगी—इससे किसी से भी राह में पूछना न पड़ेगा और यदि उस पर कोई विपद आये, तो एक क्षण में माँ गंगा उसे आश्रय दे देंगी।

रात बढ़ने लगी। जब की खेत के किनारे सियार बोलने लगे। कमला के बहुत दूर चलने पर बालू की रेती समाप्त हो मिट्टी का ढाँचा शुरू हुआ। नदी किनारे ही एक गाँव दिखाई दिया। कमला ने काँपते हुये हृदय से गाँव के पास आकर देखा, कि सारा गाँव सो रहा है। डरते-डरते गाँव पारकर चलते-चलते उसका शरीर थक गया। अन्त में वह एक ऐसी जगह आ पहुँची, जहाँ

सामने कोई राह नहीं थी। बहुत थकने की वजह से वह एक वटवृक्ष के नीचे सो रही, सोते ही उसे नहीं मालूम कि कब नींद आ गई।

सवेरे आँख खोलकर देखा, कि कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा की चाँदनी से अन्धकार क्षीण हो रहा है और एक प्रौढ़ा स्त्री उससे पूछ रही है, "तुम कौन हो? जाड़े की रात इस पेड़ के नीचे कौन सोया है?"

कमला चौंककर उठ बैठी। उसने देखा, कि पास ही दो बजरे बँधे हुए हैं। यह प्रौढ़ा लोगों के उठने से पहले स्नान करने को आई थी।

प्रौढ़ा ने कहा, "क्यों जी, तुम तो बँगाली जैसी दिखाई देती हो।

कमला ने कहा, "हाँ, मैं बँगाली ही हूँ।"

प्रौढ़ा, "यहाँ क्यों पड़ी हो?"

कमला—मैं काशी जाने के लिए चल पड़ी हूँ। रात बहुत गई, नींद आई, तो यहीं सो रही।

प्रौढ़ा—हे राम, यह कैसी बात! पैदल काशी जाओगी? अच्छा चलो, इस बजरे में चलो; मैं स्नान करके आती हूँ।

स्नान के बाद उस स्त्री से कमला का परिचय हुआ।

गाजीपुर में जिस सिद्धेश्वर बाबू के घर खूब धूमधाम से विवाह हो रहा था, यह लोग उन्हीं की आपसदारी के हैं। इस प्रौढ़ा का नाम नवीन काली है। इनके पति का नाम मुकुन्दलाल दे हैं—कुछ दिन से काशी में ही रहते हैं। यह लोग आपसदारी के निमन्त्रण को टाल नहीं सके, फिर भी उनके घर रहना और खाना पड़े, इसलिये बजरे से गये थे। विवाह के घर की मालकिन ने इस पर क्षोभ किया, तब नवीन काली ने कहा था, कि जानती तो हो, उनका शरीर अच्छा नहीं रहता। फिर बचपन से उनका अभ्यास ही ऐसा है। मकान में गऊ रखकर उसके दूध से पूरी तैयार होती है—फिर उस गऊ को ऐसा-वैसा चारा खिलाया नहीं जाता—इत्यादि-इत्यादि।

नवीनकाली ने पूछा, "तुम्हारा क्या नाम है?"

कमला ने कहा, "मेरा नाम कमला है?"

नवीनकाली, "तुम्हारे हाथ में लोहे की चूड़ी है, स्वामी हैं?"

कमला ने कहा, "विवाह के दूसरे दिन से ही पति गायब हैं !"

नवीनकाली—अरे राम, यह कैसी बात ? तुम्हारी उम्र तो अधिक नहीं जान पड़ती।

उसे सिर से अच्छी तरह देखकर उसने फिर कहा, "यही, पन्द्रह वर्ष की होगी।"

कमला ने कहा, "उम्र ठीक मालूम नहीं, कुछ ऐसे ही होगी।"

नवीनकाली—तुम ब्राह्मण की लड़की हो न ?

कमला ने कहा, "हाँ।"

नवीनकाली ने कहा, "तुम्हारा मकान कहाँ है ?"

कमला, "अभी तक मैं ससुराल नहीं गई, मेरे बाप का मकान विशूखाली है।"

कमला जानती थी, कि उसके बाप का मकान विशूखाली में था।

नवीनकाली—तुम्हारे माँ-बाप ?

कमला—मेरे माँ-बाप कोई नहीं हैं।

नवीनकाली—राम-राम, तब तुम क्या करोगी ?

कमला—काशी में अगर कोई भले गृहस्थ मुझे अपने घर रख दोनों समय दो मुट्ठी खाने को देंगे, तो मैं रसोई बनाऊँगी।

नवीनकाली बिना तनख्वाह की रसोईदारिन ब्राह्मणी पाकर मन-ही-मन खुश हुई। उन्होंने कहा, "मेरे साथ सब ब्राह्मण ही नौकर हैं। हमारे घर ऐसे वैसे ब्राह्मण का ठिकाना नहीं—घर के मालिक के खाने में जरा भी इधर-उधर होने से फिर क्या पूछना। ब्राह्मण को चौदह रुपया महीना दिया जाता है, उस पर खाना-कपड़ा भी। जो हो, तुम ब्राह्मण की लड़की विपदा में पड़ गई हो—तब चलो, मेरे ही घर चलो।"

पाल में हवा का जोर था, काशी पहुँचने में अधिक देर नहीं लगी। शहर के बाहर ही एक छोटे बगीचे वाले दो-मंजिले मकान में सब लोग पहुँचे।

वहाँ चौदह रुपये महीने के किसी ब्राह्मण का पता नहीं लगा। एक उड़िया ब्राह्मण था, कई दिन बाद ही नवीनकाली ने उस पर आग बबूला हो बिना

तनख्वाह के उसे बिदा कर दिया। इसी बीच चौदह रुपये महीने के बहुत ही दुर्लभ दूसरे रसोईदार के आने तक रसोईघर का सब भार कमला पर पड़ा।

नवीनकाली ने उसे बड़ी सावधानी से रखा, कि कहीं वह हाथ से बेहाथ न हो जाय। उस आश्रय में कमला का प्राण मानों थोड़े पानी की गड्ढी की मछली की तरह व्याकुल होने लगा। यहाँ से बाहर निकलने में उसकी जान-में-जान आई, किन्तु बाहर जाकर खड़ी कहाँ होगी? उस दिन रात को गृह-हीन बाहरी संसार को उसने समझ लिया है, उस तरह अन्धी होकर आत्म-समर्पण करने में उसे साहस नहीं होता।

एक दिन नवीनकाली ने कमला को बुलाकर कहा, "अजी ए महाराजिन आज मालिक का शरीर अच्छा नहीं, आज चावल न बनेगा, रोटी बनेगी। किन्तु इसी खयाल से बहुत-सा घी न ले लेना। मैं तुम्हारी रसोई का स्वाद जानती हूँ, समझ में नहीं आता कि उसमें इतना घी कैसे खर्च होता है। इससे तो वह उड़िया ब्राह्मण ही अच्छा था—वह घी लेता था सही, किन्तु उसकी रसोई में थोड़ा बहुत घी का स्वाद आता था।"

कमला ऐसी बातों का कोई जवाब देती नहीं थी—वह इस तरह चुपचाप काम करती जाती थी, मानों कुछ सुना ही नहीं।

आज अपमान के छिपे भार से आक्रान्त-हृदय कमला चुपचाप तरकारी काट रही थी—उसे सारा संसार नीरस और जीवन भार जान पड़ता था। ऐसे समय गृहिणी के घर से एक आवाज उसके कान में पहुँची, जिसने कमला को बिल्कुल ही चौंका दिया। नवीनकाली अपने नौकर को बुलाकर कह रही थी, "अरे तुलसी, जा तो शहर से नलिनाक्ष डाक्टर को जल्दी बुला ला, उनकी तबियत अच्छी नहीं है।"

नलिन डाक्टर! कमला की आँखों के सामने समस्त आकाश की रोशनी वीणा के सोने के तार के समान काँप उठी। वह तरकारी काटना छोड़ दर्वाजे पर आ खड़ी हो गई। तुलसी के नीचे उतरते ही कमला ने पूछा, "कहाँ जाता है, तुलसी।" उसने कहा, "नलिन डाक्टर को बुलाने जा रहा हूँ।"

कमला ने कहा, "यह कौन डाक्टर है?"

तुलसी ने कहा, "यह यहाँ के एक बड़े डाक्टरों में हैं।"

कमला, 'वह कहाँ रहते हैं ?"

तुलसी ने कहा, "शहर में ही रहते है, यहाँ से करीब कोस भर होगा।"

ऊपर से आवाज आई, "रसोई घर के दर्वाजे पर खड़े होकर किससे सलाह हो रही है, रे तुलसी, तू समझता है मेरे आँख नहीं हैं। शहर जाने के समय शायद एकबार रसोई घर का चक्कर काटे बिना काम नहीं चलता। इसी तरह सब चीजें हटाई जाती हे और मैं तुमसे कहती हूँ, महाराजिन ! तुम राह में पड़ी थी, दया करके तुम्हें आश्रय दिया, उसका बदला शायद इसी तरह चुकाया जाता है।"

नवीनकाली का यह सन्देह किसी तरह भी दूर नही होता, कि सब लोग उनकी चीजें चुराते हैं। जब प्रमाण का कोई सहारा नहीं मिलता, तब भी वह अन्दाज से नाराज हो लेती हैं। उन्होंने समझ लिया है, कि अन्धकार में भी ढेला फेंकने से अधिकांश ढेले ठीक निशाने पर पड़ते हैं। वह सदा तर्क रहती है और समझती है, कि उन्हें कोई धोखा नहीं दे सकता। इस बात को नौकर भी अच्छी तरह समझते है।

नीचे रसोईघर के दर्वाजे पर खड़ी हो कमला आसरा देख रही थी। इसी समय तुलसी लौटकर आया, किन्तु अकेला आया।

कमला ने पूछा, "डाक्टर बाबू नहीं आये ?"

तुलसी, "उनकी माँ बीमार हैं।"

कमला, "माँ बीमार हैं ? क्या घर में और कोई नहीं है।"

तुलसी, "नहीं, उन्होंने विवाह नहीं किया। नौकरों के मुँह से सुना, कि उनकी स्त्री नहीं है।"

कमला, "शायद उनकी स्त्री मर गई।"

तुलसी, "यह हो सकता है। किन्तु उनके नौकर का कहना है, कि जब वह रंगपुर में डाक्टरी करते थे, तब भी उनके स्त्री नहीं थी।"

ऊपर से आवाज आई 'तुलसी'। कमला जल्दी से रसोईघर में घुस गई। तुलसी ऊपर चला गया।

नलिन रंगपुर में डाक्टरी करते थे—कमला के मन में अब और सन्देह न रह गया। उनके बारे में जब तक कमला कुछ जानती न थी तब तक उसे धीरज था। अब उसके लिये धीरज धरना कठिन हो गया। इसी शहर में उसके स्वामी हैं; अतएव एक क्षण भी पराये घर में आश्रय लेना उसके लिए असह्य हो उठा। काम-काज में कदम-कदम पर उससे भूल होने लगी।

नवीनकाली ने कहा, "देखो महाराजिन, तुम्हारी चाल अच्छी नहीं दिखाई देती। तुम्हें क्या भूत लगा है? तुमने अपना खाना-पीना तो बन्द ही कर रखा है, क्या हम लोगों को भी उपवास कराके मारोगी। आजकल तुम्हारी रसोई मुँह में नहीं दी जाती।"

कमला ने कहा, "मुझसे अब यहाँ का काम होता नहीं है—मेरा मन किसी तरह लगता ही नहीं। मुझे विदा कीजिये।"

नवीनकाली झनक कर बोली, "यह बात है; कलिकाल में किसी की भलाई न करनी चाहिये, तुम पर दया कर आश्रय देने के लिए मैंने इतने दिन के पुराने अच्छे ब्राह्मण को छुड़ा दिया, एक बार उसकी खबर भी नहीं ली—तुम सचमुच ब्राह्मण की लड़की हो या नहीं। आज कह रही हो, कि मुझे विदा कीजिये। यदि भागने की चेष्टा करोगी, तो पुलिस में रिपोर्ट कर दूँगी। मेरा लड़का हाकिम है—उसके हुक्म से कितने फाँसी चढ़ गये—मेरे आगे तुम्हारी चालाकी न चलेगी। सुना तो होगा, कि गदा मालिक के मुँह लगा था, उसे ऐसा मजा चखाया, कि आज भी वह जेलखाना भोग रहा है। हम लोगों को तुम ऐसा-वैसा न समझना।"

बात सही है—गदा नौकर को घड़ी चुराने का लाँछन लगा, जेल भेज दिया गया। अतएव मालिकिन की बात पर कमला सकपका कर रह गई।

अट्ठाईस

जिस दिन सन्ध्या के समय नलिन से विवाह के बारे में हेमनलिनी और अन्नदा बाबू में बातचीत हुई, उस रात अन्नदा बाबू को फिर शूल-वेदना जान पड़ी।

रात तो कष्ट से बीत गई। सवेरे दर्द में कमी होने पर वह मकान से बाहर सड़क के किनारे के बाग में जाड़े के प्रातःकाल की हलकी धूप में एक तिपाई रखकर बैठे। हेमनलिनी ने उनको वहीं चाय पिलाने की व्यवस्था की। गई रात के कष्ट से अन्नदा बाबू का चेहरा बदरंग और उतरा हुआ था, उनकी आँखों के नीचे कालिमा आ गई है, जान पड़ता है मानो एक ही रात में उनकी उम्र और बढ़ गई हो।

ऐसे समय एकाएक चाचा को साथ लिए अक्षय वहाँ आ पहुँचा। हेमनलिनी को जल्दी से चली जाते देख अक्षय ने कहा, "आप कहीं जाइये नहीं, यह गाजीपुर के चक्रवर्ती महाशय हैं, इन्हें पश्चिम की ओर के सभी लोग जानते हैं—आप लोगों से इन्हें कुछ विशेष कहना है।"

उसी जगह एक चौंतरा बँधा था—उसी पर चाचा और अक्षय बैठ गये।

चाचा ने कहा, "सुना, कि रमेश बाबू के साथ आप लोगों की बड़ी मित्रता है—मैं यही पूछने आया हूँ, कि उनकी स्त्री का कोई समाचार आप लोगों को मिला है?"

अन्नदा बाबू क्षणभर के लिए चुप रह गये, इसके बाद उन्होंने कहा, "रमेश बाबू की स्त्री!"

हेमनलिनी निगाह नीचे किये हुई थी। चक्रवर्ती ने कहा, "बेटी, तुम मुझे शायद पुराने समय का वही असभ्य समझती होगी। जरा धीरज धर सब बातें सुनने से ही समझ सकोगी, कि मैं खामखाह गले पड़ पराई चर्चा ले तुम लोगों से आलोचना करने नहीं आया हूँ। रमेश बाबू पूजा के समय जब स्टीमर पर सवार हो अपनी स्त्री के साथ पश्चिम की यात्रा कर रहे थे, तब उसी स्टीमर में उनके साथ मेरी जान पहचान हुई। आप लोग तो जानते हैं,

कमला को एक बार जिसने देखा है, वह उसे पराई नही समझ सकता। इस वृद्ध वयस मे बहुत शोक और ताप सहने के कारण मेरा हृदय कठिन हो गया है; किन्तु मैं अपनी उस लक्ष्मी बेटी को किसी तरह भी भूल नही रहा हूँ। रमेश बाबू का कुछ ठीक नहीं था, कि कहाँ जायेंगे ? किन्तु मुझ बूढे की दो दिन की मुलाकात मे कमला का इतना स्नेह उत्पन्न हो गया कि उन्होंने रमेश को गाजीपुर मे मेरे घर मे रहने को राजी कर लिया। वहाँ कमला मेरी मँझली लड़की शैल के पास सगी बहन से भी अधिक आदर के साथ रही। किन्तु न जाने क्या हुआ, यह कोई नहीं कह सकता—बेटी न जाने क्यो हम लोगो को इस तरह रुलाकर चली गई। आज तक मुझे इस कारण का पता ही न लगा। तभी से शैल की आँखो का आँसू किसी तरह सूख नही रहा है।"

कहते-कहते चक्रवर्ती की दोनो आँखो से आँसू गिरने लगे। अन्नदा बाबू घबरा उठे—उन्होंने कहा, 'उन्हे क्या हुआ, वह कहाँ गई ?"

चाचा ने कहा, "अक्षय बाबू, आपने तो सब बात सुनी है, आप ही कहिये। मेरी तो कहते-कहते छाती फटती है।"

अक्षय ने आदि से अन्त तक सब हाल विस्तार के साथ कह डाला। उसने स्वय उस पर किसी तरह की टीका नहीं की; किन्तु उसके वर्णन से रमेश का चरित्र रमणीय नही हुआ।

अन्नदा बाबू बार-बार कहते रहे, "हम लोगों ने तो यह सब बाते कभी सुनी भी नही। रमेश जिस दिन से कलकत्ते से बाहर निकले, उसके बाद आज तक उनका एक पत्र भी नही मिला।"

अक्षय ने उसी के साथ जोड़ दिया, "यहाँ तक, कि उनका कमला से विवाह होने की खबर भी हम लोगो को नही। अच्छा चक्रवर्ती महाशय, मैं आपसे पूछता हूँ, कमला रमेश की स्त्री ही थी न ? बहन या और कोई आत्मीय तो नही ?"

चक्रवर्ती ने कहा, "आप क्या कहते है अक्षय बाबू ! स्त्री नही तो और क्या थी। ऐसी सती लक्ष्मी स्त्री किसके भाग्य में बदी होगी।"

अक्षय ने कहा, 'किन्तु आश्चर्य की यही बात है, कि स्त्री जितनी अच्छी होती है, उसका अनादर भी उतना ही अधिक होता है। भगवान् शायद अच्छे लोगों को ही सबसे अधिक परीक्षा में डालते हैं।" यह कह अक्षय ने एक ठण्डी साँस भरी।

अन्नदा ने अपने सिर को उँगली से सुहलाते हुए कहा, "इसमें सन्देह नहीं कि बहुत दुःखद समाचार है, किन्तु जो होना था, वह हो गया, अब नाहक शोक करने से फायदा।"

अक्षय ने कहा, "मुझे ऐसा सन्देह हुआ, कमला आत्म-हत्या न कर घर छोड़कर चली गई है। इसी से चक्रवर्ती महाशय को साथ ले काशी में पता लगाने आया हूँ। अच्छी तरह मालूम हो गया, कि आप लोगों को इसकी कोई खबर नहीं। जो हो, चार दिन यहाँ उसकी खोज होना चाहिये।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "रमेश इस समय कहाँ है?"

चाचा, "वह तो हम लोगों से कुछ न कह न जाने कहाँ चले गये।"

अक्षय ने कहा, "मुझसे भी मुलाकात नहीं हुई, किन्तु लोगों से सुना, कि वह कलकत्ते ही गये हैं। शायद अलीपुर में प्रैक्टिस करेंगे। मनुष्य अनन्त-काल तक शोक तो कर नहीं सकता, विशेषतः इस कम उम्र में। चक्रवर्ती महाशय, चलिये, जरा शहर में अच्छी तरह ढूँढ़ा जाय।"

चाचा को साथ ले अक्षय चला गया।

आज हेमनलिनी ने रमेश के जीवन के इतिहास का जो अंश सुना है, उससे उसके हृदय के बीच एक प्रचंड चोट लगी है, इसी भयानक चोट से अपनी रक्षा के लिये आज उसके मन की समस्त शक्ति उद्यत हो खड़ी हो गई है। आज ऐसी अवस्था हो रही है कि रमेश के लिये दुःख करना भी उसके लिये लज्जा का कारण हो गया है। वह रमेश का विचार कर उसे अपराधी भी बनाना नहीं चाहती। संसार में शत-सहस्त्र आदमी भले-बुरे कितने ही प्रकार के काम में लिप्त रहते हैं, संसार का चक्र चलता रहता है—हेमनलिनी इनके विचार का भाव ग्रहण नहीं करती। रमेश की बात हेमनलिनी अपने मन में आने भी नहीं देना चाहती। कभी-कभी आत्मघातिनी कमला की बातों की

कल्पना करने से उसका शरीर काँप उठता है—उसके मन में आता है कि उस हतभागिनी की आत्महत्या से मेरा कौन-सा लगाव है। तब लज्जा से, घृणा से, करुणा से उसका सारा हृदय मथित हो उठता है। तब वह हाथ जोड़कर कहती है, "हे ईश्वर, मैंने तो कोई अपराध किया नहीं, तब मैं क्यों इस तरह इसमें शामिल की जाती हूँ। मेरे इस बन्धन को काटो, एकदम तोड़ दो। मैं और कुछ नहीं चाहती, तुम मुझे इस संसार के सहज भाव से बँधकर जीने दो।"

अन्नदा बाबू यह जानने के लिये उत्सुक हैं कि रमेश और कमला की घटना सुन हेमनलिनी अपने मन में क्या सोच रही है। फिर भी, बात को स्पष्ट करने की हिम्मत नहीं हो रही है। हेमनलिनी बरामदे में चुपचाप बैठी सिलाई कर रही थी, वहाँ कई बार जाकर हेमनलिनी के चिन्ता में डूबे चेहरे को देख-देख लौट आते थे।

सन्ध्या समय डाक्टर के उपदेश के अनुसार जाकर चूर्णमिश्रित दूध पिला-कर हेमनलिनी उनके पास बैठी।

अन्नदा बाबू ने कहा, "रोशनी मेरे चेहरे के सामने से हटा दो।"

घर में कुछ अन्धेरा होने पर अन्नदा बाबू ने कहा, "सबेरे जो वृद्ध आये थे, वह तो देखने में बहुत सरल जान पड़े।"

हेमनलिनी ने इस प्रसंग पर कोई बात नहीं कही—चुप रही। अन्नदा-बाबू और अधिक भूमिका बाँध न सके। उन्होंने कहा, "रमेश का मामला सुनकर मैं बड़े आश्चर्य में आया हूँ—लोगों ने उसके बारे में बहुतेरी बातें कहीं, किन्तु आज तक मैंने किसी की बात का विश्वास नहीं किया—किन्तु अब—"

हेमनलिनी ने गिड़गिड़ा कर कहा, "पिताजी, यह सब बातें छोड़ो।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "बेटी, बातचीत करने की तो इच्छा ही नहीं होती। किन्तु विधि के विधान से किसी न-किसी आदमी के साथ हम लोगों का सुख-दुःख जड़ित हो जाता है; तब उसके किसी आचरण से लापरवाही दिखाने की जगह नहीं रहती।"

हेमनलिनी वेग के साथ कह उठी, "नहीं नहीं, सुख-दुःख की गाँठ ऐसे-वैसे

आदमी के साथ कैसे बँधे। पिताजी, मैं बहुत अच्छी तरह हूँ—मेरे लिये नाहक उद्विग्न हो मुझे लज्जित न करो।"

अन्नदा बाबू ने कहा, "बेटी हेम, मेरी उम्र हो गई है, अब तुम्हारा कोई ठिकाना न करने से मेरा मन स्थिर नहीं हो रहा है। तुम्हें इस तरह तपस्विनी की तरह छोड़कर मैं जा नहीं सकता।"

हेमनलिनी चुप रह गई। अन्नदा बाबू ने कहा, "देखो बेटी संसार में किसी आशा के टूट जाने पर यह समझना चाहिये कि अन्य मूल्यवान चीजों को भी अग्राह्य करना चाहिये। हो सकता है कि मन के क्षोभ से तुम इसे न भी समझ सको कि तुम्हारा जीवन कैसे सुखी होगा और सार्थक होगा। किन्तु मैं सदा तुम्हारे मंगल की कामना करता हूँ—मैं जानता हूँ कि तुम्हें किसमें सुख है और किसमें तुम्हारा मंगल है। मेरे प्रस्ताव की तुम बिलकुल उपेक्षा न करो।"

हेमनलिनी की दोनों आँखें भर आईं; वह बोल बैठी, "ऐसी बात न कहो, मैं तुम्हारी किसी बात की कभी उपेक्षा नहीं करती। तुम जो आज्ञा दोगे, मैं निश्चय उसका पालन करूँगी। किन्तु मैं केवल एक बार हृदय को साफ कर अच्छी तरह से तैयार हो जाना चाहती हूँ।"

अन्नदा बाबू ने उसी अन्धकार में एक बार हेमनलिनी के आँसू से गीले मुँह पर हाथ फेर उसके मस्तक का स्पर्श किया, फिर कोई बात न हुई।

उन्तीस

ठीक हो गया है कि डाक्टर की राय पर मुकुन्द बाबू काशी छोड़कर हवा पानी बदलने मेरठ जायेंगे। असबाब बँध गया है, कल सवेरे ही यात्रा है। कमला बहुत आशा किए हुई थी कि इसी बीच कोई ऐसी घटना हो जाय, जिससे उन लोगों का जाना बन्द हो जाय।

कहीं महाराजिन यात्रा की घबराहट में भागने का मौका न पा जाय, इस

आशंका से नवीनकाली कई दिन कमला को अपने साथ-ही-साथ रखती था—उन्होंने उसी से असबाब बँधवा डाला।

कमला मन से यह मनाने लगी कि आज रात उसे कोई ऐसी कठिन बीमारी हो जाय कि उसे साथ ले जाना नवीनकाली के लिए असम्भव हो उठे। साथ ही उसने मन-ही-मन यह भी सोच लिया, कि उस भयानक बीमारी में दवा किस डाक्टर की होगी। इस बीमारी में यदि उसकी मृत्यु हो जाय, तो मृत्यु से पहले वह चिकित्सक के पैर की धूलि लेकर मर सके, यह भी वह सोच रही थी।

रात को नवीनकाली कमला को लेकर अपने घर में सोई। दूसरे दिन स्टेशन जाने के समय उसे अपने साथ घोड़ागाड़ी में चढ़ा लिया। मुकुन्द बाबू सेकेण्ड क्लास में बैठे—नवीनकाली महराजिन के साथ जनाने इण्टर दर्जे में बैठी।

अन्त में गाड़ी ने काशी स्टेशन छोड़ा—और कमला के हृदय में एक दारुण दुःख देती मुगलसराय स्टेशन में आ रुकी। कमला के लिये स्टेशन का शोरगुल लोगों की भीड़, सब छाया की तरह स्वप्न के समान जान पड़ने लगे। वह लकड़ी के पुतले की तरह एक गाड़ी से दूसरी गाड़ी में चढ़ी।

गाडी छूटने का समय हो गया, ऐसे समय कमला ने एकाएक चौंककर सुना, कि उसे किसी परिचित आवाज ने 'माँ' कहकर बुलाया। कमला ने प्लेटफार्म की ओर मुँह फेरकर देखा, कि उमेश है।

कमला का मुँह चमक उठा, "क्यों रे उमेश ?"

उमेश ने गाड़ी का दर्वाजा खोल दिया और देखते-देखते कमला नीचे उतर पड़ी। उमेश ने चटपट प्रणाम कर उसके पैर की धूलि लेकर अपने माथे से लगाई। उसका सारा चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा।

उसी दम गार्ड ने गाड़ी का दर्वाजा बन्द कर दिया। नवीनकाली चीखने-चिल्लाने लगी, "महाराजिन यह क्या कर रही हो। गाड़ी छूटती है। चढ़ो, जल्दी चढ़ो।"

कमला के कान में मानो उनकी आवाज पहुँची ही नहीं। गाड़ी भी सीटी

देकर गड़गड़ाती हुई स्टेशन से निकल गई और उमेश ने उसेक ाशी जाने वाली गाड़ी पर ला बैठाया।

काशी स्टेशन उतरकर कमला ने उमेश से पूछा, "उमेश, बता मुझे कहाँ लिये चल रहा है ?"

उमेश ने कहा, "माँ, तुम चिन्ता न करो, मैं तुम्हें ठीक जगह ले चलता हूँ।"

यह कहकर उसने कमला को एक किराये की गाड़ी में बैठा आप कोचबक्स पर बैठ गया। एक मकान के सामने गाड़ी खड़ी होने पर उमेश ने कहा, "माँ, यहाँ उतरो।"

कमला गाड़ी से उतर उमेश के साथ-साथ घर में घुसी, इसी समय उमेश बुला बैठा, "दादा महाशय घर में हैं ?"

पास ही की कोठरी में आवाज आई, "कौन, उमेश ? तू कहाँ से आया ?"

इसके बाद ही हाथ में हुक्का लिये चक्रवर्ती चाचा सामने आ पहुँचे। उमेश प्रसन्न मुख चुपचाप हँसने लगा। विस्मय में भरी कमला ने जमीन टेक चक्रवर्ती को प्रणाम किया। बूढ़े के मुँह से कुछ देर तक कोई बात न निकली। वह कुछ भी समझ न सके कि क्या कहें और हुक्का कहाँ रखें। अन्त में कमला की ठोड़ी पकड़ उसके लज्जित मुँह को ऊपर की ओर कर कहा, "बेटी, तू लौट तो आई, चल ऊपर चल।"

"अरी शैल, "देख बेटी.कौन आई है ?"

शैलजा चटपट कमरे से निकल बरामदे की सीढ़ी के सामने आ खड़ी हुई। कमला ने पैर की धूलि लेकर उसे प्रणाम किया। शैल ने उसे छाती से लगाकर बार-बार उसके ललाट का चुम्बन किया। आँसुओं से चेहरे को भिगोकर उसने कहा, "हे राम, भला इस तरह भी कोई सबको रुलाकर जाता है।"

चाचा ने कहा, "यह सब बात रहने दो शैल, अभी उसके नहाने-खाने का बन्दोबस्त करो।" रात में सोते वक्त शैल से—

कमला ने कहा, "दीदी, मेरी सब बात तुम सुनोगी ?"

उस अँधेरे में बिछौने पर बैठ कमला विवाह से आरम्भ कर अपने जीवन की ो कहने लगी। साथ ही वह रमेश का पत्र भी उसने शैल को दे दिया।

इसके बाद दोनों में चुपचाप कुछ बातें हुईं।

दूसरे दिन सवेरे चाचा ने कमला से कहा, "चलो बेटी, हम लोग दशाश्वमेध स्नान कर आयें।"

चाचा एक रास्ते के घाट पर स्नान करने गये, लौटने के समय एक दूसरी राह से चले। कुछ दूर जाकर उन्होंने देखा, कि एक बूढ़ी स्नान कर रेशमी वस्त्र पहने हाथ में गंगाजल की लुटिया लिये धीरे-धीरे चली आ रही है।

कमला को सामने करके चाचा ने कहा, "बेटी, उन्हें प्रणाम करो। यह डाक्टर बाबू की माता हैं।"

यह सुन कमला ने चौंककर उसी समय क्षेमंकरी को प्रणाम किया और उनके चरण की धूलि अपने माथे से लगाई।

क्षेमंकरी ने कहा, "तुम कौन हो बेटी? आहा, कैसा रूप है! मानो लक्ष्मी की प्रतिमा है।" यह कहकर उन्होंने कमला का घूँघट हटा मीनी आँखें किये उसके मुँह को अच्छी तरह देखा। फिर कहा, "तुम्हारा नाम क्या है, बेटी।"

कमला के जवाब देने से पहले ही चाचा ने कहा, "इसका नाम हरिदासी है। यह दूर के सम्बन्ध में मेरी भतीजी है। इसके माँ-बाप कोई नहीं है—मेरे ऊपर ही सब कुछ निर्भर है।"

क्षेमंकरी ने कहा, "आइये चक्रवर्ती महाशय, मेरे घर चलिये।"

मकान जाकर क्षेमंकरी ने एक बार नलिनाक्ष को बुलाया। नलिनाक्ष उस समय बाहर चले गये थे।

चाचा आसन जमाकर बैठे—कमला जमीन में बैठी। चाचा ने कहा, "देखिये, मेरी इस भतीजी का भाग्य बहुत खराब है। विवाह के दूसरे ही दिन इसके पति संन्यासी होकर बाहर चले गये—इससे फिर उनकी मुलाकात नहीं हुई। हरिदासी की इच्छा है, कि अपने धर्म-कर्म को बचाये रख कर काशी वास करे। सिवा धर्म के उसके धीरज के लिये और कोई सामग्री नहीं। यहाँ मेरा मकान नहीं, मेरी नौकरी है—उपार्जन करके गृहस्थी चलाता हूँ। मेरे लिये यह सुविधा नहीं है, कि मैं यहाँ आकर इसे साथ लेकर रहूँ। इसीसे आपकी शरण

में आया हूँ। इसको अपनी लड़की की तरह यदि आप अपने पास रखें, तो मैं बहुत निश्चय हो जाऊँ। जब आपको असुविधा हो तब मेरे पास गाजीपुर भेज दीजियेगा। किन्तु मैं जैसा कहता हूँ, दो दिन इसे अपने पास रखने से ही आप समझ जायेंगी कि लड़की कैसी रत्न है—तब आप इसे क्षणभर के लिये भी न छोड़ेंगी।"

क्षेमंकरी ने खुश होकर कहा, "आहा, यह तो बहुत अच्छी बात है। यह तो मेरे लिये बहुत बड़ा लाभ है। तब हरिदासी मेरे पास रहे—आप कोई चिन्ता न करिये। मेरे लड़के की बात भी आपने चार आदमियों से सुनी होंगी–नलिनाक्ष बहुत भला लड़का है। उसके अलावा और कोई घर में है ही नहीं।"

चाचा ने कहा, "नलिनाक्ष बाबू को सभी जानते हैं। यह यहाँ आपके पास रहेगी, यह जानकर मैं और भी निश्चित रहूँगा।"

चाचा के चले जाने पर क्षेमंकरी ने कमला को अपने पास बैठाकर कहा, "मेरे पास तो आओ बेटी, तुम्हारी आयु तो अधिक नहीं है। तुम्हें छोड़कर चले जाने वाले पत्थर भी इस संसार में हैं! मैं आशीर्वाद देती हूँ, वह फिर लौटकर आयेंगे विधाता ने ऐसा रूप वृथा जाने के लिये नहीं बनाया है। यहाँ तुम्हारी आयु की कोई संगिनी नहीं है। तुम अकेली मेरे पास रह सकोगी?"

कमला ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से पूरी तरह आत्मनिवेदन करते हुए कहा, "रह सकूँगी, माँ।"

क्षेमंकरी ने कहा, "तुम्हारा दिन कैसे बीतेगा, मैं इसी चिन्ता में हूँ।"

कमला ने कहा, "मैं तुम्हारा काम किया करूँगी।"

क्षेमंकरी ने कहा, 'मेरे मन्दभाग्य! मेरा और काम। संसार में यही तो मेरा एक लड़का है—वह भी संन्यासी की तरह रहता है—कभी अगर कहता, कि माँ, मुझे इस चीज की जरूरत है, यह खाना चाहता है, मुझे यह पसन्द है, तो मैं कितनी खुश होती—किन्तु यह सब कभी नहीं कहता।

वह कह कर क्षेमंकरी ने अपनी छोटी-सी गृहस्थी का सब कुछ कमला को दिखला दिया। कमला ने इसी बीच में मौका देख अपनी दरख्वास्त लगाई। उसने कहा, "माँ आज मुझे ही रसोई बनाने दो न।"

क्षेमंकरी ने स्नेह से सिर हिलाकर क्या बनाना और क्या करना है, यह सब कमला को समझाकर स्वयं पूजा की कोठरी में चली गई। क्षेमंकरी के आगे आज कमला की गृहस्थी की परीक्षा शुरू हुई।

कमला अपनी स्वाभाविक शीघ्रता के साथ रसोई का सारा सामान तैयार कर कमर में अँचल खोंस और सिर के बालों को समेट रसोई में लग गई।

नलिनाक्ष बाहर से मकान में आते ही पहले अपनी माँ को देखने जाता था। माता के स्वास्थ्य की चिन्ता हर समय लगी रहती थी। आज मकान में आते ही रसोईघर की आवाज और सुगन्ध ने सर्वप्रथम उसका ध्यान आकर्षित किया। माता को रसोई में लगी समझ नलिनाक्ष सीधे रसोईघर के दरवाजे पर चला आया।

पदचाप से कमला के पीछे पलटकर देखते ही एक बार नलिन की और उसकी आँखें चार हो गईं उसने शीघ्रता से हाथ बढ़ा घूंघट खींचने की वृथा चेष्टा की—कमर में अँचल खुंसा हुआ था—खींच-तानकर जब कपड़ा माथे तक आया, तब तक विस्मित नलिनाक्ष वहाँ से चला गया था। इसके बाद जब कमला ने कड़छी उठाई, तब उसका हाथ काँपने लगा।

जल्दी ही पूजा समाप्त कर जब क्षेमंकरी रसोईघर में गईं तब उन्होंने देखा कि रसोई हो चुकी है। घर के धुएँ को भी कमला ने निकाल दिया है—कहीं लकड़ी का ठूंठ, तरकारी का छिलका या किसी प्रकार की गन्दगी उसे दिखाई न दी। यह देखकर क्षेमंकरी मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुईं। उन्होंने कहा, "बेटी, तुम जरूर ब्राह्मण की लड़की हो।"

नलिनाक्ष के भोजन करने बैठने पर क्षेमंकरी उसके सामने बैठीं—और एक संकुचित स्त्री कान लगाकर दरवाजे की ओट में खड़ी थी—उसे भीतर झाँकने का साहस नहीं हो रहा था—भय से मरी जा रही थी—कि कहीं उसकी रसोई में कोई खराबी तो नहीं है।

क्षेमंकरी ने पूछा, "नलिन, आज रसोई कैसी बनी?"

नलिन भोजन के बारे में उतना समझदार नहीं था, इसी से क्षेमंकरी ऐसा अनावश्यक प्रश्न उससे कभी करती न थी—आज उन्होंने विशेष कौतूहल के

कारण ही पूछा ।

उसकी माँ यह नहीं जानती थी कि नलिन को आज के रसोईघर के नये रहस्य का परिचय है। इधर माता का स्वास्थ्य खराब होने से नलिन ने रसोई के लिये आदमी रखने के बारे में माँ को बहुत तंग किया है; किन्तु किसी तरह भी उन्हें राजी न कर सका। आज नये व्यक्ति को रसोई में देख वह मन-ही-मन प्रसन्न हुआ है। उसने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया फिर सोई कैसी बनी है—किन्तु उसने उत्साह के साथ कहा, "रसोई बहुत अच्छी बनी है माँ।"

ओट में छिपी कमला यह उत्साहवर्द्धक वचन सुन खड़ी न रह सकी। उसने तेजी से बगल के एक कमरे में जाकर अपने चचल हृदय को दोनों हाथ से थाम प्रसन्नचित बैठ गई।

भोजन के उपरान्त नलिन अपने मन-ही-मन न' जाने किस विचार को स्पष्ट करने की चेष्टा करते हुए नित्य के अभ्यास के अनुसार अपने एकान्त कमरे में चले गये।

तीसरे पहर क्षेमंकरी ने कमला की चोटी अपने हाथों कर सिर में सिन्दूर पहना दिया—उसके मुंह को जरा इधर घुमाकर और जरा उधर घुमाकर अच्छी तरह देखा, "कमला लज्जा से निगाहें नीची किये बैठी रही।" क्षेमंकरी ने मन-ही मन कहा, "आहा, अगर मैं ऐसी ही एक बहू पा जाती।"

दूसरे दिन कमला ने ही गृहस्थी का सारा भार सम्भाला। नलिन ने पूर्व की ओर बरामदे का एक हिस्सा घेरकर उसमें मार्बल पत्थर बिछवाकर एक छोटा कमरा बनवा लिया था, "यही उसका उपासना गृह था। दोपहर में यहीं आसन पर बैठकर पढ़ता है। उस दिन सवेरे नलिन न उस कमरे में जाकर देखा कि घर साफ-सुथरा है। धूना जलाने के लिये पीतल की एक धूपदानी थी, वह आज सोने की तरह चमक रही है। सेल्फ के ऊपर उसकी कई पुस्तकें सजाकर रखी हुई है। इस घर की सफाई और निर्मलता पर खुली खिड़की से सवेरे की धूप उज्ज्वल होकर फैली हुई है। यह देख स्नान करके आये हुये नलिन के मन में विशेष प्रसन्नता हुई।

कमला सवेरे लुटिया में गंगाजल लेकर क्षेमंकरी के बिस्तर के पास आई। उन्होंने उसे स्वच्छ देखकर कहा, "यह क्या बेटी तू अकेली ही घाट गई थी? मैं आज सवेरे से ही सोच रही थी कि मैं तो अस्वस्थ हूँ, तुम नहाने किसके साथ जाओगी। किन्तु तुम्हारी आयु कम है, इस प्रकार अकेली……"

कमला ने कहा, "माँ, मेरे बाप के घर का एक नौकर मेरे बिना रह नहीं सका, मुझे देखने के लिए कल रात को ही वह आ पहुँचा। मैं उसी को साथ ले गई थी।"

कमला ने उमेश को हाजिर किया। उमेश का क्षेमंकरी को प्रणाम करने पर उन्होंने पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

उसने कहा, "मेरा नाम उमेश है।" कहकर बिना किसी कारण के हँस दिया।

क्षेमंकरी द्वारा आदर पाकर उमेश वहीं रहने लगा।

उमेश की सहायता से कमला ने दिन का सारा काम निपटा डाला। अपने हाथ से नलिनाक्ष के घर में झाड़ू दे, उसके बिस्तर को धूप दिखला, उसने सब साफ कर दिया। नलिनाक्ष की छोड़ी हुई एक मैली धोती एक कोने में पड़ी थी कमला ने उसे धोकर सुखाकर तह बना अर्गनी पर झुला दिया। घर में जो चीजें साफ थीं, उन्हें भी पोंछ-पाछकर ठिकाने से रख दिया। बिस्तर के सिर-हाने दीवार में एक आलमारी बनी थी—उसे उसने खोलकर देखा कि उसमें कुछ नहीं है, सिर्फ नीचे के खाने में नलिनाक्ष की एक जोड़ा खड़ाऊँ है। चट-पट उस खड़ाऊँ को उठाकर कमला ने माथे लगाया और छोटे बच्चों की तरह उसे गोद में रख आँचल से उसकी धूल पोंछ दी।

तीसरे पहर कमला क्षेमंकरी के पैरों के पास बैठ उनके पैर को हाथ से सुहला रही थी, इसी समय हेमनलिनी फूलों के गुच्छे लिए हुई आई। हेम ने क्षेमंकरी को प्रणाम किया।

क्षेमंकरी ने उठकर कहा, "आओ-आओ; हेम, आओ बैठो। अन्नदाबाबू अच्छे हैं?"

हेमनलिनी ने कहा, "कल उनका स्वास्थ्य अच्छा न होने के कारण मैं आ

न सकी। आज वह स्वस्थ हैं।"

कमला को दिखाकर क्षेमंकरी ने कहा, "यह देखो बेटी, बचपन में ही मेरी माँ गईं, वह दूसरा जन्म लेकर कल मुझे राह में मिल गईं। मेरी माँ का नाम था, हरिभावनी, अब हरिदासी के नाम से आई हैं। किन्तु हेम, सच कहो, ऐसी लक्ष्मीमूर्ति तुमने कहीं देखी है ?

कमला ने लज्जा से सिर झुका लिया। हेमनलिनी से धीरे-धीरे उसका परिचय हो गया।

थोड़ी देर बाद क्षेमंकरी ने हेम से पूछा, "अच्छा बताओ तो बेटी, उस दिन तुम्हारे पिता से जो प्रस्ताव किया था, उसके बारे में उन्होंने तुमसे कुछ कहा नहीं ?"

हेमनलिनी ने सिर झुकाकर कहा, "हाँ, कहा था।"

क्षेमंकरी ने कहा, "किन्तु उस बात पर तुम निश्चय राजी नहीं हुईं। यदि राजी होतीं, तो अन्नदाबाबू उसी समय मेरे पास दौड़ आते। बेटी हेम, तुम छोटी नहीं हो, तुम शिक्षित हो, तुमने मेरे नलिन से ही दीक्षा ली है, तुम्हें यदि मैं नलिन के घर बैठाकर मर सकूँ, तो बहुत ही धैर्य से मर सकूंगी। नहीं तो मैं निश्चय जानती हूँ कि मेरे मरने पर विवाह ही न करेगा तब जरा सोचकर देखो कि उसकी क्या दशा होगी।

आँखें नीची कर हेमनलिनी ने कहा, "माँ, अगर तुम मुझे योग्य समझो, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

यह सुनकर क्षेमंकरी ने हेम को अपनी तरफ खींच उसका माथा चूम लिया। इस बारे में फिर कोई बातचीत नहीं हुई।

"हरिदासी, यह सब फूल' कहती हुई जब उन्होंने घूमकर देखा तब हरिदासी वहाँ नहीं थी। वह चुपचाप उठकर चली गई है।

पहली बातचीत के बाद क्षेमंकरी से हेमनलिनी को संकोच होने लगा। क्षेमंकरी भी संकुचित हुई। तब हेम ने कहा, "माँ, अब आज शीघ्र ही जाऊँ। पिताजी का शरीर स्वस्थ नहीं है। कहकर उसने क्षेमंकरी को प्रणाम किया। क्षेमंकरी ने उसके माथे पर हाथ फरकर कहा, "जाओ बेटी, जाओ।"

हेमनलिनी के चली जाने पर क्षेमंकरी ने नलिनाक्ष को बुलाया। कहा, "नलिन, अब मैं देर नहीं कर सकती।"

नलिनाक्ष ने पूछा, "बात क्या है ?"

क्षेमंकरी ने कहा, "मैंने आज हेम से सब बातें खोलकर कह दी हैं, वह राजी हो गई है। अब मैं तुम्हारी कोई बात सुनना नहीं चाहती, यथाशीघ्र शादी कर लो।

तीस

अच्छा, "माँ, तुम चिन्ता न करो। जो तुम चाहती हो वही होगा। इतना कहकर नलिन बाहर चला गया।"

नलिनाक्ष के चले जाने पर क्षेमंकरी ने हरिदासी को बुलाया।

कमला पास के कमरे से निकल आई। तब शाम का कुछ अँधेरा फैल रहा था। हरिदासी का चेहरा अच्छी तरह दिखाई न दिया। क्षेमंकरी ने कहा, "बेटी इन फूलों पर पानी छिड़क घर में सजा दो। यह कहकर उन्होंने चुनकर गुलाब का एक फूल ले डलिया कमला को दे दिया।

कमला ने उनमें से कुछ फूल चुनकर एक रकाबी में सजा नलिनाक्ष के उपासना-गृह में आसन के सामने रख दिया। कुछ को एक कमरे में राजाकर नलिनाक्ष के सिरहाने तिपाई पर रख दिया। बाकी के दो-चार फूल ले आलमारी खोल खड़ाऊँ पर चढ़ा प्रणाम करते-करते उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। खड़ाऊँ के अतिरिक्त संसार में उसके लिये और कुछ नहीं, "पद सेवा का अधिकार भी अब जाना चाहता है।"

इसी समय अचानक किसी के घर में प्रवेश करते ही कमला चटपट उठ खड़ी हो गई। जल्दी से आलमारी का दर्वाजा बन्द कर उसने देखा कि नलिनाक्ष खड़े हैं। किसी ओर कमला को जाने की राह न मिली—लज्जा के मारे कमला उस आने वाले सान्ध्य अन्धकार में मिल क्यों न गई !

नलिनाक्ष कमरे में कमला को देख बाहर लौट गया। कमला यह देखकर तेजी के साथ दूसरे कमरे में चली गई। तब नलिनाक्ष ने फिर कमरे में प्रवेश किया। कमला आलमारी क्यों खोल रही थी और उसे देख उसने झटपट बन्द क्यों कर दिया ? कौतूहलवश नलिनाक्ष ने आलमारी खोलकर देखा कि उसकी खड़ाऊँ पर कुछ ताजे फूल चढ़े हैं। तब वह फिर आलमारी बन्द कर सोने के कमरे में खिड़की के पास आकर खड़ा हुआ। बाहर आकाश की ओर देखते-देखते जाड़े के सूर्य की सायंकालीन आभा के साथ मिलकर अन्धेरा छा गया।

हेमनलिनी नलिनाक्ष से विवाह की सम्मति देकर मन को समझाने लगी, "यह मेरे लिये सौभाग्य का विषय है।" उसने मन-ही-मन हजार बार कहा, "मेरा पुराना बन्धन टूट गया है। मेरे जीवन के आकाश में घिर कर जो तूफानी बादल जमा हो गये थे, वह सब छट गये। अब मैं स्वाधीन हूँ, अपने अतीतकाल के अविश्राम से मुक्त हूँ।" इस बात को बार-बार दुहराकर उसने बहुत बड़े आनन्द का अनुभव किया।

घर पर लौटकर हेमनलिनी ने सोचा, कि यदि आज माँ होती, तो आज मैं उन्हें अपने आनन्द की बात सुनाकर प्रसन्न करती, "पिता से कैसे सब हाल कहूँ ?"

शरीर कमजोर होने के कारण जब आज अन्नदा बाबू शीघ्र ही सोने चले गये, तब हेमनलिनी एक कापी लेकर रात को अपने निर्जन कमरे में बैठकर टेबिल पर लिखने लगी, मैं मृत्युजाल में जकड़कर सारे संसार से अलग हो गई। मैं मन से कभी सोचती भी नहीं थी कि इससे उद्धार कर ईश्वर फिर एक दिन मुझे नवीन जीवन प्रदान करेंगे। आज में उनके चरणों में सहस्त्र प्रणाम कर नये कर्त्तव्यक्षेत्र में प्रवेश करने को उत्सुक हूँ। मैं किसी तरह भी जिस

सौभाग्य के उपयुक्त नहीं हूँ उसे ही मैंने प्राप्त किया है। ईश्वर मुझे चिर-जीवन तक उसी की रक्षा करने का बल प्रदान करें। जिनके जीवन के साथ मेरा यह क्षुद्र जीवन मिलने जा रहा है, वही मुझे सब तरह से परिपूर्णता देंगे, मेरी यही प्रार्थना है कि मैं उस परिपूर्णता के समस्त ऐश्वर्य को पूर्णरूप से उन्हें ही समर्पण कर सकूँ।"

दूसरे दिन तीसरे पहर जब अन्नदा बाबू हेमनलिनी को लेकर नलिन के घर जाने को तैयार हुए, उसी समय उनके द्वार पर एक गाड़ी आकर खड़ी हुई। कोचबक्स के ऊपर से नलिन के एक नौकर ने आकर सूचना दी, कि माँ आ रही हैं।

अन्नदा बाबू जल्दी से दर्वाजे के पास आ गये, तब तक क्षेमंकरी गाड़ी से उतर आईं। अन्नदा बाबू ने कहा, "आज मेरा परम सौभाग्य है कि···

क्षेमंकरी ने कहा, "आज आपकी लड़की को देखकर आशीर्वाद कर जाऊँगी इसीलिये मैं आई हूँ।"

यह कहती हुई वह घर में चली आईं। अन्नदा बाबू ने बैठक में एक बड़े काउच पर उन्हें बैठाकर कहा, "आप बैठिये, मैं हेम को बुलाकर लाता हूँ।"

हेमनलिनी बाहर जाने के लिये कपड़े बदलकर तैयार थी, क्षेमंकरी का आना सुन उसने जल्दी से बाहर निकल उन्हें प्रणाम किया। क्षेमंकरी ने कहा, "सौभाग्यवती हो तुम, दीर्घायु लाभ करो। देखूँ बेटी तुम्हारा हाथ देखूँ।" यह कहकर उन्होंने उसके एकाएक हाथ में मोटे-मोटे सोने के कड़े पहना दिये। कड़े पहनने पर हेमनलिनी ने फिर उन्हें प्रणाम किया। क्षेमंकरी ने दोनों हाथों से उसका माथा पकड़ चुम्बन किया। इस आशीर्वाद और आदर से हेमनलिनी का हृदय एक गम्भीर माधुर्य से परिपूर्ण हो उठा।

क्षेमंकरी ने कहा, "समधी महाशय, कल मेरे घर सबेरे आप दोनों का निमन्त्रण है।"

दूसरे दिन सबेरे हेमनलिनी के साथ अन्नदा बाबू बाहर चाय पीने बैठे। अन्नदा बाबू का रोगी चेहरा एक रात में ही आनन्द से सरस और नवीन हो उठा है। वह बार-बार हेमनलिनी के शान्त और उज्ज्वल चेहरे की ओर देखते

थे; उन्हें जान पड़ता था मानो आज उनकी स्वर्गगामी पत्नी से मंगल-मधुर आविर्भाव उनकी कन्या को घेरे हुये है जो सुख की उज्ज्वला को स्निग्ध और गम्भीर बना रहा है।

इसी समय कई ट्रंक और बिछौने आदि से लदी एक किराये की घोड़ा-गाड़ी उनके बाग के सदर फाटक पर आकर लगी।

एकाएक हेमनलिनी 'दादा आये हैं' कहकर आगे बढ़ी। योगेन्द्र ने प्रसन्न-मुख गाड़ी से उतरकर कहा, "क्यों हेम, अच्छी हो न ?"

योगेन्द्र ने हँसकर कहा, "मैं पिताजी के लिये बड़े दिन का एक उपहार ले आया हूँ।"

इसी समय रमेश गाड़ी से उतरा। हेमनलिनी क्षणभर के लिये देख फिर पीछे पलटकर चली गई।

योगेन्द्र ने कहा, "हेम, जाओ मत, एक बात है, सुनती जाओ।"

यह आवाज हेमनलिनी के कान तक नहीं पहुँची, वह मानो किसी प्रेतमूर्ति के पीछा करने से आत्मरक्षा के लिए भागकर चली गई।

रमेश क्षणभर के लिये रुक गया, वह सोच न सका कि आगे बढ़े या लौट जावे। योगेन्द्र ने कहा, "रमेश आओ, पिताजी यहाँ बाहर ही बैठे हैं।" यह कह उसने रमेश का हाथ पकड़ अन्नदाबाबू के सामने लाकर खड़ा कर दिया।

अन्नदाबाबू दूर से रमेश को देख हतबुद्धि हो बैठे रहे। वह माथे पर हाथ फेर-फेरकर सोचने लगे, "अब यह कौन-सी बाधा आ पहुँची।"

रमेश ने अन्नदाबाबू को झुककर नमस्कार किया। अन्नदाबाबू ने उसे कुरसी पर बैठने का इशारा कर योगेन्द्र से कहा, "योगेन्द्र, तुम बड़े समय से आ गए। मैं तुम्हें तार देने वाला था।"

योगेन्द्र ने पूछा, "क्यों ?"

अन्नदाबाबू ने कहा, "हेम के साथ नलिन का विवाह ठीक हो गया है। कल नलिन की माँ हेम को आशीर्वाद कर देख गई हैं।"

योगेन्द्र ने कहा, "क्या कहते हो पिता जी, विवाह बिलकुल ही पक्का हो गया है ? मुझसे तुमने एक बार पूछा भी नहीं ?"

अन्नदाबाबू, "योगेन्द्र, तुम कब क्या कहते हो, कोई ठीक नहीं। जब मैं नलिन को नहीं जानता था, तब तुम्हीं लोग इस विवाह के लिए प्रयत्न कर रहे थे।"

योगेन्द्र, "तब तो था, किन्तु जो हो, अभी समय गया नहीं है। बहुतेरी बातें कहने को हैं। पहले यह सब सुन लो, इसके बाद जो करना हो करियेगा।"

अन्नदाबाबू ने कहा, "समय होने पर किसी दिन सुन लूंगा· —किन्तु आज मुझे इतनी फुरसत नहीं है। अभी मुझे बाहर जाना है।"

योगेन्द्र ने पूछा, "कहाँ जाना है!"

अन्नदाबाबू ने कहा, "नलिनाक्ष की माँ के यहाँ मेरा और हेम का निमंत्रण है। तब तुम्हारे भोजन के लिए यहीं ·····"

योगेन्द्र ने कहा, "नहीं-नहीं। हम लोगों के लिए चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। मैं रमेश के साथ यहाँ के किसी होटल में खा-पी लूँगा।"

अन्नदाबाबू किसी तरह भी रमेश के साथ किसी प्रकार की बातचीत न कर सके। उसके मुँह की ओर देखना भी उन्हें कठिन हो गया। रमेश भी चुपचाप अन्नदाबाबू को नमस्कार कर चला गया।

इकत्तीस

क्षेमंकरी ने कमला से जाकर कहा, "बेटी, कल हेम और उसके पिता को दोपहर में यहाँ भोजन करने का निमन्त्रण दे आई हूँ। बताओ, क्या तैयारी की जाय। किन्तु आज तुम्हारा चेहरा सूखा-सूखा क्यों दिखाई दे रहा है? क्या तबियत ठीक नहीं है?"

मलिन मुख पर जरा हँसी लाकर कमला ने कहा, "अच्छी तो हूँ माँ!"

क्षेमंकरी ने इस बात पर ध्यान न दे कहा, न हो, तो कुछ दिन के लिए अपने चाचा के घर जाकर रहो, जब इच्छा हो चली आना।"

कमला ने घबराकर कहा, "माँ, मैं जब तक तुम्हारे पास हूँ, तब तक संसार में और किसी की चिन्ता नहीं। अगर मैं कभी तुम्हारे चरणों में अपराध करूँ, तब तुम जो मन में आये दण्ड देना, किन्तु एक दिन के लिए दूर न भेजो।"

क्षेमंकरी ने कमला के गाल पर अपना दाहिना हाथ फेरकर कहा, "यही तो मैं कहती हूँ बेटी। किसी जन्म में तुम मेरी माँ थीं। नहीं तो देखते ही ऐसा बन्धन कैसे हो जाता। अच्छा जाओ बेटी, आज जरा जल्दी सो जाओ।"

कमला अपने सोने की कोठरी में जा दर्वाजा बन्दकर और चिराग बुझाकर जमीन पर बैठ गई। बहुत देर सोचने के बाद उसने मन-ही-मन कहा, "भाग्य का दोष है, कि जिस पर मैं अपना अधिकार खो चुकी हूँ, उसे मैं सामने देखती बैठी रहूँ, यह असम्भव है? मैं कल से किसी विचार को मन में स्थान न दूंगी जिससे एक क्षण के लिए भी मुँह पर उदासी न आये। जो आशा से परे है, उसके लिए मन में कोई कामना न जागने पाये। केवल सेवा करूँगी, और कुछ न चाहूँगी, न चाहूँगी।"

इधर-उधर करवट बदलते कमला को नींद आ गई। रात में दो तीन बार नींद खुली। नींद खुलते ही उसने उसी मन्त्र को दोहराया, "मैं कुछ न चाहूँगी, कुछ न चाहूँगी, कुछ न चाहूँगी।" सवेरे वह बिस्तर से उठते ही हाथ जोड़कर बैठ गई। सारे दिन के लिये उसने अपने मन पर प्रयोग कर कहा, 'मैं मरते दम तक तुम्हारी सेवा करूँगी, और कुछ न चाहूँगी, कुछ न चाहूँगी।"

यह कह वह जल्दी से मुँह-हाथ धो, बासी कपड़ा बदल कर नलिनाक्ष के उसी छोटे उपासना-गृह में गई। उसने अपने आँचल से तमाम घर पोंछा और ठीक स्थान पर आसन बिछाकर तेजी से पैर बढ़ाकर गंगा स्नान करने चली गई। आजकल नलिनाक्ष के बहुत अनुरोध से क्षेमंकरी ने सूर्योदय से पहले स्नान करने जाना छोड़ दिया है। इसी से उमेश को लेकर इस असहनीय शीत में सवेरे कमला को स्नान करने जाना पड़ता है।

स्नान कर के लौट आने पर कमला ने क्षेमंकरी को प्रसन्न मुख ही प्रणाम किया। उस समय वह स्नान के लिए जाने की तैयारी कर रही थी। उन्होंने

कमला से कहा, "इतने सवेरे क्यों नहाने गई। मेरे साथ चली होती।"

कमला ने कहा, "आज काम है माँ! कल शाम को जो तरकारी आई है, उसे अभी काट रखती हूँ और जो बाजार से लाना बाकी है, उसे उमेश जल्दी से ला देगा।"

क्षेमंकरी ने कहा, "अच्छा बेटी। समधी जैसे ही आयेंगे, वैसे ही उन्हें तैयार मिलेगा।"

इसी समय नलिन के बाहर से आने पर कमला अपने भीगे बालों पर जल्दी से घूँघट खींचकर घर में चली गई। नलिन ने कहा, "माँ, आज ही तुम स्नान करने चलीं? केवल कल जरा-सी अच्छी रही हो।"

क्षेमंकरी ने कहा, "नलिन, अभी डाक्टरी रहने दे सवेरे गंगा स्नान न करने वाले कभी अमर नहीं होते। तुम इस समय बाहर जा रहे हो? जरा जल्दी ही आना। कल तुमसे कहना भूल गई थी—आज अन्नदा बाबू तुम्हें आशीर्वाद करने आयेंगे।"

नलिन, "आशीर्वाद करने आयेंगे; क्यों?"

क्षेमंकरी, "कल मैं हेमनलिनी को एक जोड़ा कड़ा देकर आशीर्वाद कर आई हूँ, अब अन्नदा बाबू न करें, तो काम कैसे चलेगा।"

यह कह क्षेमंकरी स्नान करने चली गई। नलिन कुछ सोचता हुआ बाहर चला गया।

× × ×

हेमनलिनी रमेश के आगे से भाग अपने कमरे का दर्वाजा बन्दकर बिस्तर पर बैठ गई। प्रथम आवेग समाप्त होने पर उसे लज्जा ने घेर लिया। "क्यों मैं रमेश बाबू से सहज रूप से मिल न सकी। मैं जिसकी आशा नहीं करती। वह क्यों इस तरह अशोभन रूप में मेरे सामने आता है। विश्वास नहीं, किसी पर विश्वास नहीं। मुझसे इस तरह का काम हो नहीं सकता।"

यह कह उसने शीघ्रता से उठकर दर्वाजा खोल दिया। बाहर निकल आई, मन-ही-मन सोचने लगी, "मैं भागूँगी नहीं, मैं जीतूँगी।" फिर रमेश बाबू से मिलने चली। एकाएक न जाने क्या याद आया। फिर वह कमरे में गई। ढूँढ़

खोल क्षेमंकरी का दिया कड़ा निकाल कर और पहन कर दृढ़ता के साथ सिर ऊँचा कर बाहर आई।

अन्नदा बाबू ने कहा, "हेम, तुम कहाँ जा रही हो?"

हेमनलिनी ने कहा, "रमेश बाबू नहीं हैं और दादा भी नहीं हैं?"

अन्नदा, "नहीं, वह लोग चले गये।"

हेमनलिनी थोड़ी देर बाद बड़े उत्साह से अपने पिता के साथ नलिन बाबू के घर गई।

अन्नदा बाबू जब नलिन के मकान पर पहुँचे, उस समय साढ़े दस से अधिक का समय नही हुआ था। उस समय तक नलिन भी अपना काम समाप्त कर मकान लौटे नही थे। लाचार अन्नदा बाबू की आवभगत का भार क्षेमंकरी को ही लेना पड़ा।

क्षेमंकरी अन्नदा बाबू के साथ बातें करते समय बीच-बीच में हेमनलिनी की ओर भी देखती जाती थी। उस मुँह पर उत्साह का कोई लक्षण क्यों नहीं है? अपितु हेमनलिनी की उड़ी हुई दृष्टि में उन्हें एक प्रकार की भावना का अन्धकार दिखाई दिया।

थोड़ी-सी बात भी क्षेमंकरी पर चोट कर बैठती है। हेमनलिनी का ऐसा मलिन भाव देख उनका मन दब गया। वह सोचने लगी कि कहीं यह शिक्षा के मद में मतवाली लड़की मेरे नलिन को अपने योग्य समझ ही नहीं रही है। इतनी चिन्ता और ऐसी दुविधा किसलिये? यह मेरा ही दोष है। बूढ़ी हो गई, फिर भी मैं धीरज न धर सकी। जैसे ही इच्छा हुई, बस सब्र न कर सकी। बड़ी आयु की लड़की के साथ नलिन का विवाह ठीक किया। फिर भी, उसे अच्छी तरह पहचानने की चेष्टा नहीं की। अन्नदा बाबू के साथ बात करते करते क्षेमंकरी के मन में यही सब चिन्ताएँ घूमने लगीं। उन्होंने अन्नदा बाबू से कहा, "देखिये, विवाह के बारे में बहुत शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं। इन दोनों की आयु इतनी हो गई है, अब यह लोग आप ही विचार कर कार्य करेंगे, हम लोगों को जोर देना ठीक नहीं। अवश्य ही मैं हेम के मन का भाव नहीं समझती—किन्तु मैं नलिन की बात कह सकती हूँ; उसका मन अभी

तक ठिकाने नहीं आया है।"

यह बात क्षेमंकरी ने विशेष रूप से हेमनलिनी को सुनाने के लिये ही कही थी। क्योंकि वह दूसरे पक्ष को यह नहीं जानने देना चाहती कि हेमनलिनी अप्रसन्न मन से न जाने क्या सोच रही है और उनका लड़का विवाह के प्रस्ताव से सहमत है।

हेमनलिनी आज यहाँ आने के समय उत्साह लेकर आई थी। इसलिये उसका विपरीत फल हुआ। क्षणिक उत्तेजना गहरी उदासी के रूप में बदल गयी जब क्षेमंकरी ने कोठरी में प्रवेश किया, तब जिस नई जीवन यात्रा की राह में वह कदम रखने को तैयार हुई है, उसके सामने रास्ते में दुर्गम पहाड़ी जैसी झलक दिखाई दे गई।

इस अवस्था में जब क्षेमंकरी ने विवाह के प्रस्ताव को बहुत कुछ लौटा लिया तब हेमनलिनी के मन में दो विपरीत भाव आये। विवाह के बन्धन में शीघ्र पड़कर अपने संशय से हिलती हुई दुर्बल अवस्था में शीघ्र छुटकारा पाने की इच्छा से वह इस प्रस्ताव को शीघ्र पक्का कर लेना चाहती थी—फिर प्रस्ताव को टूटते देख उपस्थित विचार से उसे कुछ सुख भी मिला।

क्षेमंकरी ने यह बात कहते ही निगाहों से घूमकर हेमनलिनी के मुँह के भाव को समझ लिया। उसके मन में आया, मानो अब हेमनलिनी के मुँह पर जरा शान्ति की आभा आई। इससे उसका मन उसी समय हेमनलिनी से विमुख हो गया। उन्होंने मन-ही-मन कहा, "अपने नलिन को मैं इतने सस्ते में गँवाने चली थी।" नलिन के आने में आज देर होते देख मन-ही-मन प्रसन्न हुईं।

यह सोचती हुई भोजन की तैयारी देखने के लिये क्षेमंकरी कुछ देर की छुट्टी लेकर उठ गईं और रसोईघर में आकर बोली, "अहो, मैं तो समझी, कि तुम रसोईघर में बहुत व्यस्त होगी।"

कमला ने कहा, "रसोई तो हो गई माँ जी।"

क्षेमंकरी ने कहा, "तब यहाँ चुपचाप क्यों बैठी हो बेटी। अन्नदा बाबू बड़े आदमी हैं, उनके सामने जाने में लज्जा कैसी? हेम आई है, उसे अपने कमरे में बुला कुछ देर बातचीत करो मन बहलाओ। मैं बूढ़ी, अपने पास बैठाकर उसे

कष्ट क्यों दूँ।"

हेमनलिनी से टकराकर क्षेमंकरी का स्नेह कमला पर अधिक हो गया है।

कमला ने संकोच में पड़कर कहा, "माँ, मैं उनके साथ क्या बातचीत करूँ? वह लिखी-पढ़ी हैं और मैं कुछ नहीं जानती।"

क्षेमंकरी ने कहा, "यह कैसी बात, तुम किसी से कम नहीं हो बेटी। लिखना-पढ़ना सीखकर कोई अपने को कितनी ही बड़ी समझे तुमसे बढ़कर आदर पाने लायक कितनी हैं? किताब पढ़ने से सब विद्वान हो सकती हैं, किन्तु तुम्हारी जैसी लक्ष्मी होना सबके लिए कठिन है। जाओ, बेटी जाओ, किन्तु तुम्हारा यह कपड़ा, आओ आज उपयुक्त वस्त्र तुझे पहना दूँ।"

सभी ओर से आज क्षेमंकरी हेमनलिनी के गर्व को नष्ट करने पर तुली हुई है। रूप में भी वह उसे एक अल्पशिक्षित लड़की के आगे झुका देना चाहती हैं। कमला को आपत्ति करने का अवसर नहीं मिला। क्षेमंकरी ने अपने निपुण हाथों से मन के अनुसार कमला का शृंगार किया। फिरोजी रंग की रेशमी साड़ी पहनाई, नये फैशन के बाल बनाए, बराबर कमला के मुँह को इधर-उधर घुमाकर देखा और मुग्ध हो कपोल का चुम्बन कर कहा, "आहा, यह रूप तो राजा के घर के योग्य था।"

कमला बीच-बीच में कह बैठती, "माँ, वह लोग अकेले हैं, देर हो रही है।"

क्षेमंकरी ने कहा, "होने दो देर आज मैं तुम्हारा शृंगार किये बिना न मानूँगी।"

सजावट हो जाने पर वह कमला को साथ लेकर चली, "आओ, आओ बेटी, लज्जा न करो। तुम्हें देखकर कालेज में पढ़ने वाली विदुषी और सुन्दरी लज्जा करेंगी, तुम सबके सामने सिर ऊँचा कर खड़ी हो सकती हो।"

यह वह उस घर में क्षेमंकरी कमला को जबर्दस्ती खींच ले गई जाकर देखा कि नलिन उन लोगों से बात कर रहा है। कमला ने शीघ्र लौट जाने की तैयारी सोची, किन्तु क्षेमंकरी ने उसे पकड़ रखा, लज्जा काहे की बेटी, वह सब अपने ही लोग हैं।"

कमला के रूप और शृंगार से क्षेमंकरी अपने मन में एक प्रकार का गर्व कर रही थी, उसकी इच्छा थी कि उसे देखकर सब लोग चौंक पड़ें। पुत्राभिमानिनी माता आज नलिन के प्रति हेमनलिनी की अवज्ञा की कल्पना कर उत्तेजित हो उठी हैं, आज नलिन के सामने हेमनलिनी को नीचा दिखा, वह बहुत खुश हैं।

कमला को देखकर सब लोग चौंक पड़े। हेमनलिनी ने पहले दिन जब उसका परिचय पाया था, उस समय कमला में कोई सजावट नहीं थी—वह मलिन रूप संकुचित हो एक किनारे बैठी थी, वह भी अधिक देर नहीं। उस दिन उसे वह अच्छी तरह देख ही न सकी। आज क्षणभर में उसे देख विस्मित हो पड़ी। उसने उठकर लजाती हुई कमला का हाथ पकड़ अपने पास बिठा लिया।

क्षेमंकरी समझ गईं, कि उनकी जीत हुई, उपस्थित सभा में सभी को मन-ही-मन स्वीकार करना पड़ा, कि ऐसा रूप दैव के प्रसाद से ही मिलता है। तब उन्होंने कमला से कहा, 'जाओ तो बेटी, तुम हेम को अपने कमरे में ले जाकर बातचीत करो। तब तक मैं खाने का बन्दोबस्त करूं।"

कमला के मन में एक विचार उपस्थित हुआ। वह सोचने लगी, "कौन जाने, कि हेमनलिनी मुझे कैसी लगेगी।"

हेमनलिनी ने धीरे-धीरे कमला से कहा, "तुम्हारी सब बातें मैंने माँ से सुनी हैं। सुनकर मुझे बहुत ही कष्ट हुआ। तुम मुझे अपनी बहन के समान समझना। तुम्हारी कोई बहन है।"

कमला ने हेमनलिनी के सन्देह और करुण कण्ठस्वर को सुन धीरज के साथ कहा, 'मेरी सगी बहन कोई नहीं है, मेरी एक चचेरी बहन है।"

हेमनलिनी ने कहा, "मेरी कोई बहन नहीं। जब मैं छोटी थी, तभी मेरी माँ मर गई। कितने ही दुःख-सुख के समय चिन्ता में पड़ी कि माँ तो नहीं है, फिर भी अगर मेरी एक बहन होती। बचपन से हो कि आज मन खोलकर मैं कोई बात कर ही नहीं सकती। लोग समझते है कि मैं बड़ी अभिमानिनी हूँ, लेकिन कभी अपने मन में यह बात न लाना। मेरा मन पागलों जैसा हो गया

है। स्थिर नहीं।"

कमला के मन से सब बाधायें दूर हो गईं, उसने कहा, "दीदी, मैं तुम्हें अच्छी लगूँगी, मुझे तो तुम जानती हो, मैं बिल्कुल मूर्ख हूँ।"

हेमनलिनी ने हँसकर कहा, "जब तुम मुझे अच्छी तरह जानोगी, तब समझोगी कि मैं भी मूर्ख हूँ। मैं केवल कुछ किताबें रट चुकी हूँ, और कुछ नहीं जानती। तुमने अपने पति को तो अच्छी तरह देखा नहीं, उनकी याद है ?"

कमला ने इस बात का साफ उत्तर न देकर कहा, "स्वामी की भी याद होती है, यह मैं नहीं जानती थी बहन ! यह कहना ही ठीक है कि मैंने अपने पति को कभी देखा नहीं। किन्तु मैं नहीं कह सकती कि मेरे मन की भक्ति उनकी ओर कैसे गई। भगवान ने मुझे उस पूजा का फल दिया है, अब मेरे पति मेरे मन के आगे स्पष्ट रूप से जाग उठे हैं; उन्होंने मुझे ग्रहण नहीं किया, तो न सही, मैंने अब उन्हें पा लिया है।"

कमला की यह भक्तिसिंचित बातें सुन हेमनलिनी का हृदय भर आया। उसने कुछ देर चुप रहने के बाद कहा, "तुम्हारी बात को मैं अच्छी तरह समझ रही हूँ। इसी पाने को पाना कहते हैं और कुछ पाना लोभ का पाना है—वह नष्ट हो जाता है।"

नहीं कह सकते कि कमला इस बात को अच्छी तरह समझी या नहीं। वह हेमनलिनी की ओर देखती रह गई। कुछ देर बाद उसने कहा, "तुम जो कहती हो दीदी, वह सच ही है। मैं मन में कोई दुःख नहीं आने देती—इसी से मैं अच्छी तरह हूँ। मैंने जो पाया है, वही मेरा लाभ है। पर दीदी, तुम तो सब कुछ पाओगी, तुम्हें तो किसी बात का अभाव न रहेगा।"

हेमनलिनी ने कहा, "जो पाना-वाना है, उसे ही पाने पर सुखी हो सकती हूँ, उससे अधिक जो पाया जाता है, उसमें बहुत भार और बहुत दुःख हैं। मेरे मुँह से यह सब बातें तुम्हें विचित्र-सी जान पड़ेंगी—तुम्हें पाकर मेरा हृदय हलका हुआ है—मुझे बल मिला है—इसी से मैं इतना बोल रही हूँ।"

फिर दोनों चुप हो गईं और उस दिन का कार्य-क्रम समाप्त हुआ।

क्षेमंकरी के पास से लौटकर हेमनलिनी ने अपनी बैठक के टेबिल पर एक पत्र पड़ा पाया। लिफाफे के ऊपर का हस्ताक्षर देखकर ही समझ गई कि पत्र रमश का लिखा है। काँपते हुए हाथ से पत्र को उठा वह अपने सोने के कमरे का दरवाजा बन्द कर पढ़ने लगी।

पत्र में रमेश ने कमला की सारी कहानी बिस्तार के साथ लिखी थी। उपसंहार में उसने लिखा—

"तुम्हारे साथ मेरे जिस बन्धन को ईश्वर ने दृढ़ कर दिया था, उसे संसार ने तोड़ डाला है। तुमने अब दूसरे को चित्त समर्पण किया है—इसके लिए मैं तुम्हें कोई दोष नहीं दे सकता, तुम भी मुझे दोष न देना। यद्यपि मैंने एक दिन भी कमला के साथ पत्नी जैसा व्यवहार नहीं किया, तथापि क्रमशः उसने मन को आकर्षित कर लिया था, इस बात को तुम्हारे सामने मुझे स्वीकार करना चाहिए। आज मेरा हृदय किस अवस्था में है, उसे मैं भी निश्चय नहीं समझता। अगर तुम मेरा त्याग न करतीं, तो तुममें मैं आश्रय पा सकता था। इसी आशा से मैं अपना पागल चित्त लेकर दौड़ा-दौड़ा तुम्हारे पास आया था। किन्तु आज जब मैंने स्पष्ट देखा कि तुम मुझसे घृणा कर मेरे सामने से विमुख हुई हो, जब सुना कि—दूसरे से विवाह करने में तुमने अपनी सम्मति दे दी है, तब मेरा मन भी आज सवेरे जब तुम्हारी मुलाकात से बिजली जैसी चोट खा कर बासे में लौटा, तब एक बार मन-ही-मन कहा कि मैं अभागा हूँ। किन्तु अब मैं यह स्वीकार नहीं करूँगा। मैं सरल चित्त से आनन्द के साथ तुमसे विदा होना चाहता हूँ। तुम सुखी रहो, तुम्हारा मंगल हो। मुझसे तुम घृणा न करना, मुझ पर घृणा करने का कोई कारण भी तो नहीं है।"

अन्नदाबाबू कुरसी पर बैठे किताब पढ़ रहे थे एकाएक हेमनलिनी को देख वह चौंक पड़े कहा, "हेम, क्या तुम्हारी तबियत खराब है?"

हेमनलिनी ने कहा, "खराब नहीं है। पिता जी, रमेश बाबू का एक पत्र मिला है। यह लो, पढ़ने के बाद मुझे वापस कर देना।"

यह कहती हेमनलिनी पत्र देकर चली गई। अन्नदाबाबू ने चश्मा लगाकर दोबारा पत्र पढ़ा—इसके बाद उसे हेमनलिनी के पास वापस भेज बैठे-बैठे

विचार करने लगे। अन्त में सोचकर उन्होंने स्थिर किया, कि यह एक प्रकार से अच्छा ही हुआ है। पात्र के हिसाब से रमेश की अपेक्षा नलिन बहुत योग्य है। इससे जो रमेश आप ही हट गया, यह अच्छा ही हुआ।"

सोच ही रहे थे, उसी समय नलिन आ पहुँचा। उसे देख अन्नदाबाबू कुछ आश्चर्य में आये। आज उस समय नलिन से बहुत देर तक बात हुई है, फिर कई घण्टे बीतते-बीतते वह कैसे आ गया। वृद्ध ने मन-ही-मन हँसकर यह ठहराया कि हेमनलिनी की ओर नलिन का मन आकर्षित हुआ है।

वह किसी बहाने हेमनलिनी के साथ नलिन की मुलाकात कराने की बात सोच रहे थे, ऐसे समय नलिन ने कहा, "अन्नदाबाबू, मेरे साथ आपकी कन्या के विवाह का प्रस्ताव हुआ है। इस बात के बहुत आगे बढ़ने से पहले मेरा जो कर्त्तव्य है, उसे मैं कहना चाहता हूँ।"

अन्नदाबाबू ने कहा, "ठीक है, यह तो होना ही चाहिये।"

नलिन ने कहा, "आप नहीं जानते कि मेरा विवाह पहले ही हो गया है।"

अन्नदाबाबू ने कहा, "जानता हूँ। किन्तु—"

नलिन, "आप जानते हैं, यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। लेकिन उसकी मृत्यु हो गई है, आप ऐसा ही अनुमान करते होंगे। मैं निश्चय नहीं कह सकता। किन्तु मेरा विश्वास है कि वह जीवित है।"

अन्नदाबाबू ने कहा, "ईश्वर करे कि यही सत्य हो। हेम, हेम!"

हेमनलिनी ने आकर कहा, "क्या है पिता जी?"

अन्नदाबाबू, "रमेश ने तुम्हें जो चिट्ठी लिखी है, उसका कुछ अंश—"

हेमनलिनी ने वह पत्र नलिन के हाथ में देकर कहा, "इस पत्र का सब कुछ उन्हें पढ़कर देखना चाहिये।" यह कहती हुई हेमनलिनी चली गई।

पत्र समाप्त कर नलिन स्तब्ध हो बैठे रह गए। अन्नदाबाबू ने कहा, "ऐसी शोचनीय घटना संसार में प्रायः नहीं ही होती। पत्र देकर आपके हृदय में चोट पहुँचाई गई। किन्तु इसे छिपाना भी हम लोगों का अन्याय था।

नलिन ने कुछ देर बैठकर अन्नदाबाबू से बिदा माँगी।

शैलजा और उसके पिता नलिनाक्ष के घर आये हैं शैलजा कमला को

लेकर एक कोने में चुपचाप बात कर रही थी क्षेमंकरी से चक्रवर्ती बातें कर रहे थे।

बातचीत के दौरान में चक्रवर्ती चिन्ता प्रकट करते हुये बोले, "तब आपके सामने मैं सब बातें खोलकर कह दूं। सुना है कि नलिनाक्ष बाबू के विवाह का प्रस्ताव हो रहा है, बहू की उम्र भी कम नहीं है और उसकी शिक्षा-दीक्षा हमारे समाज के साथ मेल भी नहीं खाती। इसी से सोच रहा था कि शायद हरिदासी···"

क्षेमंकरी, "मैं इतना समझती हूँ। ऐसा होने से चिन्ता किस बात की थी। किन्तु वह विवाह न होगा।"

चक्रवर्ती, "सम्बन्ध टूट चुका है?"

क्षेमंकरी, "सम्बन्ध हुआ ही नहीं, तब टूटेगा क्या। नलिन की तो बिलकुल इच्छा नहीं थी, मैं ही हठ कर रही थी। किन्तु उस हठ को मैंने भी छोड़ दिया है। जो होने वाला नहीं, उसे जबर्दस्ती करने में मंगल नहीं। नहीं जानती कि भगवान की क्या इच्छा है, देखती हूँ, कि मरने से पहले बहू देखकर जा न सकूँगी।"

चक्रवर्ती, "ऐसी बात न कहिये। हम लोग हैं किसलिये? शादी की विदाई और मिठाई खाये बिना मैं भला छोड़ूँगा?"

क्षेमंकरी, "आपके मुँह में घी-शक्कर पड़े चक्रवर्ती महाशय, मेरे मन बहुत दुःख है कि नलिन इस आयु में मेरे ही कारण गृहस्थ धर्म में प्रवृष्ट नहीं हो सका। इसी से मैं बहुत घबराकर चारों ओर देख एक सम्बन्ध कर बैठी थी, वह आशा त्याग चुकी हूँ, किन्तु अब जरा आप लोग चिन्ता करें। देर न करें, क्योंकि मैं अधिक देर जीवित न रहूँगी।"

चक्रवर्ती, "यह कहने से सुनेगा कौन। आपको जीना भी होगा और बहू का मुँह भी देखना पड़ेगा। आपको जैसी बहू की जरूरत है, उसे मैं समझता हूँ। बहुत छोटी होने से भी काम न चलेगा, फिर भी वह आप पर भक्ति और श्रद्धा करने वाली हो और मानकर चले, नहीं तो वह हम लोगों के पसन्द न आयेगी। इसके लिये आप कुछ चिन्ता न करें, ईश्वर की कृपा से वह सब ठीक

ही है । अब अगर आज्ञा दें तो एक बार हरिदासी को उसके कर्त्तव्य के सम्बन्ध में दो चार उपदेश दे मैं चलूँ, अभी शैल को भी यहां भेजे देता हूँ, आपको देखने के बाद से उसके मुँह से आप की प्रशंसा ही निकलती रहती है ।"

क्षेमंकरी ने कहा, "नहीं, आप तीनों ही एक कोठरी में चलकर बैठिए, मुझे कुछ काम है ।"

चक्रवर्ती ने हँसकर कहा, "संसार में आपको काम है, इसीलिये हम लोगों का कल्याण है । काम का परिचय निश्चय यथा समय मिलेगा नलिनाक्ष बाबू की बहू के कल्याण से ब्राह्मण के भाग्य में मिठाई बदी है ।"

चक्रवर्ती ने शैल और कमला के पास आकर देखा कि कमला की दोनों आँखों में अभी तक आँसू भरे हैं । चक्रवर्ती ने शैलजा के पास बैठ चुपचाप उसके मुँह की ओर एक बार देखा । शैल ने कहा, "पिता जी, मैं कमला से कह रही थी कि नलिनाक्ष बाबू से सब बातें खोलकर कहने का यही समय है; इसी पर तुम्हारी यह नासमझ हरिदासी मुझसे झगड़ा करती है । यह चुप बैठी रहे और नलिनाक्ष बाबू और हेमनलिनी का विवाह हो जाय ।"

चक्रवर्ती ने कहा, "जिस विवाह की बात कह रही हो, उसके बारे में यह क्या प्रमाण है कि वह होगा ही ।"

शैल, "क्या कहते हो पिता जी, नलिनाक्ष बाबू की माँ आशीर्वाद देकर आई हैं ।"

चक्रवर्ती, "विश्वेश्वर के आशीर्वाद से वह आशीर्वाद फँस गया है । बेटी कमला, तुम्हें कोई भय नहीं, धर्म तुम्हारा सहायक है ।"

कमला सब बातों को स्पष्ट न समझ दोनों आँखों को फाड़ चाचा महाशय के मुँह की ओर देखने लगी ।

उन्होंने कहा, "उस विवाह का सम्बन्ध टूट चुका है । उस विवाह पर नलिनाक्ष बाबू राजी नहीं हैं और उनकी माँ के माथे में भी सुबुद्धि आ गई गई है ।"

इसी समय हंसता हुआ उमेश घर में दाखिल हुआ,

चाचा ने पूछा, "क्या है रे उमेश, क्या खबर है

उमेश ने कहा' "रमेश बाबू नीचे खड़े हैं, डाक्टर बाबू को पूछ रहे हैं।"

कमला का मुँह पीला पड़ गया। चाचा जल्दी से उठ बैठे उन्होंने कहा, "कोई हर्ज नहीं बेटा! मैं सब ठीक किये देता हूँ।"

चाचा ने नीचे आकर रमेश का हाथ पकड़कर कहा, "आइये रमेश बाबू, राह में घूमते-फिरते मैं आपसे कुछ बातें करूँगा।"

रमेश बाबू ने आश्चर्य में आकर कहा, "चाचा महाशय, आप यहाँ कहाँ से आये ?"

चाचा ने कहा, "आपके लिये ही आया हूँ—बहुत अच्छा हुआ कि मुलाकात हो गई। आइये, अब देर नहीं है, काम की बात समाप्त कर ली जाय।" कहते हुए रमेश को रास्ते में कुछ दूर खींच ले जाकर कहा, "रमेश बाबू आप इस मकान में किसलिये आये हैं ?"

रमेश ने कहा, "डाक्टर नलिनाक्ष से मिलने आया हूँ। मैंने स्थिर किया है कि उनसे कमला का सारा किस्सा कह दिया जाय। मेरा मन बार-बार कहता है कि शायद कमला जीवित है।"

चाचा ने कहा, "अगर कमला जीती ही हो और यदि नलिनाक्ष से उसकी मुलाकात हो, तब आपके मुँह से नलिन के सब इतिहास सुनने पर क्या सुविधा होगी। उनकी बूढ़ी माँ है, उनके यह सब बातें जानने पर क्या कमला के हक में अच्छा होगा ? मेरे ख्याल से अब इस बात को लेकर अधिक छीना-झपटी करने से कोई लाभ नहीं। कल सवेरे आप आकर मेरे घर पर कमला से जो कहना चाहें कह दें।"

रमेश के चले जाने पर चाचा सब बात कमला से कह बोले, "सब सफाई हो गई है, अब कोई संकोच न करना। रमेश से मिलने में कोई हानि नहीं है।"

इसी समय पैर की आवाज सुन कमला ने सिर उठाकर देखा, कि दरवाजे के सामने ही नलिन हैं। अचानक उसकी आँखों से नलिनाक्ष की आँखें टकरा गईं, अन्य दिन जैसे नलिनाक्ष तुरन्त निगाह फेरकर चला जाता था, आज उसने वैसा नहीं किया।

चाचा ने देखा कि नलिनाक्ष को बैठाकर कमला वहाँ से न जाने कब चली गई है। चक्रवर्ती ने बात आरम्भ की, "नलिन बाबू, आप मेरी हरिदासी को पराई समझकर संकोच न कीजियेगा, इस अभागी को मैं आप लोगों के घर ही छोड़े जाता हूँ, इसे पूर्णरूप से अपना लीजियेगा, इसे और कुछ नहीं देना होगा, अपने सब लोगों की सेवा करने का अधिकार दीजियेगा। आप लोग निश्चय समझें, कि यह जान-बूझकर कभी कोई अपराध न करेगी।"

इसी समय कमला को लिये हुए क्षेमंकरी आई और उनकी बातों के उत्तर में बोली, "चक्रवर्ती महाशय, आप कुछ भी चिन्ता न करें, हरिदासी मेरे घर की लड़की हुई। नौकर-चाकर भी अब मुझे गृहिणी नहीं समझते। मेरी घर की कई चाबियाँ थीं, उन्हें भी कार्य कौशल से हरिदासी ने अपना लिया है।

चक्रवर्ती महाशय, आप अपनी इस लड़की के लिये और क्या चाहते हैं, यह कहिये? अब सबसे बड़ी डकैती तो यह होगी, जब आप कहेंगे कि मैं लड़की को ले जाता हूँ।

चक्रवर्ती बोले, "मैं कहूँ भी, तो क्या लड़की जाएगी? यह न सोचियेगा। उसे आप लोगों ने ऐसा फुसला लिया है कि आज आप लोगों के अतिरिक्त वह संसार में और किसी को जानती भी नही। दुःख में इतने दिन बाद आप लोगों के पास ही उसे शान्ति मिली है। भगवान् उसकी इस शान्ति को निर्विघ्न करे, हमारा यही आशीर्वाद है।"

चक्रवर्ती की आँखों में आँसू आ गये। नलिन कुछ न कह चुपचाप चक्रवर्ती की बातें सुनते रहे। जब सब लोग विदा हो गये, तब वह धीरे-धीरे अपने कमरे में गया। उस समय सन्ध्या के सूर्यास्त के समय उसके शयनगृह को नये विवाह जैसी लाल छटा से रंगे हुए था। उस लालिमा ने नलिन के अंग-अंग से प्रवेश कर उसके हृदय को प्रफुल्लित कर डाला।

बत्तीस

आज सुबह नलिन के किसी मित्र के यहाँ से एक टोकरी गुलाब का फूल आया था। घर की सजावट के लिये क्षेमंकरी ने वह टोकरी कमला के हाथ में दे दी थी। नलिन के सोने के कमरे में एक किनारे फूलदान से उन गुलाबों की खुशबू उसके मस्तिष्क में आने लगी। उस निस्तब्ध कमरे की खिड़की से सन्ध्या की लालिमा के साथ गुलाब की सुगन्ध ने नलिन के मन को उतावला बना रखा था। अब तक उसके लिये संसार में चारों ओर संयम की शान्ति थी, ज्ञान की गम्भीरता थी, आज वहाँ एकाएक सुरीली नौबत बज उठी, *किसी अदृश्य नाच के पैरों की गति से घुँघरू की झनकार से मानो सारा* वातावरण चंचल हो उठा।

सन्ध्या के आकाश में सूर्यास्त की आभा मिल गई। नलिन ने घर से बाहर निकलने से पहले एक बार अपने बिस्तर के पास जा शय्या से चादर को उलट दिया और सिरहाने के तकिये पर गुलाव के फूल को रख दिया। रखकर जैसे ही पलटा, वैसे ही चारपाई के उस किनारे जमीन पर कोई अंचल से मुंह ढाँके लज्जा से जमीन में मिली दिखाई दी। हाय रे कमला, लज्जा का कोई ठिकाना नहीं। आज वह फूलदान में फूल सजा और बिस्तर सजाकर लौट रही थी, इसी समय नलिन के पैर की आवाज सुन जल्दी से चारपाई के उस किनारे छिप गई। उस समय भागना भी असम्भव था, छिपना भी कठिन था, इस तरह ढेर सी लज्जा सहित वह जमीन में बैठी ऐसे एकान्त भाव में पकड़ी गई।

नलिनाक्ष इस लज्जातुर कमला को समय देने के लिये कोठरी से बाहर निकल जाने को तैयार हुआ। दर्वाजे तक जाकर जरा खड़ा हो गया। कुछ देर न जाने क्या सोचकर फिर धीरे-धीरे लौट आया—उसने कमला के सामने खड़े होकर कहा, "तुम उठो मुझसे तुम्हें लज्जा नहीं करनी चाहिये।"

दूसरे दिन सवेरे ही कमला चाचा के घर पहुँची। जैसे ही एकान्त में समय मिला, वैसे ही वह शैलजा से लिपट गई, शैल ने कमला की ठोड़ी पकड़ कर कहा, "क्यों बहन, इतनी प्रसन्न क्यों हो ?"

कमला ने कहा, "मैं नहीं जानती दीदी, किन्तु मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे मेरे जीवन का सब बोझ दूर हो गया है।"

शैल, "कहो न, सब बातें मुझसे कहो। अभी तो कल शाम तक मैं वहाँ रही, इसके बाद क्या हुआ।"

कमला, "ऐसी कोई बात नहीं हुई। किन्तु मेरा मन कहता है कि मैंने उन्हें पा लिया—भगवान् मुझ पर बहुत प्रसन्न हुए हैं।"

शैल, "ऐसा ही हो बहन, किन्तु मुझसे कुछ छिपाना नहीं। मैं जो कहती हूँ बहन, तेरा भाग्य इतना ही देकर तुझे धोखा न देगा, तुझे जो कुछ मिलना है, वह सब तुझे ही मिलेगा।

कमला—नहीं-नहीं दीदी, ऐसा न कहो—मैं सब पा चुकी हूँ—मैं विधाता को कोई दोष नहीं देती।

इसी समय चाचा ने आकर कहा, "बेटी, तुम्हें जरा एक बार बाहर आना होगा, रमेश बाबू आये हैं।" कमला उनके साथ बैठक में चली आई।"

रमेश मुँह फेरकर खिड़की की राह से सड़क की ओर देख रहा था—कुछ देर बाद पैर की आवाज से सतर्क हो उसने पलटकर देखा कि कोई रमणी भूमि में माथा टेक उसे प्रणाम कर रही है। जब वह प्रणाम करके उठी, तब रमेश बैठा न रहा, झटपट उठकर उसने कहा, "कमला !" कमला चुपचाप खड़ी रही।

चाचा ने कहा, "रमेश बाबू, कमला के सारे दु:ख सौभाग्य में परिणत कर ईश्वर ने उसके चारों ओर के कुहरे को काट दिया है। आपने बहुत बड़े संकट के समय उसकी जैसी रक्षा की है, उसके लिये आपको बहुत दु:ख उठाना पड़ा है। इसलिये आपसे सम्बन्ध तोड़ते समय बिना कुछ कहे कमला विदा नहीं हो सकती। आज यह आपसे आशीर्वाद लेने आई है। आशा है आप अवश्य मन से आशीर्वाद देंगे।"

रमेश ने कुछ देर चुप रह जोर से गला साफ करने के बाद कहा, "तुम सुखी रहो। कमला—मैंने जान या अजान में जो कुछ अपराध किया है, उसे क्षमा करना।"

कमला इसके उत्तर में कुछ भी कह न सकी—वह दीवार के सहारे चुपचाप खड़ी रही।

कुछ ठहरकर फिर रमेश ने कहा, "अगर किसी से कुछ कहने के लिये या किसी बाधा को दूर करने के लिये तुम्हें मेरी आवश्यकता पड़े, तो मुझसे कहना।"

कमला ने हाथ जोड़कर कहा, "मेरी बातें किसी से न कहियेगा, मेरी यही प्रार्थना स्वीकार करें!"

रमेश ने कहा, "बहुत दिन हुए, तुम्हारी बात किसी से कही नहीं,."बहुत कठिनाइयाँ आने पर भी मैंने चुपचाप अपने दिन काटे हैं। कुछ दिन हुए, जब मैंने सोचा कि तुम्हारी बात कहने से कोई हर्ज न होगा, तब मैंने केवल एक परिवार के आगे तुम्हारी बात प्रकट की है। उससे भी शायद तुम्हारा अनिष्ट न होगा। शायद चाचाजी को यह खबर मिली—अन्नदा बाबू की लड़की—"

चाचा ने कहा, "हेमनलिनी को मैं जानता हूं। आपकी सब बातें उससे सुनी हैं?"

रमेश ने कहा, "हाँ, उन लोगों से यदि आप और कुछ कहने की जरूरत समझें तो मैं जा सकता हूँ—किन्तु अब मेरी इच्छा नहीं होती मेरा बहुत समय नष्ट हो गया और भी बहुत कुछ बिगड़ा, अब मैं छुटकारा चाहता हूँ, यह कहते-कहते रमेश का गला रुंध गया।"

चाचा ने रमेश का हाथ पकड़कर स्नेह के साथ कहा, "नहीं रमेश बाबू अब आपको कुछ न करना होगा। आपने बहुत भार उठाया अब भार से हलके होकर अपने को स्वाधीन भाव से चलाइये, मेरा आशीर्वाद है कि आप सुखी हों, सार्थक हों।"

जाते समय रमेश ने कमला की ओर देखकर कहा, "मैं जाता हूँ।"

कमला ने कुछ न कह फिर एक बार जमीन में माथा टेककर रमेश को प्रणाम किया।

रमेश बाहर निकल स्वप्न में पड़े आदमी की तरह चलते-चलते सोचने लगा, "कमला से मुलाकात हुई, अच्छा ही हुआ, मुलाकात न होने से यह अध्याय अधूरा रह जाता। यद्यपि मैं ठीक नहीं समझ सका कि कमला क्या जान और क्या समझकर उस रात एकाएक गाजीपुर के बँगले से चली आई, तथापि यह समझ में आ गया कि मेरी अब कोई आवश्यकता नहीं। अब मेरी आवश्यकता मेरे जीवन के साथ है। अब उस जीवन के साथ ही मैं संसार में बाहर निकलता हूँ, अब मुझे पीछे फिरकर देखने की कोई आवश्यकता नहीं।"

कमला ने अपने मकान पर लौटकर देखा कि अन्नदा बाबू और हेम-नलिनी क्षेमंकरी के पास हैं। कमला को देखकर क्षेमंकरी ने कहा, "हरिदासी, अपनी सखी को तुम अपने कमरे में ले जाओ बेटी। मैं अन्नदा बाबू को चाय पिलाती हूँ।"

कमला के कमरे में पहुँचते ही हेमनलिनी ने प्रसन्नता से उसके गले में हाथ डालकर कहा, "कमला।"

कमला ने बहुत विस्मित होकर कहा, "तुमने कैसे जाना कि मेरा नाम कमला है ?"

हेमनलिनी ने कहा, "एक आदमी से मैंने तुम्हारे जीवन की सब घटनाएँ सुनी हैं, उसी समय मेरे मन में आया कि तुम्हीं कमला हो। कैसे, यह नहीं कह सकती।"

कमला ने कहा, "मेरी यह इच्छा नहीं है कि कोई मेरा वह नाम जाने। मुझे स्वयं अपने नाम पर गुस्सा आता है।"

हेमनलिनी ने कहा, "किन्तु अपने पति को तुम अपने परिचय से वंचित कैसे रखोगी ? क्या अपनी भलाई-बुराई सब उनके आगे निवेदन न करोगी ? उनसे कुछ छिपाने से काम चलेगा ?"

अचानक कमला का मुँह उतर गया, वह कोई उत्तर न पा निरुपाय हो हेमनलिनी के मुँह की ओर ताकने लगी। धीरे-धीरे कमला ने जमीन में बिछी

चटाई पर बैठकर कहा, "भगवान तो जानते हैं, मैंने कोई अपराध नहीं किया है, तब भगवान क्यों मुझे ऐसी लज्जा में डालेंगे। जब मैंने पाप नहीं किया, तब मुझे दंड क्यों मिलेगा। मैं कैसे उनके सामने अपनी सब बातें प्रगट करूँगी?" यह न हो सकेगा।"

हेमनलिनी ने कमला का हाथ पकड़कर कहा, "दंड नहीं, मन तुम्हारा छुटकारा पायेगा। अब तक तुम अपने को एक झूठे बन्धन से जकड़ती रही हो, उसे अपने तेज से काट डालो, ईश्वर तुम्हारा मंगल करेंगे।

कमला ने कहा, "कहीं पीछे होश खो न बैठूँ, यही भय जब मन में आता है, तब सब बल गायब हो जाता है। किन्तु तुम जो कहती हो, उसे मैं समझ रही हूँ. भाग्य में जो बदा हो, वह हो, किन्तु उनके आगे अपने को छिपाने से काम न चलेगा, वह मेरा सब कुछ जानेंगे ही।" यह कहते-कहते उसने जोर से अपनी दोनों हथेली बन्द कर लीं।

हेमनलिनी ने कहा, "यही बात ठीक है। नहीं मालूम कि अब तुम्हारे साथ मेरी मुलाकात होगी या नहीं। हम लोग यहाँ से कलकत्त जा रहे हैं, तुमसे यही कहने आई हूँ।"

यह कहकर हेम चली गई। मारे दुःख के कमला उससे कुछ न कह सकी और उसी प्रकार बैठी रह गई।

थोड़ी देर बाद क्षेमंकरी ने आकर उसके पास बैठ एक ठण्डी साँस लेकर कहा, "आहा बेटी, आज हेम जब मुझे प्रणाम कर चली गई, उस समय मेरा मन कैसा होने लगा; जो हो, हेम है अच्छी लड़की। आज मेरे मन में आ रहा है कि यदि उसे अपनी बहू बनाती, तो सुखी ही होती। जरा पहले ऐसा मालूम होता, तो सब हो जाता किन्तु अपने लड़के से तो पार पाना कठिन है, उसने क्या समझकर मुँह फेरा, यह वही जाने।"

बाहर पदचाप का शब्द सुन क्षेमंकरी ने कहा, "ए नलिन, जरा सुन!"

कमला ने झटपट अँचल में फूल और माला ढक माथे पर कपड़ा खींच लिया। नलिन के आने पर क्षेमंकरी ने कहा, "हेम तो आज चली गई—तुमसे मुलाकात नहीं हुई?"

नलिन ने कहा, "मैं तो उन्हें गाड़ी पर चढ़ा कर आ रहा हूँ।"

क्षेमंकरी ने कहा, "चाहे जो कहो बेटा, हेम जैसी लड़की संसार में अधिक नहीं दिखाई देतीं।"

मानो नलिन अब तक इस बात का प्रतिवाद करता आया हो। नलिन चुपचाप जरा हँस दिया।

क्षेमंकरी ने कहा, "तू हँसा क्यों। मैंने तेरे साथ हेम का सम्बन्ध ठीक किया था; आशीर्वाद तक कर आई, और तूने सब हठ करके नष्ट कर दिया। अब क्या तेरे मन में कुछ पछतावा नहीं हो रहा है।"

नलिन ने एक बार चौंककर कमला के मुँह की ओर देखा, कमला उत्सुकता के साथ उसकी ओर देख रही थी। आँखें चार होने पर कमला ने लज्जा से सिर झुका लिया।

नलिन ने कहा, "माँ, तुम्हारा लड़का क्या ऐसा सत्पात्र है कि तुम्हारे सम्बन्ध ठहराने से ही सब काम हो जायगा। मेरे जैसे नीरस और गम्भीर आदमी को क्या कोई सहज ही पसन्द कर सकता है?"

क्षेमंकरी ने कहा, "जा जा, बातें न बना, तेरी बात सुनकर मुझे गुस्सा आता है।"

कमला ने हेमनलिनी के दिये गये फूलों की एक माला बना डाली। फूल की डालियों में उस माला को रख पानी से छींटा देकर उसे उसने नलिन के उपासना-गृह में रख दिया। उसके मन में आया कि आज विदा होकर जाने के दिन इसीलिए हेमनलिनी डाली भर फूल ले आई थी। यह सोचकर उसकी आँखों में पानी आ गया।

दूसरे दिन कमला सवेरे उठकर स्नान करने गई। स्नान के बाद प्रतिदिन वह एक लुटिया में गंगाजल लाकर नलिन के उपासना-गृह को धो-पोंछकर तब तब दूसरा काम करती थी आज भी उसने सवेरे का काम करने के लिए जाकर देखा कि नलिन आज सवेरे-ही-सवेरे उस कोठरी में पहुँच गये हैं—ऐसा तो कभी नहीं होता था। एकाएक उसने देखा कि नलिन कोठरी से निकल उसके सामने खड़े हो गये है। कमला ने क्षणभर में खड़ी हो जमीन में घुटने टेक एकदम